

पद्मपुराण भाषा

सप्तम क्रियायोगसारखण्ड

जिसमें

नारायणजी की कथा की प्रशंसा, वैष्णवों के लक्षण, गंगाजी और प्रयागजी का माहात्म्य, वीरवर का सुदेव राजा की सभा में जाना, गंगासागरसंगम, गंगाजी के जल की बूँदों और गंगाजी का माहात्म्य, चम्पा के फूल की महिमा, भगवान् के पूजा की विधि, पीपल के वृक्ष का माहात्म्य, ज्येष्ठ से कार्त्तिक तक भगवान् के पूजन का माहात्म्य और सब दान, एकादशी, तुलसी और अन्न जल का माहात्म्य, मनोहर देवनागरी भाषा में वर्णन कियागया है ॥

हिंदी-अनुवादक

उन्नामप्रदेशान्तर्गत तारगाँवनिवासी

पण्डित रामविहारीशुक्ल

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२४ ई० ।

तीसरी बार]

पद्मपुराणभाषा सप्तम क्रियायोगसारखण्डकी भूमिका॥

प्रकटहो कि इसपुस्तकमें नारायणजीकी कथाकी प्रशंसा, वैष्णवोंके लक्षण, गंगाजी और प्रयागजीका माहात्म्य, वीरवरका सुषेण राजाकी सभामें जाना, गंगासागरसंगम, गंगाजी के जलकी बूंदों और गंगाजीका माहात्म्य, चम्पाके फूलकी महिमा, भगवान् के पूजाकी विधि, पीपलके वृक्षका माहात्म्य, ज्येष्ठसे कार्त्तिकतक भगवान्के पूजनका माहात्म्य, भगवान्की पूजा, रामजीके नाम और भगवान्का माहात्म्य, पुरुषोत्तमक्षेत्र में भद्रतनुजी को वरप्राप्ति, पुरुषोत्तमतीर्थ, भगवान्, सबदान, अन्न, जल, एकादशी और तुलसीजीका माहात्म्य, इतिहाससमेत तुलसी और अतिथिका माहात्म्य तथा युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य ललित देवनागरीभाषा में वर्णन कियागयाहै—जिसको बाबूप्रयागनारायण जीकी आज्ञानुसार उन्नावप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामविहारी सुकुलने संस्कृतसे प्रत्यक्षरका भाषानुवाद किया और ईश्वरेच्छासे उत्तम अक्षरोंमें सफ़ेद काग़ज़पर छपकर प्रकाशित हुआ है यह पुराण सब पुराणोंमें शिरोमणि है इससे हरिभक्त लोग इसको देखकर प्रसन्नतापूर्वक ग्रहणकर यंत्रालयाध्यक्षको धन्यवाद देंगे॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस

लखनऊ

पद्मपुराणभाषा सप्तम क्रियायोगसारखण्डका सूचीपत्र ॥

इति ॥



पद्मपुराण भाषा ॥

सप्तम क्रियायोगसारखण्ड ॥

पहला अध्याय

नारायणजी की कथा की प्रशंसा वर्णन ॥

मैं लक्ष्मी के स्वामी के कमलरूपी दोनों चरणों की निरन्तर वंदना करताहूं जोकि ब्रह्मा और महादेव आदिक देवताओं की पंक्तियों के नम्र शिररूपी भ्रमरके मालारूप, निर्मल, भक्तिसे योगियों के मनरूपी तालाब के सुषमासमूह के पूर्णकरनेवाले, गङ्गारूपी जलके मकरन्दरूपी विन्दुओं के समूह और संसाररूपी दुःख के नाश करनेवाले हैं १ सुन्दर सूकरकी देह धारण करनेवाले हरि देवजी के नमस्कार हैं जो भगवान् अनेक प्रकारकी मूर्तियों को धारणकर सम्पूर्ण संसारकी रक्षा करते हैं जिनके चरणों की पूजन में तत्पर मनुष्य फिर संसाररूपी समुद्र में नहीं स्नान करते हैं और जिन प्रभुजी का निरन्तर सब प्राणियों के हृदयरूप कमल में रहनेका स्थान है २ जो देव वेदों से सब धर्मों को लेकर व्यास-जीके स्वरूपसे संसारके कल्याणके लिये पुराणों में कहते भये ऐसे लक्ष्मीसंयुक्त भगवान्‌की वन्दना करता हूं ३ एक समय में सब लोकोंके कल्याण की इच्छा करनेवाले सम्पूर्ण मुनि सुन्दर नैमि-

षारण्य में मनोरम गोष्ठी करते भये ४ तिसी अन्तर में महाते-जस्वी, व्यासजीके शिष्य, महायशस्वी, शिष्यसमूहोंसे युक्त सूत-जी भी भगवान्का स्मरण करते हुए आते भये ५ तिन शास्त्रके अर्थ के पार जानेवाले सूतजीको आते देखकर तपस्वी शौनकादिक सब मुनि उठकर नमस्कार करते भये ६ और सब धर्मों के जानने वालों में श्रेष्ठ सूतजी भी सहसा भक्ति से तिन परम वैष्णव मुनियों के पृथ्वी में दण्डवत् नमस्कार करते भये ७ फिर सब शिष्य-समूहों से युक्त महाबुद्धिमान् सूतजी श्रेष्ठ मुनियों के दियेहुए श्रेष्ठ आसनपर मुनियों के बीचमें बैठतेभये ८ तहांपर बैठेहुए सूतजीसे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक नम्रतायुक्त हाथ जोड़कर यह बोले ९ कि हे महर्षे! सब जाननेवाले, भगवन्, सूतजी! कलियुगके प्राप्त होने में मनुष्योंके किस उपाय से बहुत भक्ति होती है १० क्योंकि कलियुग में तो सब मनुष्य पापकर्म में रत और वेदकी विद्या से हीन होंगे तिनका कल्याण कैसे होगा ११ और इसयुगमें अन्नही में प्राप्त प्राण, मनुष्यों की थोड़ी उमर, धनहीन और अनेक प्रकार के दुःखों से पीड़ित होंगे १२ हे द्विज! शास्त्रों में परिश्रमसे साध्य सुकृत किया गया है तिससे कलियुग में कोई भी मनुष्य सुकृत नहीं करेंगे १३ फिर सुकृतके नाशहोने और पापकर्म में प्रवृत्त होने में सब दुष्ट आशय वाले वंशसमेत नाशको प्राप्त होजावेंगे १४ तिससे हे अत्यन्त श्रेष्ठ सूतजी! थोड़े परिश्रम और थोड़ेही द्रव्यसे जिस प्रकार महापुण्य होवे तिसको कहिये १५ जिसके उपदेश से मनुष्य पुण्य वा पाप करते हैं तो वह भी तिसका भागी होजाता है यह शास्त्रों में निश्चित है १६ पुण्यका उपदेश, दयासंयुक्त, कपटरहित, पापमार्ग का विरोधी है ये चारों केशवजी के सदृश हैं १७ संसार में जो ज्ञान पाकर दूसरों को नहीं देताहै उसको ज्ञानरूपी भगवान् प्रसन्न की नाईं नहीं देखते हैं १८ बुद्धिमान्, ज्ञानरूपी रत्न से दूसरों को संतोष करनेवाला मनुष्य निश्चय मनुष्यरूप धारण करनेहारा भगवान् ही है १९ हे मुनियों में शार्दूल! वेद और वेदाङ्ग के पार-गामी आपही हैं आपको छोड़कर दूसरा कहनेवाला कोई नहीं है

क्योंकि आप व्यासजी से शिक्षा पायेहुए हैं २० तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! तुम धन्य और वैष्णवों में आगे होनेवाले हो जिससे सब लोकों के कल्याणकी सदैव वाञ्छा करते हो २१ अब जो तुम्हारे सुनने की इच्छा है तिसको सब मनुष्यों और विशेषकर वैष्णवों के कल्याण के लिये कहता हूं सुनिये २२ जिस सबको जैमिनि के पूंछने पर व्यासजी ने कहा था तिसको सुनिये महर्षि, सदैव योगाभ्यास में रत जैमिनि २३ मुनिश्रेष्ठ शिरसे व्यासजीके प्रणाम कर पूंछते भये कि हे भगवन्! सब धर्म के जाननेवाले, सत्यवती के पुत्र व्यासजी २४ कलियुगमें किससे मोक्ष होता है तिसको मूलसे मुझसे कहिये सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! जैमिनि के वचन सुनकर सन्तुष्टमन व्यासजी मंगलसंयुक्त कथा को प्रारम्भ करते भये बोले कि हे मुनियों में शार्दूल महाबुद्धिमान् जैमिनि तुम धन्य हो २५। २६ जिससे सदैव नारायण की कथा सुनने की वाञ्छा करते हो जिस जिसकी अच्छी कथाके सुननेमें बुद्धि प्रवृत्त होती है २७ तिस तिस के मोक्ष का देनेवाला ज्ञान होता है यह मुनिलोग कहते हैं और पृथ्वी में जिस पापी को वैष्णवकथा नहीं रुचती है २८ उसको ब्रह्माने वृथा ही उत्पन्न कर पृथ्वी को भारयुक्त किया है पृथ्वी कथा के कहने के लिये वैष्णव मनुष्यों से श्लाघित है २९ और तिसको झूठ की नाईं जो कहता है वह पापियों में श्रेष्ठ जानने योग्य है हे मुनियों में श्रेष्ठ! जिस दिनमें भगवान् की कथा नहीं सुनी जाती है ३० वही दिन दुर्दिन मानता हूं मेघों से आच्छादित दुर्दिन नहींहै जहां जहां पृथ्वी के भागमें वैष्णवीकथा वर्तमान होती है तिसके पासको भगवान् कभी नहीं छोड़ते हैं और जो मनुष्य वैष्णवकथा के आरम्भ में विघ्न करता है ३१। ३२ तिसको शाप देकर देवताओं समेत भगवान् चलेजाते हैं और वासुदेवजी का प्रभाव सुनकर जे मनुष्य प्रसन्न होते हैं ३३ वही देवताओं के अंश, पूज्य, देखने के योग्य और अत्यन्त श्रेष्ठ जाननेयोग्यहैं और नारायणजीका प्रभाव सुनकर जे हँसते हैं ३४ वे दानवों के अंश नरकभागी मनुष्य जानने

योग्य हैं तहां पर सब गङ्गादिक तीर्थ, ३५ देवर्षि, देवता, तपस्वी मुनि रहते हैं जहांपर मनुष्यसमूहों के सुनते हुए पापरूपी व्याधि के नाश करनेवाली नारायणजी की कथा प्रतिदिन वर्तमान रहती है हे मुनि! क्रियायोगसार बहुत द्रव्य देनेवाला, पाप नाशनेहारा ३६। ३७ नारायणजी की कथा से युक्त और इतिहास सहित है तिसको सुनिये ३८॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे क्रियायोगसारे जैमिनिव्याससंवादे प्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय

वैष्णवों के लक्षण वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! सृष्टि के आदि में सब जगत् के रचना करने की इच्छाकर महाविष्णुजी उत्पन्न करने, पालन करने और संहार करनेवाली तीन मूर्ति आपही होतेभये १ श्रेष्ठ पुरुष महाविष्णुजी आत्मासे दहिने आत्मा को प्राप्त होकर इस संसारकी सृष्टिके लिये ब्रह्मारूप रचते भये २ तिस पीछे पृथ्वी के स्वामी महाविष्णुजी संसारके पालन के लिये बायें अंश से अपना अंश केशवविष्णुजी को रचते भये ३ तदनन्तर संसारके संहारके लिये लक्ष्मी के स्थान प्रभुजी मध्य अंगसे नाशरहित महादेवजी को रचते भये ४ रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण इन तीन गुणके आत्मा पुरुषको कोई ब्रह्मा कोई विष्णु और कोई शङ्कर कहते हैं ५ एकही विष्णु तीन प्रकारके होकर संसारको रचते, पालते और संहार करते हैं तिससे श्रेष्ठमनुष्य तीनों लोकोंमें भेद नहीं करें ६ इस महाविष्णु परमात्माकी आद्या प्रकृति, भूत संसार का आदिकारण विद्या और अविद्या गाई जाती है ७ भाव अभाव का स्वरूप, संसारका हेतु, सनातनी, ब्राह्मी, लक्ष्मी और अम्बिका ये तीन मूर्ति सहसा से होती भईं ८ आदिपुरुष भगवान् आद्या प्रकृति को संसार के उत्पन्न, पालन और संहार में युक्तकर तहांहीं अन्तर्द्धान होजाते भये ९ फिर जिनकी आज्ञा से ब्रह्माजी महाभूत पृथ्वी, आकाश, पवन, जल और तेजको पंचसमाधिसे रचकर १० भू, भुव,

स्व, मह, जन, तप और सत्य इत्यादिक लोकों को रचते भये ११ फिर अतल तिसके नीचे वितल, सुतल, तलातल, १२ महातल, रसातल और क्रमही से सबसे नीचे पातालको रचते भये १३ फिर देवताओं के निवास के लिये पृथ्वीके मध्य में रत्नसानु, सुवर्ण के समान उज्ज्वल महापर्वत को रचकर १४ मन्दर, चरम, त्रिकूट, उदयाचल और अनेक प्रकारके पर्वतों को रचते भये १५ तदनन्तर लोकालोक पर्वत और तिसके बीचमें सातों समुद्र सातों द्वीप १६ जम्बूद्वीप, प्लक्ष, तिससे दूना और प्लक्षसे दूना शाल्मली जानना योग्य है इन सबको ब्रह्माजीने रचा १७ ते प्लक्षादिक द्वीप सब भागयुक्त, सम्पूर्ण गुणों संयुक्त देव और देवर्षिकी मूर्ति हुए १८ ये सातों द्वीप सातों समुद्रसे घिरेहुए हैं तिन समुद्रों के नाम कहताहूं सुनिये १९ लवण, इक्षु, सुरा, सर्पि, दधि, दुग्ध और जल नामवाले हुए इन में पहले से क्रम से पीछे के श्रेष्ठ हैं २० लोकालोक पर्वत तक सब पर्वत भी क्रमसे द्विगुण हैं द्वीपद्वीप में ब्रह्माजी वृक्ष, गुल्म, लता आदिक, तिर्यक् योनिमें प्राप्त जन्तुओं को रचकर तिस पीछे देवता, मनुष्य, नाग, विद्याधर, २१। २२ दक्षादिक पुत्र, मुनि, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा और चाण्डालोंको भी रचते भये २३ फिर तिनके वर्तन आदिकों को भी रचते भये हेमपर्वतके दक्षिण और विन्ध्याचल के उत्तर को २४ मुनिलोग शुभ और अशुभ फलका देनेवाला भारतवर्ष कहते हैं जे उत्तम मनुष्य भारतवर्ष में जन्म पाकर २५ धर्म कर्म करते हैं ते सब केशवजी के समान हैं कर्मभूमि में किये हुए शुभ वा अशुभकर्म को २६ मनुष्य भोगभूमियों में तिस फलको भोगताहै जो कर्मभूमि में प्राप्त होकर धर्म कर्मों में उद्यत होताहै २७ उसके समान तीनों लोकों में कोई विद्यमान नहीं होताहै तिसका जन्म सफल है और जीवन सुन्दर जीवन है २८ श्रीनारायणजी की सेवा में जिसकी बुद्धि नहीं वर्तमान होती है वह करोड़ जन्मकी इकट्ठा की हुई पुण्यसे भी मानसी व्यथासे युक्त संसारही में रहता है २९ नारायण देवदेवमें मनुष्यों की दृढ़ भक्ति होवे, सब सुखका देनेवाला, श्लाघ्य, निर्भय ३०

देश भी त्यागने योग्यहै जहांपर वैष्णव नहीं स्थित है और जन्म के इकट्ठा किये हुए थोड़े वा बहुत पाप ३१ भगवान् के भक्त के दर्शन से तिसी क्षण में नाश होजाते हैं और जो सब पापों के नाश करनेवाले वैष्णव के चरणजलको ३२ भक्ति से अपने शिर में लगावे तो उसको गंगा के स्नान का कुछ प्रयोजन नहीं है जो भगवान्के भक्तों का मुहूर्तमात्र भी संग करता है ३३ वह ब्रह्म-हत्या आदिक सब पापों से छूट जाता है जितने धर्म कर्म भगवान् के भक्तके आगे किये जाते हैं वे सब नाशरहित होते हैं जहांपर वैष्णव मनुष्य मुहूर्त्त वा आधा मुहूर्त्त स्थित होते हैं ३४। ३५ वह सत्यही तीर्थ वा तपोवन है अन्न वा जल वा फल वैष्णव को ३६ जो कुछ दियाजाता है वह दान नाशरहित होता है क्योंकि सब देवताओं का रूप वैष्णव कहा है ३७ जिसने वैष्णवको सं-तोषयुक्त किया उसने सब देवताओं को प्रसन्न किया इस महा-घोर, अनेक प्रकार के दुःखयुक्त संसार में ३८ भगवान् का भक्त पुरुष कभी नहीं कष्ट पाता है तिससे हे विप्रेन्द्र जैमिनि! तुम भी क्रियायोग से केशवजी को ३९ सदैव भक्ति से आराधनकर विष्णु-जीके परमपदको जावो सूतजी बोले कि हे शौनक! तिन महात्मा व्यासजीके वचन सुनकर ४० जैमिनि शिरसे हाथ जोड़कर पूंछते भये कि हे गुरो! हे मुनियों में श्रेष्ठ व्यासजी! आपने भगवद्भक्त का माहात्म्य वारंवार कहा अब तिनके सब लक्षणों को इस समय में कहिये वैष्णव मनुष्य कैसे जानने योग्य हैं ४१। ४२ जो ह-मारे ऊपर आपकी कृपाहै तो सब आदिसे कहिये तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! मधु कैटभ राक्षसों के मारने के पहिले ब्रह्मा ने आपही ४३ भगवान् से पूंछा तब उन्होंने जो कुछ कहा तिस को मैं जानता हूं सुनिये कल्पके अन्त में रुद्ररूपसे सब संसारको संहार कर ४४ आपही एक भगवान् योगमाया से सोते भये तिन योगनिद्रा से मोहित भगवान् के सोते हुए सब पृथ्वी जल के समूह से डूब गई ४५ तब भगवान्की नाभिकमल के ऊपर संसारके रचनेवाले ब्रह्माजी भगवान् ही में मन लगाकर आदिपुरुषजी का

ध्यानकर स्थित होजाते भये ४६ तिस महाघोर समय में विष्णु जी के कान के मल से घोर मधु और कैटभ नाम दो बड़े असुर उत्पन्न होते भये ४७ और अत्यन्त घोर दोनों दानव आकाश में घूमते हुये श्रीविष्णुजी की नाभिकमल में विष्णुजी को देखते भये ४८ तब महाबल और पराक्रमयुक्त दोनों दैत्य क्रोधसे लाल नेत्रकर ब्रह्मा के मारने के लिये उद्यम करते भये ४९ तब तो संसार के रचनेवाले ब्रह्माजी हृदय से तिनका वध चिन्तनाकर मनोहर वाणी से भगवती योगनिद्रा की स्तुति करते भये ५० परमेष्ठी ब्रह्माजी का स्तोत्र सुनकर प्रीति से योगनिद्रा बोली कि तुम्हारा क्या अभिमत है तिसको कहिये ५१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे योगनिद्रे! ये दोनों अत्यन्त घोर राक्षस मेरे मारने के लिये निश्चय किये हुए हैं इससे माया से शीघ्रही मोहितकर रक्षा करनेवाले भगवान् को छोड़िये ५२ तब तो भगवान् की निद्रा महाविष्णुजी को छोड़ देती भई तो दोनों दानवों और भगवान् का आकाश में ५३ भुजाओं से युद्ध होताभया तब शरणागतवत्सल भगवान् पांच हज़ार वर्ष घोर युद्ध करतेभये ५४ परन्तु किसी की न तो विजय हुई और न किसीकी हार हुई तदनन्तर महामायासे विमोहित दोनों राक्षस ५५ भगवान् से बोले कि हमसे वर मांगो तब तो हँसकर भगवान् उनसे ये वचन बोले ५६ कि जो हमारे ऊपर तुम दोनों प्रसन्नहो तो शीघ्रही हमसे मृत्यु को प्राप्त होजावो तब तो घोर महामायायुक्त दोनों दानव जनार्दन भगवान् से ५७ महामाया से मोहित होकर बोले कि आपको निस्सन्देह यही वर देते हैं ५८ हे जनार्दनजी! हम दोनोंको जहांपर पृथ्वी विना जलके है वहांपर मारिये तब तो भगवान् दोनों महासुरोंको जंघाओं पर लाकर ५९ सहसा से चित्रविचित्र चक्र की धारा से नाश करडालते भये तब खेदरहित ब्रह्माजी भगवान् से मारेहुये मधु कैटभ राक्षसों को देखकर देवदेवेश भगवान् की स्तुति करतेभये ६० कि परमेश्वर, शरणागतकी सब पीड़ा नाश करने वाले, त्रिगुणात्मक, अमित विक्रमवाले नारायणजी के नमस्कार

हैं ६१ हे अपार कीर्तिवाले ! आपके दोनों चरणकमलों में प्राप्त हुए मनुष्य कभी विपत्तिको नहीं प्राप्त होते हैं यह मैंने जाना है और आपने शीघ्रही मेरी बड़ी विपत्ति को नाश करादिया है ६२ हे तीनोंलोक के स्वामी ! हे देवदेव ! हे शरणागतपालक ! हे ईश ! आप योगेश्वर और दयासंयुक्त हैं और शत्रुओंके समूहों के नाश करने में निर्दय हैं जिससे कि इन दोनों राक्षसों को मारकर मेरी रक्षा की है ६३ यद्यपि मधु कैटभ राक्षस अत्यन्त कठिन थे तिसपर भी अपने जीवनके नाशके वरदानों से प्रसन्नकर उनको मारते भये हो सब शुभके देनेवाले ईश्वर आपही हो ६४ तिसी पुरुषके ये तीनों सुन्दर लोक हैं अपने कुलसमेत सब वैरी नाश होजाते हैं हे देवताओंके स्वामी ! जिसको आप यहांपर दयाओंसे देखते हैं उसके मित्र और सब बान्धव वृद्धिको प्राप्त होते हैं ६५ हे लक्ष्मी-जी के मुखरूपी कमल के भौंर ! हे देवों के देव ! हे संसारके मनुष्यों के भय और शोक के नाश करनेवाले ! हे नाथ ! आपके पवित्र दोनों चरणकमलों के आश्रय मेरी निरन्तर रक्षा कीजिये आपके नमस्कार है ६६ हे कमलनयन ! हे लक्ष्मी के स्वामी ! हे सब प्राणियों के स्वामी ! हे संसार के पालन करनेवाले ! आपके नमस्कार है ६७ हे पापरहित ! भक्तों के ऊपर प्रसन्न, भक्तिके देनेवाले, ज्ञानरूप आपके नमस्कार हैं मुझको शरण लीजिये ६८ हे जगन्मय ! आपके नमस्कार हैं आप रक्षा कीजिये ६९ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! इन वा और स्तोत्रों से संसारके रचनेवाले ब्रह्माजी से स्तुति कियेगये देव भगवान् परमप्रीति को प्राप्त होकर ७० ब्रह्माजी से बोले कि हे कमलासन ! तुम्हारी भक्ति से इस स्तोत्रसे प्रसन्न हूं आपका पृथ्वी में क्या अभिमत है तिसको कहिये मैं उसे आपको दूंगा ७१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे देवोंके स्वामी ! हे दया के समुद्र ! हे जगन्मय ! जो आप प्रसन्न हों तो मुझे यह वर दीजिये कि आपके भक्तों को आपदा नहीं होवें ७२ तब श्रीभगवान् बोले कि हे देवताओं में श्रेष्ठ ! ऐसाही होवे यह वर मैंने तुम्हें दिया मेरे भक्तको पृथ्वी में कभी विपत्ति नहीं होगी ७३ वैष्णवों के श-

रीरों में निरन्तर मैं बसताहूं तिससे वैष्णव मनुष्य कभी आपदाको नहीं प्राप्त होवें ७४ तब ब्रह्माजी बोले कि हे संसारके स्वामी! आपने निस्सन्देह सब कुछदिया जो इन महादैत्यों को लड़ाई में नाशकर दिया ७५ हे प्रभो! कुछ काल प्राप्त होकर जो इस स्तोत्रसे श्रेष्ठ भक्तिसे आपकी स्तुति करता है तो उसके आप रक्षा करनेवाले होजाते हैं ७६ आश्चर्य की बात है कि देवताओं के ध्यान करनेमें भी आप नहीं आ सक्ते हैं सोई आप वैष्णवों की देहों में भ्रमते हैं यह बड़ा अद्भुत है ७७ हे स्वामिन् क्षणमात्र भी आपके प्रसन्न होने से क्या होताहै सोई आप वैष्णव के संगसे भ्रमते हैं यह बड़ा अद्भुत है ७८ हे कैटभ के वैरी! हे केशवजी! वैष्णव कौनहैं और तिनके कौन लक्षण हैं वे सब कैसे जाने जाते हैं यह हमसे कहिये ७९ तब श्रीभगवान् बोले कि हे सज्जनों में श्रेष्ठ ब्रह्मा! वैष्णवों के लक्षण सौ करोड़ कल्पों में भी अच्छे प्रकार कहने को मैं समर्थ नहीं हूं संक्षेपसे सुनिये ८० संसार वैष्णवों के अधीन है देवता वैष्णवों से पालितहैं और मैंभी वैष्णवों के अधीनहूं तिससे वैष्णव श्रेष्ठहैं ८१ हे ब्रह्मन्! वैष्णव मनुष्य को छोड़कर क्षणमात्र भी मैं और जगह नहीं स्थित होताहूं क्योंकि वैष्णव मेरे बान्धव हैं ८२ कामक्रोध से हीन, हिंसा और दम्भ से वर्जित और लोभ मोह से जे हीन हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ८३ मत्सरहीन, दयायुक्त, सबप्राणियों के कल्याणकी इच्छा करनेवाले और सत्य बोलनेवाले वैष्णव जानने चाहिये ८४ धर्म के उपदेश करने वाले, धर्म के आचारके धारण करनेवाले और गुरुजी की सेवा करनेवाले वैष्णव जानने योग्यहैं ८५ तुमको मुझको और महादेवजीको जे बराबर देखते हैं और अतिथिकी पूजा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८६ वेदाविद्यामें निरुक्त, ब्राह्मणकी भक्ति में सदैव रत और पराई स्त्रियों में जे नपुंसक हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८७ जे भक्तिभावसे एकादशी का व्रत करते हैं और मेरे नामों को गाते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ८८ देवता का मन्दिर करनेवाले, तुलसीकी माला धारण करनेहारे और जे पद्माक्ष धारण करनेवाले

हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८९ शंख, चक्र, गदा और पद्म इन मेरे आयुधों से चिह्नित जिनके शरीर हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९० जिनके गलेमें आंवलेके फल के माला हैं और तिनके पत्रों से मेरी पूजा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९१ तुलसी की जड़की मिट्टियों से जे तिलक देते हैं और तुलसी के काष्ठ की पङ्कसे जे तिलक देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९२ गंगाजी के स्नान में रत, गंगाके नाम में परायण और गंगाके माहात्म्य कहनेवाले वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९३ जिनके घरमें शालग्रामकी मूर्ति सदैव बसती है और भागवत शास्त्र बसता है वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९४ जे नित्यही मेरे स्थानों को शुद्ध करते हैं और वहांही दीप देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९५ जे हमारे पुराने मन्दिरको फिर नया कर देते हैं और तहांपर मन्दिर की शोभा को करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९६ जे डरपोंकों को अभय देते और ब्राह्मणों को विद्यादान देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९७ हमारे चरणके जलों से जिनके मस्तक सींचे जाते हैं और मेरी नैवेद्यको खाते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९८ जे भूख और प्यास से पीड़ितों को अन्न और जल देते हैं और जे योगकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९९ बगीचाके लगवानेवाले, पीपल के लगवानेहारे, और जे गऊकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०० जे अत्यन्त भक्त पितृयज्ञ करते और दीनोंकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं १०१ तालाब और गांवके करनेवाले और जे कन्यादानमें रतहैं और जे सास और श्वशुरकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०२ ज्येठी बहन और ज्येठे भाई की जे सेवा करते हैं और पराई निंदा नहीं करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं १०३ हे ब्रह्मन्! वैष्णवों में सबगुण हैं दोषका लेश नहीं उनके विद्यमान है तिससे तुमभी इस समय में वैष्णव होवो १०४ और हे प्रजापते! क्रियायोगों से मेरी नित्यही आराधना करो तो निस्सन्देह

सब तुम्हारे कल्याण शीघ्रही होंगे १०५ हे चतुर्मुख ! जे देवता, ब्राह्मण और पराई द्रव्यको विषके समान देखतेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०६ पाखण्ड भक्ति से रहित शिवजी की भक्ति में परायण और चतुर्दशी के व्रत में रतों को वैष्णव मनुष्य जानिये १०७ यहां पर बहुत कहने और वारंवार भाषण करने से क्याहै जे मेरी पूजा करते हैं वे वैष्णव जानिये १०८ फिर पहले के स्थितकी नाईं सब संसार को रचिये ऐसा ब्रह्माजी से कहकर परमेश्वर जी तहां हीं अंतर्द्धान होगये १०९ तदनन्तर ब्रह्माजी पहले की नाईं सब संसारको रचकर क्रियायोगों से भगवान् को पूजनकर परमपद को जाते भये ११० जे इस अध्यायको भक्तिसे नारायणजी के आगे पढ़ते हैं वे सब पापों से छूटकर अन्त समय में हरिजी के मन्दिरको जाते हैं १११ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे क्रियायोगसारे द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय

गंगाजीका माहात्म्य वर्णन ॥

जैमिनिजी बोले कि हे महाबुद्धिमान् व्यासजी ! क्रियायोग का तत्त्व मुझसे कहिये आपके आगे मैं क्रियायोगके जाननेकी इच्छा करता हूं १ तब व्यासजी बोले कि हे विप्र जैमिनि ! इस पृथ्वी में मनुष्यका शरीर दुर्लभहै धीर मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर मोक्षके लिये योगका अभ्यास करै २ क्रियायोग और ध्यानयोग ये दो योग कहेगये हैं तिनदोनों में पहला क्रियायोग करनेवालों को सबकामना देनेवाला है ३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! गङ्गा, लक्ष्मी और विष्णुजीकी पूजा दान, ब्राह्मणों की भक्ति तथा एकादशी व्रत में भक्ति, ४ आँवला और तुलसी की भक्ति, अतिथिपूजन ये क्रियायोग के उत्पन्न हुए अंग संक्षेप से कहेगये हैं ५ हे विप्र ! क्रियायोग को छोड़ कर ध्यानयोगमें सिद्धिको नहीं प्राप्त होसक्ता है क्रियायोग में रतहुआ विष्णुजी के परमपद को प्राप्त होता है ६ तब जैमिनिजी बोले कि हे प्रभो क्रियायोग के जितने उत्पन्न हुए अंग आपने कहे हैं तिनके माहा-

त्म्य भी कहिये जो मेरे ऊपर आपकी दयाहुई हो ७ हे ब्रह्मन्! गङ्गाजी के कौन गुण हैं विष्णुजी की पूजाका फल क्या है कौन दान श्रेष्ठ हैं ब्राह्मणों की क्या भक्ति है ८ एकादशी का फल क्या है आँवले की भक्ति और तुलसीकी भक्ति कैसीहै अतिथिपूजन क्याहै ९ हे मुने! ये सब कहिये इनके सुनने को मेरा आदर है तीनों लोक में आप को छोड़कर दूसरा कोई नहीं कहसक्ताहै १० तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! बहुत अच्छा प्रश्न तुमने किया है निश्चय तुम्हारा मन निर्मल है जिससे इस छिपी हुई कथाके सुनने को तुम्हारे श्रद्धा और कौतुक है ११ गङ्गाजी के गुण अच्छेप्रकार कहनेको नहीं समर्थ हूं तिससे संक्षेप से कहताहूं एकचित्त होकर सुनो १२ गंगा के अत्यन्त कोमल दो अक्षर जप करने से मैं महाभूत रसायन मानताहूं और पाप चलाजाता है १३ सब जगह गंगाजी सुलभ हैं गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर का संगम इन तीनों स्थानों में दुर्लभ हैं १४ हे मुने! मनोरम गंगाद्वार में इन्द्र समेत सब देवता आकर स्नानऔर दान आदिक करतेहैं १५ दैव-योगसे वहांपर मनुष्य, पशु और कीट आदिक भी जे देह छोड़देते हैं तो परमपदको प्राप्तहोजाते हैं १६ हेविप्रर्षे! यहांपर मेरेकहे हुए इति-हासको सुनिये जिसके अच्छेप्रकार सुनतेही सबपापों से छूटजावो-गे १७ पहले इसपृथ्वी में सोमवंश में उत्पन्न, बलवान्, सबधर्मका जाननेवाला मनोभद्र नाम राजा हुआ है १८ तिसकी प्रियवचन बोलनेवाली, पतिव्रता, महा भाग्यवती, सब लक्षण संयुक्त हेमप्रभा नाम स्त्री हुई है १९ यह महा बलवान् राजालड़ाई में सबशत्रुओंको मारकर समुद्र और द्वीपों समेत सबपृथ्वी की पालना करताभया है २० एकसमयमें यहराजा महायशस्वी सभा में अपने मंत्रियों को बुलाकर प्रीतिसे यह वचन बोला २१ कि हे मंत्रियो! यह सबपृथ्वी मेरी रक्षाकी हुई है पुत्र, बल और वाहनों समेत सबशत्रु मैंने नाश किये हैं २२ अपने गोत्रों की रक्षाकी है दानों से ब्राह्मणों को प्र-सन्न किया है सज्जन और पुत्र, बल और वाहनों समेत सब देवता भी प्रसन्न किये हैं २३ दक्षिणाओं समेत सब यज्ञों से अपने गोत्रों

की रक्षाकी है परन्तु इस बड़ी भारी वृद्धावस्था से मेराबल हर लियागया है २४ इससे दुर्बल होकर मैं कुछ कर्म करने को नहीं समर्थहूं सामर्थ्य हीन पुरुष में राजलक्ष्मी नहीं शोभित होती है २५ जैसे सब गहनों से युक्त वृद्धअंगवाली स्त्री नहीं शोभित होती है पृथ्वी में तब तक सब शत्रु डरते हैं २६ जब तक पवित्र नेत्र से सामर्थ्यहीन को नहीं देखते हैं सबगुणों से युक्त और तिसी में प्राप्त मनवाले २७ वृद्धराजाको इस प्रकार पृथ्वी छोड़ देतीहै जैसे रक्षा की हुई भी व्यभिचारिणी स्त्री अपने पतिको छोड़ देतीहै सब गुण भक्ति से लाभ होसक्ते हैं बड़ा यश गुणों से लाभ होता है २८ कल्याण दान से मिलता है पृथ्वी बल से मिलती है सामर्थ्यहीन, कृपण, शत्रुके शासनमें निश्चित, २९ मूर्खमात्र वचनका ग्रहण करने वाला, शत्रुओं को आनन्द देनेवाला सो राजा है तिससे हे श्रेष्ठ मंत्रियो! मैं सब राज्य बांटकर ३० पुत्रोंको देनेकी इच्छा करताहूं जो आप लोगोंकी सम्मति होवे तब मंत्री बोले कि हे राजन्! नीति के जाननेवाले आपने जो ये वचन कहे हैं ३१ सोई हम लोगोंके भी मत हैं इसमें सन्देह नहीं है तदनन्तर राजा की आज्ञा से उनके दोनों श्रेष्ठ पुत्र सभा में आये ३२ वीरभद्र और यशोभद्र जिनके नाम हैं ये सब गुणों से युक्त, कुमार, प्रिय बोलनेवाले, ३३ पिताके भक्त, सदैव शान्त, बलवान् और धर्म में तत्पर हैं तब राज-नीति जाननेवालों में श्रेष्ठ राजा सहसासे ३४ कुतूहलपूर्वक सब राज्य बांटकर दोनों पुत्रों को देता भया इसी अन्तर में एक गृध्र अपनी स्त्रीसंयुक्त ३५ आकर तिस सभा के बीच में बैठता भया सूतजी कहते हैं कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो तिस गृध्र और उसकी स्त्रीको अत्यन्त प्रसन्न आतेहुए देखकर ३६ राजा दोनों से बोला कि किस हेतुसे आपका शुभ आगमन हुआहै तिसको कहिये तब गृध्र बोला कि हे शत्रुओं के ताप देनेवाले राजन्! मैं गृध्रहूं और यह मेरी स्त्री है ३७ आनन्दसे आपके दोनों पुत्रों की सभा देखने के लिये आया हूं पूर्वजन्म में इन दोनोंने बड़ी विपत्ति देखी थी ३८ इस जन्ममें इनकी सम्पत्ति देखने के लिये हम दोनों आये हैं तब तो विस्मय

युक्त होकर राजा फिर बोला ३९ कि हे गृध्र! अत्यन्त अद्भुत वचन आप से यह मैंने सुने इनके पूर्वजन्म का वृत्तान्त आपने कैसे जाना ४० श्रेष्ठ पक्षी! जो तत्त्व से इनके पूर्वजन्मका वृत्तान्त जानते हो तो सम्पूर्ण हमसे कहो ४१ तब गृध्र बोला कि हे राजन्! द्वापरयुग में ये दोनों शूद्र, गर और संगर नामी सत्यघोष के पुत्र थे ४२ एकही समय में ये दोनों अपने घर में मरगये तब इनके लेनेके लिये बड़ी डाढ़वाले यमराजके दूत ४३ फँसरी हाथ में लेकर सैकड़ों करोड़ आकर इन दोनों मदोद्धतों को चमड़े की फँसरी से बांधकर ४४ अति दुर्गम मार्ग से यमराज के स्थान को ले गये इनको देखकर धर्मराज चित्रगुप्त से बोले ४५ कि हे चित्रगुप्त! इन दोनों के सब वृत्तान्त विचारिये तब यमराजजी की आज्ञासे चित्रगुप्त सब शुभ अशुभ कर्म ४६ मूलसे विचारकर यमराजजी से बोले कि हे महाबाहो! ये दोनों सत्यही पुण्यकारी व्रत में बड़े अन्तःकरण वाले हैं ४७ कुछ इन्होंने बुरे कर्म कियेहैं जो कि सब कर्मके नाश करनेवाले होगयेहैं दान करके ब्राह्मण को इन्हों ने नहीं दियाहै ४८ हे राजन् तिसी कर्म से ये दोनों नरक में प्राप्तहोंगे क्योंकि दाता दानकरके जो ब्राह्मण को नहीं देताहै ४९ तो वह सब प्राणियों के भय देनेवाले घोर नरक में प्राप्त होता है दाता दान को न स्मरण करै और दानका ग्रहण करनेवाला न मांगै ५० तो दोनों का जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहेंगे तबतक नरक में वास होताहै तिससे हे प्रभो ये दोनों महापापी ब्राह्मणकी द्रव्य के हरनेवाले हैं दूत इनको शीघ्रही घोर नरकमें लेजावें ५१। ५२ हे राजन् तब तो यमराजजी की आज्ञासे क्रोध से ओष्ठोंको चबाते हुए उनके दूत इनदोनोंको घोरनरक में डालतभये ५३ और तिसी दिन इस स्त्रीसमेत मुझको भी यमराज के दूत आकर यमराजके स्थान में प्राप्त करते भये ५४ मैं सुनने वालों को विस्मय देनेवाले अपने कियेहुए कर्म को सब मूलही से कहताहूं तिनको सुनिये ५५ पूर्व समयमें मैं महाकुलवान्, सौराष्ट्र देशका रहनेवाला, वेद और वेदाङ्गका पारगामी, सर्वंग नाम ब्राह्मणहूं ५६ और यह यशस्विनी,

पतिव्रता, महाभागा, पवित्र कुल में उत्पन्न, मंजूकषानाम हमारी स्त्री है ५७ हे महाभाग ! विद्या, अवस्था और धन से मतवाला मैं युवावस्था में एकसमय मन से माता पिता का अनादर करताभया ५८ बड़ी सभा में श्लाघ्य, वनमें स्थित, सबकर्म करनेवाला, धनवान्, सुन्दर, ज्ञानी और जातिके पालन में तत्पर मैं था ५९ और मेरे माता पिता पाप में परायण, मुखर, दयाहीन, और पाखण्डियों के संग में लोलुप थे ६० पौरुष, जीवन, धन, कुल, विद्या और सब यशको उन्हों ने निष्फल करदिया था ६१ हे राजन् ! यह मन से विचार कर मैंने वारंवार अनादर से माता पिताकी शुभकी देने वाली सेवाको छोड़दिया था ६२ इसी कर्म से स्त्रीसमेत मैं यमराज की आज्ञा से दूतों के द्वारा जहांपर पापियों में श्रेष्ठ ये दोनों थे वहीं पर छोड़ा गया ६३ इन दोनों पापियों के साथ स्त्रीसमेत मैं घोरनरक में जितने काल स्थित रहा तिसको सुनिये ६४ हे श्रेष्ठ राजन् ! हज़ार करोड़ युग और सौ करोड़ युग नरकके महादुःख हमलोगोंने सहे ६५ फिर नरक के अन्तमें स्त्रीसमेत मैं मरेहुओं के मांसका खानेवाला गृध्रपक्षीके कुल में उत्पन्न हुआ ६६ और ये दोनों नरक के अन्त में अपने कर्मोंकाफलभोगने के लिये टीड़ियों के वंश में उत्पन्न हुए ६७ हे राजन् ! जो इन्हों ने टीड़ियों के जन्म में कर्मकिये तिन श्रोताओं के विस्मय देने वालों को कहताहूं सुनिये ६८ एकसमय में बड़ी आंधी आई कि जिससे उड़कर ये दोनों निर्मल गंगाजी के बीच में गिरपड़े ६९ निर्मल अंग होने के कारण से गिरतेही शीघ्रही मरगये और सबपाप इनके जाते रहे ७० तदनन्तर इनके लेने के लिये सुन्दर नेत्रवाले दूत सबभोगोंसे युक्त विमानों को लेकर आये ७१ तब सब पापों से छूटकर तुलसी की मालासे शोभित होकर सुन्दर विमान पर चढ़कर विष्णुजी के पुरको जातेभये ७२ तितनेही समय अव्यक्त जन्मवाले ब्रह्माजी के यहां भी रहे फिरब्रह्माजीकी आज्ञासे इन्द्र के पुरको आये ७३ वहां पर देवताओं के दुर्लभ सुखको भोगकर तितनेही समय तक पृथ्वी भोगकरने के लिये ७४ ये दोनों महाय-

शस्वी आपके पवित्रवंश में उत्पन्नहुएहैं गङ्गाजी में देह छोड़नेवाले का फिर जन्म नहीं होता है ७५ तिसपर भी ये अत्यन्त पुण्यात्मा पृथ्वी भोगकरने के लिये उत्पन्न हुए हैं बहुत कालतक पुत्र पौत्र संयुक्तहोकर सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगकर ७६ गंगाजी में मरण पाकर योगियों के दुर्लभ नारायणजी के सायुज्यको प्राप्तहोंगे ७७ हेराजाओं में शिरोमणि! जातिस्मरके प्रभाव से इन दोनों के पूर्वजन्म का यह सब वृत्तान्त मैंने कहा ७८ ये दोनों गंगाजी में मरण पाकर इस दशाको प्राप्तहुए हैं दुरात्मा हम दोनों की रक्षाकौन करेगा ७९ पिताका अपमान करना मनुष्यों को क्लेश देता है हे राजन्! मैंने अच्छी तरहसे देखाहै ८० पिता की अभक्ति इस लोक और परलोक में दुःख देनेवाली है इसलोक में सम्पत्ति के नाशके लिये है और परलोक में नरक के लिये है ८१ हे राजन्! मैं ब्रह्महत्यादिक पाप को श्रेष्ठ मानताहूं कभी तो उससे छुटकारा मिलता है और यह सदैव होती है ८२ दुःख से इकट्ठे किये हुए पुण्यकारी वृक्ष सब क्लेशों के नाश करनेवाले को पिताके अनादर रूप कुल्हाड़े से मनुष्य पृथ्वी में काटडालते हैं ८३ और हे शत्रुओं के तापदेने वाले! जोकुछ पिताके मुख में दिया जाता है तिसको आपही विष्णु जी भोजन करते हैं क्यों कि पितृरूप हरि जी हैं ८४ जे प्रत्यक्ष देव माता पिता की दिन रात सेवा करते हैं तिनकी भगवान् के प्रसाद से सब सिद्धि होती है ८५ और पिता की भक्ति से मनुष्य हीन होकर जितने दिन स्थित रहते हैं तितनेही हज़ार कल्प वे नरक में स्थित रहते हैं ८६ तिसी से इससमय में हमको महादुःख मिला है यह मैं नहीं जानताहूं कि स्त्रीसमेत मेरा कब मोक्ष होगा ८७ व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण, जैमिनि! ये गृध्र के वचन सुनकर राजा प्रसन्न और वारंवार विस्मित होकर बोला ८८ कि हे गृध्र! तुम्हारे मुखसे ये आश्चर्ययुक्त वचन सुनकर मेरे और इनके हृदयमें प्रतीति नहीं होती है ८९ तदनन्तर हे श्रेष्ठ राजन्! आकाशवाणी हुई कि यह सत्यही है इसमें कुछ सन्देह नहीं है ९० तब तो हे जैमिनिजी! वह पक्षी स्त्रीसमेत

गङ्गाजी के माहात्म्यके कहने से पहलेकी नाईं स्थित होगया ६१ आकाशमें नगारे बजनेलगे श्रेष्ठ गन्धर्व गानेलगे अप्सराओं के समूह नाचनेलगीं फूलोंकी वर्षा होनेलगी ६२ सब भोगोंसे युक्त सुन्दर विमान आया और भगवान् के भेजेहुए दूतों के समूह भी आये ६३ तदनन्तर हे विप्र! प्यारी स्त्रीसमेत गृध्र शीघ्रही विमानपर चढ़कर भगवान् के स्थानको जाताभया ६४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह अद्भुत कर्म सुनकर पुत्र और स्त्रीसमेत राजा गंगाजी की सेवा में तत्पर होजाता भया ६५ गंगाजी के समान तीर्थ तीनों लोकमें नहींहै जिनके नाम के उच्चारण करनेहीसे गृध्र मोक्षको प्राप्तहोजाता भया ६६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! सब पापोंका नाश करनेवाला गंगाद्वार का माहात्म्य तुमसे कहा अब और क्या सुनने की इच्छा है ६७ जे मनुष्य इस अध्यायको देवताके मन्दिर में पढ़ते हैं और जे ब्राह्मणों के समूहों के भक्त सुनते हैं उनके पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं ६८॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे तृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय

प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी! आपके प्रसादसे मैंने गंगाद्वार का माहात्म्य तो सुना अब इस समयमें प्रयागजी के माहात्म्य सुनने की इच्छाहै १ हे मुने! गङ्गासागरके संगमका माहात्म्य कहिये पृथ्वी में आप को छोड़कर और कोई दूसरा अच्छे प्रकार कहने को समर्थ नहीं है २ तब व्यासजी बोले कि हे वत्स! हे ब्राह्मण जैमिनि! प्रयाग और गङ्गासागर के संगम का फल अच्छे प्रकार कहने को मैं समर्थ नहीं हूं संक्षेप से सुनिये ३ हे मुने! कोटि ब्रह्माण्ड के मध्य में जितने तीर्थ हैं वे सब प्रयागकी बराबरी को नहीं हैं ४ गङ्गा, यमुना और सरस्वती के संगम में ब्रह्मा, विष्णु और महादेव आदिक सब देवता प्रशंसा करते हैं ५ जे मकर के सूर्य में माघ में तहांपर स्नान करते हैं तिनका आगमन विष्णुलोक से कभी नहीं होता है ६ हज़ार करोड़ गौवों का दान, अश्वमेध इत्यादिक यज्ञ,

मेरुपर्वत के समान सोने का दान तथा और भी दान ७ कुरुक्षेत्र, पुष्कर, प्रभास और गयाजी में हवनकर ब्राह्मणों को देने से जो फल पण्डितों को मिलता है ८ तिससे करोड़गुणा फल माघ में प्रयाग में स्नान करने से मिलताहै तिससे सब तीर्थों में प्रयागश्रेष्ठ है ९ हे उत्तम ब्राह्मण! सिंहराशि के सूर्य में गोदावरी नदी में स्नान, दान और व्रतादिकों से बहुत काल उग्र तपस्या कर १० वेद, शास्त्र और पुराणों का कहाहुआ जो नाशरहित पुण्य होता है वही माघ में प्रयागमें स्नान करने से निस्सन्देह पुण्य होता है ११ काशीजी में फाल्गुन के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी में व्रत करने से जो फल मिलता है तिसको मैं कहता हूं सुनिये १२ सब रूपका धारण करने वाला मनुष्य करोड़ जन्म के इकट्ठे कियेहुए पापों से छूटकर करोड़ पुरुषों को उद्धारकर शिवजी के साथ आनन्द करता है १३ ब्राह्मण माघमास में प्रयाग में एकबार भी स्नानकर सौकरोड़ कल्प और जगह विष्णुजी को पूजकर जो फल मिलताहै १४ वह मकर के सूर्य्य में एकदिनभी पूजने से सब नाशरहित होता है यह मैं सत्यही कहताहूं १५ मनुष्य माघमासमें जितने दिन स्थित होता है तितने सौकल्प विष्णुजी के साथ आनन्द करताहै १६ गंगा और यमुनाजीके जलमें जिसने एकबारभी स्नानकिया तो उसके दर्शन करने से शीघ्रही सबपापों से मनुष्य छूटजाता है १७ मनुष्य जो दुस्तर संसाररूपी समुद्र के तरने की इच्छा करते हैं वे भक्ति से गंगा और यमुनाजी में स्नानकर माधवजी के दर्शन करें १८ तहांपर मनुष्य जिस जिस देहकी पूजाकर पूजनकरते हैं तिस तिस को शीघ्रही निस्सन्देह प्राप्त होते हैं १९ यहांपर एक इतिहासको मैं कहताहूं सुनिये जिसके सुननेसे मनुष्य सब पापों से छूटजाताहै २० तहांपर एक महाधनवान्, देवता और अतिथियों की पूजा और ब्राह्मण की भक्ति में तत्पर प्रणिधिनाम ब्राह्मणथा २१ तिसकी धर्मपत्नी, पतिव्रता, पवित्रअंगोवाली, शीलयुक्त कुलमें उत्पन्न और प्रिय बोलने वाली पद्मावती नामथी २२ हे उत्तम ब्राह्मण! श्रीब्रह्माजीने स्त्रियों के योग्य जे जे गुण रचे हैं वे सब उस स्त्री में बसते थे २३ तद-

नन्तर प्रणिधि नाम ब्राह्मण शुभलग्न और शुभही तिथि में बहुतधन लेकर वाणिज्य के लिये जाताभया २४ क्योंकि धनसे धर्म्म, बहुत यश और कुल मिलता है धन के विना कुछ नहीं मिलता है २५ धनहीन मनुष्य को देखकर मित्र भाग जाता है जैसे शरदृऋतु में मेघ जलहीन होकर खण्ड खण्ड हो भागजाता है २६ जबतक खानेको पाते हैं तभी तक बांधव रहते हैं जिसके धन होता है उसी के कुल और बुद्धि होती है और वही पण्डित होताहै २७ द्रव्यों से हीन मनुष्य जीवता हुआ भी मरे के समान है धर्म, द्रव्य और विद्या के इकट्ठा करने से जिसकी बुद्धि लौटजाती है २८ वह अत्यन्त मूर्ख जानना चाहिये अधिक का आधिक ही फल होताहै इस से निरन्तर धर्म करना चाहिये और सदैव धन इकट्ठा करना योग्य है २९ निपुण पुरुषों को सदैव विद्या सीखनी चाहिये दान से धन और विद्या प्रतिदिन बढ़ती है ३० विना मनुष्यों की रक्षा करने के धर्म नहीं बढ़ता है काष्ठ, तृण और भूसीको भी पाकर न त्याग करे ३१ क्योंकि इकट्ठा करनेवाला मनुष्य कभी कष्ट नहीं पाता है तदनंतर प्रणधि बनियां स्थानमें स्त्री को छोड़कर ३२ घरके व्यापार में चतुर होकर वाणिज्य के लिये जाताभया तिस पीछे एक समय में प्रणिधि बनियें की स्त्री उद्वर्तन आदिक लेकर ३३ सखियों के साथ स्नान करने के लिये जाती भई तब धनुर्ध्वज नाम पापी चाण्डाल ३४ अपनी इच्छा से स्नान कर्म अच्छे प्रकार करती हुई तिसको देखताभया जो कि फूलेहुए सोनेके फूलसे युक्त, फूले हुए कमलहीके समान मुखवाली, ३५ हरिण के बच्चे के तुल्य नेत्रों से युक्त, पवित्र, मोटे और ऊंचे स्तनवाली थी तिस बनियें की स्त्री को देखकर यह चाण्डाल काम से व्याकुल होकर ३६ अपनी मूर्त्ति की चिन्तना कर हँसकर बोला कि हे कल्याणि! हे सुन्दर करिहाँव और पवित्र हासवाली! हे सुन्दरि! हे प्रिये! हे सुन्दर जंघावाली! हे पतले अंगवाली! तू कौन है सुन्दर यौवन के रसों से मेरे मनको क्यों हरती है मुझ गुणवान् के साथ ३७। ३८ तुझ गुणवती को सब सुख करना चाहिये हे द्विज! धनुर्ध्वज के वचन सुनकर

क्रोधयुक्त, ओठों को चबाती हुई तिसकी सखियां बोलीं कि अरे मूर्ख, दुराचार, दुराचार कुल में उत्पन्न ३९। ४० इसका पाद-विक्षेपण भी तुझको नहीं दियाजावेगा यह पतिव्रता स्त्री धर्म कर्म में परायण है ४१ आत्मा के सुखकी इच्छा करनेवालों करके पापदृष्टि से नहीं देखीजाती है सदैव पराई स्त्री के मुखकी सुंदरता और पराया द्रव्य ४२ देखकर काम की अग्निसे खेदयुक्त मूर्ख मनवाले जलजाते हैं इससे हे पापबुद्धिवाले! दूर जावो दुःसह वचन मत कहो ४३ हमलोग तुमको चरणों से भी नहीं छू सक्ती हैं तब धनुर्ध्वज बोला कि इस जातिशब्दको धिक्कारहै जो कि सब गुण जानतेहुए भी ४४ आप लोगों से संभावित न हुआ जिससे कि इस समय में चाण्डालहूं-देखो मदिरा भरेहुए कलश के भीतर स्थित सोनेको ४५ पाकर तिसके गुणसमूहों का जाननेवाला कौन पुरुष न ग्रहण करेगा इससे मैं इस स्त्री को इससमय में जैसे प्राप्त हूं ४६ तैसे हे सखियो करो आपलोगों की शरण में मैं प्राप्तहूं हे उत्तम ब्राह्मण! वारंवार इसप्रकार कहते हुए तिस मूर्ख से ४७ अत्यन्त कुतूहलको प्राप्तहोकर वे सखियां यह बोली कि हे दुर्बुद्धे! निश्चय जो इस स्त्री की इच्छा करते हो ४८ तो शीघ्रही गंगा और यमुनाके संगममें देहको छोड़िये फिर परस्पर वे सब सखियां मुख देखकर हँसती हुई ४९ तिस पतिव्रता स्त्री को लेकर अपने घरमें जातीभईं तदनन्तर हज़ार ब्रह्महत्या करनेवाला वह चाण्डाल मोहसे ५० गंगा और यमुनाके जलमें तिसको पूजनकर मरजाता भया तो उसी स्त्री के पति के समान आकारवाला, सब गुणयुक्त और बलवान् ५१ अपने वृत्तान्तको स्मरणकर होताभया तदन-न्तर वह प्रणिधि बनियां भी तिसी शुभ दिनमें ५२ वाणिज्य करके अपने स्थानको आताभया और चाण्डाल ब्राह्मण भी तिसी के घर में प्रवेश करता भया ५३ जो कि प्रणिधि बनियां के समान रूप, अवस्था और गुणों में था एकही आकारके, आगे स्थित, गुणों की खानि दोनों को देखकर ५४ वह पतिव्रता स्त्री यह चिन्तना करतीभई कि मैं किसकी स्त्री हूं और कौन मेरा स्वामी है ५५ तब

तो पद्मावती स्त्री कोमल अक्षरवाले वचनों से माधवदेव की स्तुति करने लगी ५६ कि गोविन्द, अनन्तमूर्ति, इन्द्रादि देवताओं से पूजित चरणकमलवाले, योगेश्वर, योग जाननेवालों में चेष्टारहित, योगके देनेवाले और योगियों से पूजन के योग्य आप के नमस्कार हैं ५७ कैटभ, मधु, कंश और चाणूर राक्षसके नाश करनेवाले आप के नमस्कार हैं ५८ वेद और पृथ्वी के उद्धार करनेवाले, पृथ्वी के उठाने के योग्य और दैत्यों के नाश करनेवाले आपके नमस्कार हैं ५९ गङ्गाजी के जलमें धोयेहुए दोनों चरणवाले, राजाओंके समूहों के नाश करनेहारे, रावण के वंशके नाश करनेवाले और दैत्यों के नाश करनेवाले आपके नमस्कार हैं ६० यज्ञकी निन्दा करनेवाले, म्लेच्छों के समूहों के नाश करनेहारे, हृदयरूपी कमल में आसन करनेवाले और सब वैरियोंके ध्वजारूप आप के नमस्कार हैं ६१ हे गोपीजनों के प्यारे, प्रभु, एक हाथ में पर्वत धारण करनेवाले, देवों के देव, लक्ष्मी मुख कमल के भँवर, विष्णु, कमलनयन, चक्रपाणि, कौमोदकी गदा हाथ में धारण करने वाले, विष्णु, पांचजन्य शंख और पद्म के धारण करने वाले आप प्रसन्न हूजिये आपके नमस्कार वारंवार है ६२। ६३ हे केशवजी आपके संसार कौतूहल मन्दिर, मोहान्धकार, विवेकदीप में आपकी माया से मोहित मैं नित्यही भ्रमतीहूं ६४ हे असुरों के वैरी! ब्रह्मा, इन्द्र और सूर्य आदिक श्रेष्ठ देवता आपकी माया को नहीं जानते हैं तब मानुषी मैं कैसे जान सकूंगी अब दयासमेत मेरे भ्रमको नाश कीजिये ६५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिसके स्तोत्रको सुन और देखकर भगवान् माधव, प्रभु, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफल के देनेवाले ६६ करोड़ सूर्य के समान दीप्तिवाले सहसा से प्रकट होजाते भये तब पद्मावती स्त्री भूमिको देखकर तिनके दोनों चरणों की वन्दना करती भई ६७ कि हे लक्ष्मी के पति! हे भुक्ति मुक्ति फलके देनेवाले! आपके नमस्कार हैं मुझ ज्ञानहीन के अपनी मति के भ्रमको नाश कीजिये ६८ तब श्री भगवान् बोले कि हे पवित्र अंगवाली! और हे सुन्दर कटिहांववाली स्त्री! भ्रमको छोड़िये ये दोनों तेरे पतिहैं इन

दोनोंकी सदैव एकभाव से सेवा कीजिये ६९ हे साध्वि ! जो तुम्हारा स्वामी प्रणिधि, मेराभक्त, जवान और बुद्धिमान् था वही अपने आप सुखके फल भोगकरने के लिये दोप्रकार का हुआ है ७० हे सुन्दर कटिवाली ! जैसे अनन्त रूपवाली लक्ष्मी मेरे साथ क्रीड़ा करती है तैसेही तुमभी इन दोनों के संग सदैव सुख भोगिये ७१ तब पद्मावती बोली कि हे देव ! हे दयामय ! मनुष्य एक स्त्री के दोपति होनेमें उसकी प्रशंसा नहीं करते हैं इससे लज्जारूपी समुद्रके कल्लोल में डूबतीहुई मेरा उद्धार कीजिये ७२ तब श्रीभगवान् बोले कि हे साध्वि ! हे श्रेष्ठ मुखवाली ! पृथ्वी में जो निश्चय तुम अयशसे डरती हो तो इन दोनों समेत मेरे पुरको प्राप्त होवो ७३ तदनन्तर भगवान् की आज्ञा से शीघ्र ही विमान आता भया तब पद्मावती स्त्री दोनों पतियों को लेकर वैकुण्ठ जाने को प्रारम्भ करती भई ७४ तिस पीछे हे जैमिनि ! दोनों पतियों समेत मार्ग में जाने लगी तो स्त्री संयुक्त, रथ में स्थित एक महात्मा को देखती भई ७५ जो कि कमलपत्र के समान नेत्रों को धारे, अलसी के फूल के समान दीप्तिवाले, चारभुजा धारण कियेहुए दूतसमूहों समेत गरुड़के ऊपर बैठे हुए हैं ७६ तब श्रेष्ठ अंगवाली पतिव्रता स्त्री तिन विष्णुजी के दूतों से यह पूंछती भई कि यह रथ में स्थित पुरुष कौन है ७७ और कमलके समान नेत्रवाले, महात्मा, विष्णुजी के समान, शंख, चक्र आदिक हाथोंमें लिये हुए आप सब लोग कौनहैं ७८ तब विष्णुजीके समान पराक्रमी, श्रेष्ठ, आनन्दसंयुक्त वे भगवान् के दूत वरंवार हँसकर यह बोले ७९ कि हे साध्वि ! हम लोग विष्णुजी के दूतहैं पुण्यात्मा इस मनुष्य को लेकर उदार और उत्तम विष्णुजी के लोक को जाते हैं ८० तब पद्मावती बोली कि हे महात्मा विष्णुदूतो ! किस पुण्य के प्रभावसे यह इस गति को प्राप्तहुआ है यह मुझसे कहिये ८१ तब विष्णुजी के दूत उससे बोले कि यह बृहद्ध्वज नाम राक्षस, संसार में शोक करनेवाला, वन आदिकों का बसनेहारा, महाबल पराक्रमी, ८२ पराई स्त्री और पराई द्रव्य का हरनेवाला, वैरियों के करने में उद्यत, गौवों के मांसका खाने वाला,

निष्ठुरवचन कहनेवाला और देवोंकी निन्दा करने वाला है ८३ हे पतिव्रते! जो जो पापों में रत कर्म हैं सो इसने सदैव किये हैं स्वप्नमें भी शुभकर्म नहीं किया है ८४ हे सुन्दर करिहाँववाली! यह काम से पीड़ित निरन्तर रथपर चढ़कर पराई स्त्री हरने के लिये आकाश में घूमकर ८५ जिस जिस सुन्दर यौवनवाली स्त्री को जहां जहां देखताथा तहां तहां पर तिस तिस को काम से आतुर होकर बल से आलिङ्गन करताथा ८६ एक समय में भीमकेश नाम राजा की प्यारी स्त्री, सुन्दरी, नवयौवनवाली, क्रीड़ाके मध्य में स्थित, ८७ सोनेके फूल के समान दीप्तिवाली को देखकर प्रेम से यह बोला कि तुम कौनहो और यहां क्या कररहीहो ८८ तब भीमकेश राजा की स्त्री बोली कि मैं सुरतशास्त्र के जाननेवाली केशिनी नाम से भूषित हूं ८९ सब गुण जाननेवाली, प्रेमसे प्रसन्न, अपने वंश में उत्पन्न, दोष से हीन मुझको राजा क्षणभर भी नहीं देखते हैं ९० खण्डित चर्चा वाले पति से नित्यही मैं यहां स्थित की गईहूं और विरह की अग्नि से तप्त होकर अपने कर्मको शोच करती हूं ९१ हे सत्तम! तुम कौनहो और कैसे इस बाग़ में प्राप्त हुएहो यह सब प्रसन्न होकर कहने के योग्य हो ९२ तदनन्तर राक्षस उससे बोला कि हे पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली! मैं मायावी राक्षस तेरे आलिंगन करने के लिये यहां आया हूं ९३ हे पतले अंगवाली! अप्रसन्न और सदैव दोष देखने वाले अपने स्वामी को त्यागकर मुझको सेवन कर मैं सब उत्तम सुखको तुझे दूंगा ९४ तदनन्तर यह स्त्री आनन्द से हँसकर इस राक्षसेन्द्र को भुजारूपी लतासे बांधकर मुखमें मुखको लगाती भई ९५ तब हे सुन्दर करिहांव वाली! यहराक्षस ज्ञानके उद्वेगसे विह्वल तिस स्त्री को आलिंगनकर उसके साथ सुन्दर रथपर चढ़ता भया ९६ फिर वायु के समान वेगवाले रथपर चढ़े हुए, स्त्री और पुरुषके भाव को प्राप्त होकर वे दोनों अत्यन्त कौतुक से आकाशमार्ग में जातभये ९७ तदनन्तर राक्षस उससे बोला कि हे श्रेष्ठ मुखवाली! देखो तुम्हारे स्वामी के देशसे गंगासागर के संगम में प्राप्तहुए हैं ९८ तब रथ

में चढ़ी हुई यह स्त्री अत्यन्त अपराधों से गंगासागर के संगमको देखकर शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाती भई ९९ तब तो प्राणरहित उस साध्वी को देखकर यह राक्षस भी बहुत रोकर शीघ्रही मृत्यु कोप्राप्त होजाताभया १०० अब भगवान् की आज्ञासे इनके पाप नाश होगये और पुण्यकर्मवाले होगये इससे इन दोनों को इस समय में वैकुण्ठको लियेजाते हैं १०१ जल, स्थल वा आकाश में गंगासागरके संगम में देह छोड़कर पापीभी परमगति को प्राप्तहोते हैं १०२ यह तीनों लोकमें दुर्लभ तीर्थ है इस गंगासागरके संगम में माघमें और फाल्गुन के शुक्लपक्षकी एकादशी में व्रतकर १०३ ब्राह्मण का मारनेवाला भी निस्सन्देह शुद्धिको प्राप्त होता है गंगा-सागर के संगम में स्नानकर माधव हरिजी के दर्शन कर १०४ स्वा-मिकार्त्तिक का मुख देखने से फिर जन्म नहीं होताहै स्वामिकार्त्तिक जी साक्षात् हरिही हैं इसमें सदैव भेद नहीं किया गयाहै १०५ जे स्वामिकार्त्तिकजी को देखते हैं ते सब मोक्षको प्राप्त होते हैं सब तीर्थों से अधिक तीर्थ गंगासागर के संगम को सुनो १०६ इसमें जल, स्थल वा आकाश में मरकर मोक्ष को मनुष्य पाता है व्यासजी बोले कि हे जैमिने! ऐसा कहकर वे विष्णुजी के दूत उन दोनोंको लेकर १०७ सहसासे आकाशमार्ग होकर विष्णुजी के घर को जातेभये और पद्मावती साध्वी दोनों पतियों से युक्त भी १०८ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के देनेवाले विष्णुजी की सारूप्यताको प्राप्त होकर हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तहां के दुर्लभ सब भोगों को भोगकर १०९ श्रेष्ठ ज्ञानको प्राप्त होकर भगवान् की सारूप्यता को प्राप्त होतीभई सब तीर्थमयी गंगाजी हैं और सब तीर्थमय हरिजी हैं ११० तिससे गंगाजी और हरिजीकी भक्ति कही है गंगासागर के संगममें पहले माधव नाम राजा १११ स्त्रीसमेत बहुत काल तपस्याकर मोक्ष को प्राप्त हुआ है ११२ तब जैमिनिजी बोले कि हे सत्तम व्यासजी! तुम्हारा कहा हुआ माधव कौन था क्या कर्म उसने किये थे और कैसे तपस्याकी थी यह सब मुझसे कहिये ११३ तब व्यासजी बोले कि हे महाबुद्धिमान्! हे विप्रर्षे!

तिस महात्मा माधवजीका चरित्र संक्षेप से कहताहूं सुनिये ११४॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे व्यासजैमिनिसंवादे प्रयागवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय

वीरवर का सुषेण राजाकी सभा में जाना॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! देवताओं की नगरीके समान, सब लोकोंमें प्रसिद्ध, गुणियोंके गणोंसे युक्त तालध्वजा नाम नगरी है तहांपर शुद्धकुल में उत्पन्न, धर्मात्मा, सत्यवादी, प्रजाओं के पालनमें तत्पर विक्रमनाम राजाहुए २ तिनकी पृथ्वी में दुर्लभ, अपने मुखकी दीप्तिसे चन्द्रमाकी दीप्ति जीतनेवाली हारावती नाम स्त्री हुई ३ तिस राजाके स्त्रीगणों में सोई प्यारी स्त्री हुई जैसे सब नदियों में गंगाजी हुई हैं ४ हे ब्राह्मण! कुछकाल में तिस स्त्री में सब लक्षण संयुक्त पुत्र उत्पन्न होता भया ५ तब सब शास्त्र का जानने वाला चक्रवर्ती राजा शास्त्र में कहीहुई विधि से माधव यह नाम करते भये ६ तदनन्तर यह माधव ब्राह्मण बलवान्, सद्गुणयुक्त कुछकाल में सब विद्यारूप नदी के पार होगया ७ तदनन्तर वह राजा युवराज से राज्य में सब देवगणों से पूज्य पुत्र को अभिषेक करता भया ८ एक दिन में हाथी, घोड़ा, रथ और पैदलकी सेनासे युक्त माधव राजा कौतुकसे शिकार खेलने के लिये बड़े वनको जाताभया ९ तहां पर बहुत जन्तुओं को मार कर मध्याह्न समय में वन से नगर जाने के लिये उद्यम करता भया १० सेनासमेत आनन्द से माधवराजा नगरको आता था कि उसने तालाब में स्नानमें तत्पर एकस्त्री देखा ११ जो कि स्नानके योग्य द्रव्य और सुन्दर कपड़ों को देहमें पहने हुई, अपने मुखकी सुन्दरता से पूर्णचन्द्रमा को जीतने वाली, १२ सोने के कुण्डल दोनों कपोलों में धारेहुई, तिनसे कपोलों को प्रकाशित करती हुई, सुन्दर भारी बालों से करिहांव के पीछले भागको आच्छादित कियेहुई, पवित्र हासयुक्त, १३ सोनेकी कमलकी कली के समान, पवित्र ऊंचे स्तनवाली, सिंह के समान पतले करिहांव

युक्त, वसन्त ऋतु के कोकिलाके समान स्वरवाली थीं १४ इस सुन्दरी को कामदेव महात्माने राज्य में युवापुरुषों के मन हरनेवाली पताका की नाईं आरोपित किया था १५ ऐसी स्त्री को एकान्त में देखकर पृथ्वी में प्राणको धारण करतेहुए कौन पुरुष कामदेव के वशमें न प्राप्त होजावे १६ तदनन्तर तिस श्रेष्ठ मुखवाली को देखकर विक्रमराजा के पुत्र माधव जी कामदेव के बाण से घावयुक्त हृदय होकर यह चिन्तना करते भये १७ कि इस स्त्री के समान पृथ्वीमण्डल में कोई स्त्री मैंने नहीं देखी इसको यहां आलिंगनकर सफलजन्म करूंगा १८ क्योंकि अवस्था, तेज और गुणों से मैं सब मनुष्यों में श्रेष्ठहूं यद्यपि यह इन्द्रकी भी स्त्री होगी तथापि इस समय में लेनेयोग्य है १९ पराई स्त्री के हरने में इससमय में जो दोष होगा तिसके कहने को कौन समर्थ है जिससे कि मेरा पिता ही राजाहै २० ऐसा उस कामी ने दृढ़मन से चिन्तना कर सेनाको दूर खड़ीकर जहां वह स्नान करती थी वहां को जाता भया २१ पृथ्वी में ऐश्वर्य, मद और काम ये तीनों ज्ञान के तेज को निस्सन्देह हरलेते हैं २२ इनके पिता तो पापों के नाश करनेवाले, मनुष्यों के धर्म के रक्षा करने वाले हैं और कामदेव को धिक्कार है जो आपही सम्पूर्ण संसारको मोहित करता है २३ तिन माधव राजाको बड़े वेगसे आते देखकर अकेली वह स्त्री बड़ी चिन्ता से व्याकुल होती भई कि यह मेरे साथ रमण करेगा २४ मेरे मनमें यह वर्तमान है कि मुझ अकेली, युवावस्थायुक्त, कान्तार में स्थित को देखकर यह वेगसे दौड़ा आता है २५ सब मुनि यह कहते हैं कि रक्षा कियाहुआ धर्म रक्षा करता है परन्तु नहीं जानाजाता कि यहां पर क्या होगा २६ सहाय हीन स्थानमें शत्रुलोग आगेही दौड़ते हैं तहां से भागना अच्छा होता है निवास होना प्राणों को नाश करताहै २७ ऐसा विचार कर वह श्रेष्ठ करिहांव वाली स्त्री बाईं काँख में घड़े को लेकर डरसे तालाबसे भागने का मन करती भई २८ तदनन्तर माधवजी अत्यन्त वेग से तिसके आगे जाकर हाथ फैलाकर बोले २९ कि हे श्रेष्ठ स्त्री! हे पवित्र देहवाली!

सुन्दर यौवन के बलसे मेरा मन हरकर भागीजाती हो मैं चेतनरहित हत हुआ हूं ३० हे चञ्चल कटाक्ष और सुन्दर देहवाली! तुम्हारा कौन पतिहै क्या स्वर्ग से आईहो तुम्हारे समान पृथ्वी में कोई नहीं है ३१ हे सुन्दरि! हे कमल समान मुखवाली! तुम यहां पर श्रेष्ठ, सबलक्षण संयुक्त होकर दासी की नाईं कैसे पानी लिये जाती हो ३२ छाती में सोने कैसे स्तन सदा धारण किये हो और कोमल अंगवाली होकर कखरी में इस अद्भुत जलके घड़ेको लिये हुएहो ३३ सूर्य की किरणसे अत्यन्त तप्तमार्ग में लोहित पांयेंकी अंगुलीके अन्तर दुपहरियाके फूलकी कली के समान शोभित होते हैं ३४ हे सुन्दर कटिहांव और श्रेष्ठ मुखवाली! मेरे दर्शनहीमात्र से तेरे दुःखका अन्त होजायगा ३५ श्रीमान् विक्रमराजा का पुत्र माधव नामी मैं हूं हे सुन्दरि! सब भावों से तुम्हारा श्रेष्ठ अंग हूंगा ३६ हमारे स्त्रीगणों के मध्यमें तुम इस प्रकार सुभगा होगी जैसे भँवरेको सुन्दर फूलों के वल्ली के मध्यमें चमेली होती है ३७ अथवा अभिमान से तुम हमारे वचन के टालने की इच्छा करती हो तब भी तुमको मैं नहीं छोडूंगा क्योंकि मैं राजाका पुत्र हूं ३८ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! माधवजी के वचन सुनकर वह स्त्री राह छोड़ कर नीचे का मुख कर स्थित होकर धीरे धीरे बोली ३९ कि कभी दूसरे पुरुष को मैंने वचन नहीं सुनाये तथापि लज्जा छोड़कर आपके आगे कहतीहूं ४० हे महावीर! सुबाहु क्षत्रिय की प्यारी स्त्री चन्द्रकला नाम होकर मैं देव पूजा के लिये जल लिये जाती हूं ४१ जो वचन आपने कहे हैं वे आपके कुलके उचित नहीं हैं क्योंकि आपके वंशवाले सब पराई स्त्रियों में नपुंसक होते हैं ४२ मैं अकेली स्त्री हूं और वीरोंसे उत्पन्न आप हैं यहांपर बलसे मेरा आलिंगन करने से आपका क्या यश होगा ४३ पराई स्त्री का आलिंगन करने से क्षणमात्र सुख होताहै इसलोक में अयश शेष रहता है और सौकल्प दुःखही अधिक होताहै ४४ हे शूर! यह कर्मभूमि है यहांपर पुण्य कीजिये पराई स्त्री के हरने में कभी चित्त न कीजिये ४५ लोभसे काम होताहै कामसे पाप वर्त्तमान होताहै पापसे

मृत्यु होती है और मरने में दुस्तर नरकमें स्थिति होती है ४६ सब तुम्हारे गुण व्यर्थ और तुम्हारा जन्म निष्फल है क्योंकि काम के वश में प्राप्त होकर तुम पराई स्त्री से रमण करनेकी इच्छा करतेहो४७ मांस, मूत्र, विष्ठा और हाँड़से बना हुआ मेरा देह है यह देखकर भी कामदेव के वशमें प्राप्त हुएहो ४८ राजाके वंश में उत्पन्न होनेसे क्या पुरवासियों से भी नहीं डरतेहो और मस्तक के ऊपर गर्जते हुए समवर्त्ती को नहीं देखतेहो ४९ सब ज्ञानसे वर्जित मछली कटिया को ग्रसलेती हैं और ज्ञानी कटियाको पाकर आप क्यों ग्रसेंगे ५० तीनों लोकों में ज्ञान सम्पदाओं का परमपद होताहै और अज्ञान मनुष्योंकी आपदाओं का परमपद होताहै ५१ तिस स्त्री के कहे हुए वचन सुनकर काम से मोहित, नम्रतायुक्त माधवजी फिर बोले ५२ कि हे प्रिये ! तुम्हारे देखने रूप बाणकी धारासे जर्जर मनवाले मेरी रक्षा कीजिये मैं तेरी शरण में प्राप्त हूं ५३ जबतक युवावस्था में स्त्री स्थित रहती है तबतक अत्यन्त प्यारी होती है कमलनाल की कली कमलिनी में सोने का भँवरा नहीं जाता है ५४ हे मृगनयनी! प्रसन्नहूजिये और मुझ अपने सेवककी रक्षाकीजिये तुम्हारी नीरसवाणी सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण होरहा है ५५ तब चन्द्रकला बोली कि हे महावीर ! दुःख को छोड़कर मेरे शुभ वचन सुनिये आपके दुःखके नाश करने के योग्यको मैं कहतीहूं ५६ प्लक्षद्वीपमें समुद्रके पार इन्द्रकी पुरी के सदृश प्रसिद्ध दीप्यंतीनाम पुरी है ५७ तहांपर महायशस्वी, सब गुणों से युक्त, प्रताप में अग्निके समान, बलवान्, गुणाकर नाम श्रेष्ठ राजा है ५८ तिसकी सब लक्षणसंयुक्त, सेवासे स्वामी के हृदयको वश करनेवाली, मनुष्यों के ऊपर दया करनेवाली सुशीला नाम स्त्री है ५९ हे वीर ! तिसकी कोखि से उत्पन्न सुलोचना नाम कन्या है यह कन्या रूप से सब सुन्दरी समूहों को जीते हुए है ६० पृथ्वी में तिसके रूप और गुण समूह के वर्णन करने में कोई योग्य नहींहै तिसके रूपके दर्शन देख कर ब्रह्माजी आपही दूसरी को रचतेभये हैं ६१ हे महावीर राजपुत्र ! सुन्दरी मैं तिसकी दासी हूं भाग्यसे आपके देश में प्राप्तहुई

हूं ६२ तिसके समान सुन्दरी स्त्री नहीं है और आपके समान सुन्दर पुरुषभी नहीं है जो स्वर्गभोग की इच्छा करते हो तो विवाह से तिसको ग्रहण कीजिये ६३ बलवान् सिंह कोड़े में प्राप्तहुई भी सियारी को छोड़कर यत्नसे सिद्धि के लिये क्या हस्तनी को नहीं धारण करता है ६४ संसार में उद्योगी पुरुष परमलक्ष्मी को प्राप्त होताहै पृथ्वीमें उद्योगके विना कहिये क्या कार्य होता है ६५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस स्त्री के वचन सुनकर भगवान् के भजन करनेवाले माधवजी कामके भावको दूरकर तिस श्रेष्ठ मुखवाली से यह बोले ६६ कि हे कमलके समान मुखवाली! हे सुन्दर करिहांव वाली! किस चिह्नसे तिस कन्याको मैं जानूंगा जो तेरी कृपा मुझपर हो तो यह मुझ से कहिये ६७ मैं मूर्ख मनुष्य समुद्रके पार कैसे जाऊंगा और तिसके कैसे मुझको दर्शन होंगे ६८ तब चन्द्रकला बोली कि तिस स्त्रीके बायें जंघे में तिलके सदृश तिलकहै तिस के देखने ही से तुम सुलोचना को जानजावोगे ६९ तुम्हारी घोड़शाल में महात्मा, उच्चैःश्रवा घोड़ा का पुत्र, सब जगह जाने वाला उत्तम घोड़ा है ७० उस वेगसे पवन के सदृश श्रेष्ठ घोड़ेपर चढ़ कर समुद्र के अन्ततक चलेजावोगे जहां से पृथ्वी सुखसे साध्यहै ७१ तब राजाका पुत्र सेनासमेत घरको आता भया और पतिव्रता चन्द्रकला प्रसन्न होकर अपने घरको जातीभई ७२ फिर माधवजी तिस स्त्री के वचनकी चिन्तना कर अत्यन्त वेगयुक्त चिन्तासे व्याकुलचित्त होकर सहसा से घोड़शाल को जाते भये ७३ तहां पर पराक्रमयुक्त माधवजी गुणयुक्त महाबली घोड़ों से बोले ७४ कि तुम सब महात्मा सब लक्षण संयुक्त हो समुद्रके पार मुझे लेजाने में कौन घोड़ा समर्थ है ७५ तदनन्तर डर से सब घोड़ा तिसके वचन सुनकर परस्पर पृथ्वी की ओर मुखकर खड़े रहजाते भये ले जानेमें कोई उद्यत न हुए ७६ तिस पीछे सब लक्षणसंयुक्त एक घोड़ा माधवजी के आगे जाकर ये वचन बोला ७७ कि हे राजपुत्र! मैं आपको निस्सन्देह समुद्र के पार लेजाऊंगा किन्तु मेरे दुःखों को सुनिये ७८ और के भोगों से बचा हुआ तृण तो मेरा भोजनहै,

करोड़ गांठोंसे युक्त रस्सियों से मेरा बन्धन है ७९ हे वीर! मुझ बली ने स्वप्नमें भी धान्य नहीं देखा है हे राजपुत्र! और भोगों की क्या कथा है ८० हे वीर! गौरवके विना सज्जनों के पराक्रम नहीं होता है जैसे अग्नि विना काष्ठ के घी आदिकों से कैसे उत्पन्न होसक्ती है ८१ मैं तो इस प्रकारका हूं और ये सब घोड़े अनेक प्रकारके गहनों से युक्त हैं सब गहनों से भूषित सिंह के समान कुत्ते नहीं होसक्ते हैं ८२ हे प्रभो! हे राजन्! प्रदक्षिणाकारता से पर्वत, द्वीप और समुद्रपर्यन्त पृथ्वी को क्षणमात्र में जासक्ताहूं ८३ तब माधवजी बोले कि हे घोड़े! मेरे पिताके कियेहुए सब दोषों को क्षमा कीजिये अबसे लेकर मेरी घोड़शाल में तुम मुख्यहुए ८४ दूसरे से दिया हुआ सन्ताप उत्तम में सदैव नहीं स्थित रहता है जैसे अग्नि से तपा हुआ भी जल क्षणमात्र में शीतलता को प्राप्त होता है ८५ ईख अपने मीठेपनों से क्षणमात्र तृप्तिके लिये होती है ऐसा कहकर राजपुत्र तिस घोड़ेके नमस्कार कर ८६ तिसकी पीठ पर चढ़कर प्रचेष्टा नाम नौकरको लेकर समुद्रको लांघकर ८७ सब गुणों से युक्त, इन्द्र की पुरी के सदृश, प्रकाशित हुए महलों की पंक्तियों से उज्ज्वल पुरी में जाता भया ८८ तहां पर माधव ब्राह्मण गंधिनी नाम स्त्रीको समीप देखकर मुसकाकर कोमल वचन बोला ८९ कि हे वृद्धे! हे मातः! मैं धनवान् माधव नाम परदेशी ब्राह्मणहूं एक दिन तुम्हारे स्थान में ठहरनेकी इच्छा करताहूं इसमें तुम्हारी क्या आज्ञा है ९० तब तो अतिथि की भक्तिनि गन्धिनी प्रसन्न होकर तिस अतिथिको लेकर अत्यन्त भक्ति से अपने घरको जाती भई ९१ और यथोचित कही हुई विधिसे तिसका पूजन करतीभई तब माधव ब्राह्मण चिन्ता से व्याकुलमन होकर तिस रात्रिको वहीं बिताते भये ९२ तदनन्तर प्रातःकाल माधव ब्राह्मण गन्धिनी के आगे सब कार्य कहते भये ९३ और गन्धिनी सुलोचना देवी का तिसी शुभदिन में गन्धादिवासनकर्म रचती भई ९४ राजपुत्री का अधिवासनकर्म सुनकर माधवजी शोकसमुद्र के कल्लोल के समूह होजाते भये ९५ कि जिसके लिये राज्य,

स्थान और बान्धवोंको छोड़कर समुद्र मैंने लांघा ९६ आजही भाग्य से तिसका अधिवासन होगा जितने परिश्रम मैंने किये वे सब निष्फल होगये ९७ किन्तु मनुष्य नहीं बकेंगे कि माध्वी में मुग्धहोकर सबको प्राप्त होगया कार्य्य का निश्चय जानकर कौन भग्न उद्यम न होगा ९८ यह मन से माधव वारंवार चिन्तनाकर माला और फूलादि में अपना वर्णित प्रेम लिखता भया ९९ कि हे कन्ये ! तालध्वज के राजा विक्रम महात्मा का पुत्र माधव नाम मैंहूं १०० हे कन्ये! तहांपर कोई चन्द्रकला नाम दासी है उसने निश्चय मेरे आगे तुम्हारे गुणसमूह कहे हैं १०१ इस से तुम्हारे गुणसमूह में संलग्नचित्त होकर मैं गंभीरसमुद्र नांघ कर घोड़े पर चढ़कर तुम्हारी पुरी को आयाहूं १०२ हे सुलोचने कन्ये ! इस समय में मुझको वरके भावसे वरिये जिससे संसार के मध्य में मैं तुम्हारी शरण में प्राप्त हुआहूं १०३ जैसे गुणवती तुमको और मनुष्य न जाने १०४ कमलिनी के गुणको भौंराही जानता है मेढ़क नहीं जानता है और जैसे शुभ्र मेघ को एक आकाशही का उदय नहीं है १०५ तिसपर भी कुमुद्वती चन्द्रमा के विना और को नहीं सेवती है तदनन्तर वीर माधवजी मालिनके हाथ कुछ लिखकर १०६ नम्रतापूर्वक सोने की अंगूठी समेत देते भये तब गन्धिनी मालिनि उसलेख को फूलके मालाओं के बीच में अंगूठी समेत कर १०७ राजपुत्री के पास शीघ्रही जाती भई और फूल के मालाकी बलिदेकर १०८ डरसे कुछ दूर जाकर हाथ जोड़ कर स्थित होगई तब राजकन्या अंगूठी समेत लेखको १०९ देख कर अत्यन्त पण्डित इसने मूलसे सब पढ़लिया और तिसीकी पीठपर तिसके योग्य उत्तर ११० लिखा विस्मय युक्त हुई कन्याने जो जो लिखा वह सब कहते हैं कि हे राजपुत्र ! हे महाबाहो ! तुम्हारे वाक्य मैंने सब सुने १११ अब हे अत्यन्त श्रेष्ठ ! मेरे ये यथोचित वचन सुनिये इस समय में मेरा अधिवासनकर्म है और कल्ह विवाह निश्चय होगा ११२ पिताजी का जो संमतकार्य होता है पृथ्वी में उसको कोई नहीं छोड़ता है दुःख से साध्यकार्य में मनुष्यों

को अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिये ११३ क्योंकि कार्य के सिद्ध होने में परिश्रम नहीं होताहै नहीं सिद्ध होने में श्रमही होता है तिसपर भी कहतीहूं सुनिये जिससे आप मुझको प्राप्त होवें ११४ जिससे आपने समुद्र लांघा मुझको यह विद्याधर वर प्रदक्षिणी करना चाहिये ११५ अनेक प्रकार के गहनों से भूषित होकर मैं तिसके आगे बायें भुजाको ऊपर करके जाऊंगी जिससे मेरे लेनेमें जो समर्थ होगा सोई मेरापति होगा सत्यही सत्य मैंने इस पत्र में लिखा है ११६। ११७ और प्रकार से दृढ़कार्य लंघन करने में नहीं समर्थ है यह राजकन्या लिखकर तिसके हाथ में देती भई ११८ तब गन्धिनी तिस पत्रको लेकर माधवजी के समीप जाती भई राजकन्याने जो पत्र में लिखा था तिसको पढ़कर माधवजी ११९ फिर अत्यन्त कौतुकों से लिखतेभये कि हे कन्ये! हे धन्ये! हे धन्य कुलमें उत्पन्न होनेवाली! तुमने जो कहा १२० सोई सब मेरा भी मत है कोई इसमें संशय नहीं है तदनन्तर गन्धिनी फिर तिस के निकट जाकर १२१ सुलोचना को सुन्दर अक्षरवाले लिखन को देती भई तदनन्तर माधवसे अंगीकार किये हुए लिखन को जानकर १२२ सुलोचना अत्यन्त प्रसन्न और वारंवार विस्मययुक्त हो गई तिसमें संशय न करना चाहिये जो माधव ने स्वीकार करलिया है १२३ तब क्या आपही इन्द्रहीहो वा जिसकी माया से माधव पुरुष इस लोक और परलोक में सदैव स्नेह का पृथ्वीपति है १२४ विना अच्छे प्रकार दर्शन करनेसे मैंने वरके भावमें नहीं वरण किया है यह चिन्तनाकर वह पतिव्रता स्त्री वारंवार श्वास लेकर १२५ स्नान के बहाने से सखियोंसमेत गन्धिनी के घर को जातीभई तब गन्धिनी मालिनि हाथ में तिस कन्याको पकड़कर १२६ मंचान के ऊपर सोते हुए माधवजी को दिखलाती भई तबतो काम के समान तिसको देखकर १२७ रोमांचयुक्त सब अंग और उदात्तको क्रम से देखती भई और तिसके दोनोंनेत्रों को जहां जहां शुद्धकरती है १२८ कष्टकी दृष्टिसे तिस नामसे अलग नहीं जाती है यह साक्षात् कामदेव वा देवकीजी के पुत्र कृष्णजी १२९ वा विषयों के स्वामी साक्षात्

महादेवजी तो नहीं हैं संसार के मध्य में इनरूपों से मनुष्य नहीं उत्पन्न होताहै १३० इसस्वामी से मुझ हरिणी के समान दृष्टिवाली का जन्म सफल होगा मेरी भक्ति के वश होकर ब्रह्माने अत्यन्त यत्न से १३१ जब मैं कन्या हुई हूं तब इसको क्या तो नहीं रचा है अबसे लेकर यह स्वामी अपने आप निस्संदेह नहीं है क्या १३२ ऐसा कहकर वह अपने घरजाने के लिये बुद्धि करती भई तब गन्धिनी बोली कि हे भद्रे! कन्ये! यह युक्ति तुम हृदय में सेवन करो १३३ जैसे सुन्दर मूर्ति पुरुष तैसे ही निन्दा से नहीं प्रकाशित होता है उल्लास, देहका भंग, मन्ददृष्टि और विस्मित १३४ ये सब विष्णु जी के चिह्न हे मृगनयनी! इसके निद्रा में भी हैं ओष्ठों के पुटके काटने के आक्षेप से निश्चय नहीं उठेगा १३५ तब धीरे धीरे माधवजीके हाथ को अपने हाथों से दिखलातीभई कि तुम्हारे देखने के लिये राजकन्या का आगमन हुआहै तिसको सुनिये १३६ यह सुनकर सम्भ्रम से आक्रांतमन नम्रता से नम्र होकर माधवजी उठकर तिससे बोले १३७ कि हे कन्ये! मेरा जन्म और परिश्रम सफल होगया जो तुम्हारे पवित्र कमलरूपी मुखको साक्षात् मैंने देखा है १३८ सब यौवनों से वरके भावसे मुझ को तुम वरो हे सुन्दरि! तुम्हारे योगका वर मेरे विना पृथ्वी में और नहीं है १३९ तब सुलोचना बोली कि हे सुन्दरगतिवाले बड़ी भाग्यसे तुम हमारे पति होगे मैंने जो वचन कहे हैं सोई निश्चय दृढ़हैं १४० हे महाभाग! आज्ञादीजिये तो मैं अपने मन्दिरको जाऊं तब माधवजी बोले कि हे कन्ये! जो यह कहूं कि स्थित रहो तो अभिमान होताहै १४१ और हे पवित्र अंगवाली! जाइये यह वचन मेरे मुखसे नहीं निकलताहै इससे आपही विचार कर जो युक्तहो सो कीजिये १४२ यहां पर सत्यवचन में तत्परहोगी माधव के इसप्रकार कहने से प्रसन्न होकर वह कन्या अपने घरको चली गई १४३ और बहुत परिच्छदों से युक्त माधवजी तहांहीं स्थित रहे और दूसरा वर विद्याधर भी इसी प्रकार स्थित रहा १४४ और वहांके स्थित सब मनुष्य माला और चन्दन से विभूषित होकर सुन्दर वस्त्र धारण कर देवसमूहों की

नाईं प्रकाशित होतेभये १४५ तिस पुरमें कहीं गान, कहीं नाच, कहीं कोलाहल का शब्द और किसीने कहीं पर दीपों की पंक्ति जलाई १४६ सप्तिसमूहों के शब्द, हाथियों के शब्द और पक्षियों के आनन्द के शब्दों से दशोदिशा पूर्ण होगईं १४७ अनेकप्रकार के पताकाओं के समूह और उज्ज्वल राजाके स्थानों से चारोंओर सब आकाश व्याप्त होगया १४८ कोई शंख, ढक्का, डिंडिम, झर्झरको और कोई मधुकोहल आदिक को बजाने लगे १४९ तदनन्तर चन्द्रमाके समान मुखवाली कमलनयनी सब स्त्रियां ललित गीतों को गाने लगीं १५० तहां की पृथ्वी परस्पर यौवन से घिसने से गिरेहुए माला और पसीने के जलसे गिरती हुई सुगन्धों से कन्या की नाईं प्रकाशित होती भई १५१ तब सुन्दरी सुलोचना गम्भारीके काष्ठ के बनेहुए पीढ़े पर चढ़कर जातिवालों से आच्छादित होकर श्रेष्ठस्थान को प्राप्त होती भई १५२ इस अंतर में विक्रम के पुत्र माधवजी शय्या के ऊपर निद्रायुक्त होकर भाग्यसे सुन्दर नेत्र वाली सुलोचनाके विवाह कार्यको न जानते भये १५३ ब्रह्माकी सैकड़ों मायासे मोहित मनुष्यों का कभी संसार में सुख नहीं होता है तिससे अपने संकेत की विधिको यह मनुष्य बिसरा कर सुख से निद्रा को सेवन करता भया १५४ देखो अग्नि के डर से कमलिनी जल में पैठी तो वहां हिमकी अग्नि से जल में जलगई इससे जो जिसका कर्म्म है उससे और तरह नहीं होता है १५५ मनुष्य वेद आदिक सब शास्त्र पढ़ते हैं परन्तु राजाकी सेवाही करते हैं और उग्र तपस्या प्रतिदिन साधन करते हैं तब भी अत्यन्त भाग्यहीन को लक्ष्मी नहीं सेवन करती है १५६ दुःख और सुख मस्तक के ऊपर स्थित रहते हैं अन्यकालमें हठसे अन्य प्राप्त होजाते हैं १५७ दुःखभागी, निद्रायुक्त माधवको देखकर सुलोचना और माधव के संकेत को जानताहुआ प्रचेष्ट चिन्तना करता भया १५८ कि इस राजपुत्र को धिक्कार है जो दैवकी माया से मोहित होकर अपने संकेतको बिसराकर निद्रायुक्त है १५९ यह दुःखसे आई हुई कन्या इस समयमें वरके निकटहै और माधवके नयनमें क्या हुआहै संकेत

निष्फल जाता है १६० हे पापकर्मन्! तुम मस्तकमें निद्रा सेवन कर ठहरो यह श्रेष्ठ स्त्री घोड़ेपर चढ़कर मेरे लेजाने के योग्य है १६१ कन्यारत्न और रत्न दुर्लभ आनन्द से प्राप्त होते हैं तब इस दुर्मति माधवकी सेवासे क्या कार्य है १६२ सब भावसे धनके लिये राजाओं की सेवा की जाती है सोई जो आनन्दसे अपने आप मिलै तो उस समय में सेवाके दुःख से क्या है १६३ प्रचेष्ट यह चिन्तना कर घोड़े पर चढ़कर जहांपर राजकन्या थी वहां को आकाशमार्ग से जाता भया १६४ तो वरकी प्रदक्षिणा कर अपने समयको स्मरण करती हुई राजकन्या बायां हाथ उठाकर विद्याधरके आगे स्थित होजाती भई १६५ तब महाबलवान् प्रचेष्ट अत्यन्त वेग से तिस राजकन्या को हाथ पकड़कर घोड़े की पीठपर चढ़ा लेताभया १६६ और अत्यन्त वेगयुक्त मनके अपराधों से रहित होकर जाकर सुन्दर कांचीपुरी को देखकर हाथ पकड़कर सुलोचना से बोला कि समुद्र के भीतर किनारेही स्थित कांची नाम यह पुरी है १६७। १६८ यह सबसे विख्यात मनुष्यों को सब सुख देनेवाली है इसको देखिये यहांपर माधव वीर और तिस विद्याधरका १६९ किसीका भी भय नहीं है हे चन्द्रमा के समान मुखवाली! इसको देखकर मेरे चित्तरूपी इन्धन में लग्न काम के अग्निकी शिखाकी पंक्तिको १७० कुचरूप घड़ाओं के करों से सिद्ध मोक्षको हे सुन्दरि! दीजिये तुम्हारे इस पवित्र कमलरूपी मुखमें मेरा मुखरूप भँवर इस समयमें मधु पीने की इच्छा करता है इसमें हे प्रिये! तुम्हारी क्या आज्ञा है तुम्हारे पवित्र देह के छूनेसे कामदेव बाणों से मुझको व्यथा देता है १७१। १७२ हे प्रिये! रक्षा कीजिये तुम्हारी मैं शरण में प्राप्त हुआ हूं तिस मूर्ख को ऐसा कहते देखकर श्रेष्ठ स्त्री १७३ शोककी अग्नि से तप्त सब अंग होकर चित्त से चिन्ता करती भई कि यह मूर्ख दुष्ट चेष्टावाला प्रचेष्टही क्या ब्रह्माने १७४ मेरे माथे में वर लिखा है मैं इस समयमें मारीगई हूं कहां माता कहां पिता और कहां विद्याधर वर है १७५ इस करके मैं लाई गई हूं ब्रह्मा की घटना को धिक्कार है मनुष्य संसार में सदैव बहुत अभिमान करते हैं १७६

ब्रह्मा की घटनारूप तलवार से अभिमान के वृक्ष के काटने को भी मनुष्य जानता है तिसपर भी विपत्ति में धैर्य, निर्भयता, तत्पर होना १७७ चार उपाय दीर्घदर्शियोंने श्रेष्ठ कहे हैं यह सबकार्य में निपुण कन्या हृदय से देखकर कोमल अक्षरवाले वचनों से प्रचेष्ट से बोली कि हे वीर! मनको दृढ़ कीजिये मैं विना विवाही कन्या हूं १७८। १७९ हे दुर्बुद्धि! हे वीर! मोहसे मुझको कैसे आलिंगन कर जावेगा शास्त्रकी कहीहुई विधिसे विवाह से मुझको ग्रहण कीजिये १८० दासीकी नाईं तुम्हारी सेवा करूंगी इसमें कुछ संशय नहीं है तुम्हीं मेरे प्राण, मित्र, भूषण और बान्धव हो १८१ क्या तुम नीतिको जानते हो स्त्रियोंकी और में गति नहीं होती है विवाह के योग्य वस्तुओं को विवाहके लिये लाइये १८२ जड़ता के ग्रहण करनेवाले तुम जल्द मेरा विवाह करो ये भीतर दृढ़ और बाहर कोमल बेरके फलकी नाईं वचन १८३ सुलोचना के सुनकर मूर्ख प्रचेष्ट परम प्रीति को प्राप्त होजाता भया और फिर दुर्बुद्धि घोड़ा और तिस कन्या को एकत्र स्थितकर १८४ हाथ में कंकण लेकर सुलोचना के तिसी पुर को जाता भया तदनन्तर सुलोचना निश्चय तिस विधि की प्रशंसाकर चिन्तना करतीभई १८५ कि जिससे घोड़ा और मुझको छोड़कर यह मूर्ख प्रसन्न होकर जाता भया है इससे इस समयमें मुझको क्या करना कहां जाना और कहां स्थित होना चाहिये १८६ इस अत्यन्त संकटकार्य में मेरा निस्तार कैसे होगा जो मैं यहां स्थित रहूंगी तो वे लोग क्या कहेंगे १८७ पुण्यतीर्थ में प्राप्त होकर परलोक के जन्मकी कामना से मृत्युको प्राप्त होजाऊं तो यह कल्याणके करनेवाली है १८८ परन्तु मेरे वियोग से यह मूर्ख, विद्याधर और माधव ये तीनों स्मरण कर क्षणमात्र भी न जी सकेंगे १८९ मेरे स्थित रहने में इनके जीवनकी रक्षा होती है और मरने में ये तीनों नाशको प्राप्त होजावेंगे १९० यहां पर मेरे जन मेरा उद्देशकर जो प्राण देदेंगे तो निश्चय मैं तिनके मारनेकी भागिनी हूंगी १९१ इस समय में पुण्यतीर्थों में भगवान् हरि पूजनेयोग्य हैं तिनके प्रसन्न होने में मेरा सब कल्याण होगा १९२

प्राणों के नाश होजाने में सब नाश होजावेगा और तिनके स्थित होने में सब स्तोक स्तोकसे सिद्ध होजावेगा १९३ रात्रिकी अवशिष्ट अतिसुन्दरी कमलिनी चन्द्रमा के दूर होजाने में प्रकाशित सूर्य की किरणोंसे अत्यन्त सुगन्धित होनेके कारण क्या श्रेष्ठ भौंरे के संगमको नहीं प्राप्त होती है १९४ हे जाननेवालों में उत्तम! यह मनमें चिन्तना कर वह श्रेष्ठ स्त्री तिस बड़े वेगवाले घोड़ेपर चढ़कर तपस्या करनेके लिये गंगासागरके संगमको जातीभई १९५ तिस पुण्यकारी श्रेष्ठ गंगासागरके संगम में सोमवंश में उत्पन्न सुषेण नाम राजा बसता है १९६ तिस राजाकी सभा में जाने के लिये चित्तसे सुलोचना चिन्तना करती भई कि मुझ स्त्रीको कैसे राजा का दर्शन करना चाहिये १९७ दूबसमेत अधिवासनका सूत्र मेरी भुजा में बँधा है और स्त्रियों के संग से हीन घोड़े पर चढ़ी हुई मैं कन्या हूं १९८ निश्चय मेरे चरित्र मनके विस्मय करनेवाले हैं मैं अपनी आत्माको छिपाकर राजाकी सभाको जाऊंगी १९९ तब हे जैमिनि! वह स्त्री इन्द्रजालके प्रभावसे पुरुषका आकार कर सुधर्मा सभाकी नाईं राजाकी सभा में प्रवेशकर जाती भई २०० तिसको संपन्न की तरह शक्ति हाथ में लिये और घोड़े पर चढ़े हुए आते देखकर राजा आपही पूंछता भया कि तुम कौनहो और कहां से यहां आये हो २०१ राजाके ये वचन सुनकर पुरुषके आकारवाली कन्या सुन्दर हृदयवाले सज्जनों के आश्रय राजा के प्रणाम कर बोली २०२ कि हे देव! राजाका पुत्र वीरवर नाम मैं हूं इस समय आपकी राज्य में रहने के लिये आयाहूं २०३ जो जो कार्य्य असाध्य हैं तिनको यहां पर साधन करूंगा मेरे स्थित होने में मेरे स्वामी की कहीं हार न होगी २०४॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे वीरवरप्रदर्शो नाम पंचमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय

गंगासागरसंगम का माहात्म्यवर्णन॥

तब राजा बोले कि हे महाबाहो! यहां पर मेरी सुन्दर राज्य में

ठहरो मैं तुम्हारी जीविका करदूंगा इसमें संदेह नहीं है १ तब तो वीरवर तिस राजा के समीप में तिसीकी सेवा में मन लगाकर निरन्तर बसते भये २ हे जैमिनि ! तदनंतर एक समय में तिस पुर में सब प्रजाओं को भीमनाद नाम खड्ग निरन्तर पीड़ा देताभया ३ तब राजा क्रोधसे तिसके मारने के लिये वीरवर को भेजता भया तो वीरवर मनुष्योंसमेत गण्डक के मारने के लिये जाते भये ४ और शक्ति धारण करनेवाले वीरवर उस खड्गी को पर्वताकार, पृथ्वी में सोते, डाढ़ोंसे कराल मुख देखकर ५ क्रोधसे आकाश में घोड़े को घुमाकर मेघों के समान गंभीर वाणी से तिस खड्गीसे बोले ६ कि हे दुरात्मन् ! तुमने जे जे पाप के वृक्ष इकट्ठे किये हैं ते ते ऋतु को पाकर वृक्ष की नाईं फले हैं ७ और तुझ पापीने इस राज्य में जे जे प्राणी भक्षण किये हैं उन सब का यमराजके स्थान में तुझ को दर्शन होगा ८ अरे दुष्ट ! निद्राको छोड़ अपने अन्त करनेवाले मुझको देख रे महानिद्रावाले ! इस निद्रासे क्या तेरा होगा ९ तब तो भीमनाद निद्राको छोड़कर क्रोध से लाल नेत्रकर धूलिसे धूसर सब अंग होकर उठकर १० बोला कि रेदुर्बुद्धे ! अभिमान मत करो तुम्हारी भी उमर बाक़ी नहीं रही है तिसके दर्शनमात्र से प्राप्त होकर कौन पीछे छूटता है ११ हमारे कोपरूप अग्नि की राशि में तुम जलती हुई अग्नि की शिखा की पंक्ति में टीड़ीकी नाईं गिरोगे १२ ऐसा कहतेहुए तिसके देखनेके लिये तीक्ष्ण शक्ति से वीरवर महा कोप कर हुंकार शब्द कर प्रकाशित होता भया १३ तब आयुरहित गण्डक शब्द के समूह से सब पृथ्वी को चलायमान कर पृथ्वी में गिरताभया १४ हे ब्राह्मण ! गंगासागर के किनारे खड्गी को गिरे हुए देखकर वीरवर तिस राजा के समीप जाने का प्रारम्भ करने लगे १४ तो राह में जातेहुए एक महाशय को तेजों से प्रकाशित दूसरे सूर्य की नाईं देखते भये १६ जो कि विष्णुजी के दूतसमूहों से युक्त, तुलसी की माला से भूषित, सुन्दर वस्त्र धारे, सुन्दर, रथपर चढ़ेहुए और मुसकानियुक्त मुखवाला था १७ तब वीरवर भक्ति से यह पूछताभया कि तुम कौन हो कहां से

यहां आयेहो और कहां जावोगे यह हमसे कहिये १८ तब वह पुरुष बोला हे पुरुष के वेष धारण करनेवाली कन्ये ! मेरा वृत्तान्त सुनिये आनन्दसे जो सुननेकी इच्छा है तो मैं संक्षेप से कहता हूं १९ पूर्व समय में मैं चोरों के वंशरूप वनका अग्नि, सब धर्म में परायण धर्मबुद्धि नाम राजा था २० मैंने सब यज्ञ और सम्पूर्ण दान किये थे चार हज़ार वर्ष तक पृथ्वी की पालना भी की थी २१ पाखण्डजनके वचनसे मैंने ब्राह्मण की पृथ्वी कोप को प्राप्त होकर लेली थी कभी दोषित नहीं किया था २२ मेरे तिसी अपराध से ब्रह्माजी आपही क्रोध से तिसी क्षण से सब राजलक्ष्मी को हरलेते भये २३ हे साध्वि ! तदनन्तर कुछ दिन में मैं सम्पत्तिरहित होकर शोक की अग्नि से दग्ध मन होकर यमराज के वश में मरकर प्राप्त होता भया २४ मुझको देखकर चित्रगुप्त ने पवित्र हास गीतवाले प्रभु यमराज से मेरे तिस कर्म को प्रकट कर कहा २५ कि यह धर्मबुद्धि राजा सदैव पुण्य करता रहा है इसका कुछ पाप है तिसको मैं कहता हूं सुनिये २६ पाखण्डों से बोधित होकर यह ब्राह्मण की जीविकाको हरलेता भया तिसी कर्म से दुस्तर नरकमें इसका स्थान होगा २७ हे सूर्य के पुत्र यमराजजी ! शास्त्रों में यह निश्चित है कि जिसने जिसकी जीविका नाशी वह उसके मारने को प्राप्त होता है २८ तिससे यह पापकर्म करनेवाला ब्राह्मण का मारनेहारा राजा है इसका सौ करोड़ कल्प नरक में स्थान होगा २९ हे विभो ! अपनी वा पराई दी हुई पृथ्वी को जो हरलेता है वह करोड़ कुल संयुक्त नरक में जाता है ३० जो देवता वा ब्राह्मणकी पृथ्वी हरता है तो उसकी निष्कृति सौ करोड़ कल्प में भी नहीं देखी गईहै ३१ और जो पराई दी हुई रक्षा करने वाले के पृथ्वी की रक्षा करता है वह देनेवाले से भी करोड़ गुणा अधिक पुण्य को पाता है ३२ तब तो मैं यमराज की आज्ञा से पूति मिट्टी को भोगकर कल्पयोनि में प्राणियों की हिंसा सदैव मैंने की ३३ गऊ ब्राह्मण तथा और जीवों को हज़ार करोड़ मुझ दुष्टने मारा ३४ फिर हे साध्वि सब नाश करनेवालों के आश्रय खड्गयोनि में उत्पन्न हुए मुझको कालसे प्रेरित आपने मारा ३५

गंगासागर का तीर्थ देवताओंको भी दुर्लभ है जहांपर स्थल में भी मृत्युको प्राप्त होकर यह मेरी अच्छी गति हुई है ३६ हे सुन्दर करिहांववाली जावो तुम्हारा कल्याण निस्संदेह होगा और थोड़े ही समय में तुमको तुम्हारे पतिका दर्शन होगा ३७ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस धर्मबुद्धि के ये परम अद्भुत वचन सुनकर वह कन्या तिसके चरणों की वन्दना करती भई तब धर्मबुद्धि राजा ३८ रथपर चढ़कर स्वर्ग को जाता भया और वीरवर राजा की सभा को जाते भये ३९ राजा तिस भयानक पराक्रमी खड्गी को मराहुआ सुनकर तिसको विवाह से जयन्ती नाम अपनी कन्या देते भये ४० तब पुरुष के आकारवाली कन्या तिस जयन्ती को लेकर गङ्गासागर के संगम में तपस्या करने के लिये मन करती भई ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! प्रातःकाल गङ्गासागर के संगम में स्नानकर गीत वाद्य और नाच से नारायण प्रभु को पूजन करती भई ४२ विना मांस के हविष्य फलाहार और कभी वह श्रेष्ठ स्त्री उपवासही करतीभई ४३ फिर यह कहतीभई कि इस पृथ्वीतल में मुझको अकेली देखकर नीच मानकर कौन ग्रहण करै यह कहकर घोड़ेपर चढ़कर ४४ वह श्रेष्ठ स्त्री फिर अपने राज्य को जाती भई वहां पर माधव और विद्याधरके वियोग से ४५ दूसरे पुरुष को न सेवन करती हुई राजकन्या मरजाती भई तिसके मरजाने के पीछे यह नौकर प्रचेष्टभी इच्छापूर्वक जाकर ४६ बहुत प्रकारसे रोकर अत्यंत शोकयुक्त होकर मरने के लिये गंगासागर के संगम को जाता भया ४७ और वहां स्नान कर तुलसी की मिट्टी से विभूषित होकर गङ्गाजी के हाथ जोड़कर बोला ४८ कि हे मातः! तुम्हारे पवित्रजल में यहांपर मैं देह छोड़ता हूं जिसतरह से सुलोचना मेरी स्त्री हो वह आप कीजियेगा ४९ वारंवार यह कहतेहुए तिसको तिसके दूत फँसरी से बांधकर निरुक्त तिस सभा को लेजाते भये ५० वीरवर की आज्ञा से तप्तघोर दूत विह्वल प्रचेष्ट को कारागृह में स्थापित करते भये ५१ इसी काल में तिस अद्भुतकार्य को देखकर तिस राज्य में बड़ा हाहाकार होता भया ५२ यह अद्भुत कर्म सुनकर गुणाकर राजा अत्यन्त सन्तप्त

होकर यह कहता हुआ आताभया ५३ कि तरकसवाले रथ के सवार, ढालवाले, तलवारवाले, धनुष और भालावाले सहस्रों करोड़ ५४ स्थान स्थान में तिसपुर में रक्षा करने के लिये युक्त होवें ५५ यह राजा की आज्ञा पाकर तब अमितपराक्रमी सब योधा क्रोध से शीघ्रतायुक्त तिसपुर में पतिरक्षाओं में स्थित होते भये ५६ सब गानेवालों ने गीत, नाचनेवालों ने नाच और बाजा बजानेवालों ने बाजे वहां पर छोड़ दिये ५७ तब शोक से उपहत मन होकर राजा मंत्रियोंको बुलाकर यह पूंछता भया कि क्या है ५८ तब मंत्री बोले कि हे देव! यह अद्भुत कर्म न कभी देखाहै और न सुना है इन मनुष्यों के देखतेही देखते वह कहां चलीगई ५९ कोई कहता भया कि वह लक्ष्मी थी शाप से पृथ्वी में आपके महल में आकर आपही अन्तर्द्धान होगई ६० और कोई कहते भये कि मायामयी वह स्त्री माया से आप के घर में स्थित होकर अपनी माया दिखला कर चलीगई ६१ कोई कहते भये कि वह सब लक्षणसंयुक्त स्त्री फिर आवेगी जहां कि भगके अंगवाले इन्द्र हैं ६२ और कोई कहते भये कि तिसके मुख को चन्द्रमा मानकर आत्मा से आत्मा को चिन्तना कर चन्द्रमा ने सुन्दर सिद्धि के लिये लेलिया है ६३ कोई कहते भये कि वह कन्या अच्छे गुण दीर्घ वासनावाली और पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली थी इससे भ्रांति से चन्द्रमा ने ग्रस्त कर लिया है ६४ और कमलिनी की भ्रांति से दिग्गजों से फूले कमल के समान मुखवाली विष दण्ड हाथ में धारे कमलकी कली के समान कुचवाली नष्ट होगई ६५ कोई कहतेभये कि हे राजन्! उसको रचकर और स्त्री के रचने के लिये रूप और गुणों से युक्त को तिसके रूप के देखने के लिये ब्रह्माने लेलिया है ६६ और कोई कहते भये कि हे भूपाल आपने सब दिशा जीती है और वह रूपों से देवताओं की स्त्रियां जीतने के लिये स्वर्ग को गई है ६७ तदनन्तर वे मंत्री परस्पर मुखकी शोभा देखकर सब स्तब्ध की नाईं उत्साहरहित और साध्वससमेत होगये ६८ फिर राजा हे सुलोचने! हे पुत्रि! मुझको छोड़कर कहां चली

गई ऐसा कहकर पृथ्वी में मूर्च्छित होकर गिरता भया ६९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! बड़े शोक से राजा को गिरेहुए देखकर तिस नगर में हाहाकार शब्द होता भया ७० तिस रोने के शब्द को सुनकर और संसार में देखकर दशो दिशा शब्द करती भईं ७१ धूलिसे धूसर अंगवाले और छूटेहुए बालोंवाले राजाको पकड़कर सब मन्त्री शीघ्रही राजाके महलको जाते भये ७२ तदनन्तर विद्याधर और माधव तिसके पीढ़ेको आलिंगन कर करुण शब्दों से रोनेलगे ७३ कि हा प्रिये!हा चंचल कटाक्षवाली ! हा सोनेके फूलकी दीप्तिवाली ! हा श्रेष्ठ मुखवाली ! मुझको शोकरूपी समुद्र में गिराकर कहां चली गई ७४ हा प्रिये ! हा भद्रे ! हा कमल के समान मुखवाली ! निर्दोष तूने मेरा क्या दूषण देखा था क्यों दर्शन नहीं देती है ७५ हे भद्रे ! मैं तेरे विना क्षणमात्र भी नहीं जीऊंगा इससे मुझको दर्शन देकर प्राणों की रक्षा कीजिये ७६ हे भद्रे ! प्राणों से भी अधिक प्यारी जो तुमको नहीं प्राप्त हूंगा तो धन, जन, मित्र, धन और घरों से क्या है ७७ यह और बहुत करुण करके शोकसे मृत्यु को निश्चय कर गंगासागर के संगम को जाता भया ७८ तहांपर समुद्र के जल मिलेहुए गंगा के जल में स्नानकर सूर्य्यजी को अर्घ देकर गंगा माता के नमस्कार करता भया ७९ कि हे गंगे देवि ! हे संसार की मातः ! तुम्हारे निर्मल जल में देह छोड़ता हूं तिस देहको जैसे फिर प्राप्त हूं तैसा कीजियेगा ८० ऐसा कहतेहुए राजा के श्रेष्ठ दूत क्रोधयुक्त होकर वीरवर के समान विधिको प्राप्त करते भये ८१ तब वीरवर उससे बोला कि आप कौन हैं कहां से आये हैं और कैसे यहांपर देहत्याग करते हैं यह मुझसे कहिये ८२ वीरवरके वचन सुनकर विद्याधर सुननेवालोंको विस्मय देनेवाली तिस सम्पूर्ण कथाको कहता भया ८३ तदनन्तर वीरवर कहता भया कि तुम मूर्ख मनुष्यों में निस्सन्देह श्रेष्ठ हो गन्धर्वी, राक्षसी वा सर्पिणी वा किन्नरी ८४ वह शापसे कन्या आई थी तिससे आपही अन्तर्द्धान होगई वह देवरूपिणी थी इससे देवताओं के स्थानको गई ८५ तिसके साथ फिर कैसे तुमको दर्शन होगा आकाश में चंद्रमा

के चकोरों के पान करने योग्य अमृत को ८६ क्या बलवान् पापी कौवे पासक्के हैं जो नहीं प्राप्त होने योग्य है वह नहीं मिलती है और जो प्राप्त होने योग्य है वह मिलती है ८७ तिस जनको जानते हैं परन्तु कोई मोहको नहीं प्राप्त होता है किसी से कन्या दीगई है और किसी करके ग्रहण करली गई ८८ पूर्वजन्म में जो कन्या है तिसी कन्या को पति प्राप्त होताहै स्त्री पुत्रके प्रयोजन के लिये है और पुत्र पिण्डके प्रयोजनके लिये हैं ८९ इसी से बुद्धिमान् मनुष्य स्त्री का ग्रहण करते हैं जैसे स्त्रीसे यहां दिया जाताहै तैसी स्त्री भोग करते हैं ९० रात्रि में रोदन करतेहुए यह भँवरा कुमुदिनी को सहता भया स्त्रियों को अच्छे रूपवाला भी पति संतोष के लिये नहीं होताहै ९१ सूर्यके स्थित होने में भी कमलिनीका मधु भौंरा पीताहै स्त्रियों में निरन्तर चित्त रहता है और विष्णुजीकी भक्तियों में अनादर रहता है ९२ और कोई शोकों से देह त्याग करदेते हैं ये तीनों पुरुषों की विडम्बना हैं स्त्री, पुत्र, भाई, देश तथा बान्धव ९३ ये सब फिर मिलते हैं परन्तु प्राण फिर नहीं मिलते हैं विषयधर्म तुमने नहीं छोड़ा और न कर्म किये ९४ हे मूर्ख! वर्तमान के बीतने पर फिर होनेवाला जन्म दुर्लभ है मेरा माता, पिता, स्त्री, भाई और धन ९५ और तिस ममता से जन्म ये सब निष्फल होजाते हैं इस प्रकार तिस बुद्धिमानों में श्रेष्ठ वीरवरने अच्छेप्रकार समझाया ९६ तब वह दौर्मनस्य को छोड़कर तहांहीं स्थित होता भया तदनन्तर प्रीतिसे हँसती हुई गन्धिनी अपने घरको गई ९७ और वहां जाकर मंच में सोते हुए माधवजी को देखकर बोली कि हे दुर्बुद्धे! उठो उठो तुम्हारा परिश्रम निष्फल होगया ९८ विवाह के समयमें वह कन्या आपही अन्तर्द्धान होगई इसप्रकार तिसके वचन सुनकर माधव उठे ९९ और बड़े शोकों से व्याकुल होकर पृथ्वी में लोटकर रोने लगे कि कन्या और विद्याधर का कुछ दूषण नहीं है १०० मेराही सब दूषणहै जिससे नीचका संग सेवन किया था नीचके संग करने से पुरुषों को ब्रह्मा सुख नहीं देते हैं १०१ यह मैंने जाना है जिससे मेरी यह गति हुई है महान् भी नीच के संगसे कुछ सुखको

नहीं प्राप्त होता है १०२ देखो प्रेतों के संगसे महादेवजी नङ्गे और भूषणों से भग्नहैं नीचके संगसे स्त्री और धन आदिकको मनुष्य देखताहै १०३ कुछ प्रसंग प्राप्त होकर नीच दुःखमुख होकर भी सज्जनोंके गुण सुनकर क्लेशको प्राप्त होता है १०४ और दोष सुनने के लिये सौरूपका होजाता है इससे बुद्धिमान् मनुष्य अपने कल्याण की इच्छा करे तो नीचों से निश्चय न करे १०५ एक क्षण भी बुद्धिमान् नीचों से निश्चय न करे और एक पैग भी नीचों के संग न जावे १०६ नीच मनुष्य से विश्वास करने में मनुष्य शीघ्रही कष्ट पाताहै और नीच मनुष्य दोष सुननेके लिये यत्नसे प्राप्त होताहै १०७ फिर समय पाकर हँसकर प्रकाश करता है अच्छे मनुष्यों के मन, वचन और कर्म में एकही एक रहता है १०८ और दुरात्माओं के मनमें और वचन में और कर्म में भी औरही रहता है—जो वह राजकन्या विवाह करेगी १०९ तो मेरे हृदय में थोड़ा भी शोक न होगा और जो सब लक्षणसंयुक्त कन्या स्वर्ग चलीगई ११० नीच से प्राप्त हुई तो यह शोक हृदय में दुःसह होगा मैं उस श्रेष्ठ मुखवाली को लिखित की नाईं देखता हूं १११ और इस जीती हुई आत्मासे विसराने को मैं नहीं समर्थ हूं नीचके क्रोड में प्राप्तहुई वह साध्वी स्त्री क्षणभर भी न जीवेगी ११२ और विद्याधर भी दारुण शोकोंसे नहीं जीवेगा जैसे माता, पिता और देशको मैंने तिसकी प्राप्ति के लिये छोड़ा ११३ तैसेही इससमयमें निस्सन्देह प्राण त्यागने योग्यहैं फिर तिसकी प्राप्तिके लिये गंगासागरके संगममें प्राणोंको ११४ मैं त्याग करूंगा यह दृढ़कर वह जानेके लिये प्रारम्भ करता भया कि इसी समयमें मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी से ११५ महाबुद्धिमान् ने पादलेप प्राप्त किया फिर कुछ दिनों में गंगासागर के संगम को जाता भया ११६ वहांपर गंगासागर के जलमें स्नानकर तुलसीपत्र, मालाओं से भूषित होकर भगवान् को पूजता भया ११७ और हाथ जोड़कर नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी से बोला कि हे देवि ! शोकको प्राप्त होकर तुम्हारे जल में देहको मैं त्याग करता हूं ११८ आनेवाले जन्म में तिस सुन्दर कन्या को मुझे दीजियेगा ऐसा कहकर

तीनों लोककी माता तिन गंगाजी के नमस्कार कर ११९ फिर उनके गहरे जल में प्रवेश करने का प्रारम्भ करता भया तब वीरवर पीठ में राजपुत्र को पकड़कर १२० तिस सभा में तिन मनुष्यों समेत आकर राजपुत्र को देखकर प्रीति और अनिंदित शोभा को प्राप्त होकर १२१ माधव से पूंछने लगे कि तुम कौन हो और कैसे देह को छोड़ते हो तब माधव वीरवरसे बोले कि मैं विक्रमराजा का पुत्र माधव हूं १२२ सेनासमेत शिकार खेलने के लिये एक समय में घोर वन को गया तो वहां पर नगरके समीप कमलों से शोभायमान तालाब था १२३ तहां पर मुझ कामी ने अकेली सुन्दर स्त्री को देखा तब चन्द्रकला नाम स्त्री मुझ काम से व्याकुल से १२४ पृथ्वी में सुलोचना के प्रस्ताव को कहती भई तब मैं घोड़े पर चढ़कर समुद्र को नांघकर १२५ प्रचेष्ट नाम नौकर को संग लेकर तिसके पुरको आया तो उसी दिन तिसका उत्तम अधिवासन था १२६ यह सुनकर मैंने अंगूठी समेत उसके पास पत्र लिखकर भेजा तब मेरे पत्रको उत्तम अंगूठी समेत देखकर उसने उस पत्रकी पीठपर जो लिखा था सो कहता हूं १२७ कि हे अत्यन्त श्रेष्ठ माधवजी! श्रीत्रिविक्रमदेवजी का पुत्र विद्याधर नाम है पिताजी विवाह कर मुझको उनको देंगे १२८ आज अधिवासन कर्म है और कल्ह निश्चय विवाहहै तिसपर भी मैं उपाय कहती हूं जिससे आप मुझको प्राप्त होवें १२९ बायें हाथको उठाकर वरके संमुख मैं खड़ी हूंगी और जो मेरे लेजाने में समर्थ होगा वही निस्संदेह मेरा स्वामी होगा १३० यह कन्या पत्र में लिखकर गन्धिनी के हाथ में देती भई और तिस गन्धिनी ने उस उत्तम पत्रको मुझे दिया १३१ तो उस सङ्केतको प्रचेष्ट ने मेरे सम्मुख सुना तब सङ्केत के समयमें मैं तो सोगया और प्रचेष्ट घोड़े पर चढ़कर राजकन्या को लेगया १३२ इस व्यथा से फिर तिसकी प्राप्ति के लिये देह छोड़ता था यह सब आपको विधान से सुना दिया १३३ यह सुनकर पुरुष की आकारवाली राजकन्या माधव की रक्षा में बहुत से नौकरों को युक्कर हँसकर घरके भीतर जाकर १३४ स्त्रीवेष धारणकर अनेक प्रकार के गहनों से भूषित

होकर अपनी दासी को राजपुत्र माधवजी के लेने के लिये भेजती भई १३५ तब राजपुत्र राजकन्या की आज्ञा से जाकर मूर्तिमती लक्ष्मीजी की नाईं तिस साध्वी राजकन्याको देखते भये १३६ तब पुलकावली से युक्त देह होकर राजकन्या सोने के आसनसे उठकर राजपुत्र के चरणों की वन्दना करती भई १३७ तो कौतुक प्राप्त होकर बुद्धिमान् राजपुत्र तहांहीं गन्धर्वविधि से विवाह कर १३८ तिसके प्रेम के जलकी धाराओं से सींचे जाकर तिसके साथ केलि करते हुए तिस रात्रिको वहांहीं व्यतीत करते भये १३९ तदनन्तर निर्मल प्रातःकाल होने में यह मृगी के समान नेत्रवाली पतिव्रता राजपुत्री माधवजी से आदि से सब वृत्तान्त कहती भई १४० फिर सुलोचना साध्वी तिस जयन्ती राजपुत्री और माधवजी को लेकर सुषेणजी की सभा में जाती भई १४१ तब सुषेण राजा तिसको कन्या सुनकर प्रसन्न होकर सुलोचना और जयन्ती को विवाहकी रीति से माधवजी को देता भया १४२ और धर्म में तत्पर राजा प्रसन्नता से दाइजे में अपनी आधी राज्य और सौ सोने देता भया १४३ तब राज-पुत्र तिस पुण्यकारी तीर्थ में सुन्दर मन्दिर बनाकर रहनेलगे १४४ तिस बीच में माधवजी कारागार निवासी प्रचेष्ट को सभा में बुलाकर चिन्तना करते भये १४५ कि यह पापबुद्धि, क्रूर, स्वामी का विश्वासघात करनेवाला, शत्रुओं में श्रेष्ठ, मूर्ख, मुझसे नहीं रक्षा करने के योग्य है १४६ नित्यही वारंवार प्रसाद, धन और भोजनों से पालित हुआ भी यह निर्दयी समय पाकर शत्रुका कर्म करता भया १४७ जिसने विपत्ति में निश्चय चरणों की धूलि हाथ से ली और तिसीने सम्पदा पाकर स्वामी का शिर काटा १४८ वश में प्राप्त राजा की पंक्तियां निश्चयही स्वामी को नाशती हैं गर्म जल भी अग्नि को शीघ्रही बुझा देता है १४९ यह मन में चिन्तना कर तिस राजपुत्र ने नष्ट चेष्टावाले प्रचेष्ट को निकाल दिया १५० और तिन दोनों स्त्रियों के साथ राजपुत्र शोक और व्याधि से वर्जित होकर सुखसे कुछ काल तहां रहते भये १५१ माधव महात्मा के तिस सुलो-चना में सौ पुत्र और जयन्ती में दोसौ पुत्र होते भये १५२ माधव

के पुत्र शस्त्र शास्त्र के जाननेवाले उत्तम सब मनुष्यों की प्रीति के लिये धर्म में तत्पर होते भये १५३ और जन्मों से इकट्ठी की हुई भक्तिसे युक्त होकर माधवजी एकसमय में मनसे चिन्तना करते भये १५४ कि कौन मैं हूं कहां से आया हूं किसका वा किससे रचाहुआ हूं फिर कहां जाऊंगा मुझको कहां स्थित होना चाहिये १५५ विषय भोग करते हुए मेरा जन्म पुण्य के विनाही व्यतीत होगया तिससे विघ्नके समुद्रमें डूबतेहुए मुझको कौन उद्धार करेगा १५६ इस संसार में जन्म पाकर जिसने भगवान् का आराधन नहीं किया वह सब धर्मों से बाहर किया हुआ आत्मघाती जानना चाहिये १५७ यह संसार क्लेश का देनेवाला बड़ा भयानक है इसमें वारंवार जन्म और मरण होता है १५८ विष्णुजी की भक्ति के विना जन्म मृत्यु का निवारण नहीं होताहै इससे इससमय में सब छोड़कर भगवान्का पूजन करूंगी १५९ यह मन से चिंतना और वारंवार विश्वास कर विश्वकर्मा को बुलाकर ये वचन बोला १६० कि हे विश्वकर्मन्! हे महाबाहो! मुझको विष्णुजी की पत्थर की सब कामनाओं के फल देनेवाली मूर्त्ति बना दीजिये १६१ तब माधवजी की आज्ञा से कारीगर विश्वकर्माने महाविष्णुजी की पत्थर की मूर्त्ति रचदी १६२ जो कि नवीन मेघों के समान श्यामवर्ण, कमल के समान नेत्रवाली, शंख, चक्र, गदा और कमल के धारण करनेहारी, चार भुजावाली १६३ लक्ष्मी और सरस्वती से युक्त, वनमाला से विभूषित, सब लक्षणों से युक्त और सब गहनों से भूषित थी १६४ तब माधवजी विचित्र मण्डप में हरिजी की मूर्त्ति को स्थापित कर कामना देनेवाली और चक्र हाथ में लियेहुई की पूजा करने को प्रारम्भ करते भये १६५ हे ब्राह्मणों में उत्तम! और तिसी स्थान में अविच्छिन्न शिखावाले दीपको प्रतिदिन जलाते भये १६६ आप प्रातःकाल स्नान कर संमार्जन आदिक करते भये और रास्तेकी शोभा को कर तहां पर लीपते भये १६७ गङ्गासागर के जल में स्नान कर पांच महायज्ञों को कर सबसे उत्तम उपहारों से विष्णुजी की तीनों संध्याओं में

पूजा करते भये १६८ चन्दन, धूप, नैवेद्य, पान, धूप, दीप, गीत, बाजाओंके प्रबन्ध, सुन्दर स्तोत्रोंके पाठ, १६९ प्रदक्षिणा, नमस्कार, यज्ञ, दक्षिणा, विना मांसके हविष्य और फलाहारोंसे पूजा करतेभये १७० और (ॐ नमोनारायणाय) इस सब कामनाके फलके देनेवाले महामंत्र को जपते भये १७१ इस प्रकार महाविष्णु परात्मा की हज़ारवर्ष सब कामना देनेवाली पूजा श्रेष्ठ भक्तिसे करताभया १७२ तब तो माधवकी भक्ति से सब देवों के शिरोमणि, अलसी के फूल की सी दीप्तिवाले भगवान् प्रसन्न होकर प्रकट होते भये १७३ हरिजी को प्रकट हुए देखकर स्त्रीसमेत माधवजी शिरसे पृथ्वी को आलिंगन कर हरिजी के चरणों की वन्दना करते भये १७४ कि देवों के देव, परमात्मा, परेश, देवताओं के स्वामी, ज्ञान देनेवाले, १७५ परमानन्द, पुरुषोत्तम, केशव, कमलनयन, लक्ष्मी के पति, १७६ बहुत रूपवाले, नीरूप, विचिन्त्य, अविचिन्त्य, दृश्य, अदृश्य, १७७ तीनों लोक के स्वामी, संसार के रक्षा करनेवाले, ज्ञान से प्राप्त होने योग्य, सर्वशाखी १७८ कंस और कैटभ राक्षसके वैरी, मधु राक्षसके मारनेवाले और विधाता आपके नमस्कारहैं १७९ जिस आपने मत्स्य अवतार धारणकर गहरे समुद्र के जल से वेदों को उद्धार कियाहै तिसको मैं भजता हूं १८० जिस आपने कच्छप रूप धारणकर पर्वत, वन और काननों समेत पृथ्वीका उद्धार किया है तिस आपके नमस्कारहैं १८१ हे पृथ्वी के स्वामी! जिस शूकर की मूर्ति से आपने अपने दांत से पृथ्वी उद्धार की तिस आपके नमस्कारहैं १८२ जिस नृसिंहकी मूर्ति से आपने क्रोधयुक्त हिरण्यकशिपुको विदारण किया तिस आपके नमस्कारहैं १८३ हे देव! जिस कश्यपजी के पुत्र वामनरूप से आपने राजा बलिकी यज्ञ ध्वस्त की तिस आपके नमस्कारहैं १८४ जिस आपने क्षत्रियों के रक्तों से पितरों को तर्पित किया और सहस्रबाहु राजा को मारा तिस परशुरामजी के नमस्कारहैं १८५ जिस कौशल्या के पुत्र आपने रावण, मारीच और कुम्भकर्ण को मारा है तिस रामचन्द्रजी के नमस्कार हैं १८६ जिस रेवतीके पति आपने प्रलम्बासुर को

मारा और यमुनाजी को टेढ़ी करदिया तिस बलरामजी के नमस्कार हैं १८७ कृपा समेत जिस आपने पशुओं की हिंसा देखकर वेदों की निन्दा की तिस बुद्धजी के नमस्कार हैं १८८ और जिस कल्की की मूर्ति से आपने सब लोकों के कल्याण के लिये युग के अन्त में म्लेच्छों को नाश किया है तिस आपके नमस्कार हैं १८९ हे हरे! हे विष्णो! हे दैत्यजिष्णो! हे नारायण! हे कृपामय! संसाररूपी घोर समुद्र में गिरेहुए मुझ को उद्धार कीजिये १९० तदनन्तर माधवजी आनन्द से हरिजी के चरणोंको धोकर पृथ्वी में सब अपना अंग गिराकर हरिजी से बोले १९१ कि हे गोविन्द! हे परमानन्द! हे मुकुन्द! हे मधुसूदन! हे कृष्णजी! मुझ पापी की रक्षा कीजिये जिससे आप सब पापों के नाश करने वाले हैं १९२ यह माधवजीका स्तोत्र सुनकर भक्तवत्सल भगवान् परमप्रीति को प्राप्त होकर तिससे ये वचन आप ही बोले १९३ कि हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ माधव! भो वत्स! वरदान मांगो ब्रह्मा, शिव और क्या इन्द्र होना आप चाहते हैं १९४ तब माधवजी बोले कि हे संसार केस्वामी! मैंने सब कुछ पाया जो देवताओं को भी नहीं देखने योग्य, वरदान देनेवाले प्रभु आपको मैंने देखा १९५ भुक्ति, मुक्ति, धन और ऐश्वर्य सब देने को आप योग्य हैं हे प्रभो! भक्ति के योग्य मैं नहीं हूं परन्तु मुझे भक्तिही दीजिये १९६ तब श्री भगवान् बोले कि हे वत्स! तुम्हारी इस शक्ति से मैं निस्संदेह प्रसन्न हूं कौन ऐसी वस्तु है जिसको देकर आपसे मैं ऋण रहित हो जाऊंगा १९७ तब सूतजी बोले कि हे शौनक! ऐसा कहकर परम प्रसन्न होकर विष्णुजी चारों भुजाओं को फैलाकर जैसे पिता पुत्र को आलिंगन करै इस प्रकार आलिंगन करते भये १९८ और उससे बोले कि हे भद्र! आलिंगन के प्रभाव से तुम से मैं ऋण रहित होगया हूं तुम्हारा निस्संदेह सब शुभ ही होगा १९९ हे वत्स! कामी आपने सदैव क्रियायोग से मेरी मूर्ति की पूजा की है तिससे तुम को देह प्रति लेजाऊंगा २०० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह भगवान् माधव को वर देकर बड़ी चारों भुजाओं से फिर प्राणों से आलिंगनकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये

२०१ तब माधव स्त्री समेत तिस विष्णुजी की मूर्ति को भक्ति से उत्तम क्रियायोगों से आराधना करता भया २०२ और स्त्री समेत पुत्र और पौत्रों से युक्त होकर गंगाजी में मृत्यु को प्राप्त होकर मोक्ष को प्राप्त होजाता भया २०३ सब भक्ति से इस हरिचरित्रों से युक्त और सब पापों की राशियों के नाश करनेवाले अध्याय को जो पढ़ता है वह इस पृथ्वी में सब भोगों को भोगकर अन्त समय में श्रीवासुदेव भगवान् के धाम को प्राप्त होता है २०४॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे गंगासागरसंगममाहात्म्यवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय

गंगाजी के जल की बूंदों का माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! गंगाजी के उत्तम माहात्म्य को फिर कहताहूं तिसको सुनकर सब मनुष्य सब कामनाओंको प्राप्त होते हैं १ जिसने संसारकी माता गंगाजी में स्नान नहीं किया है उसका मुख देखकर शीघ्रही सूर्य के दर्शन करने चाहिये २ प्रातःकाल जो भक्ति से गंगा इन दो अक्षरों को स्मरण करता है तिसके पाप इस प्रकार नाश होजाते हैं जैसे अरुण के उदय में अन्धकार नाश होजाता है ३ जिसने नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी के दर्शन नहीं किये हैं तिसके सब अन्न आदिक और जल नहीं ग्रहण करने के योग्य होते हैं ४ गंगाजी के स्नान करनेवालों के पाप उनकी देह छोड़कर गंगाजी के स्नान न करनेवालों की देहों में आजाते हैं ५ वारंवार बड़ा ही आश्चर्य है कि मूर्ख गंगाजी का नाम स्थित होने में भी नरक में गिरते हैं ६ जो ब्राह्मण भक्ति से गंगा के जलकी कणिका को शिरसे धारण करता है वह ब्रह्महत्यादिक महापापों से छूटजाता है ७ जिसके माथे में उत्तम गंगाजी की बालू दिखाई देती है वह पुण्यात्मा सब संसार को निस्संन्देह पवित्र करता है ८ जो मनुष्य गंगाजी के किनारे से आते हुए को बड़े आदर से देखता है वह हजार अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होता है ९ जो यह कहता है कि मैं

गङ्गाजी के किनारे जाता हूं तुम भी आवो तिस को प्रसन्नात्मा विष्णुजी सब कामनाओं को देते हैं १० जो मनुष्य कुंयें के जल में भी गंगा यह नाम स्मरण कर स्नान करता है वह गंगाजी के स्नान के फलको प्राप्त होता है ११ जो गंगाजी के जलकी सरसों भर बालू को मृत्यु काल में प्राप्त होता है वह परमपद को जाता है १२ हे विप्रर्षे जैमिनि! यहांपर पुराने इतिहासको सुनिये जिसके सुननेहीसे गंगादेवी प्रसन्न होती हैं १३ त्रेतायुग में धर्मस्व नाम ब्राह्मण हुए थे यह धर्मात्मा, शांत, दान्त, दयावान्, वेद वेदाङ्ग के पारगामी, १४ सत्य वचन बोलने वाले, क्रोध और हिंसा से रहित, जितेन्द्रिय, सब प्राणियों के हितकी इच्छा करनेवाले और योगाभ्यास में सदैव रतथे १५ यह वैष्णव जन ब्राह्मण संसार समुद्र तरने के लिये क्रियायोग से देवों के स्वामी केशवजी को पूजन करतेभये १६ कदाचित् श्रेष्ठ ब्राह्मण मोक्ष होने की इच्छा वाले पुण्यकारी दिन पाकर स्नान करने के लिये गंगाजी के किनारे जाते भये १७ तहांपर गंगाजी के जल में स्नान कर तर्पण आदिक कर गंगाजी के जलकी बालू को धारण कर घर जाने का मन करते भये १८ हे विप्र! तिसी काल में रत्नकर नाम बनियां सम्पूर्ण नौकरों से युक्त वाणिज्य करके आता भया १९ और तिसी रत्नकरका एक नौकर कालकल्प नाम ब्राह्मण सम्पूर्ण पाप करनेवाला दण्ड हाथ में लिये हुए आता भया २० तदनन्तर रत्नकर का एक बैल राह के परिश्रम से थककर राह ही में सो जाता भया २१ तबराह में सोते हुए बैल को देखकर अत्यन्त निर्दयी कालकल्प दण्ड से बहुत मारता भया २२ तब दण्ड की चोट से उत्पन्न हुए क्रोध से बैलने तीक्ष्ण सींगों से उठाकर कालकल्प को विदारण किया २३ तो दोनों सींगों से छाती फटकर कालकल्प की आंखें निकल आईं तब धर्मस्व ब्राह्मण दयायुक्त होकर तिसके पास शीघ्रही जाता भया २४ और उत्तम तुलसीदल को कान से लेकर उस बुद्धिमान् ने गंगाजल की सुन्दर बूंदों से सींचा २५ फिर प्राण रहित देखकर परमार्थ का जाननेवाला ब्राह्मण विस्मित होकर अपने घरजाने का मन करता

भया २६ तदनन्तर वह बुद्धिमान् गंगाजी के नामों को कीर्तनकर राहमें जानेलगा तो आगे हज़ारों करोड़ यमराजके दूतोंको देखता भया २७ किसी के पांव कटे हैं किसी का एक हाथ कटा है कोई २ के कान कटे हैं कोई के एक ही नेत्र है २८ कोई की नाक कटी है कोई की जीभ कटी है कोई के दांत टूटे हैं कोई दांतों से वर्जित हैं २९ कोई रक्त की धाराओं से सब देह लिप्त हैं कोई के बाल छूटे हुए हैं कोई मुख से रहित हैं ३० कोई२ नंगे हैं कोई फटी छाती-वाले हैं कोई महातीक्ष्ण बाणों से जर्जर हुए अंगवाले हैं ३१ कोई दृढ़फँसरियों से निषिद्ध अंगुलि हाथ वाले हैं कोई व्यथा से रोकर भागने में परायण हैं ३२ इस प्रकार के यमराज के दूतों को देखकर श्रेष्ठ ब्राह्मण डरसे कम्पहृदय होकर स्तब्धकी नाईं होजातेभये ३३ तदनन्तर धैर्य धरकर हरि भक्ति करने वाले ब्राह्मण मधुर वाणी से किरात, यमराज के दूतों से यह पूँछते भये ३४ कि आप लोग बुरे आकारवाले, फँसरी और मुद्गर हाथ में लिये हुए, डाढ़ों से कराल मुखवाले, अंगार की सदृश दीप्तिवाले कौन हैं ३५ जो कि बड़े वीर, प्रकाशित अग्नि के समान नेत्रों वाले हैं तिसपर भी आपलोगों की यह दुर्गति किसने की है ३६ तब यमराज के दूत बोले कि हे ब्राह्मण! हम सब यमराजके दूत सदैव यमराज की आज्ञा करनेवाले हैं यह दण्ड समेत बड़े कष्ट के उदय को प्राप्त होगा ३७ तब धर्मस्व-जी बोले कि आपलोग महाबल पराक्रम युक्त अकस्मात् प्राप्त हुए हैं इतनी यह दुर्गति किसने और कैसे की है ३८ तब यमदूत बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! डर छोड़कर सब वृत्तान्त सुनो जैसे हम को यह अत्यन्त दुःसह दुःख हुआ है ३९ जो यह बैल के सींगों से कालकल्प विदारित हुआ है तिसके लेने के लिये धर्मराज ने हम सब दूतों को भेजा है ४० तिनकी आज्ञा से हम सब सम्पूर्ण हथि-यारों को हाथों में लेकर तिस पापियों में श्रेष्ठ को बाँध कर लेने के लिये यहां प्राप्त हुए हैं ४१ तदनन्तर यह दुष्ट अन्तःकरणवाला कालकल्प बैल के सींगों से विदारित हुआ है ४२ यह पापियों में श्रेष्ठ दया समेत गंगाजी के नाम कहते हुए गंगाजी के जलकी बूँदों से

सींचागयाहै ४३ गंगाजी के जलकी कणिकाओंके सींचने से पाप-रहित इसको हमलोग फँसरियों से दृढ़ बाँध कर लिये जाते थे ४४ कि तिसके लेने के लिये देवोंके स्वामी शरणागतों के पालन करने वाले भगवान् ने अपने महा बलपराक्रम युक्त दूतों को भेजा ४५ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तब तो नारायणजीकी आज्ञा से उनके दूत आकर कोपसमेत राह में हमलोगों से बोले ४६ आपलोग म-हात्मा कौन हैं किसके दूत हैं और कैसे इस महाशयको फँसरी से बांधकर लिये जातेहो ४७ इस महात्माको छोड़कर सुख-पूर्वक भाग जावो नहीं तो आप लोगों के शिर चक्रकी धारासे काटे जावेंगे ४८ तिन भगवान् के दूतों के अभिमानयुक्त वचन सुन कर हम सब लोग बोले ४९ कि हम सब दण्डपाणि यमराजजीके दूतहैं इस पापियों में श्रेष्ठको लेकर यमराजजी के स्थानको जावेंगे ५० तुम सब महात्मा तुलसी की मालाओं से भूषित फूले हुए कमलपत्र के समान नेत्रवाले, बलवान्, गरुड़ ध्वाजावाले, ५१ सुन्दर वस्त्र धारण करनेहारे, मयूर के गले के समान सुन्दर, शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुए, चार भुजावाले ५२ इस प्रकार के सब, सम्पूर्ण लक्षणों संयुक्त कौनहैं इस पापियों में श्रेष्ठको कैसे लेनेकी इच्छा करते हैं ५३ तब विष्णुजी के दूत बोले कि हम सब विष्णुजी के दूत हैं इस समयमें इस पुण्यात्मा मनुष्यको वैकुण्ठ ले जाने के लिये आये हैं ५४ हे यमराजके दूतो! इस भगवद्भक्त, अपने जन, पापरहितको जल्द छोड़ो जो जीवने की इच्छा चाहो ५५ फिर उनके यह सब में प्राप्त वचन सुनकर कोपसे जो हमलोगों ने कहा तिसको सुनिये ५६ यह दुराचारी, पापी, हज़ार ब्रह्महत्या करने वाला, कृतघ्नी, गऊ और मित्रों का मारने वाला और बुरे आशय वाला है ५७ इस दुरात्माने सुमेरु पर्वत के समान बहुत सोना चुराया है नित्यही दूसरोंकी स्त्रियां हरी हैं ५८ भो विष्णु-दूतो! हज़ार करोड़ जन्तुओं की इसने बहुधा हत्या और स्त्री-हत्याभी की हैं ५९ यह न्यासका अपहरण और अपनी माता से भी भोग करता रहा है और प्रतिदिन गऊ के मांसको खाता रहा है

६० इसने पराई हिंसाकी हैं और दूसरों के घरोंको जलाया है सभा में पराई निन्दाकी है और विधवाओं के गर्भ को गिराया है ६१ और यह यवनके सदृश रात्रि में घर में आये हुए अतिथिको धनके लोभसे तीक्ष्ण तलवारोंसे काट डालता भयाहै ६२ ये पाप तथा और भी अगणित बड़े बड़े पाप इस नीच मूर्ख ने किये हैं थोड़ा भी शुभ देनेवाला नहीं कियाहै ६३ तिससे यह महापापी यातनाघर को जाता है भो श्रेष्ठतमो ! पापी धर्मराजके दण्ड देने योग्य जानने चाहिये ६४ जो आपलोग देवों के देव भगवान् के दूत हैं तो कैसे इस पापियों में श्रेष्ठ के लेजाने की इच्छा करते हैं ६५ तब विष्णुदूत बोले कि आपलोगों ने सत्यही कहाहै इसमें सन्देह नहीं है यमराजको सदैव सब पापी दण्डदेने योग्य हैं ६६. यह गंगाके जलके बालूके सींचने से पापोंसे छूटगयाहै तिससे इसको हम सब भगवान्के मन्दिरको लेजावेंगे ६७ देहधारियों के पाप तबतक देहों में स्थित रहते हैं जब तक गंगाजल की बालू दुर्लभ नहीं स्पर्श होती हैं ६८ जैसे चन्द्रमाकी एक कला से सब अन्धकार नाश होजाता है तैसेही गङ्गाजल की बालू से पाप नाश होजाता है ६९ गंगाजी के नामों को स्मरण कर पापी पापसे छूट जाताहै साक्षात् जल देखकर छूटगया तो क्या आश्चर्य है ७० ठण्ढा भी गंगाजी का जल पापरूपी वन में अग्नि की नाईं होता है जैसे शीत जल अग्निकी नाईं कमल के वनमें दाह करनेवाला होता है ७१ तिससे यह पुण्यकर्म करने वाला दूसरे केशवजी की नाईं है इससे यमराज के दूतो जो कल्याणकी इच्छा करते हो तो जावो ७२ तिन भगवान् के दूतों के ये वचन सुनकर हम लोगों ने जो हँसकर फिर कहा उसको सुनिये ७३ बड़े आश्चर्य की बात है कि यह पापका घर भी गंगाजी के जलके सींचने से सब पापों से छूट गया ७४ अपने हाथ के शुभ वा अशुभ कर्म इकट्ठे किये हुए सौ करोड़ कल्पोंसे भी मनुष्य विना भोग कियें नहीं छूटताहै ७५ यमराज की आज्ञा से हम सब लोग इसके लेने के लिये प्राप्त हुए हैं किसके वचन से हम लोग इस पापियों में श्रेष्ठ को छोड़ देवें ७६

तब विष्णुदूत बोले कि आप लोग निश्चय पाप बुद्धि और ज्ञान से वर्जित हैं जिससे गंगाजी के गुण नहीं जानते हैं ७७ वेद में निषिद्ध जो कार्य है वह पाप कहाता है और जो वेद सम्मत कार्य है सोई धर्म कहाता है ७८ देव नारायण साक्षात् स्वयंभू हैं यह हम लोगों ने सुना है जैसे विष्णुजी हैं तैसेही गंगाजी हैं गंगाजी ही सब पाप नाश करनेवाली हैं ७९ अपने हाथ के अशुभ वा शुभ कर्म हरिही हैं हरिजी के प्रसन्न होने में देह धारियों के पाप कहां ठहरते हैं ८० अनेक जन्मों के एकट्ठे किये हुए पापों से आप लोग इस गति को प्राप्त हैं अब भी पाप कर्म करनेवाले किसलिये पाप की इच्छा करते हो ८१ गंगाजी तथा विष्णुजी की निन्दा करनेवाले आप लोग हैं इससे आप लोगों को पापी समझ कर चक्रकी धारा से नाश करेंगे ८२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! ऐसा कहकर ते विष्णुजी के दूत क्रोध से लालनेत्र कर हम लोगों से लड़ाई का आरम्भ करते भये ८३ और क्रोध से यह बोले कि यमराज के दूतों को मारिये यह वारंवार कहकर हम लोगों को चक्रकी धार से मारने लगे ८४ फिर लड़ाई में अत्यन्त दारुण, प्रसन्न मन सब विष्णुदूत सहसा से शंखों को बजाते भये ८५ तदनन्तर हम लोगों के मेघों के गर्जन की नाईं सिंहनादों और धनुषों के विस्तारों से तीनों लोक व्याप्त होगये ८६ फिर वृक्ष, शिला तथा पर्वतकी वर्षाओं और बाणों से हम लोगोंने विष्णुदूतों को मारा ८७ फिर ऋष्टि, गोफना, बाण, बेड़ना, कुल्हाड़ा, छूरी, दंड, शंकु, ८८ तलवार, शक्ति, तीक्ष्णबाण, गदा, चक्रकी धार और भयानक बाण ८९ इन तथा और विषम वज्र के सदृश अस्त्रों से विष्णुदूतों ने कोपसे बहुत प्रकार लड़ाई में मारा ९० तब अस्त्रों से जर्जर होकर हम लोग डरसे भागे और हज़ारों तो लड़ाई ही में प्राणरहित होकर गिरपड़े हैं ९१ तब बलवान् विष्णुजी के दूत भागने में परायण हम लोगों को देखकर आनन्द से शंखोंको बजाते भये ९२ तदनन्तर कालकल्प के बन्धन को काटकर उसको विमानपर चढ़ाकर भगवान् के पुरको जाते भये ९३ गंगाजी के जल के सींचने के प्रभाव से अत्यन्त पापी काल-

कल्प भी हरिसालोक्य को प्राप्त होता भया ९४ और वहां सौ कल्प स्थित होकर मनोहर भोगों को भोगकर तहांहीं ज्ञान को प्राप्त होकर परम मोक्ष को प्राप्त होगा ९५ हे प्रभो! गंगाजी के प्रभावों से हम लोगों को ये दुःख प्राप्त हुए हैं हे ब्राह्मण! तुम्हारा कल्याण होवे तुम प्रसन्न हुए अपने स्थान को जावो ९६ ऐसा कहकर ते यमदूत यमपुर को जाते भये और धर्मस्व प्रसन्न होकर फिर गंगाजी के किनारे जाता भया ९७ और गंगाजी जोकि संसार की माता हैं तिन में स्नानकर हाथ जोड़ कर यह ब्राह्मण परमेश्वरीजी की स्तुति करते भये ९८ कि हे गङ्गे! आप सब संसार की माता, चलायमान लहरों वाली, काम आदिक के अत्यन्त पवित्र मस्तक की फूलमाला, कृष्णजी के पवित्र दोनों चरणों के धूलि की नाश करनेवाली और पापोंके नाश करनेवाली हैं आपको मैं भक्तिसे नमस्कार करताहूं ९९ हे मातः! आप सब सुख देनेवाली, नदियों में श्रेष्ठ, व्यास आदिक ब्राह्मण समूहों के गीतों की समूह, गुणों से युक्त, संसार भयानक महासमुद्र रूप तिसके मध्यमें नावरूप हैं आपके पापों के नाश करनेवाले दोनों चरणों की मैं वन्दना करता हूं १०० हे जह्नुकीकन्ये! हे वर देनेवाली! जिस आपके जलकी कणिका पाकर सौदास नाम राजा ब्राह्मणों की करोड़ हत्याको दूरकर मुक्ति को प्राप्त होगया है तिस देवताओं को भी अलभ्य आपको मैं शिरसे नमस्कार करता हूं आप प्रसन्न हूजिये १०१ हे देवि! हे मातः! हे संसार के पापों की नाश करनेवाली! नारायण, अच्युत, जनार्दन, कृष्ण, राम और गङ्गा आदिक नामों को कहतेहुए मेरे देह का पात आपके जल में आप ही की कृपा से होवे १०२ हे सबकी ईश्वरि! तपस्या, जप, दान और अश्वमेध यज्ञों से क्या होता है आपके जल की शीकर को प्राप्त होकर अत्यन्त पापी भी मनुष्य देवताओं से अलभ्य मुक्ति को प्राप्त होजाते हैं १०३ हे परमेश्वरि! हे सृष्टि, पालन और संहार करनेवाली! आप देवताओं के समूह और पितृलोकों की तृप्ति के लिये स्वाहा और स्वधा हैं सत्व, रज और तम इन तीनों गुण के स्वरूप आपके मैं नमस्कार करता हूं १०४ आपके जलको

जो मस्तक में धारता है और हे देवि! आपके किनारे की मिट्टी से सदैव पुण्ड्र धारण करता है और सब रसों के धाम आपके नाम को भक्ति से कहता है तिस मेरे मस्तक में आपके चरणों की सब रेणु होवे १०५ हे संसार बन्धन के नाश करनेवाली! हे गंगे! आपके किनारे रहने का स्थान बनाकर पापों के नाश करनेवाले आपके जलको पीकर नाम को स्मरण कर और आपकी लहरों के रस को देखकर कदाचित् मेरा जन्म होवे १०६ हे शुभे! हे मोक्ष के देने-वाली! बड़े उल्लासवाले मनुष्य स्वर्गकी अत्यन्त दुर्गम राह मान कर भय करते हैं सो यह डर करना उनका व्यर्थ है जिससे कि स्वर्ग के जाने में आपका जल सीढ़ीरूप है १०७ हे सबकी ईश्वरि! हे मुक्ति देनेवाली! हे नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी! तबतक पाप मनुष्यों की देह में स्थित रहते हैं जब तक निर्मल आपके जल में स्नान नहीं करते हैं १०८ हे परे! जिस आपकी महिमा के पारको अच्युत, ब्रह्मा, शिव आदिक और इन्द्रआदिक देवताओंके समूह भी नहीं पासक्के हैं तिस परम मोक्ष पदके देनेवाली कोई मोह से तटिनी कहते हैं १०९ हे गंगे! हे सब सुख देनेवाली! कुछ आपकी महिमा को भगवान् महादेवजी जानते हैं जिससे ये देवताओं में श्रेष्ठ शिवजी अत्यन्त भक्ति से संसार की ईश्वरी आपको सदैव शिर में धारण किये रहते हैं ११० हे गंगे! हे संसार की मातः! हे परमेश्वरि! हे देवि! आप प्रसन्न हूजिये रक्षा कीजिये आपके नमस्कार हैं मुझ सेवककी रक्षा कीजिये १११ हे मोक्ष के देनेवाली! भ्रान्तचित्त मैं परब्रह्मस्वरू-पिणी, सब लोकोंकी एक माता आपकी क्या स्तुति करसक्काहूं ११२ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इस प्रकार तिस बुद्धिमान् ब्राह्मण से स्तुति की गई गंगाजी मूर्ति को धारण कर सहसासे प्रकट हो गईं ११३ जो कि दो भुजा धारे, मकर के आसन वाली, कोकाबेलि, चन्द्रमा और शंख के समान उज्ज्वल, सब अलंकारों से भूषित थीं ११४ तिनको आगे देखकर धर्मस्वजी गंगा गंगा यह कीर्तन कर शिर से पृथ्वी को आलिंगनकर तिनके चरणों की वन्दना करते भये ११५ हे जैमिनि! तब मुसक्यानिपूर्वक देखने से मोहित करती

हुई प्रसन्न होकर परमेश्वरीजी ब्राह्मण से बोलीं कि वर मांगिये ११६ तब धर्मस्वजी बोले कि हे मातः ! आपके जल के स्पर्श से ब्राह्मण का मारने वाला भी मोक्ष को सेवन करता है मैंने साक्षात् आप के दर्शन किये हैं इससे और हमको क्या साध्य है ११७ हे परमेश्वरि ! हे देवि ! तथापि एक वर मैं मांगता हूं कि आपका नाम स्मरण करते हुए आपही के जल में मेरी मृत्यु होवे ११८ हे ईश्वरि ! मेरे किये हुए स्तोत्र से जो आपकी सदा स्तुति करे वह भी सब कामनाओं को भोगकर अन्त में सद्गति को प्राप्त होवे ११९ तब गंगाजी बोलीं कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! इस आपकी भक्ति से मैं प्रसन्न हूं शीघ्रही निस्सन्देह तुम्हारी सब कुशल होगी १२० तुम्हारे किये हुए इस स्तोत्र को जो मनुष्य तीनों संध्याओं में पढ़ेगा तिसके ऊपर मैं प्रसन्न होकर उत्तम मुक्ति दूंगी १२१ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि श्रेष्ठ ब्राह्मण ! इस प्रकार भक्तों के ऊपर प्यार करनेवाली देवी धर्मस्व को वर देकर तहांहीं अन्तर्द्धान होजाती भई १२२ तब धर्मस्व ब्राह्मण वर पाकर कृतकृत्य सा होजाता भया और तहांहीं गंगाजी के मनोरम किनारे स्थित होता भया १२३ तदनन्तर बहुत काल बीतने पर निर्मल गंगाजी के जल में सुखपूर्वक मृत्युको प्राप्त होकर उत्तम पद को जाता भया १२४ पापात्मा कालकल्प गंगाजी के जल के शीकरों से सींचा जाकर उत्तम मोक्ष को प्राप्त होगया तो औरों की क्या कथा है १२५ विना इच्छा के फलयुक्त गंगाजी के जल के स्पर्श से मोक्ष मिलता है तो भक्तिभाव से स्पर्श करनेवालों को क्या होता है यह मैं नहीं जानताहूं १२६ फिर फिर मैं कहता हूं कि गंगाजी के समान तीर्थ नहीं है जिनके जलकी कणिका छूने से परमधाम मिलता है १२७ जे भक्तिभाव से गंगाजी के जल की कणिका को स्पर्श करते हैं ते निश्चय सब बड़े घोर पापों से छूटकर भगवान् के पदको प्राप्त होते हैं १२८ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे योगसारे गंगाशीकरमाहात्म्ये
सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय

गंगाजीका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! जैमिनि! फिर गंगाजी के उत्तम माहात्म्य को कहताहूं गंगाजी के कथारूप अमृतके पान की इच्छा जो हो तो करिये १ जिसकी भक्ति गंगाजी में है उसने सब दान दिये सब यज्ञ किये और विष्णुजी को पूजा २ गंगाजी में जितने धर्म किये जाते हैं वे सब उसके नाश रहित होते हैं ३ जो गंगाजी के बहते हुए जलको देखकर भक्तिसे उठकर जाता है वह हज़ार अश्वमेध यज्ञका करनेवाला होता है ४ जो गंगाजलों के आते भये भक्ति से नहीं उठाता है तिसकी जन्म जन्म में शाश्वती पशुता मिलती है ५ गंगाजी के जलको प्राप्त होकर जो भक्ति से नहीं ग्रहण करता है वह करोड़ जन्मकी इकट्ठा की हुई पुण्य को क्षणमात्रमें नाश करदेताहै ६ जो गंगाजी के तीर जाननेवाले को निषेध करता है वह करोड़ कुल संयुक्त रौरव नरक को जाता है ७ जो गंगाजी के किनारे मूत्र वा विष्ठा करता है उसकी सौ करोड़ कल्पोमें भी निष्कृति नहीं दिखाई देती है ८ गंगाजी के किनारे जो कफ वा थूंक वा दूषिका वा आंशू वा मल छोड़ता है वह निश्चय नारकी होता है ९ जो गंगाजी के भीतर जूंठन वा कफ छोड़ता है वह घोर नरक और ब्रह्महत्याको प्राप्त होताहै १० जो मूर्ख मनुष्य गंगाजी के किनारे पाप करताहै वह पाप निश्चय नाशरहित होताहै और तीर्थों में नहीं शान्त होता है ११ और तीर्थ में किये हुए पाप गंगाजी में नाश होजाते हैं और गंगाजी में जो किये जाते हैं वे कहीं पर नाश नहीं होते हैं १२ तिससे शास्त्र जाननेवालों को गंगाजी में पाप न करना चाहिये कर्म, मन और वाणी से धर्मका संग्रह करना चाहिये १३ देश, पर्वत और वन वे नहीं हैं जहांपर पापोंके नाश करने वाली गंगाजी नहीं स्थित हैं १४ गंगाजी के किनारे को छोड़ कर मुहूर्तमात्रभी और जगह नहीं स्थित होना चाहिये चाहै सैकड़ों कार्य भी हों १५ भिक्षा के अन्नको भी

खाकर गंगाजी के किनारे स्थित होना चाहिये राज्यभी पाकर और जगह क्षणमात्र न रहना चाहिये १६ ब्राह्मण का मारनेवालाभी गंगाजीमें देह छोड़कर मुक्त हो जाता है और जगह हज़ार अश्वमेध का करनेवालाभी मुक्ति नहीं पाता है १७ गंगाजी के तीर में वसकर जो भगवान् की पूजा में परायण होता है जन्म जन्मान्तर में जिसने कभी हरिजीको नहीं पूजा है १८ उसकी संसारकी माता गंगाजी में भक्ति नहीं होती है सब मनुष्यो सुनो वारंवार मैं कहताहूं १६ गंगाजीमें स्नानकर परमपद को जाइये मृत्युकाल में जो मनुष्य गंगा गंगा यह भजता है २० वह सब पापों से छूटकर स्वर्ग में देवताओं के साथ दश हज़ार वर्ष रहता है हे ब्राह्मण ! जिसकी मृत्युके समय में गंगाजीकी कथा का प्रारम्भ होता है २१ वह सब पापों से छूटकर विष्णुजी के मन्दिरको जाता है जो बुद्धिमान् मृत्यु के समय में मुक्ति के देनेवाले गंगाजी के नाम को स्मरण करता है तिसके ऊपर हरिजी प्रसन्न होते हैं और जो मृत्युके समय में उत्तम गंगाजी की मिट्टी का पुण्ड्र धारण करताहै २२।२३ और गंगाजी के स्नान करनेवाले को देखकर जो देह छोड़ता है वह श्मशान में भी गंगाजी के मरण को प्राप्त होता है २४ देहधारी के जितने समयतक गंगाजी में हाँड़ स्थित रहते हैं तितने हज़ार कल्प वह विष्णुलोक में प्राप्त होता है २५ जिसकी राख, हाँड़, नहँ और बाल गंगाजीमें डूबते हैं वह बुद्धिमान् विष्णुजी के लोक में बसता है २६ गंगाजीमें हाँड़ोंके स्थित होने में मनुष्यको जो कर्म प्राप्तहोता है तिस सब फलको कहताहूं हे ब्राह्मण ! और जगह मन न लगाकर सुनो २७ एक समय में कामी भगवान् इन्द्र अनेक प्रकारके अलंकारों से भूषित होकर पद्मगंधा स्त्री के साथ क्रीड़ा के स्थान को जाते भये २८ पद्मगन्धा रसके जाननेवाली नवीन यौवन को प्राप्त हुई अनेक रसके दानसे सुन्दररस करती भई २६ सौति की सोने की शय्या में तिस बालमृगी के समान नेत्रवाली के पावों के तले काम से मोहित होकर इन्द्र बसते भये ३० तदनन्तर इन्द्र आपही परम प्रसन्न होकर तिसके गुणों से आकृष्टमन होकर सोनेकी बीड़ी

बनाकर देते भये ३१ इसी समय में श्रेष्ठ सुन्दरी इन्द्राणीजी सब गहनों से भूषित होकर आप भी तिस घर को जाती भई ३२ और सुन्दर लक्षणयुक्त इन्द्राणीजी सब देवों के स्वामी प्रभु इन्द्रजी को तिस प्रकार के देखकर अत्यन्त क्रोधकर बोलीं ३३ कि हे देव! हे सब देवताओं के स्वामी! हे कान्त! क्या करते हो मेरी दासी के स्वरूप को सोने की बीड़ी देते हो ३४ हे प्रभो! सब देवता तुम्हारे चरणों को स्पर्श करते हैं और आप कैसे पद्मगन्धा दासी के चरणों के नीचे हैं ३५ सुगन्धि के भाव से मांगेगये भौंरे के स्थान में तुम्हारा यश है और हे प्रभो! सब रस के जाननेवाले आप हैं और तुम सुन्दरी करोड़ पतिवाली हो ३६ हे निर्गुणे! हे पद्मगन्धे! हे दासि! कैसे तू इस प्रकार का निन्दित कर्म करती है दूर यहां से जा ३७ ईश्वरी की शय्या में तू और इन्द्र तेरे पावों के नीचे हैं तब पद्मगन्धा बोली कि मेरे गुण और दोष को आपही स्वामी निश्चय जानते हैं ३८।३९ हे निर्गुणे! किस अधिकारसे आकर तुम मेरी निन्दा करती हो और तो दो नेत्रों से गुण और दोषों को देखते हैं ४० हे दुष्ट आशय वाली! ये हज़ार नेत्रों से क्या नहीं देखते हैं जैसे मनुष्यों को दोष तथा गुण न प्राप्त हों ४१ पहले चन्द्रमा का कलङ्क मनुष्यों को गुणकी नाईं दिखाई पड़ता है अनर्थ बोलने वाली, क्रूर, कुत्सितमूर्ति और गुणों से वर्जित ४२ जो मैं गुणयुक्त न होती तो पति कैसे भजते व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! कोकनद के समान नेत्रवाली पद्मगंधा ऐसा कहकर क्रोध से ४३ बड़ी करुणा करती हुई सोने की शय्या से उठती भई तब इन्द्र बोले कि हे प्रिये! हे प्राणों की ईश्वरि! हे सुन्दरि! हे कान्ते! मुझको छोड़कर कहां जावेगी मैंने क्या तेरा अपराध किया है मुझ से वह कहिये मैं निश्चय तेरा दास हूं दास कर्म करता हूं ४४।४५ दास की स्त्री दासी होती है क्या तूने वाक्य नहीं सुना है तब तिसके मोहसे आकुल मन होकर इन्द्र उठकर ४६ फिर उस श्रेष्ठ सुन्दरी को कोड़े में बैठा लेते भये तब इन्द्राणी बोलीं कि हे क्रौंचि! तेरा जीवन धन्य है निश्चय मेरा जीवन व्यर्थ है ४७ तू स्वामी को नित्य ही सुभगा है

मैं श्रेष्ठ स्त्री दुर्भगा हूं जब तक तेरे पुण्य का नाश न होगा ४८ तब तक इन्द्रजीके साथ सुखपूर्वक केलि करो पुण्य क्षय होनेपर क्रौंच वंशमें उत्पन्न तुम फिर दुःखको भोग करोगी ४९ हे निर्गुणे! कुछ दिन सुख भोगों से तेरा कुछ न होगा ये इन्द्राणी के अत्यन्त अद्भुत वचन सुनकर पद्मगन्धा ५० द्वन्द्वभाव को छोड़कर नमस्कारकर तिन पतिव्रता इन्द्राणीजी से बोली कि हे श्रेष्ठ करिहांववाली इन्द्राणी जी! यह आपने आश्चर्य की बात कहीहै ५१ मैं क्रौंची कैसी हूं यह मेरे सुननेकी इच्छा है यत्नसे कहिये कौन मैं हूं कहां स्थित थी और कैसे यहां पतिव्रता मैं प्राप्त होगई ५२ कितने समय में मेरा पुण्य क्षीण होजावेगा तब इन्द्राणी बोलीं कि हे पद्मगन्धे! पहले तुम पक्षी से उत्पन्न क्रौंची थी ५३ पृथ्वी में स्थित होकर अपवित्र मांस और कीड़ों को खाती थी और गंगाजी के मनोरम किनारे एक न्यग्रोधका वृक्ष था ५४ तहां खोलखल बनाकर तुमने रहनेका स्थान बनाया था एक समय तिस न्यग्रोधके वृक्ष में कालेसांपने ५५ खोल-खलमें प्रवेश तुमको काटखाया तो तुम सहसासे मरगई तब तुम्हारे सब बच्चोंको क्रोध से सर्पने खाडाला ५६ हे श्रेष्ठ मुखवाली! हे भद्रे! तब वहांपर मांसरहित हाँड़ही रहगये किसी समय में बड़ी हवा से ५७ न्यग्रोधका वृक्ष जड़ से उखड़ कर गंगाजी में गिरपड़ा ५८ तो वे हाँड़ गंगाजी में डूब गये हे उत्तमे! जब तक हाँड़ गंगाजी में रहेंगे ५९ तब तक तुम सदैव स्वामी को सुभगा होगी हे पद्मगन्धे! यह सब मैंने इस समय में तुम से कहा ६० जिस पुण्यके प्रभाव से इन्द्र भी तुम्हारे वश में प्राप्त हैं गंगा देवी धन्यहैं जिनके प्रसाद से तू क्रौंची ६१ जो कि चाण्डालों स भी नहीं छूनेवाली थी वह इन्द्र के कोड़े में सोती है तब इन्द्र ने पतिव्रता इन्द्राणी का अपमान किया ६२ तो वे मलिन मुखरूपी कमल को कर जैसे आईं थीं वैसेही चली गईं और श्रेष्ठ स्त्री पद्मगन्धा इन्द्रके कोड़े में ही स्थित रही ६३ परन्तु इन्द्राणी के वचन तिस के हृदय में जागरूक की नाईं स्थित रहे तदनन्तर एक समय में पद्मगन्धा के गुणों से इन्द्र प्रसन्न होकर ६४ आपही उस से बोले कि हे सुन्दर करिहांववाली!

तू वर मांग, तब पद्मगन्धा बोली कि हे स्वामिन् ! हे देवताओं में उत्तम ! आप सब देवताओं के स्वामी और करोड़ स्त्रियों के पति हैं तिसपर भी मेरे आधीन हैं तो और वरों से क्या है तिसपर भी जो निश्चय आप वर देने की इच्छा करते हैं ६५।६६ तो मेरे आगे कर्म, मन और वाणी से प्रतिज्ञा कीजिये तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दरि ! मुझे आज्ञा दीजिये कि जीवन, धन, राज्य और परिच्छद क्या तुझको दूं मैं सत्यही सत्य कहता हूं इसमें सन्देह नहीं है ६७।६८ हे मृगनयनी ! जो तुम इच्छा करोगी वह निश्चय दूंगा तब पद्मगन्धा बोली कि हे देवताओं के ईश्वर ! जो आप निश्चय प्रसन्नहैं ६९ तो मेरा फिर जन्म हाथी की योनि में दीजिये यही मुझ को वर दीजिये तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दरकटिवाली ! तुम से प्रतिज्ञा करचुका हूं इससे मैं तुमको वर देता हूं ७० हे वरारोहे ! तुम को न देखकर क्षणमात्र भी प्रीति न प्राप्त होगी किन्तु मेरे हृदय में बहुत दुःख उत्पन्न होंगे ७१ हे मोटे स्तनवाली ! कैसे दुःसह आपके बहुत विच्छेद को सहूंगा जो मेरे ऊपर तुम्हारी दया हो ७२ तो कुछ दिन मेरे साथ स्थित रहो तदनन्तर सती पद्मगन्धा इन्द्रकी बहुत सम्पदा कहती हुई ७३ दशहज़ार वर्ष इन्द्रही के स्थान में स्थित रही तिस पीछे उनसे बोली कि हे देवताओं के स्वामी ! मेरे मनोरथ साधन करने के लिये आज्ञा दीजिये ७४ मैं कर्मभूमिको जातीहूं आपके दोनों चरणोंकी वन्दना करतीहूं तब इन्द्रबोले कि हे चन्द्रमुखी ! तुम्हारे प्रेमरूपी समुद्रके मानसे ७५ कुछ दिन स्थित हो लूं पीछे से सुखपूर्वक चली जाइयो तब तो कौतुक के मन्दिर में इन्द्रके साथ रात्रि दिन ७६ क्रीड़ा करती हुई पद्मगन्धा तीस हज़ार वर्ष स्थित रही तिस पीछे आनन्दयुक्त होकर इन्द्र से बोली ७७ कि इस समय में आज्ञा दीजिये मैं पृथ्वीमें जाऊंगी तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दर कटिवाली ! जड़ता छोड़िये मेरे साथ यहीं रहिये ७८ प्राणों से भी अधिक प्यारी तुम्हारे छोड़नेको मैं नहीं समर्थहूं तब पद्मगन्धा बोली कि हे देवताओं के स्वामी ! पुण्य के नाश होजाने में जो मैं पृथ्वी में जाऊंगी ७९ तो बहुत

काल मेरे साथ आपका विच्छेद होगा जिस विच्छेदमें मैं हे नाथ! फिर पृथ्वी पर जाने की ८० इच्छा करती हूं हे इन्द्रजी! जिस उपाय से मैं कर्मभूमि में जाकर पुण्य इकट्ठा कर फिर स्वर्ग में चली आऊं ८१ यही मैं करना चाहती हूं जिससे आपके साथ मेरा विच्छेद कभी न हो तब इन्द्र बोले कि हे भद्रे! तुमने जो निश्चय यह कर्म करने की इच्छा की है ८२ तो हे सुन्दरि! जाइये फिर शीघ्रही आइये तदनन्तर नेत्रों के आंसुओं से देहको सींच कर ८३ तिसको दोनों हाथोंसे आलिंगन कर इन्द्र बोले कि हे प्रिये! जाइये तब इन्द्रकी आज्ञा से वह पतिव्रता कर्मभूमि में प्राप्त होगई ८४ और हथिनी की योनि में उत्पन्न होकर जाति का स्मरण बना रहा कुछ दिनों में अपना वृत्तान्त स्मरण करती हुई ८५ गंगाजी के किनारे जाकर गंगाजी में स्नानकर गंगाजी के कीचड़ से भूषित होकर ८६ पर्वतके आकार वह गंगागंगा यह कहतीहुई गहरे कुण्ड में प्रवेश करगई तिस गंगाजी के कुण्ड में जाकर यह हस्तिनी ८७ अपनी जाति को स्मरण करती हुई फिर नाश को प्राप्त होगई तिसके सा-हसको देखकर सब देवता हस्तिनी के ऊपर ८८ आनन्द से कल्प-वृक्ष आदिक के उत्तम फूल बरसते भये तदनन्तर सब देवसमूहों से युक्तहोकर इन्द्र तिसके लेने के लिये ८९ शीघ्रता से तिसके बहुत काल के विच्छेदसे जाते भये और सुन्दर देहवाली को विमान पर चढ़ाकर ९० अपने दुःखों को कहते हुए अपने स्थान को प्राप्तहोते भये इन्द्राणी, रंभा, प्रम्लोचा, उर्वशी ९१ तथा और भी इन्द्रकी सुन्दर स्त्रियां आनन्दसे सबकाम छोड़कर तिसके पास आतीभईं तब यह श्रेष्ठस्त्री इन्द्रके हृदयके उत्साहको विस्तारित करती हुई ९२ सुभगा और प्रीतिसे प्यारी होतीहुई इन्द्रके पुरमें स्थित होती भई जिसके जबतक हाँड़ गंगाजी में स्थित होते हैं ९३ तबतक वह सौ करोड़ कुलताईं देवताओं के स्थान में स्थित होती है स्वर्ग में जेजे राजा तपस्या के बल से राज्यों में हुए हैं ९४ तिन तिन की स्नेह भूमि देवों की सुन्दरी होती है हे जैमिनि! गंगाजी में हाँड़ोंके डूबने से यह फल है ९५ और गंगाजी में देह छोड़नेवाले के फल

कहने को मैं नहीं समर्थ हूं गंगाजी में मृतक शरीर और हाँड़ जब तक स्थित रहते हैं ९६ तबतक सैकड़ों करोड़ कल्पतक देवताओं के स्थान में वास होताहै और गंगाजी में मृतक शरीर जो धाराओं से चलित हुआ ९७ देहधारियों का दिखलाई देता है तिसके फल को सुनिये स्वर्ग में देवताओं की स्त्रियां डरकर पवित्र चामर की पवनों से ९८ डुलाती हैं और वह देहधारी आनन्दयुक्त सोने की शय्या पर सोता है गंगाजी की बालू में जिसका शरीर मृतक दिखाई देता है ९९ और सूर्य की किरणों से तप्त होता है तिसके कुलको मैं कहता हूं सुन्दर सुगन्धित चन्दनों से लिप्त सब देह होकर १०० सुन्दर स्त्रियोंसमेत स्वर्ग में सदैव क्रीड़ा करता है कौआ, गृध्र और कंकपक्षियों से गंगाजी में १०१ जिसकी देह विदलित दिखाई देती है तिसका फल सुनिये स्वर्ग में देवताओं की स्त्रियों के मोटे ऊंचे सुन्दर स्तनों से १०२ आलिंगनयुक्त छाती होकर नित्यही सोते हैं चिउँटी, कीड़े और मक्खियोंसे आच्छादित १०३ गंगाजी में जिसके गिरे हुए हाँड़ दिखलाई पड़ते हैं तिस के नाशरहित फल को मेरे कहते हुए सुनिये १०४ प्रणाम करते हुए देवताओं के समूह के शिरके मुकुट के भूषणोंसे पांवोंकी धूलि नष्ट होकर बहुत समय तक स्वर्ग में इन्द्रकी नाईं आनंद करता है १०५ जिस मनुष्य की देह विना इच्छाही के गंगाजी में पतन होजाती है वह सब पापों से छूटकर नारायण होजाता है १०६ जलसे चलित होकर जिसके अंगार गंगाजी में दिखाई देते हैं वह अंगार की संख्या से स्वर्ग में सौ कल्प अधिक स्थित होता हैं १०७ सब पुण्यों का कदाचित् नाश भी दिखाई देता है परन्तु गंगाजी में पतित देहमें पुण्य का नाश नहीं होताहै १०८ बहुत यहां कहने से क्या है निश्चित इस समय में मैंने कहा है गंगाजी में छोड़ी हुई देह की महिमा मैं नहीं जानता हूं १०९ जो चतुर मनुष्य भक्तिभावों से विषम पापों के राशियों के नाश करनेवाले गंगाजी के जल को पृथ्वी में कभी स्पर्श करता है वह भयानक समुद्र के जल को नांघकर अपार प्रसन्नता से पार होजाता है ११० ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे गंगामाहात्म्येऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नववां अध्याय

गंगाजी का माहात्म्य वर्णन ॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो ! फिर उत्तम गंगाजी के माहात्म्य को कहिये मधुरता से गंगाजी की कथारूप अमृत के पीने को फिर इच्छा है १ तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! जिससे आप गंगा जी के भक्त हैं इससे मैं तुमसे कहता हूं मनुष्यों के वही चरण सफल हैं जो गंगाजी के किनारे के जानेवाले हैं २ वेही कान हैं जो गंगा-जी की कल्लोल के शब्द सुननेवाले हैं वही जिह्वा है जो गंगाजी के जल के स्वादु के भेद को जानती है ३ वही नेत्र हैं जो गंगाजी की पवित्र लहरियों के दर्शन करते हैं वही मस्तक कहाता है जो गंगाजी की मिट्टीका पुण्ड्र धारण करता है ४ वेही हाथ हैं जो गंगाजी के किनारे भगवान् की पूजा में परायण हैं वही शरीर सफल है जो निर्मल गंगाजी के जल में ५ पतितहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! वह देह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के फल का देनेवाला है स्वर्ग में स्थित सब पितर गंगाजी के किनारे जाते हुए ६ को देखकर प्रसन्न होकर उसकी प्रशंसा करते और कहते हैं कि पूर्वसमय में सद्गति की प्राप्ति के लिये कौन पुण्य हम लोगों ने की है ७ जो कि नाशरहित होकर यह पुत्र इसप्रकार का हुआ है इससे गंगाजी के जल से हम लोग इस समय में तर्पित होकर ८ देवताओं के भी दुर्लभ परमधाम को जावेंगे हमारा पुत्र गंगाजी में जिन द्रव्यों को देगा ९ वे सब हमलोगों के लिये नाशरहित होंगी और सब दुःख से युक्त नरक में स्थित पितर १० गंगाजी के किनारे जानेवाले पुत्र को देखकर यह कहते हैं कि हमलोगों ने नरक के क्लेश देनेवाले जितने पाप किये थे ११ वे पुत्र के प्रसाद से नाश-रहित होगये दुस्सह नरक के क्लेशों से हम सब छूटगये १२ अब पुत्र के प्रसाद से परमगति को जावेंगे और जो मनुष्य गंगाजी की यात्रा करके मोहसे घर लौट आता है १३ उसके सब पितर जैसे आते हैं वैसेही निराश होकर चले जाते हैं मांस, मैथुन, दोला, घोड़ा, हाथी, १४ जूता और छतुरी गंगाजी की यात्राओं में वर्जित करे दुष्कर

मार्ग के श्रमसे उत्पन्न दुःखको नहीं माने १५ घरमें पड्मसुख को गंगास्नान में न स्मरण करै झूंठ बोलना, पाखण्डियों का संग १६ दूसरी बार भोजन और लड़ाई गंगाजी की यात्राओं में छोड़ देवे दूसरे की निन्दा, लोभ, अभिमान, क्रोध, मत्सर, १७ अत्यंत हास्य और शोकको भी गंगाजी की यात्राओं में छोड़े पृथ्वी में सोनेवाली देहको मंचपर सोयेहुए की नाईं चिन्तना करे १८ मनुष्य राह में गंगाजी के सुन्दर नामों को कहता हुआ जावे गंगादेवी के सब पाप नाश करनेवाले सुख और मोक्ष के देनेवाले माहात्म्यको राह में कहताहुआ जावे हे गंगे! हे देवि! हे संसार की मातः! मुझको दर्शन दीजिये १९।२० इन कोमल वचनों से श्रम निवारण करे और हा कैसे मैंने स्थान छोड़ दिया व कैसे मैं यहां आया २१ परिश्रमों से यह जो कहता है तो उसका यह फल सम्पूर्ण नहीं होता है कहां शय्या, कहां मेरी स्त्री, कहां मेरे मित्र और घर है २२ प्रांतर भूमिमें कैसे मैं यहां आकर सोऊंगा धन धान्य आदि वस्तुओं की मेरे घर में क्या गति होगी २३ कितने दिनों में मैं फिर घर को लौट जाऊंगा इस प्रकार की चिन्ता से व्याकुल होकर जे मनुष्य राह में जाते हैं २४ उनको गंगास्नान का फल सम्पूर्ण नहीं होता है और हे गंगे! आपके किनारे जाने के लिये यह यात्रा मैंने की है २५ हे नदियों में श्रेष्ठ! आप के प्रसाद से निर्विघ्न सिद्धि को प्राप्त होऊं इस मंत्रको यात्रा के समय में विशेष कर उच्चारण कर २६ प्रसन्न होकर वैष्णवों के साथ स्थानसे जावे न तो बहुत जल्द और न बहुत धीरे धीरे से जावे २७ चतुर पुरुष गंगाजी की यात्राओं में और कर्म न करे गंगाजी के तीर और प्रयाग में वाणिज्य इत्यादिक २८ कार्य जो करता है तिसकी आधी पुण्य नाश होजाती है और जन्म २ के इकट्ठे हुए पाप थोड़े वा बहुत २९ सब गंगादेवी के प्रसाद से नाश को प्राप्त होजावें ऐसा कहकर परम प्रसन्न होकर बुद्धिमान् गंगाजी के किनारे जावे ३० और गंगा माता को देखकर इस मंत्रको कहे कि इस समय में मेरा जन्म सफल हुआ और जीवन भी सुन्दर हुआ ३१ साक्षात् ब्रह्मस्वरूपा आपको नेत्रसे

देखा हे देवि! आपके दर्शन से मुझ महापापी के भी ३२ करोड़ जन्म के उत्पन्न पाप नष्ट होगये ऐसा कह कर सब देहको पृथ्वीतल में गिराकर ३३ भक्तिभावसे युक्त होकर गङ्गादेवी को प्रणाम करे तदनन्तर स्रोत के पास हाथ जोड़ कर फिर इस ३४ मंत्रको भक्तिभाव से प्रसन्न होकर पढ़े कि हे गंगेदेवि ! हे संसारकी मातः ! हे शुभे ! चरणों से आपके जलको छूता हूं इस मेरे अपराधको प्रसन्न होकर क्षमा करने के योग्यहो आपका जल स्वर्ग के चढ़ने के लिये सीढ़ीरूप है ३५।३६ इससे हे गंगेदेवि ! चरणों से छूता हूं आपके नमस्कार है तदनन्तर भक्ति से गंगाजी के जलको माथे में धारण कर ३७ बुद्धिमान् मनुष्य गंगा यह नाम कहकर स्नान करने के लिये स्रोत में प्रवेश करे हे मातः! आपके अत्यन्त चिकने सब पापके नाश करनेवाले कीचड़ों से ३८ मैंने देह लीपी है हे मातः! मेरे पापों को नाश कीजिये गंगा के कीचड़ से लिप्तअंग होकर गंगा गंगा यह कीर्तन कर ३९ सब पापनाशिनी गंगाजी में स्नान करे फिर पहले के कहेहुए मंत्रसे मिट्टी लेकर ४० कहे हुए मंत्रसे भक्तिसे स्नान करे ४१ हे ब्रह्मस्वरूपे गंगे ! आपके निर्मल जल में मैंने स्नान किया है इससे यथोक्त फल देनेवाली होवो ४२ तदनन्तर हे ब्राह्मण ! बुद्धिमान् मनुष्य गंगा और नारायणजी का स्मरण कर अपनी इच्छा से संसार की माता गंगाजी में स्नान करे ४३ इस प्रकार गंगाजी में स्नानकर देहको कपड़े से पोंछकर कपड़े पहने जलको गंगाजी में न छोड़े ४४ बुद्धिमान् मनुष्य गंगाजी में दतूनि न करे जो मोहसे करे तो गंगास्नान से उत्पन्न पुण्य को नहीं प्राप्त होवे ४५ प्रातःकाल और जगह दतूनि आदिक क्रिया को कर रात्रिवासको छोड़कर गंगाजी में स्नान करे ४६ बाहर की भूमि में विना गये जो गंगाजी में स्नान करता है वह संपूर्ण गंगाजी के स्नान के फलको नहीं पाता है ४७ बुद्धिमान् मनुष्य गंगाजी में स्नान कर स्थान स्थान में मिट्टी के पुण्ड्र को धारण कर फिर स्थिर मन होकर विधिपूर्वक तर्प्पण आदिक करे ४८ गंगाजी के जल से जो पितरों को तर्पण करता है तो तिसके पितर सौकरोड़ वर्षतक तृप्त

रहते हैं ४९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! गंगाजी में जो पितृश्राद्ध करता है तो उसके पितर संतुष्ट होकर स्वर्ग में स्थित होते हैं ५० गंगाजी में स्नान कर्मों को समाप्त कर व्रत, दान, देवपूजन, जप तथा और क्रिया जो की जातीहै उनका नाश नहीं होता है ५१ स्नान-कर्मों को समाप्त कर गंगाजी में व्रत कर पंच महायज्ञों को करके गंगाजी की पूजा करे ५२ बुद्धिमान् मनुष्य गंगादेवी की तथा श्री विष्णुजी की मूर्त्ति को भक्ति से नारियल के जलसे स्नान करावे ५३ गंगाजी की मूर्त्तिके अभाव से नारियल का जल निश्चय कर गंगजी को हृदय में स्मरण कर गंगाजी के जल में छोड़ देवे ५४ सुन्दर चन्दन, घीसे पूर्ण उज्ज्वल दीप, सुगन्धित धूप, अनेक प्रकार के मनोहर फूल ५५ अनेक प्रकार के फल, सुन्दर पकीहुई उत्तम नैवेद्य, पाद्य, अर्घ, आचमनीय, खैरसे युक्त पान ५६ तथा और विशिष्ट भेंट, स्तोत्र और अनेक प्रकार की नैवेद्यों से गंगा और विष्णुजी को पूजन करे ५७ तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य पूजित हुई देवी और विष्णु परमेश्वरजी की भक्ति से तीन बार प्रदक्षिणा करे ५८ तिस पीछे दूसरे दिन निराहार स्थित होकर हे नदियों में श्रेष्ठ ! हे जह्नुकी कन्या ! हे पापरहित ! मैं भोजन करूंगा मुझको शरण दीजिये ५९ इस प्रकार बुद्धिमान् कर्म्म, मन और वाणी से संकल्प कर निद्रा जीतकर अत्यन्त हर्षित होकर रात्रिमें जागरण करे ६० और शक्ति न होवे तो फलों को भोजन करे अन्नमात्र न भोजन करे और दोबार भोजन करे ६१ हे जैमिनि ! प्रातःकाल गङ्गाजी और विष्णुजी को फिर पूजन कर द्रव्य के अनु-रूप ब्राह्मण को दक्षिणा देवे ६२ हे गंगे ! पूजन और जागरण जो आपके आगे किया है वह सब आपके प्रसादसे छिद्ररहित होवे ६३ ऐसा कहकर नित्यकी पूजाकर ब्राह्मण तिनको नमस्कार करे फिर बन्धुओंसमेत आप भी पारण करे ६४ इस प्रकार गंगाजी के किनारे जो तीर्थ व्रत करता है तिसके पुण्यफल को मैं कहता हूं सुनिये ६५ और जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए पापों से छूटकर विष्णुरूप धारण करनेवाला विष्णुजी के पुरमें प्राप्त होकर विष्णुजी के साथ

आनन्द करता है ६६ हज़ार करोड़ कल्प और सौ करोड़ कल्प विष्णुजी के पुरमें स्थित होकर सब दुर्लभ सुख भोगकर ६७ फिर नारायणजी की आज्ञासे ब्रह्मलोक को जाता है और वहांपर देवताओं के भी दुर्ल्लभ सुखको भोगता है ६८ फिर तितने काल ब्रह्मलोक में स्थित होकर ब्रह्मक्षय के पीछे सुन्दर रथपर चढ़कर महादेवजी के यहां जाताहै ६९ फिर अत्यन्त दुर्लभ अनेक प्रकार के सुख भोगकर गणेशजी के यहां प्राप्त होताहै और बहुत कहने से क्या है ७० तितनेही काल शिवपुरमें स्थित होकर पुण्यवान् मनुष्य दूसरे इन्द्रकी नाईं इन्द्रलोक को जाताहै ७१ और तिन पुण्यात्मा के साथ एक आसन में बसता है और तहांपर सौकरोड़ कल्पतक सम्पूर्ण कामनाओं को भोगकर ७२ दूसरे चन्द्रमाकी नाईं सूर्यलोक को जाता है और वहांपर बहुत काल चन्द्रमा के समीप अमृत भोगकर ७३ फिर पृथ्वी में आकर चक्रवर्ती राजा होता है बहुत काल पृथ्वी को पालन कर सब वैरियों को जीतकर ७४ उमर के अन्त में गंगाजी में सुखपूर्वक मृत्यु को प्राप्त होताहै फिर महाय-शस्वी वह इसी प्रकार विमान पर चढ़कर ७५ देवताओं के भी दुर्लभ भगवान्के पुरको जाताहै तहांपर चार मन्वंतर सब भोगों को भोगकर ७६ परमज्ञानको प्राप्त होकर दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै गंगातीर की यात्रा में भाग्य से जिसकी राहमें ७७ मृत्यु होजाती है वहभी निस्सन्देह परमधामको जाता है सत्यधर्म नाम राजा धर्मात्मा और प्रिय बोलनेवाला था ७८ यह राजा पृथ्वी में त्रेता और द्वापर की सन्धि में हुआ था तिस राजा की विजया नाम स्त्री हुई ७९ यह सुन्दरी शीलयुक्त और पति की सेवा में परायण थी सातहज़ार वर्ष इस पृथ्वी को राजा भोगकर ८० कदाचित् काल प्राप्त होकर स्त्रीसमेत यह राजा नाशको प्राप्त होगया तब भयंकर राजा और रानी दोनों को यमराज के दूतोंने बांध कर ८१ दुःख देनेवाली राह से यमराजके मन्दिरको प्राप्त करादिया तिनको देखकर धर्मराज चित्रगुप्तसे बोले ८२ कि हे चित्रगुप्त! इन दोनोंके कर्मोंको विचारिये तिनकी आज्ञा पाकर चित्रगुप्त राजा और रानी के कर्मों

को ८३ मूलसे विचारकर हाथ जोड़कर यह बोले कि हे यमराज! इन दोनों के सब कर्मोंको कहताहूं सुनिये ८४ शुभ वा अशुभ कर्म जो इन्होंने पृथ्वी में किये हैं कुछ राजाकी अनीतिका उपाय भी कहताहूं तिसको भी सुनिये ८५ एक समय व्याघ्रों से भययुक्त हुआ कोई एक हरिण वनसे रक्षाके लिये इसकी सभा में आया ८६ तब तिसको आतेहुए देखकर कौतुकमें प्राप्त होकर यह शीघ्रही उठकर हरिण के करिहांव में खड्ग से ८७ मारताभया हे प्रभो! जिससे कि इसने शरण में आये हुये को मारा इससे यह स्त्रीसमेत आप से दण्ड पाने योग्य है ८८ जितने हरिण की देहमें रोम स्थितहैं उतने हीं मन्वंतर हज़ार मन्वंतर और उतनेही सौ मन्वंतर ८९ करोड़ करोड़ कुलों से युक्त होकर निस्सन्देह नरक में रहे जो ज्ञानी मनुष्य शरणागत की रक्षा प्राण और धनों से करता है तिसकी पुण्य को सुनिये ब्रह्महत्या आदिक सब पापों से छूटकर ९०।९१ उमरके अन्तमें योगियों के भी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै तदनंतर यमराज की आज्ञा से स्त्रीसमेत यह राजा दूतों से ९२ घोर अ-त्यन्त दुःख देने वाले असिपत्र वन में स्थापित कियागया जहांपर वृक्षों के पत्ते तलवार के समान होते हैं ९३ इसमें बुद्धिमान् उसको असिपत्र वन कहते हैं इस वन में सौ करोड़ युग स्थित होकर ९४ स्त्रीसमेत व्याघ्रभक्ष्य नाम नरक को सेवन करता भया इसमें सब उपद्रव युक्त हैं ९५ व्याघ्रों से भक्ष्य होताहै इससे उस नरक का नाम व्याघ्रभक्ष्य हुआ है तहां पर राजा हज़ार करोड़ युग स्थित होकर स्त्रीसमेत पृथ्वी में मेढ़क की योनि में स्थित रहा वहां पर दोनों मेढ़क और मेढ़की अत्यन्त दुःखित जातिस्मर हुए ९६।९७ एक किनारे दोनों स्थित रहें और निरन्तर कीड़ों का भोजन करते रहें तदनन्तर एक समय में तिस मार्ग से पुण्य दिन प्राप्त होकर मनुष्य ९८ गङ्गाजी के किनारे जाते थे तिनको वे दोनों देखते भये तब मेढ़क मेढ़की से बोला कि हे मेढ़की! मोह से जो सब पाप मैंने किये थे ९९ इस समय में तिस कर्म से हम लोगों का दुःख नहीं छूटाहै गंगाजी में देह छोड़कर पापी भी मुक्त होजाते हैं १०० तिस

पर भी इस प्रकारका दुःख हम लोग कैसे उठावें इस समय गंगा जीमें देह छोड़ने की इच्छाहै १०१ इससे हे कांते! क्या युक्त है तिसको कहिये दुःखरूपी समुद्र के तरने की इच्छाहै मेढ़की मेढ़क के वचन सुनकर नम्रतायुक्त होकर यह बोली १०२ कि हे स्वामिन्! दुःख सहने में नहीं समर्थ हैं यह शीघ्रही कीजिये तब दोनों शुभ देनेवाली गंगाजी को स्मरण कर १०३ अत्यन्त प्रसन्न होकर मरने के लिये सहसा से यात्रा करते भये तदनन्तर राह में बहुत काल के भूंखे जाते हुए इनको १०४ पापी भयंकर कालसर्प देखकर बोला कि तुम दोनों पापी मेढ़क और मेढ़की यहां आवो तुम्हारा काल प्राप्त हुआ है १०५ अब निश्चय तुम दोनों मुझ भूंखे करके खाने के योग्य हौ तबतो दोनों स्त्री पुरुष दुःख के भागी अत्यन्त डरकर १०६ आगे प्राप्त हुए काल सर्प से भक्ति से ये वचन बोले कि हे सर्प! हम दोनों के हृदय में थोड़ा भी मृत्यु का भय नहीं है १०७ मैं पूर्व समय में पृथ्वी में सत्यधर्मा नाम हुआ था और यह विजयानाम मेरी स्त्री स्थित है १०८ मुझ दुरात्मा ने मोह से शरणागत को मारा था तिसी कर्म्म से बहुत समयतक यमराज के यहां दुःख भोग किया है १०९ अपने कर्म के शेष के भोग करने के लिये मैं स्त्री समेत मेढ़क की योनि में प्राप्त हुआ हूं पाप से कियाहुआ कर्म नहीं छूटता है ११० हे सर्प! सत्यही हम दोनों परमधाम के जाने की इच्छा से देह छोड़ने के हेतु गंगाजी के तीर को जाते हैं १११ हे सर्प! नरक के क्लेश देनेवाली अज्ञानता को छोड़ो हम दोनों को खाकर आपको कितना सुख होगा ११२ हे सर्प! हम दोनों और आपके हृदय में भी भगवान् हैं इससे आप के क्या शत्रुता है ११३ प्राणिहिंसा चतुरों को कभी न करनी चाहिये तिस हिंसाको आपही विधि करता है ११४ उमर, पुत्र, स्त्रियां, सम्पदा और यशको मनुष्यों की हिंसा देकर दुष्टविधि आपही हरता है ११५ जप, तपस्या, दान और यज्ञोंसे क्या है जिस के हृदय में सदैव हिंसा ये दो वर्ण रहते हैं ११६ जो प्राणियों का मारनेवाला है सोई भगवान् का मारनेवाला है क्योंकि सब प्राणि-

यों के शरीर में लक्ष्मीपति भगवान् स्थित रहते हैं ११७ प्राणियों की रक्षा करनेवाले, भगवान् आत्मा को अनेक प्रकार की रचकर संसाररूप कौतुक के मन्दिर में बालक की नाईं आपही क्रीड़ा करते हैं ११८ देहधारी का शरीर परमात्माजी का स्थान है परमात्मा आपही विष्णुजी हैं इससे हिंसा को छोड़ देवे ११९ पराये प्राण के नाश से आत्मा की तुष्टि जो होती है १२० तो आत्मा की तुष्टि तो क्षणमात्र के लिये है और दूसरे के प्राण का नाश होगया पृथ्वी में मनुष्यों का यह चरित्र अत्यन्त अद्भुत की नाईं है १२१ कि दूसरे को मारकर अत्यन्त यत्न से आत्मा की तृप्ति करते हैं बुद्धिमान् आत्माका परिज्ञान कभी नहीं करता है १२२ मैं विष्णु हूं ये विष्णु हैं यह चित्त में भावना करै पराये दुःख से जो दुःखी है और पराई लक्ष्मी से जो सुखी है १२३ इस संसार में साक्षात् हरि आपही वह जानने के योग्य है और मोहसे ठगे हुए चित्तवाले मनुष्यों का वह सुख धिक्कार है १२४ जो पराई हिंसा के विधान से होताहै सुख वा दुःख जितने प्राणी को दिये जाते हैं १२५ पृथ्वी में थोड़ेही काल में मनुष्य उन को प्राप्त होते हैं तिससे हे सर्प! हिंसा को छोड़कर सुखी होवो १२६ आपके प्रसन्न होने में दुःखरूपी महासमुद्र के पार को हम दोनों जावेंगे तब सर्प बोला कि जो पराई हिंसा में निश्चय मुझको अत्यन्त पाप नहीं होता है १२७ तो कैसे ब्रह्मा की सृष्टि में भक्ष्य और भक्षक है तुमने यह सत्य कहा है कि पराई हिंसा न करनी चाहिये १२८ किन्तु सब भक्ष्यों में हिंसा नहीं सम्भावित है और निस्सन्देह नारायण सत्य विश्वरूप हैं १२९ भक्ष्य और भक्षक संज्ञकको आपही रचते हैं आत्माको आपही रचते, पालते १३० और संहार करते हैं इस प्रकार की हरिजी की सृष्टि है मैं क्या आपके मारने में समर्थ हूं कालरूपी आपही विधि हैं १३१ इस समय में इसकार्य में आपही भगवान् ने मुझको भेजा है जो देव तुम दोनों को रचता है और सदा पालता है १३२ वही कालरूपी इस समय में मुझ को हेतु बनाकर नाश करता है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तदनन्तर तिस सांपने उन दोनों मेढ़क और मेढ़कियों को खालिया

१३३ ये मेढ़क और मेढ़की गंगा के तीर की यात्रा में पैग पैग में राह में बड़ी भूख से गंगा गंगा यह कहते आये थे १३४ तिस से ये दोनों महात्मा बहुत अश्वमेध यज्ञों के महाफल को प्राप्त हुए १३५ इन दोनों के समान इन्द्र भी नहीं हैं इन्द्र अपने अधिकार से दूसरे को अवलंबनकर १३६ अर्घ्य हाथ में लेकर पैदल चलकर देवतों से युक्त होकर आते भये तदनन्तर रम्भा, उर्वशी तथा और स्त्रियां प्रसन्न होकर १३७ अपने यौवन से अभिमान युक्त होकर परस्पर कहती भईं कि यह पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ, रसका जाननेवाला और अत्यन्त सुन्दर १३८ आता है इसको अपनी सेवा से अपने वश करेंगी कोई कहती भई कि मैं सब कला को जानती हूं १३९ इस से इस राजा की मैं स्त्री हूंगी कोई कहती भई कि इन्द्र मेरे वश में हैं तो इस राजा के मेरे वश होने में क्या आश्चर्य है १४०। १४१ मेरे भर्ता स्वामी और नाथ यही हैं इस प्रकार परमानन्दों से सब सगुण के जाननेवाली सम्पूर्ण स्त्रियां कहती भईं १४२ तिनका छोटा बड़ा सुनकर कोई गुण युक्त रस के जाननेवाली स्त्री बोली कि यह राजा आपही सौदास्य कांता को सेवता है हे स्त्रियो! लड़ाई करेने से क्या है १४३ तब सब स्त्रियां लड़ाई छोड़कर सब गहनों से भूषित होकर हृदय के उत्साहों से आती भईं १४४ तदनन्तर पाप रहित स्त्री समेत श्रेष्ठ राजाको पाद्यादिकों से इन्द्रके कहने से पूजन भी करती भईं १४५ फिर इन्द्र स्त्री संयुक्त राजा को पुष्पक रथमें बैठा लेताभया और नगारा, मृदंग, मधुरी, डिंडिम, आनक, १४६ हाथ के कंकण, करताल और जय के शब्दों से स्वर्ग में बड़ा शब्द होता भया १४७ देवताओं की स्त्रियां पवित्र हाथों में सफेद चामर की पवनों से हवा करने लगीं इस प्रकार स्त्री समेत राजा स्वर्ग को जाता भया १४८ तदनन्तर शुभ आपही इन्द्र तिस सत्यधर्म राजा को नाश की शंका से अपने आसन का आधा देते भये १४९ तब भगवान् की कृपा से यह राजा इन्द्र के साथ सदैव एक आसन पर बैठकर स्वर्ग में इन्द्र भाव करता भया १५० हज़ार करोड़ युग स्वर्ग में सब सुख भोगकर रथपर चढ़कर भगवान् की

आज्ञा से वैकुण्ठ को जाताभया १५१ तहांपर मनोरम सब भोग मन्वन्तर पर्यन्त भोगकर स्त्री समेत मोक्ष को प्राप्त होजाता भया १५२ हे ब्राह्मण ! गंगातीर की यात्रा में राह में देह छोड़नेवाले का इस प्रकार का सब फल मैंने कहा १५३ तत्त्वदर्शी नारदादिक महर्षियोंने गंगातीर के जाने में कालका नियम नहीं कहाहै १५४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जब जब गंगाजी में स्नान करै तब तब मनुष्य नाशरहित पुण्य को पाता है १५५ गंगा सब पापों को नाश करती है यह वारंवार निश्चय करै और तिस पापको गंगा न पवित्र करेंगी १५६ इस पापबुद्धि को छोड़ कर हे मनुष्यो ! संसार की माता गंगाजी में जो अच्छी गति की इच्छा चाहो तो स्नान करो १५७ हे ब्राह्मण ! मनुष्यों को जो पुण्य गंगाजी के स्नान से मिलती है वह कितने ही दुस्तर कर्मोंसे प्राप्त होती है १५८ पृथ्वी की धूलिके कणोंकी गिन्ती करना तो होसक्ताहै परन्तु गंगाजी के गुण कहनेको नहीं समर्थ हो सक्के हैं १५९ तुम्हारे सब शास्त्रों को विचार कर मैंने कहा है मनुष्य गंगाजी के जल में एकबार भी स्नान कर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है १६० हे ब्राह्मण ! जो कुंयें के जल में भी गंगा और देवताओं के प्रभुको चिन्तनाकर स्नान करता है वह सम्पूर्ण दुःख, शोक, पाप और भयके समूह के नाश करनेवाली श्रीगंगाजी के प्रसाद से सब गऊ और ब्राह्मण की हत्या आदिक पापसमूहों से छूटकर सब सुख देनेवाले विष्णुजी के पुरको जाता है १६१ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे गंगामाहात्म्ये नवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय

चम्पा के फूलकी महिमा वर्णन ॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो व्यासजी ! आपके प्रसाद से यह गंगाजी का माहात्म्य तो मैंने सुना अब इस समय में विष्णुजी की पूजा के फलके सुनने की इच्छा है १ तब व्यास जी बोले कि हे वत्स जैमिनि ! भगवान् के उत्तम पूजा के फल को सुनो जिसको सुनकर सब मनुष्य उत्तम ज्ञान को प्राप्त होते हैं २ हे ब्राह्मण ! माघ

आदिक बारहौं महीने में सनातन भगवान् जिन विधानों से पूजने चाहिये तिन को मैं कहताहूं सुनिये ३ उत्तम वैष्णव शुभ सब मासों में उत्तम माघमास के प्राप्त होने में मांस और मैथुन को त्याग देवे ४ नित्यही प्रातःकाल स्नान करै तेल, दूसरी बारका भोजन और पराया अन्न माघमास में छोड़ देवे ५ प्रातःकाल सफेद कपड़े पहनकर पंचमहायज्ञकर स्थिर चित्त होकर मनुष्य विष्णुजीकी पूजा को प्रारम्भ करै ६ कुछ, गरम शुद्ध जलों से नाश रहित विष्णुजी को स्नान करावे फिर अत्यन्त श्लक्ष्ण चन्दनों से विष्णु जी के अंगों को लेपन करै ७ और देवों के देव, चक्रधारी, संसारके स्वामी को पूजन करै धोये हुए बर्तनों को जल से हीन करावे ८ कुछ गरमजल से संसारके नाथ को स्नान कराकर तिनके शरीर को यत्नसे सुन्दर कपड़े से पोंछे ९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! माघमास में कुछ गरमजलसे केशवजी के स्नान कराने के फलको मैं कहताहूं १० जन्म जन्म के इकट्ठे किये हुए सब पापोंसे छूटकर इस लोक में सब सुख भोगकर अन्त में भगवान् के स्थान को जाताहै ११ यत्न से बर्तनों को धोकर जलों से शुद्ध कर जो जगन्नाथ जी को पूजन करता है तिसकी पुण्य को सुनिये १२ सब व्याधियोंसे छूटकर इसलोकमें सब कामनाओंको भोग कर अन्त में हज़ार युगतक भगवान् के मन्दिर में स्थित होता है १३ प्रातःकाल संसार की संध्या में भगवान् के आगे वैष्णव मनुष्य धूमरहित प्रकाशित अग्नि को स्थापित करै १४ शीत के निवारण के लिये वैष्णव मनुष्य सायंकाल और प्रातःकाल माघ में विष्णुजी के आगे प्रकाशित अग्नि को करता है उसके फल को सुनिये १५ पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर इस लोक में सब कामनाओं को भोगकर अन्त में देवताओं से भी दुर्लभ विष्णुजी के पुरको प्राप्त होता है १६ जैसे आत्मा है तैसेही विष्णुजी हैं सन्देह नहीं विद्यमान है शय्या के ऊपर सोते हुए देवदेवों के स्वामी भगवान् को १७ मनुष्य जैसे अपने शीत के निवारण को करता है तैसेही करै माघमास में जो जनार्दनजी को दूध से स्नान कराता है तिसको देवों में उत्तम विष्णुजी क्या नहीं देते हैं १८ तैसेही

भगवान् के शीत को सुन्दर कपड़े से नाश करै १९ जो मनुष्य एक बार भी माघ में भगवान् को नारियल के जल और दूध से स्नान कराता है तिसके फल को मैं कहता हूं २० वह मनुष्य अपने कर्म से दुस्तर नरकरूपी समुद्र में डूबते हुए करोड़ पुरुषों को उद्धार कर भगवान् के पद को प्राप्त होता है २१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! माघ मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की पंचमी और एकादशी में विशेष कर भगवान् की पूजा करनी चाहिये २२ और देवों के देव, लक्ष्मी समेत मुरारिजी को माघ मास में दिन दिन में धूप समेत खीर देनी चाहिये २३ हे वैष्णव जैमिनि! माघ मास में जो भगवान् को धूपसमेत खीर देता है तिसके पुण्यफल को कहता हूं सुनिये २४ अंतकालमें विष्णुजीके पुरको जाकर चार मन्वन्तर पर्यन्त भगवान् के प्रसाद से मनोरम भोगों को भोगकर २५ फिर पृथ्वी में आकर चक्रवर्ती राजा होता है और बहुत काल तक भोग भोग कर मरकर भगवान् के स्थान को प्राप्त होता है २६ पंचमी वा सप्तमी वा एकादशी में अशक्त वैष्णव श्रेष्ठ अन्न मुरारिजी को देवे २७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! कृष्णपक्ष से शुक्लपक्ष में विशेषता है शुक्लपक्ष में इन तिथियों में मुरारिजी को अन्न देवे २८ जो मनुष्य एक दिन भी दैत्यों के जीतनेवाले विष्णुजी को पुवों समेत खीर देता है तिस को भगवान् दुर्लभ नहीं हैं २९ जो कुछ ब्राह्मण की प्रसन्नता के लिये माघ मास में दिया जाता है वह पुरुष का नाशरहित होता है कोई इसमें सन्देह नहीं है ३० हे ब्राह्मण! जो कुछ माघ मास में शुभ वा अशुभ कर्म किया जाता है तिसका सौ मन्वंतरों में भी नाश नहीं है ३१ माघ में चम्पा के फूल से जो भगवान् को पूजता है वह सब पापों से छूटकर परम धाम को जाता है ३२ और जितने चम्पा के फूल भगवान् को दिये जाते हैं तितने हज़ार युग देने-वाला विष्णुजी के मन्दिर में स्थित होता है ३३ सुमेरु पर्वत के समान सोना देकर जो फल होता है वह एकही चम्पा के फूल से भगवान् को पूजनकर होता है ३४ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! चम्पा का फूल सदैव भगवान् को प्रिय है माघ मास में विशेष कर

पवित्र और भगवान् को प्रिय है ३५ चम्पा के सुन्दर फूलों से जिसने विष्णुजी को नहीं आराधन किया है वह रत्न और सुवर्ण आदिक से जन्म जन्म में हीन होता है ३६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! चम्पाफूल का फल मैं विशेषकर कहता हूं उत्तम इतिहास समेत सुनिये ३७ सुवर्ण नाम राजा बलवान्, सब शास्त्रों का जाननेवाला आर्यावर्त में हुआ यह तेज, ३८ राजलक्ष्मी, विद्या और उमर से अत्यन्त मतवाला और सदैव पाप में रत था ३९ इस राजाने पाखण्डी मन्त्रियों के वाक्यों से विना दोष के भी साधु मनुष्यों को धन के लोभ से दण्ड दिया ४० और गीत और वाद्य आदिक से युक्त और यज्ञ दान से वर्जित होकर अन्याय से इकट्ठा की हुई सब द्रव्य को नाश करदिया ४१ न जाति का पालन, न देवता, ब्राह्मण को भोजन और न याचकों को प्रसन्न किया सदैव पाप से मोहित ४२ पाप का स्थान और सदैव पाप में परायण होकर अतिथि की पूजा भी न करता भया और नित्यही स्थान से जाता भया ४३ समर्थ यह सैकड़ों वर्ष अज्ञानियों के बहुत से पाप करता भया जो गिनेही नहीं जा सक्के हैं ४४ एक समय में काम से मोहित, दुष्ट आशय वाला यह राजा आधी रात को वेश्या के स्थान में जाता भया ४५ तब उज्ज्वल नाम वाली वेश्या राजा को आते देखकर सहसा शय्या से उठकर तिन के चरणों की वन्दना करती भई ४६ और उत्तम जल से उनके दोनों चरणों को धोकर दोनों हाथों से आलिंगन कर मंच में प्रवेश कराती भई ४७ तब कुतूहली राजा तिस वेश्या के प्रेमरूपी अमृत की धाराओं से सींचे जाकर तिसी शय्या में तिस के साथ बसते भये ४८ तदनन्तर प्रीति से हँसती हुई नवयौवना वेश्या तिस राजा को आपही चम्पा के फूलों की माला देती भई ४९ तब उस फूल की माला से राजा के हाथ से एक फूल जो कि सुगन्ध से दिशाओं के अन्तर को व्याप्त किये हुए था वह पृथ्वी में गिर पड़ा ५० तो उस गिरेहुए फूलको देखकर राजा अत्यन्त संभ्रम से ॐ नमो नारायणाय कहता भया ५१ नारायणाय इस वाक्य से चम्पा के फूल के देने से तिस राजा

के सब पाप नाश होगये ५२ तदनन्तर गांव के सब मनुष्य तिसी रात्रि में अत्यन्त दुर्जय वेश्या के घर में स्थित राजा को मारडालते भये ५३ तब क्रोधयुक्त होकर यमराजजी सब पापियों में श्रेष्ठ तिस राजा के लाने के लिये दूतों को भेजते भये ५४ तब तो यमराजजी की आज्ञा पाकर फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर क्रोधसे लालनेत्र कर दूत अत्यन्त वेगसे जाते भये ५५ और अपने स्थान के लेजाने के लिये उद्यम करते भये तदनन्तर नारायणजी के दूत शङ्ख, चक्र और गदा को धारण कर ५६ गरुड़ पर चढ़कर तिसी राजा के लेने के लिये जाते भये वहां पर फँसरी से बँधेहुए राजा को देखकर भगवान् के दूत ५७ महाबलवान् चक्र और गदाओं से यमराज के दूतों को मारते भये और सुन्दर रथ में चढ़ाकर अत्युत्तम शंखोंको बजाते भये ५८ और तैसेही राजा रथपर चढ़कर तुलसी की मालासे भूषित होकर पीले रेशमी कपड़ोंको पहन, सोने के गहनों से भूषित, ५९ वेद और वेदाङ्ग के पारगामी मुनिसमूहों से स्तुतिको प्राप्त और विष्णुजीके दूतों से युक्त होकर हरिजी की सालोक्यको प्राप्त होताभया ६० तदनन्तर विष्णुजी आपही उठ कर दीर्घ चार भुजाओंसे तिस राजाको आलिंगनकर बोले ६१ कि हे पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ राजन्! कुशल कहिये आपका क्या साध्य है तिसको आज्ञा दीजिये ६२ नमो नारायणाय यह एक बारभी जो कहता है तिसके नित्यही हम अनुपाल्य, वही भाई और मेरा पिता है ६३ कदाचित् जो मनुष्य नारायण यह मेरा नाम स्मरण करता है तो उसके मैं सब कामोंको इसप्रकार सिद्ध करताहूँ जैसे पुत्र पिताके कामों को सिद्ध करता है ६४ हे राजाओं में श्रेष्ठ! तुम मेरे भक्त हो इससे अद्भुत अपने मनोरथ को प्रकाशित कीजिये इस समयमें मैं आपको क्या दूं ६५ तब राजा बोले कि हे दयाके समुद्र! आपने निस्सन्देह सब कुछ दियाहै जो पापीभी मैंने आपके दुर्लभ स्थान को प्राप्त किया है ६६ तिसके इस वाक्य से भगवान् प्रसन्न होगये और स्नेहसे राजाको निवेशित करतेभये तिसको सुनिये ६७ तब कृपायुक्त भगवान् विश्वकर्मा के रचेहुए सोनेके गहनोंसे आपही

तिसका मण्डल करते भये ६८ तदनन्तर अत्यन्त सहनशील विष्णुजी ने अनेक प्रकार की सुन्दर, दुर्लभ भक्ष्यों से राजा को प्रसन्न किया ६९ इस प्रकार राजा प्रति दिन विष्णुजी के मन्दिर में स्थित होता भया और धर्म में तत्पर होकर हज़ार मन्वन्तर और नवसौ वर्ष प्रजाओं का पालन करता भया और निरन्तर श्रेष्ठ भक्ति से भगवान् का पूजन ७०।७१ पवित्र चम्पा के फूल और अनेक प्रकार की नैवेद्यों से करता भया और उमर के अन्त में गंगाजी के किनारे मरण को ७२ प्राप्त होकर भगवान् के प्रसादसे मोक्षको प्राप्त होजाता भया व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि! चम्पा के फूल का यह प्रभाव कहा ७३ पापी मनुष्य भी चम्पा के फूलों से भगवान् को पूजन कर मुक्त होगये हैं फूले हुए चम्पा के फूल से पूजित हुए भगवान् हरि ७४ थोड़ेही समय में परमपद देते हैं जे इच्छा वा विनाही इच्छाके परमेश्वर को पूजन करते हैं ७५ वे भी सब पापों से छूटकर परमधामको प्राप्त होते हैं ७६ भगवान् के प्रसन्न होने में पाप कहां रहते हैं जिससे कि पाप करनेवाला राजाभी भगवान् की कृपासे गंभीर इस संसारसमुद्र को तरकर मोक्ष को प्राप्त होजाता भया है ७७ जो मनुष्य सुन्दर सुगंधित चम्पा के फूलों से कमलदल के समान विस्तृत नेत्रवाले भगवान्को भक्ति और परम आदरसे पूजन करता है वह पापों को छोड़कर मोक्ष को प्राप्त होजाता है ७८॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे चम्पकपुष्पमहिमानामदशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय

भगवान् के पूजनकी विधि वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे विप्रर्षे! जैमिनि! हे वत्स! जिस विधि से सदैव भगवान् पूजने चाहिये तिसको मैं कहता हूँ एकाग्र होकर सुनिये १ बुद्धिमान् मनुष्य प्रातःकाल शय्यासे उठकर कपड़े से मस्तकको आच्छादितकर लोटे में जल लेकर बाहर जावे २ तहांपर उत्तर दिशा में मौन होकर यज्ञोपवीतों को कानों में चढ़ाकर बैठ कर मलमूत्रको त्यागे ३ देवताका स्थान, राह, गोशाला, चौराहा,

हा, गांव के भीतर की राह, जोती भूमि, कुशकी जड़, आंगन, ४ नदी के किनारे, चैत्य के वृक्ष की जड़, वन, ताल और बावली के भीतर मलमूत्रको न त्यागे ५ बुद्धिमान् मनुष्य जब तक मलमूत्र छोड़े तब तक सूर्य, चन्द्रमा, ब्राह्मण, गऊ और दशों दिशाओं को न देखे ६ और मुसरिया आदिकों से खोदी हुई बिलके भीतर की वर्तमान और फालसे जाती हुई मिट्टीको शौच के लिये न ग्रहण करै ७ जलसे जल लेकर चतुर पुरुष शौच करे और बुद्धिमान् मनुष्य जलोंमें पांव देकर शौच न करै ८ रात्रि में दक्षिणमुख होकर वस्त्रसे शिरको आच्छादितकर दिशा फिरे तिस पीछे शौच करै ९ एक मिट्टी लिङ्ग में, तीन गुदा में, सात बाये हाथ में और दोनों हाथों में दश १० और बुद्धिमान् दोनों पांवों में छः मिट्टी देवे शौचकी क्रियाकर फिर दतूनि करै ११ दांतों के आच्छादन आदिकों से जिह्वाको शुद्ध करै दक्षिण तथा पश्चिममुख होकर १२ दतूनि न करै जो करै तो नरक में जावे मध्यमा अनाभिका और वृद्धांगुष्ठसे १३ दतूनि करै तर्जनी अंगुली से कभी न करै पीपल, बरगद, आंवला और कैथाके वृक्षकी दतूनों से १४ तथा इन्द्रसुर की दतूनि से दांतों को नहीं धोवे नित्यकी क्रिया फल सब उसकी इन वृक्षों की दतूनि करनेसे नष्ट होजाती है १५ हे जैमिनि! जो स्नानके समयमें दतूनि करता है उसके पितृ, देवता और ऋषि निराश होकर चले जाते हैं १६ जो दोपहर और तीसरे पहर दतूनि करताहै तिसकी देवता पूजा और पितृ जल नहीं ग्रहण करते हैं १७ स्नान के समय में जो तलैया में दतूनि करता है तो वह जबतक गंगाजी को नहीं देखता है तबतक चाण्डाल ही जानने योग्यहै १८ भगवान् सूर्य के उदय में जो दतूनि करता है तो पितृ दुःखित होकर दतूनि की लकड़ी को खाकर चले जाते हैं १९ व्रत के दिन और पिता की श्राद्ध के दिन दतूनि करनेवाला मनुष्य तिस फलको नहीं प्राप्त होताहै २० प्रातःकाल दांतों को शुद्धकर कपड़े से जीभ को भी शुद्ध करै फिर बुद्धिमान् जलसे बारह कुल्ले करै २१ व्रत और पिताकी श्राद्धमें इस विधिसे दतूनि करनेवाला मनुष्य संपूर्ण फलको प्राप्त होता है २२

इस विधि से दीर्घदर्शी मनुष्य बाहर दिशा फिरकर अपने घर आकर रात्रि के कपड़ों को त्याग कर देवै २३ तदनन्तर पवित्र बुद्धिमान् मनुष्य देवता के स्थान के द्वार में बैठकर नारायण, देव, अनंत, परमेश्वरको स्मरण करै २४ हे राम ! हे श्यामवर्ण देहवाले ! हे विष्णु ! हे नारायण ! हे दयामय ! हे जनार्दन ! हे संसारके धाम ! हे केशवजी ! मेरे पापों को नाश कीजिये २५ हे पीतांबर धारण करनेवाले ! हे अनन्त ! हे पद्मनाभ ! हे जगन्मय ! हे वामन ! हे प्रणतों के ईश ! हे विभो ! आप शरण हूजिये २६ हे दामोदर ! हे यदुश्रेष्ठ ! हे श्रीकृष्ण ! हे दयाके समुद्र ! हे कमलनयन ! हे देवों में श्रेष्ठ ! हे वासुदेवजी ! कृपा कीजिये २७ हे गरुड़ध्वज ! हे गोविन्द ! हे विश्वंभर ! हे गदाधर ! हे शंख, चक्र और पद्म हाथमें धारण करनेवाले ! आपदाओंको नाश कीजिये २८ हे लक्ष्मीविलास ! हे वैकुण्ठ ! हे हृषीकेश ! हे देवताओं में उत्तम ! हे पुरुषों में उत्तम ! हे कंशके वैरी ! हे कैटभ राक्षसके शत्रु ! भय हरिये २९ हे लक्ष्मी के पति ! हे लक्ष्मी के धारण करनेवाले ! हे विभो ! हे लक्ष्मी के देनेवाले ! हे लक्ष्मी के करनेवाले ! हे लक्ष्मी के पति ! हे परंब्रह्म ! हे परंधाम ! हे नाशरहित ! हमको शरण हूजिये ३० इसप्रकार बुद्धिमान् मनुष्य श्री विष्णुजी का स्मरण कर स्थान में प्राप्त होकर हाथ जोड़कर यह कहे ३१ कि हे ईश्वर ! हे लक्ष्मी के पति ! हे कृष्ण ! हे देवकी के पुत्र ! हे प्रभो ! हे संसारके नाथ ! प्रातःकाल हुआहै निद्राको छोड़िये ३२ तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य निद्रा छोड़कर शय्या में उठे हुए की नाईं लक्ष्मीसमेत भगवान् को अपने चित्तसे चिन्तन करै ३३ तदनन्तर वैष्णव मनुष्य कृतच्छद, जलसे पूरित सुन्दर बर्तन को मुख धोने के लिये कृष्णजी को देवै ३४ जैसे सेवक बर्तन के लिये ईश्वर को सेवन करते हैं तैसेही बुद्धिमान् परमेश्वर को सेवन करते हैं ३५ हे विप्रर्षे ! जो सेवक के रूप से भगवान्को सेवन करता है तिसका थोड़ेही काल में वांछित सिद्ध होताहै ३६ जैसे सेवक मालिककी डरसमेत सेवा करते हैं तैसेही बुद्धिमान् सदैव हरि, प्रभुजी की सेवा करते हैं ३७ इस अपनी इच्छा से निर्भय म-

नुष्य विष्णुजीको पूजन करै बुरा सेवक वही है जो भगवान्‌को नहीं पूजताहै इससे बुरा सेवक नहीं होवे ३८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! इससे मोक्षकी इच्छा करनेवाले पुरुषको सदैव शीघ्रही भगवान् की पूजन करनी चाहिये ३९ वैष्णव मनुष्य निर्माल्य, रात्रि के वस्त्र और बासी चन्दनको प्रातःकाल भगवान् के अंगसे उतार देवे ४० तदनन्तर तिस देवताके स्थान में बुद्धिमान् मनुष्य आपही बहारी से धीरे धीरे बहारे ४१ तिस स्थानसे जितनी धूलि बाहर चली जाती हैं तितने सौ मन्वन्तर मनुष्य विष्णुजी के मन्दिर में स्थित होता है ४२ जो ब्राह्मण का मारनेवाला भी भगवान् के घर में झाड़ू देवे तो वह भी परमधामको प्राप्त होवे और बहुत कहने से क्या है ४३ तथा ऊर्णक गोबरों से लीपे फिर तिस विष्णुजी के घर में बुद्धिमान् नारायण प्रभुजी को स्मरण करै ४४ जो भगवान् के मन्दिरको लीपताहै तिसकी पुण्यको मैं संक्षेपसे कहता हूँ हे जैमिनि ! सुनिये ४५ हे ब्राह्मणों में उत्तम ! तहां पर जितनी धूलि नाश होती हैं तितने हज़ार कल्प मनुष्य सुखपूर्वक विष्णुजी के मन्दिरमें स्थित होता है ४६ मनुष्य विष्णुजी के घर को बहारकर लीपै तो परमधामको प्राप्त होताहै और भगवान् की पूजा के फल जानने से क्या है ४७ जो आप देवराज विरोधसे न समर्थ होवे तो भगवान् के घर में अपनी धर्मपत्नीको युक्त करै ४८ अथवा भक्त, सुन्दर चरित्रवाले पुत्र, भाई वा बहन को देवस्थानमें युक्त करै ४९ भगवान्‌के पूजाकी वस्तुओं को शुद्धजलों से सात वा तीनप्रकार आपही अत्यन्त यत्न से धोवे ५० तांबे के बर्तन खटाई से, कांसे के बर्तन भस्म से, लोहे के बर्तन अग्निसे निस्सन्देह शुद्ध होते हैं ५१ धनवान् होकर जो लोहे के बर्तन में स्थित जलों से नारायण जगन्नाथजी को स्नान करवाताहै तिसके ऊपर भगवान् प्रसन्न नहीं रहते हैं ५२ वा अज्ञान से जो स्नान लोहेके पात्रमें स्थित जलोंसे करवाताहै तो गंगाजी के स्नान करनेसे शुद्ध होजाता है ५३ विपत्ति में बर्त्तनका नियम नहीं है यह शास्त्रों में निश्चय है और यत्नसे धोया हुआ शङ्ख जो फिर पृथ्वी को स्पर्श करजावै ५४ तब वह शङ्ख सौबार धोये से शुद्ध

होताहै इस प्रकार भगवान्की पूजाद्रव्यों को यत्नसे धोकर ५५ स्नानकी वस्तुओं को लेकर स्नान के लिये तालाबको जावे स्नान कर्मोंको विना किये जो घरको फिर आताहै ५६ तो तिस दिन पितृ-गण तिसके तर्पणको नहीं प्राप्त होते हैं स्नान वा भोजन करने के लिये जानेवाले को जो मोहसे विघ्न करता है वह निश्चय नरक में जानेवाला होता है और स्नान करने के लिये जो तालाब में जाकर मल और मूत्र करता है ५७। ५८ तो उसके पितृ निस्स-न्देह विष्ठा और मूत्र के भोजन करने वाले होते हैं तदनन्तर विधि पूर्वक स्नान और तर्पण आदिक कर ५९ अपने घरमें आकर बुद्धिमान् मनुष्य नारायणजीको स्मरण करै फिर आंगनमें दोनों चरणों को धोकर ६० पवित्र, ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मनुष्य देवता के स्थान में प्रवेश करै और विना चरण धोये जो मनुष्य देवता के स्थान में प्रवेश करता है ६१ तो सालभर की तिसकी की हुई पुण्य तिसी क्षणमें नाश होजाती है चतुर मनुष्य स्नानकर आं-गनों में आकर ६२ दोनों चरणों को धोकर देवता के स्थान में प्रवेश करै और वहांपर बैठकर बुद्धिमान् बायें हाथ से दोनों च-रणोंको ६३ यत्न से धोकर फिर तैसेही दोनों हाथों को भी धोवे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मूर्ख मनुष्य पांव से पांवको तथा दहने हाथसे पांवको धोताहै तो उसको लक्ष्मीजी निश्चय छोड़ देती हैं तद-नन्तर बुद्धिमान् मनुष्य बैठकर भगवान् के पूजनको प्रारम्भ करै ६४। ६५ जो कि सब कामना और फलके देनेवाले हैं अनन्य मन होकर मृगचर्म के शुद्ध आसन वा व्याघ्रके चर्मके आसन ६६ केवल वस्त्र के आसन तथा कुशमय आसन वा फूलके आसन में बैठकर भगवान् को पूजन करै ६७ विद्वान् ब्राह्मण काष्ठके आसन में बैठकर विष्णुजी का पूजन न करै हे पृथ्वि! तुम विष्णुजीसे धारण की गई हो सब लोक तुमने धारण किये हैं ६८ इससे हे सबसहने वाली! मेरे बसने के लिये उत्तम स्थान दीजिये ऐसा कह कर नारायणजीका पूजन करनेवाला मनुष्य आसन बिछाकर बसै ६९ दक्षिणमुख होकर विष्णुजीका पूजन न करै और मंत्रसे पवित्र सु-

गन्धित जल को शंख में लेकर ७० लक्ष्मी समेत प्रभु लक्ष्मीपति जी को स्नान करावै जो मनुष्य शंख से भगवान् जनार्दनजी को स्नान कराता है ७१ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! तो तिसके तिस फलको कहता हूं सुनिये ब्राह्मण, गऊ, स्त्री और गर्भकी हत्या और मदिरा आदिक पीने के पापों से ७२ छूटकर वैकुण्ठ में प्राप्त होकर सब सुख को भोग करता है जो भगवान् को देखकर मनुष्य पूजन करै तो ७३ भगवान् के प्रसादसे तिसतिसको शीघ्रही प्राप्त होता है बुद्धिमान् मनुष्य शंखके अभाव में सुगन्धित जलको ७४ पात्रमें तुलसी मिलाकर रखकर भगवान्को स्नान करावे तदनन्तर स्नान कराकर श्रेष्ठ आसन में स्थापित कर ७५ सुगन्धयुक्त चन्दनों से तिन के सब अंगको लेपन करै तुलसी के काष्ठ के पंक में जो भगवान् की देहको पालन करता है तिसके ऊपर भगवान् निरन्तर प्रसन्न रहते हैं अपने गन्ध से सुख के देनेवाली यह तुलसी के पत्रकी माला ७६। ७७ हे जगन्नाथजी! तुमको देताहूं आप सदैव प्रसन्न हूजिये इस मंत्र से तुलसीकी पत्रमालासे ७८ अलंकृत महा विष्णुजी प्रसन्न होकर क्या नहीं देते हैं तदनन्तर वेदके मंत्रों से स्वस्तिवाचन करना चाहिये ७९ और पौराणिक मन्त्रोंसे दिग्बन्धन करना चाहिये कृष्णजी पूर्वमें रक्षाकरें देवकी के पुत्र आग्नेय कोणमें ८० दक्षिण में दैत्यों के वैरी, नैर्ऋत्य कोण में मधु दैत्य के मारनेवाले, विदिशाओं में श्रीमान्, ऊपर लक्ष्मी के धारण करनेवाले प्रभु, ८१ और नीचे संसारकी आत्मा, कृपामय, कच्छप मूर्ति भगवान् रक्षा करैं और पूजाके समय में जे सब विघ्न करनेवाले होते हैं ८२ वे सब भगवान् के नामरूप अस्त्र से ताड़ित होकर दूर जावें इस प्रकार दिग्बन्धन कर तिस पीछे हाथ जोड़कर ८३ कहे हुए मंत्र से दृढ़ संकल्प करै कि हे देवों के देव! हे जनार्दनजी! मेरी आरंभ की हुई इस पूजा को ८४ निर्विघ्न सिद्धि को प्राप्त कीजिये और हे परमेश्वरजी! प्रसन्न हूजिये तदनन्तर संकल्प करने वाला और सब तत्त्वका जानने वाला वैष्णव ८५ अंगन्यास आदिक कर मन से नारायण जी को ध्यान करै जो कि

नवीन मेघों के सदृश, कमल के समान नेत्रवाले, ८६ पीताम्बर धारे, देव, मुसकानि से अत्यन्त पवित्र मुखवाले, कदम्ब के फूलकी मालाओं से भूषित, सुन्दर महाभुजोंसे युक्त, ८७ मयूर के पङ्खोंकी पंक्ति से बँधेहुए जूड़े में कुण्डल धारण करनेवाले, वंशी के मधुर शब्द से दशों दिशाओं को मोहित करतेहुए ८८ गोपियों से आच्छादित और पवित्र वृन्दावन में स्थित हैं इस प्रकार देवों के स्वामी, सब कामना देनेवाले गोविन्दजी को चिन्तन कर ८९ फिर भक्ति-भाव से वैष्णव मनुष्य आवाहन करे और आवाहन कियेहुए, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के देनेवाले कृष्णजी को ९० पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय देवे बुद्धिमान् मनुष्य कोमल तुलसी के पत्र वा सुन्दर फूलों से ९१ सब देवों के स्वामी, श्रीकृष्ण देवकीजी के पुत्र को पूजन करे मत्स्य, कच्छप, शूकर, ९२ हरि, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, बलराम ९३ कृपा समेत शुद्धबुद्ध, बहुत मूर्तिवाले कल्की, ९४ नारायण, कृष्ण, गोविन्द, शार्ङ्गधनुषधारी, दामोदर, देव, देव-देव, ९५ हृषीकेश, शांत, आकाशचरण, लक्ष्मी के पति, कमलनयन, ९६ अनन्त, गदा हाथ में धारे, गरुड़ध्वज, चक्र हाथ में धारण करनेवाले ९७ कमल हाथ में धारे, अच्युत, दैत्यों के वैरी, सब कामना देनेवाले ९८ लक्ष्मी के पति, देवताओं के स्वामी, विष्णु, परमात्मा, मुकुट और कुण्डल के धारण करनेवाले हरि ९९ भगवान्, गरुड़वाहनजी के सदैव नमस्कार हैं ॐ नमः गरुड़ाय इस मंत्र से गरुड़ के चतुर पुरुष नमस्कार करे १०० शंख, चक्र, गदा, पद्म और नन्दक खड्ग के नमस्कार हैं १०१ इस प्रकार स्त्री, वाहन और हथियारों समेत भगवान् को पूजन कर बुद्धिमान् अष्टाक्षर मंत्र को जपै १०२ अपनी भक्ति से अष्टाक्षर मंत्र के जप करने के पीछे गोविन्दजी को अनेक प्रकार की उत्तम नैवेद्य देवे १०३ फिर वैष्णव मनुष्य धूप, दीप, पान तथा और भी उपहार देवदेव विष्णुजी को देवे १०४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो चन्दन और अगरु से सुगन्धित धूप को भगवान् को देता है तिसका शीघ्रही वाञ्छित सिद्ध होता है १०५ जो घी से वासित धूप को हरिजी को देताहै वह

करोड़ों पापों से छूटकर विष्णुजी के मन्दिर को जाता है १०६ गुग्गुलु से वासित धूप को जो नारायणजी को देता है वह देवताओं से भी दुर्लभ परमधाम को जाता है १०७ जो घी वा तिल के तेल से दीप देता है तिसके केशवजी पलभर में सब पाप नाश कर-देते हैं १०८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! कर्पूर से वासित पान को जो भगवान् को देता है तिसकी मुक्ति होजाती है १०९ जो खैर से युक्त पान को देता है वह इस लोक में सब भोगों को भोगकर अन्त में भगवान् के पद को प्राप्त होता है ११० षष्ठी मधुरिका तथा जाय-फल आदिकों से युक्त पान को भगवान् को देकर मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त होता है १११ हे जैमिने! वैष्णव मनुष्य कहेहुए मंत्र से शंख में पानी लेकर विष्णुजी की प्रदक्षिणा करै ११२ कि हे जना-र्दन! हे संसार के बन्धु! हे शरणागत के पालन करनेवाले! हे प्रभो! मुझ दासको अपने दासों के दास की सेवकाई दीजिये ११३ इसमंत्र से जो नारायणजी की प्रदक्षिणा करता है तिसके पुण्य के फल को संक्षेप से कहता हूं सुनिये ११४ जौन जौन ब्रह्महत्यादिक बड़े बड़े पाप हैं वे सब प्रदक्षिणा के पद में नाश होजाते हैं ११५ मनुष्य भक्ति से विष्णुजी की प्रदक्षिणा में जितने पैग जाताहै तितने हजार कल्प विष्णुजी के साथ आनन्द करता है ११६ मनुष्य भगवान् की प्रदक्षिणा में जितने पद धीरे धीरे जाता है तितने ही पदपद में अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होता है ११७ संसार में जितना सब फल प्रदक्षिणा करने से होता है तिससे करोड़ गुणा फल भगवान् की प्रदक्षिणा करने से होता है ११८ जो नारायणजी के आगे अंगकी प्रदक्षिणा करता है वह भी तिस फलको प्राप्त होता है और बहुत कहने से क्या है ११९ हे ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य महादेव जी की प्रदक्षिणा करने में सोम सूत्र को न लांघै क्योंकि लांघने से वह पूजा निष्फल होती है १२० जो प्रदक्षिणा के आकार के भाव से एक बार हरिजी के पास जाता है वह जन्म जन्म में निश्चय सब पृथ्वी का राजा होता है १२१ जो तीन दिन में दो बार विष्णुजी की प्रद-क्षिणा करता है वह निस्सन्देह इन्द्र के पद को प्राप्त होता है १२२

और जो मनुष्य विष्णुजी की प्रदक्षिणा दोबार करता है वह सब पापों से छूटकर भगवान् की देह में प्रवेश करता है १२३ हे जैमिनि! जो भगवान् के ऊपर जल समेत शंख को घुमाता है वह अन्तमें देव स्थान में जाकर देवताओं से वन्दित होता है १२४ जो भगवान् के सात बार पृथ्वी में दण्डवत् प्रणाम करता है तो उसके शरीर के पाप तिसी क्षण से भस्म होजाते हैं १२५ जो शिर में अञ्जलि धरकर भगवान् को प्रणाम करता है तिसको लक्ष्मीपति विष्णुजी परमपद देते हैं १२६ हे विप्रर्षे! पृथ्वी में सब अङ्गको गिराकर भगवान् के प्रणाम करनेवाले मनुष्यों के पुण्य प्रभावको मैं कहता हूं सुनिये १२७ जितनी पृथ्वी की धूलियों से मनुष्योंकी देह भूषित होती है तितनेही हज़ार कल्प वे भगवान् के समीप स्थित होते हैं १२८ हे जैमिनि! केशवजी की निर्माल्य को वैष्णवों को देवे तिन वैष्णवों को कहता हूं सुनिये १२९ शुकदेव, सूत, व्यास, नारद, कपिलमुनि, प्रह्लाद, अम्बरीष, अक्रूर, उद्धव, १३० विभीषण, हनुमान् तथा और भी वैष्णव सब कामना देनेवाले वासुदेवजी के निर्माल्य को ग्रहण करें १३१ ऐसा कहकर वैष्णव मनुष्य विष्णुजी की निर्माल्य को पृथ्वी में छोड़ देवे तदनन्तर हरिजी के निर्माल्य को भक्तिसे आप भी ग्रहण करै १३२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिसके मस्तक में उत्तम हरिजी का निर्माल्य दिखाई पड़ताहै वह साक्षात् आपही हरिही जानने योग्यहै १३३ विष्णुजीकी नैवेद्य दुर्लभहै और निर्माल्य पाप नाश करनेवाला है सब देवता ग्रहण करते हैं मनुष्यों की क्या कथाहै १३४ हे जैमिने! जो वैष्णव तुलसीपत्र को सूंघताहै तो उसके देह के भीतर के स्थित सब पाप नाश होजाते हैं १३५ तुलसीपत्रकी सुगंध जिसकी नाकमें प्रवेश करती है तिसके शरीर की स्थित आपदा शीघ्रही नाश होजाती हैं १३६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुलसी की पत्तीको सूंघकर जो प्रशंसा करता है तिसके स्थानमें नित्यही आनन्द होता है १३७ बुद्धिमान् मनुष्य स्तोत्रोंसे जगन्नाथ, लक्ष्मीजीके पति अच्युतजीकी स्तुति कर हाथ जोड़कर इस मंत्रको पढ़े १३८ हेनारायण! हे संसाररूप! हे संसार

के पति ! हे देव ! अपने स्थानको जाइये और सदैव प्रसन्न हूजिये १३९ हे देवेन्द्र ! हे जगन्नाथ ! हे जगन्मय ! जो मैंने अपनी शक्तिसे यह आपकी पूजा की है वह आपके प्रसादसे छिद्ररहित होवे १४० तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य महाविष्णु परात्माके सब पाप नाश करनेवाले चरणजलको भक्तिभाव से ग्रहण करै १४१ हे जैमिनि ! जो विष्णुजी के कणमात्र, शुभ, चरणजल को प्राप्त होता है वह सब तीर्थों में स्नान करचुका यह मैं सत्य कहताहूं १४२ विष्णुजी के चरणजल को छुवे तो गंगास्नान का फल होता है जिससे कि विष्णुजी का चरणजल गंगाजी का जल है १४३ जो केशव महात्माजी के चरणजल को स्पर्श करता है उसको अकालमरण और व्याधियों से भय नहीं होता है १४४ पापरूपी व्याधि नाशनार्थ विष्णुजी का चरणजल औषध है ते पापी भी मनुष्य प्रति दिन पीवें १४५ हे विप्र ! जो वैष्णव मनुष्य विष्णुजी के चरणजल को पीताहै तो उसकी देह के स्थित पाप क्षणमात्रही में नाश होजाते हैं १४६ जैसे औषध से देहधारी पुरुष के देह में स्थित रोग नाश होजाता है तैसेही सब पाप विष्णुजी के चरणजल से नाश होजाते हैं १४७ जो तुलसीपत्र से संयुक्त विष्णुजी के शुद्ध चरणजल को शिरसे धारण करता है तिसकी पुण्यको मैं कहता हूं १४८ ब्रह्महत्यादिक सब पापों से छूटकर विष्णुरूप धारण करनेवाला मनुष्य अन्त में विष्णुजी के पुर में जाकर विष्णुजी के साथ आनन्द करताहै १४९ सुमेरु पर्वत के बराबर सोना देने से जो फल होताहै तिससे अधिक फल विष्णुजी के चरणों के जल के स्पर्श से होताहै १५० करोड़ घोड़ा देने से मनुष्यों को सो फल होता है जो सातोंद्वीप पृथ्वी ब्राह्मणोंको देने से होताहै १५१ सोई फल मनुष्य विष्णुजी के चरणों के जलके छूने से पाता है हजार अश्वमेध यज्ञ करने से जो फल होताहै १५२ तिससे अधिक फल विष्णुजी के चरणों के जल के छूनेसे होताहै सौ दीर्घिकाके दानसे जो पुण्य कहाहै १५३ तिससे भी अधिक पुण्य विष्णुजी के चरणों के जल के स्पर्श से मिलताहै यहां पर बहुत कहने से क्याहै संक्षेप से मैंने कहाहै १५४

ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! मनुष्य विष्णुजी के चरणजल के स्पर्श से मुक्त जाताहै फिरफिर दृढ़ मैं कहता हूं १५५ भगवान् के चरणजल के र्श करनेसे फिर जन्म नहीं होता है और जो सब पाप नाश करने ली विष्णुजी की शेष नैवेद्यको १५६ भक्तिभावसे भोजन करताहै ह परमपदको जाता है हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! दुर्लभ विष्णुजी की नैवेद्य ोजन करने से १५७ ब्रह्महत्या आदिक पाप देहको छोड़ देते हैं और हरिजी की नैवेद्य भोजन करनेवाले के दासीकी नाईं वश में ाप्त, देवताओं से भी दुर्लभ मुक्ति भूमि होजाती है भगवान् को ूजन कर कुछ नैवेद्य भोजन करनेवाले को १५८।१५९ थोड़े ही मय में विष्णुजी अपनी देह में प्राप्त करलेते हैं महाविष्णुजी की नैवेद्य के गुण क्या हम कहें १६० हे द्विज ! हे प्रभो ! हे विप्र ! जिस नैवेद्य के भोजन करनेवाले के भगवान् भी अधीन हो- जाते हैं इस विधि से प्रत्येक महीने में भगवान् की पूजा करनी चाहिये १६१ श्रीलक्ष्मीपतिजी की विधिसे हीन भी जो भक्ति- भावसे श्रेष्ठ पूजा करता है वह भी केशवजी का प्यारा होजाता है १६२ विधिका जाननेवाला विधिपूर्वक विष्णुजी को पूजन कर जो फल प्राप्त होता है सो जो भक्ति नहीं स्थित होती है और यथोक्त विधिसे बहुत नैवेद्यों से भी भगवान् को पूजन करता है तो भी भगवान् प्रसन्न नहीं होते हैं जिसकी जितनी देवदेव जनार्दनजी में भक्ति होतीहै १६३ । १६४ तितनीही फलकी प्राप्ति भी तिसको निस्सन्देह होती है विना भक्तिके जो मनुष्यों करके हरिजीकी पूजा कीजातीहै १६५ वह निश्चय पूजासमय ही में पूजा होती है संसार के पति हरिजीकी भक्ति ज्ञान और भक्ति का मूल है १६६ हरिजी की पूजा और आराधन मोक्ष के वृक्ष की उत्पत्ति में मूल है थोड़ा भी जो श्रद्धा से किया जाता है १६७ वह सब नाशरहित होता है क्योंकि सब क्रिया श्रद्धायुक्तही करनी चाहिये भक्ति से जो विष्णु जी को जलमात्र से भी पूजन करता है १६८ वह विष्णुजी के सं- स्थान को प्राप्त होताहै जिससे हरिजी भक्तके वशहैं १६९ हे विप्र ! यह सब संसार असार है इसमें भगवान् का पूजनही सारहै तिससे

अपने मंगल की इच्छा करनेवाला मनुष्य भक्ति से अनंतमूर्ति कृष्णजी को पूजन करै १७० ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे हरिपूजाविधिर्नामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय

पीपल के वृक्ष का माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! वैष्णव मनुष्य फाल्गुन में देवताओं से वन्दित श्रीकृष्णजी को भक्तिभाव से प्रतिदिन पूजन करै १ फाल्गुन महीने में जो घीसे देवकीजी के पुत्र को स्नान कराता है तिसके फल को मैं कहता हूं अच्छीतरह से सुनिये २ सब यज्ञ और सब दानके फलको प्राप्त होकर अन्त में सब पापों से रहित होकर हरिजी के स्थान को प्राप्त होता है ३ हज़ार करोड़ युग हरिजी के घर में भोग भोगकर उत्तम ज्ञान को प्राप्त होकर तहांही मोक्ष को प्राप्त होता है ४ जो शिशिर ऋतु में गोपमूर्ति कृष्णजी को तिलों के सुन्दर लड्डू देताहै वह हरिजी के मन्दिर को जाताहै ५ केशव महात्माजी को जो दुग्ध लड्डू देताहै वह सौ मन्वन्तर पर्यन्त स्वर्ग में अमृत पीता है ६ हरिजी को जो सुन्दर खांड देताहै तिसके प्रसन्नात्मा विष्णुजी संसार-बन्धन को काटदेते हैं ७ जो भगवान्को विचित्र फल देता है वह अन्त में इन्द्र के पुर में जाकर देवताओं से वन्दित होताहै ८ जो भक्तियुक्त मनुष्य निर्मल शक्करको कृष्णजीको देताहै उसको वासुदेवजी के प्रसाद से क्या नहीं प्राप्त होताहै ९ जो सुन्दर पके मीठे बेरोंको कृष्णजीको देताहै तिसके फलको सुनिये १० वह इस लोकमें पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर सब सुखभोगकर अन्त में सुन्दर रथपर चढ़कर हरिजी के स्थान को प्राप्त होता है ११ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! और जो अज्ञान से गुणसंयुक्त बेरों को हरिजी को नहीं देवे तो नरकगामी होता है १२ फाल्गुन महीने में जो हरिजी को सुन्दर अनार के फल को देताहै तिसके फल को मैं कहता हूं सुनिये १३ अनार में जितने बीज स्थित होते हैं तितने मन्वन्तर भाग्यवान् मनुष्य विष्णुजीके मन्दिर में स्थित होताहै १४ फाल्गुन

महीने में जो हरिजी को गुड़पिष्टक देताहै वह हज़ार अश्वमेध यज्ञ का करनेवाला जानना चाहिये १५ चैत्र के महीने में भगवान् को जो मनुष्य शहद से स्नान कराता है वह विष्णुजी के परमपद को प्राप्त होता है १६ शहद से जो रोगरहित नारायणजी को स्नान कराता है तिसकी यमराजजी चर्चा नहीं करते हैं १७ चैत्र में टेसू के फूल से जो लक्ष्मीपति को पूजन करता है तिस का नाम चित्रगुप्त अपनी बही में नहीं लिखते हैं १८ चैत्र में तिलक के फूलों से भगवान् के पूजन करनेवाले का फिर इस पृथ्वी में जन्म नहीं होताहै १९ कृष्ण अशोकके फूलसे सब देवताओं के शिरोमणि भगवान्को पूजन करने से मनुष्य कहीं पर आपदाओं को नहीं प्राप्त होता है २० जो प्रसन्नात्मा पुरुष वसन्त ऋतु में चैत्र में वसंती के सुगन्धित फूलों से भगवान् को पूजन करता है वह देवताओं से भी पूजित होता है २१ तथा अखण्डित सुन्दर कलियों से जो हरिजीको पूजन करता है तिसकी पीठ आसनवाला भी उठकर आपही वन्दना करता है २२ जो नवीन कोमल आंवले के पत्रों से हरिजीको पूजन करता है वह मनुष्य थोड़ेही काल में सब वांछित को प्राप्त होता है २३ जो शांडिल्या के अखण्ड पत्रों से धतूरा और मदार के फूलों से ईश विष्णुजी को पूजन करता है वह संसाररूपी समुद्र के पार होजाता है २४ हे ब्राह्मण! जो विष्णुजीको उत्तम केले के फल देताहै उसकी इन्द्रादिक सब देवता दिन रात वन्दना करते हैं २५ गोपालरूपी विष्णुजी को जो चैत्र के महीने में गेहूं का पिष्टक देता है वह सब पापों से छूट जाता है २६ विष्णुभक्त मनुष्य माधवजी के प्यारे पवित्र वैशाख के महीने के आने में मांस, मैथुन और तेलको छोड़ देवे २७ वैष्णव मनुष्य वैशाख में प्रातःकाल स्नान करै पराये अन्न और दूसरी बार भोजन को त्याग करे २८ पहले कहीहुई विधि से प्रातःकाल विष्णुजी को पूजन करे और इस महीने में फूलों से वासित जल से विष्णुजी को स्नान करावै २९ ठण्ढे जलों से संध्यापर्यन्त अच्युतजी को स्नान करावै और तीनों संध्याओं में भक्ति से अनेक प्रकार की नैवेद्यों से प्रभुजी को पूजन करै ३० वैशाख में

दौनाके मालाओं से अलंकृत कियेगये परमेश्वरजी प्रसन्न होकर क्या नहीं देते हैं ३१ और यव अन्नको वैशाख के महीने में जो भगवान् को देता है तिसके पुण्यों की गिनती करने में कौन पण्डित समर्थ है ३२ जो कुछ वैशाख के महीने में भगवान् की प्रीति के लिये लक्ष्मीपतिजी को दियाजाता है वह सब नाशरहित होता है ३३ और भी जो कुछ सुकृतकर्म्म वैशाख में भगवान् की प्रीति के लिये कियाजाता है तो उसका नाश नहीं होताहै ३४ और जो वैशाख के महीने में भगवान् की प्रसन्नता के लिये पौशाला करता है वह मनुष्य दिन दिन में अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होता है ३५ वैशाख दुर्लभ महीना है सब कर्मफल का देनेवाला है तिसमें सैकड़ों काम छोड़कर भगवान् पूजने योग्य हैं ३६ एक दिन भी जो वैशाखमें भगवान् की पूजा करता है वह छःवर्षकी भगवान् की पूजा करने के फलको प्राप्त होताहै ३७ जो वैष्णव मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफल के हेतु वैशाख महीने में नित्यही पीपल के वृक्षरूपी विष्णुजी को ३८ कुल्लामात्र जलसे सेवन करता है वह करोड़ों पापों से छूटकर श्रेष्ठ स्थानको जाताहै ३९ पीपलकी जड़को जो पत्थर आदिकों से बांधताहै उसको पीपलरूपी भगवान् क्या क्या नहीं देते हैं ४० पीपलके वृक्षको देखकर जो प्रणाम करताहै वह श्रेष्ठ स्थान को जाता है और निस्सन्देह उसके उमर की वृद्धि होती है ४१ हे विप्र जैमिनि! पीपलके वृक्षके नीचे जो धर्म कर्म करताहै तो तिस कर्म में कुछ कमी नहीं होती है ४२ तहांपर गंगा आदिक सब तीर्थ हैं जहां पर वृक्षों में श्रेष्ठ एक भी पीपल का वृक्ष स्थितहै ४३ जो पीपलको पूजताहै सोई विष्णुजीको पूजताहै जिससे पीपलकी मूर्त्ति आपही भगवान् हैं ४४ जो मूढ़बुद्धि मनुष्य अज्ञान से पीपलको काट डालताहै तो संसार में वह कर्म्म नहीं है जिसको करके वह शुद्ध होजावे ४५ यह पीपल वृक्षोंका राजा हरिजी की मूर्ति कहा गयाहै तिससे पीपल के नाश करनेवालों का कोई रक्षा करनेवाला नहीं है ४६ पीपल के देखने, छूने और प्रणाम करने से भगवान् देहके स्थित सब पापों को नाश करते हैं ४७ पीपल के काटनेवाले

को देखकर जो समर्थ होकर नहीं निषेध करता है तो उसके दोनों नेत्रों को यमराजजी आपही कटियासे निकाल लेते हैं ४८ और जो यह नहीं कहता है कि रे मूर्ख! पीपल को मत काटे तिसकी जीभको यमराजजी छूरीसे आपही काटते हैं ४९ जो मनुष्य छोटीभी एक डालको काटता है वह करोड़ ब्रह्महत्याओं के फलको प्राप्त होता है ५० ब्राह्मणकी हत्या, गुरुजी की स्त्री से भोग, मदिरापान, चोरी, न्यास का चुराना, ५१ गर्भहत्या, गोहत्या, स्त्रीहत्या, पराई स्त्री से भोग, ५२ शरणागत और मित्रकी हत्या, विश्वास वाक्यके न कहने में, पतिके मारनेकी विधि में, ५३ पराई निन्दा और एकादशी के भोजन में जो पाप होता है उसी घोर पापको मनुष्य पीपलके काटने से प्राप्तहोते हैं ५४ विष्णुजीकी मूर्ति पीपल को जो मनुष्य मोह से काटताहै तो उसके बराबर कोई पापी पृथ्वीमंडल में नहीं सुना जाता है ५५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! हे वत्स! सब पाप नाश करनेवाले पीपल के माहात्म्य को इतिहाससमेत कहता हूं एकाग्र चित्त होकर सुनो ५६ पूर्वसमय में त्रेतायुग में धनंजय नाम ब्राह्मण हुए ये हरिभक्ति के करनेवाले, सब प्राणियों के कल्याण में रत, ५७ जाति कीपूजा और दीपदानमें सदैव रत, सत्य बोलनेवाले, क्रोध जीतनेहारे, हिंसा और दम्भ से वर्जित ५८ और मोक्षकी इच्छा करनेवाले थे ये श्रेष्ठभक्ति से परमेश्वर, प्रभु नारायणजी को पूजन करतेभये ५९ तब भगवान् तिसकी बड़ी दृढ़ भक्ति जानकर किसी हेतुमात्र से उसके सब द्रव्य को हर लेते भये ६० तिसपर भी वह बड़ा बुद्धिमान् श्रेष्ठब्राह्मण परमभक्ति से केशव महात्माजीकी प्रतिदिन पूजा करता भया ६१ दुःख से इकट्ठा किया हुआ सब धन नष्ट हुआ देखकर भी तिस ब्राह्मणने अचिन्त्यचित्त से ६२ भोजन करना छोड़ दिया और परमार्थ के जाननेवाले इस ब्राह्मणने महाविष्णुजीकी पूजा में अपने मनको दृढ़ बांधा ६३ फिर तिस ब्राह्मण की भक्ति जानकर अत्यन्त दृढ़ शांति के देनेवाले भगवान् उसके भाइयों से विच्छेद कराते भये ६४ तिस ब्राह्मण के भाई लोग भगवान् की माया से मोहित होकर सदैव उसके मारने में उतारू रहते भये ६५ तबभी

ब्राह्मण बड़ी भक्ति से प्रसन्न होकर हठ न छोड़कर पुरुषोत्तमजीकी निरन्तर पूजा करता भया ६६ फिर ब्राह्मण भगवान् की पूजन में धनको कुछ कल्पना कर लक्ष्मीपति जगन्नाथ जी को पूजन करते भये और बन्धुओं के शोकको छोड़ते भये ६७ तब कौतुकी महाविष्णुजी कृपासमेत फिर उसके दिनदिन में पुत्रों को हरलेते भये ६८ तिसपरभी वह श्रेष्ठब्राह्मण पहले की दूनी भक्ति से क्लेशों के नाश करनेवाले विष्णुजीको नित्यही पूजन करता भया ६९ तदनन्तर विष्णुजी की माया से मोहित और दुःख शोक से अत्यन्त दुःखित उसकी स्त्री भी पिताके घरको चलीगई ७० तिसपीछे विष्णुजी की भक्ति में परायण अकेला ब्राह्मणभी सुन्दर चित्तसे कभी विपत्ति की न चिन्तना करता भया ७१ एक समय में वह श्रेष्ठब्राह्मण विष्णुजीकी भक्तियुक्तों में श्रेष्ठ कंधे में कुल्हाड़ा धरकर लकड़ी लेने के लिये वनको जाताभया ७२ और कपड़ों से हीन यह ब्राह्मण वनसे नित्यही लकड़ी लाकर जाड़े के आगमन में शीतको निवारण करताभया ७३ कभी यह श्रेष्ठ ब्राह्मण वन जाने में न समर्थ हुआ तो अपने आंगन में स्थित पीपल के वृक्ष की डाल को काटता भया ७४ इस अन्तर में व्यथा से कष्टयुक्त मन होकर देवताओं में श्रेष्ठ महाविष्णुजी पीपल के वृक्षसे निकलते भये ७५ तब ब्राह्मण आगे श्रीविष्णुजी को देखता भया जो कि चारभुजा धारे कमलदल के समान बड़े नेत्रोंवाले पीताम्बर, कुण्डल, सुन्दर बाल और कमल आदिक अपने अस्त्रों को धारे ७६ विस्तार युक्त बहती हुई रक्तकी धारा से संध्याओंमें लाल रंग हुए नवीन मेघोंकी नाईं, अग्निरूप, सुख, परेश और देवसमूहों से भी अदृश्य हैं तब ब्राह्मण हर्ष के आंशुओंकी धारासे सुन्दर दोनोंनेत्रों को कर, कोमल वचनोंसे स्तुति करनेलगा ७७ कि हे हरे! मुरारे, संसारके एकनाथ, गोविन्द, दामोदर, माधव, लक्ष्मीकेपति, केशव, केशीराक्षसके शत्रु, नारायण, अनन्त, हे विभुजी! प्रसन्न हूजिये ७८ आपके अवतार को मैं क्या कहूं आपके विना पृथ्वी में कोई नहीं है क्या गुणोंसेव्याप्त सबलोक आपहैं मित्रोंमें पर एकतुल्य दया ७९

अपनी को देकर हे विष्णो! हे ईश! किसीकी देहमें स्थित भक्तिको आप हररहे हैं और लक्ष्मी को लेलियाहै और बड़ीभारी धन्या भक्ति को मुझे दियाहै इससे मैं आनन्द को प्राप्त हूं ८० हे अनन्तमूर्ते! मैं निरन्तर पापियों में श्रेष्ठ होकर अपना को महात्मा मानता हूं कि मेरे ही लिये आपके दोनों चरण दिखाई दिये परन्तु यह आश्चर्य है कि पापी आपको नहीं देखता है ८१ यद्यपि मैं दुःख-युक्तों में श्रेष्ठ हूं तथापि इस समय में हे विष्णुजी! मैं अपना को इन्द्र की नाईं मानताहूं जिससे कि लोकों की आत्मा आपको नेत्रों से देखरहाहूं ८२ हे केशवजी! आपकी थोड़ी भी पूजा को मैं नहीं जानता हूं द्रव्य कभी आपको मैं नहीं देताहूं तिसपर भी आप पूज्य मेरे आगे मूर्तिमान् दिखाई दिये हो ८३ आपने धर्म, अर्थ और काम इन तीनों से युक्त यह भक्तिरूपी वृक्ष मुझको दिया है और आपके दर्शनरूपी वर्षासे सींचागया है हे प्रभो! इस समय में यह वृक्ष मोक्षरूपी फलको धारण करता है ८४ हे केशव! हे देवदेव! मेरा मस्तक सब मनुष्यों के मस्तकों में श्रेष्ठ होवे और इस समय में मन संसाररूपी आपके दोनों चरणकमलों में प्राप्त होवे ८५ व्यासजी बोले कि इस प्रकार ब्राह्मण जगन्नाथ, रोगरहित नारायणजी की स्तुति कर हाथ जोड़कर भक्ति से फिर बोला ८६ कि हे देवों के देव! हे जगन्नाथ! हे लोकों के ऊपर दयाकरनेवाले! कशाके प्रहार से यह देह आपकी रक्तसे भरी हुई है ८७ संग्राममें सब दैत्यों के वंशको आपने नाश करदिया है हे प्रभो! यह अद्भुतहै कि आपके मारनेमें कौन पृथ्वीमें समर्थहै ८८ तब भगवान् बोले कि हेवत्स! तुमने यह सत्यही कहाहै इसमें सन्देह नहीं है दानव व राक्षस कोई मेरे मारने में समर्थ नहीं है ८९ मैं पीपलमूर्ति हूं मुझको कुल्हाड़ेसे तूने काटा है इससे हे द्विज! इस समय में रक्त मेरे बहरहा है ९० व्यासजी बोले कि भगवान्के ये वचन सुनकर वह ब्राह्मण भयसे विह्वल होकर आत्मासे आत्माको बहुत भांति निन्दा करता भया ९१ कि तत्त्वसे सब पापियोंमें श्रेष्ठ मेरी भाग्यको धिक्कारहै जिस मैंने त्रैलोक्यके स्वामीके हृदयमें बड़ी व्यथाको दियाहै ९२ सब पापके हरने

बोले विष्णुजी को मैंने पीड़ित किया है अकेले मैं इस पापके पार नहीं जासक्ताहूं ९३ जिन आपके प्रसन्न होनेमें पापीभी देवताओं से वन्दित होजाते हैं सोई आप मेरी दी हुई व्यथा से व्यथित हुए हैं हा! मैं मारागयाहूं ९४ जिनको ब्रह्मादिक देवताभी अत्यन्त भक्तिसे प्रसन्न कराते हैं तिनके हृदयमें मुझ पापीने पीड़ा दीहै ९५ तपस्या, जप, घर और मेरेजीने से क्या है धर्म, अर्थ, काम और मोक्षों के एक दाताको मैंने व्यथा से व्याकुल कर दिया है ९६ ऐसा कहकर वह ब्राह्मण विष्णुजी की प्रसन्नता के लिये तिसी फरसे से अपना कण्ठ काटने का मन करता भया ९७ तब तो तिस ब्राह्मण की दृढ़ भक्ति जानकर दयालु भगवान् भक्तों के प्यार करनेवाले शीघ्रता से तिसके हाथसे फरसे को ले लेकर ९८ बोले कि हे वत्स! तू कैसे यह अत्यन्त दारुणकर्म करता है आत्महत्या करनेवाले पुरुषों के ऊपर कभी मैं प्रसन्न नहीं होताहूं ९९ हे सज्जनों में श्रेष्ठ! हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारी भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं डरो नहीं जो तुम्हारे मन में वर्तमान हो वह वर मांगो १०० तब ब्राह्मण बोले कि हे परमेश्वर! हे प्रभो! मैं यह वर मांगता हूं कि मैंने बड़ी भारी यह आपको व्यथा दी है सो आपके शरीरमें न रहे १०१ तब श्रीभगवान् बोले कि हे ब्राह्मण! हे वत्स! तूने अज्ञान से यह कर्म किया है इससे भारीमें तेरा अपराध हम क्षमा करेंगे १०२ तू भक्तों में श्रेष्ठ है इससे नित्यही तेरी रक्षा करनी योग्यहै हे वत्स! तुम्हारे सदृशों के दोषोंको मैं दिन दिन में नहीं मानता हूं १०३ तिसपर भी मेरी बड़ीभारी भक्ति तुम्हारे सदैव बढ़ै तिससे हे वत्स! इससमय में तुमसे ऋणहीन होजाने की इच्छा करता हूं १०४ इससे सब भय छोड़ कर मेरे आगे वर मांगो तब ब्राह्मण बोला कि हे सब देवताओं में श्रेष्ठ! हे हरिजी! आपमें मेरी जन्म जन्म में दृढ़ भक्ति होवे और वरों से क्या है व्यासजी बोले कि भगवान् की नम्रता कहनेवाले ब्राह्मण के ये वचन सुनकर १०५।१०६ प्रसन्न होकर विष्णुजी अपने कण्ठ में स्थित मालाको देकर तिस ब्राह्मण को इस प्रकार अपनी चार लम्बी भुजाओं से आलिंगन करते भये

जैसे पिता पुत्रको आलिंगन करता है फिर उससे कोमल वचन बोले कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्त हो इससे मेरे प्रसाद से १०७। १०८ थोड़ेही समयमें तुम्हारा सब कल्याण होगा हे सज्जनों में श्रेष्ठ! क्रियायोग से पीपलरूप मुझको नित्यही १०९ आराधन करो तुम्हारे सब वांछितको मैं सिद्ध करूंगा ऐसा कहकर केशवजी तिस श्रेष्ठब्राह्मणको फिर आलिंगनकर ११० सहसासे तहांहीं अन्तर्द्धान होगये तब वैष्णवों में उत्तम ब्राह्मण विष्णुजी के कराठकी माला पाकर १११ आत्माको कृतकृत्य की नाईं मानकर अपने घर में स्थित रहते भये तदनन्तर तिस ब्राह्मण के घर में कुबेरजी ११२ भगवान्की आज्ञासे आपही बहुत द्रव्य बरसते भये और विश्वकर्मा कारीगरने महल बना दिया ११३ तहां पर श्रेष्ठ ब्राह्मण नारायणजीकी आज्ञा से जयंतकी नाईं दास और दासियों से युक्त, अनेक वस्तुओंसे भूषित होकर रहते भये और हाथी और घोड़ोंसे युक्त तिसका मन्दिर शोभित होता भया और तिसके नष्ट हुए बांधव फिर प्राप्त होते भये ११४।११५ और अनादर करके चलीगई तिसकी स्त्री फिर तिसके स्थानमें प्राप्त होती भई उसके मरे हुए पुत्रभी भगवान्की कृपासे ११६ फिर होते भये और वह स्त्री भी स्वामी की भक्ति में परायण हुई तब ब्राह्मण पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर बहुत काल सब भोगोंको भोगकर ११७ स्त्री समेत आयुके अन्त में मोक्षको प्राप्त होजाता भया व्यासजी बोले कि वृक्षोंमें श्रेष्ठ पीपलका वृक्ष साक्षात् आपही विष्णुरूप है ११८ तिसकी भक्ति करनेवाले पुरुषों का कहीं अशुभ नहीं होताहै हे मनुष्यों में उत्तम! जो विष्णुजी को ध्यानकर पीपलको सेवता है ११९ तिसको प्रसन्नहोकर भगवान् परमपद देते हैं १२०॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे अश्वत्थमाहात्म्ये द्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवाँ अध्याय

ज्येष्ठ महीनेसे लेकर कार्तिक महीनेतक भगवान्के पूजनका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! ज्येष्ठ महीने में

भगवान् जनार्दनजीको भक्तिभावसे ठण्ढेजलोंसे स्नानकराकर पूजन करै १ सुगन्धित उबटन, आंवला और सुगन्ध तेल हरिजी को गरमीके समयमें दिन दिन में देवै २ सुवासित, ठण्ढे, अत्यन्त मनोरम स्थान में जलों के मण्डपमें प्रतिदिन लक्ष्मीपतिजी को स्थापित करै ३ हे विप्रेन्द्र ! भयानक देश, धूमसमेत इन्धन का स्थान और सवरिके घर में भगवान् को न स्थापित करै ४ सफेद, दीर्घ चामरों से ज्येष्ठमास में भगवान् के डुलावे तो प्रसन्न होकर भगवान् क्या नहीं देते हैं ५ हे सज्जनों में श्रेष्ठ ! ज्येष्ठ में मयूरकी पूंछके पंखों से डुलाये गये भगवान् थोड़े ही काल में सब मनोवांछित को देते हैं ६ ताड़के पंखे की हवा और पवित्र कपड़े की हवा जिन्होंने ग्रीष्मऋतु में विष्णुजी के की है वे सब स्वर्गको जावेंगे ७ जो गरमीमें सुगन्धयुक्त कर्दम और हरिचन्दनसे हरिजीकी देहको लेपन करता है वह भगवान्की देहमें प्रवेश करताहै ८ गरमीके आगमनमें फूलों, फूलों के बगीचे तथा तुलसी के वनमें धीर पवनवाले देशमें संध्या के समय में जो विष्णुजी को स्थापित करताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाता है जिसने ज्येष्ठमहीने में पाटल के फूलों से विष्णुजी को अलंकृत किया वह हज़ार अश्वमेध का करनेवाला होता है ग्रीष्म ऋतु में जो मनुष्य भगवान् को मोतियों का माला देता है ९ । १० । ११ तो भगवान् उसको जन्म जन्म में राज्य देते हैं जो ग्रीष्मऋतु में श्रीकृष्णजी को मणियोंकी माला से शोभित करता है १२ तिसके पुण्य के फलको मैं कहताहूं सुनिये जबतक ब्रह्मा इस सब संसार को रचते हैं १३ तबतक मणियों की माला से भूषित होकर वह विष्णुजीके पुरमें स्थित होताहै सोने तथा चांदीके गहनों से १४ ग्रीष्म में कृष्णजी को जो भूषित करता है वह भी तिसी फलको प्राप्त होताहै जो देवों के देव हरिजी को गंडूकसमेत विचित्र शय्या देताहै वह कभी दुःखी नहीं होताहै ग्रीष्मसमय में हरिजीको गरुये कपड़े न देने चाहिये पवित्र महीन कपड़े देवे जो हाथ के तोड़े, सुन्दर, सुगन्धित फलोंसे भगवान् का पूजन करता है १५ । १६ । १७ वह अन्त समयमें इन्द्र के पुरमें जाकर आनन्द

से अमृत पीता है प्रियालों के सुन्दर फलों से जो लक्ष्मीपति को पूजन करता है १८ वह भी तिसी फलको प्राप्त होताहै और बहुत कहनेसे क्या है ग्रीष्म में जो वैष्णव मनुष्य श्रद्धासे अनेक प्रकारके व्यंजनसंयुक्त अत्यन्त शीतल यवागू हरिजी को देताहै तो वह भी तिसी फलको प्राप्त होताहै हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! आषाढ़ महीने में देवदेव, संसारके गुरुजीको १९।२० पण्डित भक्तिसे दहीसे स्नान कराकर पूजन करै तो वह फिर माता के स्तन नहीं पीताहै २१ हे विप्रर्षे! आषाढ़ में मेघों के समान श्यामवर्ण हरिजीको आराधनकर मनुष्य श्रेष्ठगतिको प्राप्त होताहै २२ जो कदम्बके फूलोंकी मालाओं से अग्नि के सदृश मण्डप करता है वह अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै २३ हे ब्राह्मणों में उत्तम! सुगन्धित केतकी के फूलों से पूजित हुए लक्ष्मीपतिजी मनुष्यों के सब दुःखों को नाश करते हैं २४ कटहलके सुन्दर पके और घी से मिलेहुए फलोंसे पूजितहुए भगवान् विष्णुजी उत्तम ऐश्वर्य को देते हैं २५ हे उत्तम ब्राह्मण! वैष्णव मनुष्य आषाढ़ के महीने में हरिजी को श्रद्धा से दही अन्न प्रति दिन मुक्ति की इच्छाकर देवे २६ जो वैष्णव मनुष्य कृष्णजी को माखन देताहै वह सब पापोंसे शुद्ध होकर ब्रह्मलोकको जाताहै २७ जो मनुष्य शेफालिका और यूथिका के फूलों से परमात्माजी को पूजन करता है वह परमपदको जाताहै २८ फूलीहुई सुगन्धित मालती के फूलों से जो हरिजी को पूजन करताहै तो तिस पुण्य से उसका सो पुण्य होताहै जिससे नहीं होवे २९ मनुष्य पृथ्वी में कुन्द और बकुल के फूलों से संसार के बन्धु जनार्दनजीको पूजनकर सब कामनाओं को प्राप्त होताहै ३० महामहा तथा कुरुबक के फूले हुए फूलोंसे जो हरिजीको पूजन करता है उस मनुष्य पर भगवान् सदैव प्रसन्न रहते हैं ३१ जो मनुष्य सैरीयक, प्रसू और करवीरके फूलों से विष्णुजी को पूजन करता है वह भगवान् के समीप प्राप्त होता है ३२ हे विप्रर्षे! जो श्रावण में घीसंयुक्त लाजाओं को हरिजी को देताहै तिसके घर में सर्वतोमुखी लक्ष्मी जी बसती हैं ३३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य भादों के महीने में रोगरहित, धर्म, अर्थ,

काम और मोक्षके देनेवाले नारायणजी को श्रद्धा से पूजन करै ३४ सब उपद्रवों से हीन, नवीन बनेहुए स्थानमें कमलनयन, जनार्दन, भगवानूजी को स्थापित करै ३५ मनुष्य हरिजीको डांस, मसा और मक्खी आदिकों से युक्त पुराने स्थान में नहीं स्थापित करै ३६ बुद्धिमान् मनुष्य कीचड़ समेत, द्वारगिरे हुए, भीतगली हुई इस प्रकार के घर में वर्षाऋतु में परमेश्वरजी को नहीं स्थापन करै ३७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो मनुष्य विष्णुजी के स्थान में विचित्र चन्द्रातप करताहै वह विष्णुजी के लोकको जाता है ३८ पूजा के समय रात्रि में भगवान् के मन्दिर में अनेक प्रकार की धूपों से डांस और मसों को निवारण करै ३९ वर्षाऋतु में मंसारिकाओं से आच्छादित कर मंचपर सोनेवाले विष्णुजी को रात्रि में सुन्दर मन्दिर में स्थापन करै ४० भादों के महीने में मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य नवीन सुगन्धित कह्लार के पत्रों से भगवानूको दिनादिन में पूजन करै ४१ भादों में जनार्दनजी को केतकी के फूलों से नहीं पूजन करना चाहिये क्योंकि इस महीने में केतकी मदिरा के समान होती है ४२ जो पके हुए सुन्दर ताल के फलों से भगवान् को पूजन करता है वह गर्भवास के महादुःख को फिर नहीं प्राप्त होता है ४३ जो मनुष्य घी और दूध से संयुक्त पके हुए ताल के फलको श्रद्धा से भगवान् को देता है वह हरिजी के मन्दिर को जाता है ४४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! वैष्णव मनुष्य भादों के महीने में हरिजी को घीसमेत तालपिष्टक केवल प्राप्ति के हेतु देवे ४५ हे विप्र ! मोक्ष की इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य भादों के महीने में शाक को न खावे और रात्रि में भोजन न करै ४६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! कुंआरके महीने में पूर्वाह्ण के समय क्लेश नाशनेवाले भगवान् को जो मनुष्य जल देते हैं ४७ उसको लक्ष्मीपतिजी अमृत की नाईं ग्रहण करते हैं और मध्याह्न में जो चक्रपाणिजी को जल दियाजाता है ४८ उसको भी अमृत ही की समान भगवान् ग्रहण करते हैं अपराह्ण में जो गोविन्दजी को जल दियाजाताहै ४९ वह रक्तके सदृश होताहै इससे हरिजी उसको नहीं ग्रहण करते हैं इससे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! पूर्वाह्ण में

भगवान् को पूजन करै ५० तो भगवान् की दयासे सब कामनाओं को प्राप्त होवे हे विप्रेन्द्र! एक कपड़े से हरिजी का पूजन न करै ५१ वा करै तो ऐसी पूजा को केशवजी नहीं ग्रहण करते हैं विना धोये कपड़े से जो भगवान् की पूजा करता है ५२ तो वह पूजा विफल होतीहै और विष्णुजी प्रसन्न नहीं होते हैं जे मनुष्य भगवान् की विना शिखा बांधेहुए पूजा करते हैं ५३ वे पूजा के फलको नहीं प्राप्त होतेहैं यह पूजा बालिग्राह्य होती है और विना संस्कार किये हुए घरमें भगवान् की पूजा की जावे ५४ तो यह भी पूजा निश्चय बालिग्राह्य होती है स्नान, देवपूजन, दान और पितृपूजन ५५ चतुर मनुष्य तिलक के विना न करै विना तिलक के जो पुण्यकर्म किया जाता है ५६ वह सब भस्म होजाताहै और करनेवाला नरक को जाताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शंख, चक्र, गदा और कमल से जिसका शरीर चिह्नित दिखलाई देताहै वह आपही भगवान् जानने योग्य है और जो वैष्णव दक्षिणभुजा में शंख और कमल लिखता है ५७।५८ और बाईंभुजा में चक्र और गदा लिखता है वह निस्सन्देह विष्णु ही है जो दाहिनी भुजा में शंखके ऊपर कमल लिखता है ५९ तिसके सब पाप क्षणमात्र ही में नाश होजाते हैं और बाईंभुजा में चक्र के ऊपर जो गदा लिखता है ६० तिसकी इन्द्रादिक देवता वन्दना करते हैं जो पण्डित अपने माथे में भगवान्‌के दोनों चरणोंको लिखता है ६१ तिसको देखकर पापीभी पाप से छूट जाताहै जो श्रेष्ठ वैष्णव अष्टाक्षर महामंत्र, मत्स्य और कच्छपजी को हृदय में लिखता है वह तीनोंलोकों को पवित्र करताहै जिसका शरीर दिनदिन में कृष्णजी के अस्त्रसे चिह्नित होताहै ६२।६३ तिसको कृष्ण जगन्नाथजी परमपद देते हैं कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित देहवाला मनुष्य शुभ वा अशुभ जो कर्म करताहै वह सब नाशरहित होता है दानव, राक्षस, भूत, वेतालक, ६४।६५ पिशाच, सर्प, यक्ष, विद्याधर, किन्नर, गुह्यक, ग्रह, बालग्रह, ६६ कूष्माण्ड, डाकिनी तथा और विघ्नकारक सब डरसे कृष्णजी के अस्त्र से चिह्नित को देखकर भागजाते हैं ६७ सिंह और सिंहिनियां तथा औरभी वनवासी

कृष्णजी के अस्त्रसे चिह्नित को देखकर डरसे भागजाते हैं ६८ और कामला आदिक देहके गिरानेवाले महारोगभी भाग जाते हैं जो मनुष्य कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित देहवाले को भक्तिसे देखता है ६९ वह कृष्णजी के दर्शनके तुल्य फलको प्राप्त होताहै जो कुँवार में त्रिपत्रीकृत दूबों से हरिजीको पूजन करता है ७० तिसकी दूब की नाईं अविच्छिन्न सन्तान वर्तमान होती है कुँवारके महीने में जो भगवान्को कर्कटी के फलको देताहै ७१ तिसके हृदय में कभी शोक नहीं होताहै और सब मासों में उत्तम शुभ कार्त्तिकके महीनेके प्राप्त होनेमें ७२ बुद्धिमान् मनुष्य दामोदर देवदेवजी को भक्तिसे पूजन करै हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! कार्त्तिक मासमें विष्णुजी की प्रसन्नताके हेतु ७३ यथोक्तविधिसे प्रातःकाल स्नान करै कार्त्तिक महीने में जो मांस और मैथुनको त्याग करताहै ७४ वह जन्म जन्मके इकट्ठे किये हुए पापों से छूटकर श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता है हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! तुलाराशिके सूर्य्यमें प्रातःकाल स्नान ७५ हविष्य भोजन, ब्रह्मचर्य रहना ये महापापों को नाश करते हैं और जो कार्त्तिक महीने में मांस खाता और मैथुन करता है ७६ वह जन्म जन्ममें गांवका सुअर होता है वैष्णव मनुष्य दूसरीबार भोजन, पराया अन्न और तेलको ७७ कार्त्तिक महीनेके प्राप्त होनेमें यत्न से छोड़देवे आकाश में भगवान्को जो दीप देताहै ७८ हे ब्राह्मण ! तिसके फलको संक्षेप से कहताहूं सुनिये ब्रह्म हत्यादिक क्लेश देने वाले पापों से छूटकर ७९ भगवान्के पुरमें जाकर करोड़युगपर्यन्त वह मनुष्य स्थित होता है प्रकाशित दीपको इन्द्रादिक देवता आकाशमें ८० देखकर प्रसन्न होकर सब परस्पर यह कहते हैं कि यह पुण्यात्माओंमें श्रेष्ठ, भगवान्के पूजन में तत्परहै ८१ जो कार्त्तिकके महीनेमें भगवान्को दीप देताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहतेहैं ८२ जो कार्त्तिक के महीने में भगवान् के मन्दिरमें अक्षय दीप देताहै वह मनुष्य दिनादिनमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ८३ जो मनुष्य कार्त्तिक में लाख तुलसीदलों से हरिजीको पूजताहै वह एकलाख अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्त होता

है ८४ और जो लाख बिल्वपत्र से नाश रहित विष्णुजीको पूजन करता है वह भगवान्‌के प्रसादसे परममोक्षको प्राप्त होताहै ८५ जो कुछ कार्त्तिक के महीने में विष्णुजी को उद्देश कर दिया जाता है वह सब नाशरहित होताहै यह मैं सत्यही कहताहूं ८६ जो कार्त्तिक के महीने में घी से युक्त सुरपत्र को दिनादिन में वैष्णव को देता है तिसकी विष्णुजीके पुरमें स्थिति होती है ८७ जो सफेद वा काले फूले कमलके पत्रसे भगवान् को पूजन करता है तिसका पृथ्वी में क्या दुर्लभ है ८८ जिस श्रेष्ठब्राह्मण ने कार्त्तिक के महीने में दैत्योंके जीतनेवाले, हरि, विष्णुजी को कमल न दिया उसने कुछ न किया ८९ एकही कमल लाकर जो भगवान्‌को देताहै तिसको लक्ष्मी के पति भगवान् विष्णुजी क्या नहीं देते हैं ९० कार्त्तिक के महीने में कमलों से जिसने हरिजी को नहीं आराधन किया तो जन्मजन्म में उसके घर में लक्ष्मीजी नहीं स्थित होती हैं ९१ जो केशव महात्माजी को कमल के बीज देता है वह प्रत्येक जन्म में शुद्ध ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न होताहै ९२ और ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न होकर चारोंवेदों का मित्र, धनवान्, बहुत पुत्रवाला और कुटुम्बों का पालन करने हारा होताहै ९३ हे जैमिनि! कमलके समान फूल नहींहै जिससे गोविन्दजीको पूजनकर पापी भी मोक्षको प्राप्तहोता है ९४ कमल के फूलका माहात्म्य विशेषकर मैंने कहा अब हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इतिहाससमेत सावधान होकर सुनिये ९५ एक प्रजा नाम ब्राह्मण सब शास्त्रका जाननेवाला हुआ जिसका मन भगवान् के चरणकमल में भौंरेकी नाईं सदैव स्थित रहताथा ९६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! सदैव वह देवता, ब्राह्मण और गुरुओं की पूजा सैकड़ों कार्यों को छोड़कर करताथा ९७ पराई द्रव्यको विष के समान और पराई स्त्रियों को माताके सदृश और शत्रुको भी मित्रके समान समझताथा ९८ यह परमार्थ का जाननेवाला ब्राह्मण आये हुए याचक अतिथि श्रेष्ठ ब्राह्मण को देखकर बड़ेमानको न प्राप्त होताथा ९९ घोर, अपार संसार सागर के तरने की इच्छा करनेवाले तिसने सब यज्ञ और सब व्रत करलिये १०० एक समय में यह श्रेष्ठ ब्राह्मण भगवान्‌को

भक्ति में परायण होकर चित्तसे अपनी मृत्यु और जाति की चिन्तना करता भया १०१ कि मैं पूर्व में कौनथा कौन पूर्वसमय में कर्म किया था कैसे जन्म प्राप्त हुआ और फिर कहां जाऊंगा १०२ यह चिन्तना कर यह ब्राह्मण वारंवार श्वास लेकर पहले के वृत्तान्त जानने के लिये महादेवजी के क्षेत्र को जाता भया १०३ तहां पर ब्राह्मण हाथ जोड़ परम भक्ति से युक्त होकर मधुर वाणी से देव, शिव, शंकरजीकी स्तुति करनेलगा १०४ हे महादेव, परमेश्वर, शंकर, ईशान, वर देनेवाले, प्रभु, १०५ ज्ञानरूप, ज्ञान देनेवाले, सब प्राणियों के हृदयरूप कमल के निवास करनेवाले, १०६ संसार के रचनेवाले, पालन करनेवाले, संहार करनेहारे, पशुओं के पति, १०७ अग्निनेत्र, अग्निचक्षु, चन्द्रनेत्र, सूर्यनेत्र, १०८ भस्म से भूषित, कृत्तिवासः, हाड़ों के मालावाले, नीलकण्ठ, १०९ पांच मुखवाले, शूल हाथमें धारे, कामदेवके अभिमानके नाश करनेवाले, भयानकमूर्ति, ११० देवों के देव, त्रिपुरारि, पार्वती के पति, भीममूर्ति, १११ बाणासुर की भक्ति से अत्यन्त संतुष्ट मनवाले, बहुरूप, विश्वरूप, ११२ गंगाधर, दक्षकी यज्ञके नाश करनेवाले, प्रेतों के पति, पिनाकी, ११३ ईशान, मनीष, दृश्य, अदृश्य, चिन्त्य, अचिन्त्य आपके नमस्कार है ११४ देवताओं के एकनाथ ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, सब आर्ति हरनेवाले चन्द्रमा आपही हैं आपके नमस्कार है और परमेश्वर भी आपही हैं आपके नमस्कार है ११५ तिसकी स्तुति को सुनकर संसार के कल्याण करनेवाले शंकर परमेश्वरजी प्रसन्न होकर सहसा प्रकट हो गये ११६ सब देवों से नमस्कार किये गये महादेवजी को प्रकट हुए देखकर अत्यन्त भक्तियुक्त वह ब्राह्मण महादेवजी के चरणों में वन्दना करता भया ११७ फिर वह श्रेष्ठ ब्राह्मण आनन्दसे निर्भरमन होकर हाथ जोड़कर वर देनेवाले, प्रभु, महादेवजीकी स्तुति करनेलगा ११८ कि जिन देवों के स्वामीको इन्द्रसमेत देवता भी नहीं देखते हैं तिनको मैं साक्षात् देखता हूं यह मेरी महाभाग्य है ११९ जो परमेश्वर ध्यान में अवस्थित चित्तसे दिखलाई देते हैं तिनको मैं साक्षात् देखता हूं और

मेरा क्या साध्यहै १२० आपका नाम स्मरण करनेसे महापापी भी परम स्थानको जाते हैं तिन प्रभुको मैं देखता हूं १२१ मैं कृतार्थ और भाग्यवान् हूं हे परमेश्वरजी! आपके नमस्कार हैं प्रसन्न हूजिये १२२ तब महादेवजी बोले हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! हे महाभाग! तुम्हारे इस वाक्यसे मैं प्रसन्न हूं वर मांगो निश्चय मैं वर देने की इच्छा करता हूं १२३ तब ब्राह्मण बोला कि हे नाथ! देवताओं से भी अदृश्य आप परमात्माको मैं साक्षात् देखता हूं और वरों से क्या कार्य है १२४ हे महादेव! हे परमेश्वर! तिसपर भी आप वर देना चाहते हैं तो जो कुछ मैं पूंछता हूं तिसको कहिये १२५ हे देव! हे नाथ! हे प्रभो! पूर्वसमय में मैं कौन था कहां स्थित और क्या कार्य किया था और संसाररूपी समुद्र में कैसे गिरा हूं १२६ कर्मसे देह प्राप्त होताहै देहधारी पापसे लिप्त होता है फिर पापके प्रभाव से विषमगति प्राप्तहोती है १२७ हे नाथ! हे शंकरजी! किन कर्मोंके प्रभावसे अनेक प्रकार के दुःख देनेवाले इसजन्मको मैंने पाया है प्रसन्न होकर कहिये १२८ यह जन्म पापका मूलहै जन्म दुःखका कारण है तिससे मैं अपने पूर्व वृत्तान्त के जानने की इच्छा करता हूं १२९ कर्मोंके विपाक से मूत्र और विष्ठासे युक्त माताकी कोखि में मैं पेट की अग्निसे तापित हुआ हूं १३० हे प्रभो! हे भक्तोंकी पीड़ा के नाश करनेवाले! गर्भवास के समान दुःख संसार में नहीं मानता हूं तिसको मैंने कैसे अनुभूत किया है १३१ इस महाघोर संसार, अनेक दुःखों से युक्त, असार, विष्णुजी की मायासे मोहित, पापों के आश्रय, १३२ दुस्तर, बन्धुहीन, काम और क्रोधआदि से संयुक्त, शोक, रोग, जन्म और मृत्यु के देनेवाले १३३ हे अपार संसार के स्वामी! हे शिव! हे विभुजी! मैं कैसे गिरा हूं जो आपकी मेरे ऊपर कृपाहै तो यह सब कहिये १३४ तब महादेवजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यद्यपि यह अत्यन्त गुह्य, महान् और प्रकाश करने के अयोग्य है तथापि मैं तुझ भक्त से कहता हूँ १३५ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! पूर्वसमय में तू शबरों के वंश में उत्पन्न, दण्डपाणि नाम से प्रसिद्ध, अच्छे मनुष्यों के दुःख देनेवाला था १३६

परलोकका भय छोड़कर ज्ञानों से हीन होकर प्रपन्नों को आर्ति और परमक्लेश देनेवाली चोरों की वृत्ति करता था १३७ तुझको चोरों की वृत्ति में प्राप्त अत्यन्त निर्दयी देखकर और सब भाई भी चोर होगये १३८ तिन भाइयों के मैं नाम कहता हूँ जिनके साथ पूर्व समय में तूने चोरी की थी १३९ दण्डी, दण्डायुध, दत्तवान्, दत्तभू, सुदण्ड, दण्डकेतु ये छः भाई तेरे कहे गये १४० तिन महा घोर भाइयों समेत तू दयाओं से हीन होकर नित्यही दण्डसे मनुष्योंको व्याकुल करता भया १४१ तिन दुष्ट भाइयोंसहित तूने धनके लोभसे प्रान्तरवन में हज़ारों मनुष्यों का नाश किया १४२ हे ब्राह्मण! सदैव वन में स्थित होकर तूने तीक्ष्णबाणों से गौवोंको मारकर मदिरा के साथ मांस को भोजन किया १४३ तदनंतर सब बनियां तेरे डरसे तिस वन में यानविधि को त्याग कर देते भये वहांपर अनर्थ सदैव होता भया १४४ तेरे चोरों के भाव में प्राप्त होने में जिसका द्रव्य था उसका न होताभया जिसका घर था उसका न हुआ जिसकी स्त्री थी उसकी वह न हुई १४५ इसी प्रकार तिन अपने भाइयोंसमेत तिस महा वन में प्राप्त होकर राह के श्रमसे थककर स्नान करने के लिये तालाब को गया १४६ हे ब्राह्मणों में उत्तम! तहां पर क्षुधायुक्त तूने स्नान किया और तेरे भाइयों ने कमलकी नाल और जल सेवन किये १४७ तदनन्तर हे सज्जनों में अत्यन्त श्रेष्ठ! हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तूने भी बहुत फूलेहुए कमल के फूलोंको भोजन किया तिसी समय में एक वन में रहनेवाला ब्राह्मण सर्ववेदा नामसे प्रसिद्ध स्नान करने के लिये आता भया १४८। १४९ और तहां स्नान कर वह धर्मात्मा नम्रतायुक्त होकर जनार्दन भगवान्के पूजनेके लिये तुमसे मांगता भया १५० तब हे विप्रेन्द्र! तुमने एक निर्मल कमल परम भक्ति से भगवान् की पूजाके लिये दिया १५१ तो तुम्हारे दिये हुए कमल से प्रसन्न होकर वह उत्तम ब्राह्मण तहांही सबके करनेवाले विष्णुजी को पूजन करता भया १५२ तिन सब वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको भगवान् की पूजा में परायण देखकर तुम भी हँसकर सुन्दर कामना

देनेवाले विष्णुजी को नमस्कार करते भये १५३ तदनन्तर वह ब्राह्मण परात्मा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले भगवान् को यथोक्त विधि से पूजन कर जैसे आया था वैसेही चलागया १५४ हे सज्जनों में श्रेष्ठ! तिसी कमलके देने, प्रणाम करने और विष्णुजी की पूजा के दर्शन से तुम्हारे सब पाप नष्ट होगये १५५ हे उत्तम ब्राह्मण! तब कुछ दिनों में तिसी महावन में काल प्राप्त होकर नाश को प्राप्त होगये १५६ तब तिसी कर्म से प्रसन्न होकर दयाके स्थान भगवान् तुमको देवताओंके भी दुर्लभ श्रेष्ठ स्थान को देते भये १५७ तहां पर लक्ष्मीपतिजी की कृपा से हज़ार और सौ मन्वंतर अनेक प्रकार के सुख भोगकर १५८ फिर कर्म के अन्त में इस कर्मभूमि में आकर तिन्हीं पुण्य के फलों से ब्राह्मणके यहां उत्पन्न हुए हो १५९ हे सत्तम! ब्राह्मण के शुद्ध कुल में जन्म पाकर तुमको सब गुणों के आश्रय, अचंचल हरिभक्ति मिली १६० क्रियायोगसे तुमने महाविष्णु प्रभुजीको आराधन किया इससे भगवान् तुमको ज्ञान देवेंगे और ज्ञान से मुक्त होजावोगे १६१ हे ब्राह्मण! तुम प्रसन्न होकर अपने स्थानको जावो तुम्हारा कल्याण होगा मेरे दर्शन तुमने पाये हैं इससे संसार के बन्धन से मुक्त हो १६२ व्यासजी बोले कि हे विप्र जैमिनि! ऐसा कहकर महादेवजी तहां ही अन्तर्द्धान होगये और वह ब्राह्मण कृतार्थ होकर अपने मन्दिर को जाताभया १६३ तदनन्तर विष्णु परमेश्वर जी को तीन दिन मनोरम कमलके फूलों से स्तुति के अर्थ यत्नसे आराधन करताभया १६४ बहुत काल कमल के विचित्र सुन्दर फूलों से विष्णुजी को आराधन कर ज्ञानको प्राप्त होकर भगवान् के प्रसाद से मोक्षको प्राप्त हो जाता भया १६५ विना इच्छाके कमल देनेवालेका इस प्रकार फलहै और जो भक्तिसे विष्णुजी को देता है तो नहीं जानते कि क्या होगा १६६ यह सत्य ही सत्य मैं कहता हूं कमलों से हरिजी को पूजनकर परमपद प्राप्त होता है १६७ एक ही कमल जो भगवान् को देताहै तो उसका फिर भयदायक संसार में जन्म नहीं होताहै १६८ जे दयामय, कामना देनेवाले नारायणजी को एक दिनभी फूलेहुए कमलों से पूजते

हैं वे उत्कट पापों से युक्त पापी भी मुक्तिको प्राप्त होजाते हैं १६९ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय

भगवान् की पूजाका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! वैष्णव मनुष्य भक्तिभाव से अगहनके महीने में महालक्ष्मी से युक्त नाशरहित विष्णुजी को पूजन करै १ म्लेच्छों के देश में तथा पतित के स्थान में और दुर्गन्धसे युक्त स्थान में विष्णुजी को न पूजन करै २ पाखण्डों, महापापियों और झूठ बोलनेवालों के समीप विष्णुजी का पूजन न करै ३ रोनेवालों, लड़ाई करनेवालों तथा हँसनेवालों के स्थान में भी हरिजी का पूजन न करै ४ प्रतिग्रह में रत, कृपण, पराये द्रव्यकी अभिलाष करनेवाले ५ तथा कपट वृत्तियों के स्थान में विष्णुजी का पूजन न करै नारायणजी के पूजन में श्रेष्ठ भक्ति में परायण होकर ६ और जगहसे चित्तको हटाकर हरिजी के ध्यान में परायण होवे हाहाकार, निःश्वास, विस्मय, ७ पाखण्डजनों से भाषण इन सबको छोड़कर भगवान् का पूजन करै अनन्य मन होकर देवदेव, जगद्गुरुको ८ जो भस्म में भी पुष्प दिया जाता है तो वह भी हरिजी को प्राप्त होताहै और सैकड़ों चिन्ताओं के आगम में थककर शिलाचक्रों में भी ९ जो मनुष्य फूल देता है तिसको प्रभुजी नहीं प्राप्त होते हैं अनन्य मन होकर पण्डित भक्तिसे विष्णुजी को पूजन करै १० भ्रांतचित्त होकर जो कर्म किया जाता है वह निष्फल होता है क्योंकि सब कर्म मन के अधीन हैं और तीनों लोक भी मन के अधीन हैं ११ तिससे मन को दृढ़ कर लक्ष्मीपतिजी को पूजन करै हे उत्तम ब्राह्मण! जिसकी पूजा और जगह और मन और जगह होताहै १२ तिसका सौ करोड़ कल्पों में भी कार्य नहीं फलताहै यत्न से शौच कर विष्णुजीकी पूजा में परायण होकर १३ मनकी शुद्धि से जो हीन हो तो चाण्डाल की नाईं होता है हे ब्राह्मण! विना भक्ति से जो बहुतकाल विधिपूर्वक

तपस्या कीजाती है १४ वह सब निरर्थक होजाती है केवल देहही का शोधन होताहै सुमेरु पर्वत के प्रमाण सोना कुटुम्बी ब्राह्मणको १५ विना भक्तिके कल्याण के लिये दियाजावे तो वह द्रव्य नाशही के लिये होताहै तिससे एकमन और भक्ति श्रद्धासे युक्त होकर १६ सभा में वैष्णवको सवास्तुक आदि साग देवे सुन्दर पका हुआ नारंग का फल जो केशवजी को देताहै वह हमलोगों से भी पूजित होता है यत्न से भगवान् हरिजी को नवीन वस्तु प्रियहै १७।१८ तिसको अगहन के महीने में भक्ति से भगवान् को देवे पौषमास के प्राप्त होने में श्रीकृष्ण, वर देनेवाले, प्रभु, १९ देवजी को वैष्णव मनुष्य सुन्दर ईखके रसों से स्नान करवावे हे विप्रेन्द्र ! जो प्रभु विष्णुजी को ईखके रसों से स्नान कराता है २० वह इस लोक में सब सुख भोग कर मर कर ईखके रसके समुद्र में जाताहै जो देवदेव विष्णुजी को ईखकी नैवेद्य देताहै २१ वह भी तिसी फलको प्राप्त होता है और बहुत कहने से क्याहै पौष महीनेमें सुन्दर दूधकी पृथुक दहीसमेत २२ भगवान् को देकर मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्त होता है भगवान् के सब पुराने कपड़ों को दूरकर २३ लक्ष्मीजी समेत विष्णुजीको पौषकी संक्रांति में शीत के निवारण के लिये नवीन कपड़े देवे २४ और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य दश वर्ण पीठक देवे जो भगवान्को पूजन कर शङ्ख बजाताहै २५ हे वत्स ! तिसके फलको कहता हूं एकाग्रचित्त होकर सुनो अगम्या स्त्रियों में गमन आदिक सब पापों से छूटकर २६ अन्त समय में विष्णुजी के पुर में जाकर वह विष्णुजी के साथ आनन्द करता है जो भगवान् की पूजा के समय में गरुड़ से चिह्नित घण्टाको बजाता है तिसकी पुण्यको मैं कहता हूं नहीं भोजन के योग्य वस्तुओं के भोजन करने आदिक सब पापोंसे छूटकर २७।२८ सुन्दर रथपर चढ़कर विष्णुजी के स्थानको जाताहै तहां पर सौ करोड़ कल्प सब कामनाओं को भोग कर २९ फिर वह चारोंवेदका जाननेवाला उत्तम ब्राह्मण पृथ्वी में आकर तहां पर सौ करोड़ कल्प सब कामनाओं को भोगकर ३० फिर विष्णुजीके पुरको जाकर उत्तम मोक्षको प्राप्त होताहै और जो

भगवान् की पूजा के समय में वीणा बजाता है ३१ वह मनुष्य प्रत्येक जन्म में पण्डितों में श्रेष्ठ होता है जो भगवान्की पूजा में मृदङ्ग बाजा बजाताहै ३२ तिसको प्रसन्न होकर भगवान् अभीष्ट फल देते हैं और जो डमरु, डिंडिम, झर्झरी, मधुरी, ३३ ढोल, नगारा, काहल, सिंधुवारक, कांस्य, करताल और वंशी को महाविष्णुजीकी पूजाके समयमें बजाताहै तिसकी पुण्य को सुनिये चोरी के पापों से वह मुक्त होकर भगवान् के स्थान को जाता है३४।३५ और परम ज्ञान प्राप्त होकर तहांही मुक्त होजाताहै जो भगवान् की पूजा के समय में मनोहर शब्द करता है ३६ और मुखसे बाजा बजाता है तिसकी पुण्य मैं कहता हूं करोड़ करोड़ कुलों से युक्त होकर वह भगवान् के मन्दिर को जाताहै ३७ और तहांही ज्ञानको प्राप्त होकर नाशरहित मोक्षको प्राप्त होताहै जो भक्तियुक्त होकर विष्णुजी के स्थान में नाचता है ३८ वह विष्णुजी के परमपद को जाताहै जो भक्ति से नारायणजी के आगे गीत गाता है ३९ वह गन्धर्वों के पुरों में राजा होता है वैष्णव मनुष्य भक्तिसे स्तोत्रों से जगन्नाथजी की स्तुति करताहै ४० तिसको प्रसन्न होकर भगवान् सब कामनाओं को देते हैं इस विधि से महीने महीने में जो हरिजी को पूजन करता है ४१ तिसके ऊपर भगवान् थोड़े ही समय में प्रसन्न होजाते हैं ४२ जे मनुष्य इस अत्यन्त गहरे, सब दुःखों के देनेवाले संसाररूपी समुद्र के तरनेकी इच्छा करते हैं वे सब मनोज्ञ, देवताओं के समूहों से सेवने योग्य भगवान् के दोनों चरणकमलों को पूजन करें ४३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे भगवत्पूजामाहात्म्यं नाम चतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय

रामजी के नामका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ब्राह्मण ! फिर नारायणजी के माहात्म्य को कहता हूं सुनिये जिसके सुनने से मनुष्य सब पापों से छूट जाताहै १ हे उत्तम ब्राह्मण ! यह सब संसार विष्णुजी के अंशसे

उत्पन्न है तिससे परमार्थी धीर विष्णुमय को देखते हैं २ ब्रह्मा, महादेव और इन्द्रादिक सब देवता विष्णुजी के अंश हैं तिससे सब देवताओंकी पूजा एक विष्णुजी ही को प्राप्त होती है ३ जिस किसी उपायसे सब पापों के नाश करनेवाले विष्णुजी के नामों के स्मरण करनेवालों का कहीं अशुभ नहीं होता है ४ सब पापकर्म से ही कहाता है और यह विष्णुजी का स्मरण नाशरहित और पाप नाश करनेहारा है ५ मोक्षकी इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य सोते, भोजन करते, कहते, स्थित होते, उठते तथा चलतेहुए भी अविरत विष्णुजी को स्मरण करै ६ श्रेष्ठ सब मुनियों ने भगवान् के स्मरण में सब दुःखों का नाश करनेवाला काल का नियम नहीं कहा है ७ हे विप्रर्षे! भगवान् केशवजी के नाम का प्रभाव इतिहाससमेत संक्षेप से कहता हूं सुनिये ८ पूर्वसमय सतयुग में पवित्र, सब गुणोंका पार जानेवाला बनियों के कुलमें श्रेष्ठ परशु नाम बनियां हुआहै ९ यह दैवयोग से पहलीही अवस्था में खांसी दमे के रोगसे पीड़ित होकर मरगया १० तब जीवंती नाम तिसकी स्त्री जो कि सुन्दर करिहांव और नवीन यौवनवाली थी यह स्त्री पति के मरने के पीछे पिताके घर को चली गई ११ और वहांपर नवीन यौवन से अभिमान युक्त होकर बांधवों से निषेधको प्राप्त होकर भी व्यभिचारी पुरुषों से भोग कराने लगी १२ व्रतका नियम वा घरके कामको इस नवयौवना ने छोड़ दिया व्यभिचारी पुरुषों में ही चित्त लगाये रही १३ यह सुन्दर कटि और मोटे स्तनवाली स्त्री कामसे अन्धी होकर धर्ममार्ग को कभी न देखती भई १४ तिसको दुःशीला देखकर तिसी का धर्म में तत्पर पिता अयश के डरसे डरकर अत्यन्त कोपयुक्त होकर यह बोला १५ रे दुष्टे! रेपापिनि! सब दोषों से हीन मेरे वंश में जन्म पाकर तू क्यों पाप करती है १६ रे अभद्रे! जो तेरा चित्त पाप ही में है तो खाने के लिये नहीं आना स्थान से जा मेरा घर छोड़ १७ पितासे इसप्रकार कही हुई वह स्त्री क्रोधसे लाल नेत्र होकर पिता के घरको छोड़कर सुखपूर्वक चली गई १८ फिर अपनी इच्छासे व्यभिचारियों की कांक्षा से घूमती हुई वेश्याओं की वृत्ति कर लज्जा

से हीन होकर स्थित होतीभई १९ पुलिन्द, शबर और चाण्डाल भी तिसके घर में आता तो उससे भी यह दुष्टा आनन्द से क्रीड़ा करती थी २० यह वेश्या की नाईं कभी भी चित्तसे परलोक के भयको न चिन्तन करती भई २१ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! कभी तिसके स्थान में बहेलिया सुये के बच्चेको लेकर बेंचने के लिये आया २२ तब यह वेश्या परमप्रीति से बहेलिये को धन देकर उत्तम सुये के बच्चेको ले लेती भई २३ और कुतूहल उत्पन्न होकर सुये के योग्य भोजन को देकर नित्यही उसका पालन करती भई २४ इस वेश्याके पुत्र नहीं था इससे उस सुयेको अपने पुत्रहीकी नाईं मानकर तिसका पालन करती भई २५ और वह पक्षी तिसकी आज्ञा से नित्यही जातिकी नाईं चित्त के वात्सल्य के व्यवहार को करता भया २६ तदनन्तर यह लब्धभाव होकर सुआ तिस वेश्या से सुन्दर अक्षर वाला राम यह नाम निरन्तर पढ़ायागया २७ तब वह सुआ परब्रह्म सब देवों से अधिक, महत्, सब पापों के नाश करनेवाले रामनामको सदैव पढ़ता भया २८ रामजी के नाम के उच्चारण मात्रही से सुआ और वेश्या दोनों के सब घोर पाप नाश होगये २९ कभी वह वेश्या और सुआ दोनों एकही समयमें नाशको प्राप्त होगये ३० तब सब पाप करनेवाले दोनों के लेने के लिये धर्मराजने चण्डादिक दूतों को भेजा ३१ तब तो अत्यन्त वेगवाले, फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर चण्डादिक सब दूत यमराजजी की आज्ञा से आते भये ३२ और इन्हीं दोनों के लेने के लिये विष्णुजी के समान पराक्रमी सब भगवान् के दूतभी आकर दोनोंको फँसरी से बँधे हुए देखकर ३३ क्रोधयुक्त होकर घोर यमराज के दूतों से ये वचन बोले ३४ कि हे यम दूतो! हमने मुखसे बड़ी विचित्र ये वाक्य सुनी हैं ३५ कि ये दोनों भगवान् के भक्तभी यमराजजी से दण्डके योग्य हैं आश्चर्य की बातहै कि दुष्टोंका चरित्र कभी उत्तम नहीं होताहै ३६ जिससे कि निरन्तर सज्जनोंकी भी यत्न से हिंसा करते हैं पाप करनेवाले दुष्टोंका यह अद्भुत चरित्र है ३७ पुण्यात्मा तो सब संसारको पापरहितही देखते हैं और पापी सबको पाप कियेही देखते हैं ३८ पुण्यात्मा औं

की पुण्य सुनकर धर्मयुक्त तृप्त होजाते हैं और पापियों के पाप सुन कर पापी मनुष्य तृप्त होते हैं ३९ पापी पापकी चर्चा सुनकर जैसे तृप्त होते हैं वैसा सौभार सोना पाकर नहीं तृप्त होते हैं ४० आश्चर्य है कि महात्मा महाविष्णुजी की माया बलवती है कि आत्मा के पीड़ा करनेवाले भी पापको करते हैं ४१ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि, ब्राह्मण! ऐसा कहकर विष्णुजीकी भक्ति में परायण विष्णुदूत वेश्या और सुयेके बन्धनको चक्रकी धारसे काट देते भये ४२ तब अग्निके समान क्रोधयुक्त यमदूत सहसा से तहांपर जलते हुए अंगार के समूहों को वर्षनेलगे ४३ और दण्डदूत भगवान् के दूतों से बोला कि इस सुये और पापिनी वेश्या के लेने के लिये मैं आया था और आपलोग भी लेने ही के लिये आये हैं तो यह अद्भुतही सा हुआ है ४४ हे अत्यन्त श्रेष्ठो! निश्चय जो इन दोनों के लेने ही के लिये इच्छा करते हो तो इस समय में हमलोगों के साथ लड़ाई कीजिये ४५ ऐसा कहने पर बलवान्, रामदूत, उद्धत, हथियार धारणकर सब सिंहके शब्दों से दिशाओं को पूर्ण करते भये ४६ महात्मा सुप्रतीक आदिक विष्णुजी के दूत सुन्दर ललित शंख के शब्दों से संसारको शब्दमय कर देतेभये ४७ तब यमराज के महा दूतों के धनुषों से छूटे हुए बाणोंसे अत्यन्त घोर संग्राम में विष्णुदूत आच्छादित होगये ४८ कोई महायुद्ध में क्रोध से शूल, कोई शक्ति, कोई हज़ारों बाण और कोई चक्रों को छोड़ते भये ४९ यमराज के दूतों के छोड़े हुए बड़े अस्त्रों और बाणों को बड़े देवता विष्णुदूत गदा के प्रहार आदिकों से चूर्ण करतेभये ५० तदनन्तर इन भगवान्के दूतों के चक्रकी धारसे यमराज के दूतों के किसी के चरण किसी के भुजा ५१ किसी के शिर किसी के हृदय कटगये किसी के अत्यन्त घाव हुए कोई के मुख कटकर प्राणरहित होकर गिरे ५२ कोई के एक चरण कोई के एक हाथ कटगये तब यमराज के दूत सहसा से लड़ाई छोड़कर भागते भये ५३ भागने में परायण दूतों को देखकर क्रोध से चण्ड दूत मुद्गर धारणकर लड़ाई में प्रवेश करता भया ५४ और यमराजके दूतसमूहों में श्रेष्ठ अत्यन्त प्रतापी

चण्ड सैकड़ों मुद्गरों से विष्णुदूतों को ताड़ित करते भये ५५ तब भगवान् के दूत क्रोधयुक्त होकर तीक्ष्ण आयुधों की वर्षा से अत्यन्त पराक्रमी चण्ड के ऊपर वर्षा करते भये ५६ फिर रक्त से देह सींची होकर चण्ड मुद्गर से विष्णुदूतोंको अलग अलग ताड़ना करता भया ५७ तब तो संग्राम में चण्ड से ताड़ित हुए भगवान् के दूत सत्त्व त्याग कर सुप्रकाश जी के पीछे प्राप्त होते भये ५८ फिर दुपहरिया के फूलके समान नेत्रवाला सुप्रकाश महाबली गदा हाथ में लेकर रणभूमि में प्रवेश करता भया ५९ और विष्णुजी के समान पराक्रमी इस सुप्रकाश ने अत्यन्त क्रोधकर चण्डके हाथ में मुद्गर मारा तो मनुष्यों के भय देनेवाले चण्ड के हाथ से ६० महा भयङ्कर, पवित्र गंध युक्त धुआं उठता भया तब वेगयुक्त चण्ड ने भी सुप्रकाश को मुद्गर से ताड़ित किया ६१ तो सुप्रकाश शीघ्रही अत्यन्त भयदायक चिनगारियों को छोड़ता भया तदनन्तर वह चण्ड क्रोधयुक्त तिस मुद्गरसे ६२ महाबलवान् सुप्रकाश को ताड़ित करता भया तब सुप्रकाश कष्ट को भूलकर कोपयुक्त होकर ६३ गदा से यमराज के दूत चण्ड को ताड़ित करता भया सुप्रकाश से ताड़ित होकर चण्ड रक्त से युक्त होकर ६४ मूर्च्छित हो पृथ्वी में बाल सूर्यकी नाईं गिरता भया तब यमराज के दूत मूर्च्छायुक्त चण्ड को लेकर ६५ युद्ध से डरकर हाहाकार करते हुए भागते भये तब विष्णुजी के सब दूत अत्यन्त प्रसन्न होकर ६६ शंखों को बजाते भये और रक्त के समूह से डूब कर यमराज के दूत ६७ भय से विह्वल रोते हुए यमराजजी के पास जातेभये६८ और वहां यमराजजी से बोले कि हे सूर्य के पुत्र! हे महाबाहो! हम लोग आपकी आज्ञा करनेवाले हैं तिसपर भी विष्णुजी के दूतों ने हमलोगों की इस प्रकार की दुर्गति की है ६९ हे प्रभो! यद्यपि वेश्या और सुआ ये दोनों महापापियों में श्रेष्ठ थे तिसपर भी वे राम नाम के प्रभाव से नारायणजी के स्थान को प्राप्त होगये ७० जे दुरात्मा पाप करनेवाले आप से दण्ड के पाने के योग्य हैं वे भी विष्णुपुरको जो जाते हैं तो आपकी क्या प्रभुताहै ७१ विष्णुजीकेदूतों

ने हम लोगोंका यह अपमान नहीं कियाहै हे नाथ ! केवल आपही का कियाहै जिससे हमलोग आपके दूत हैं ७२ तब यमराजजी बोले कि हे दूतो ! वे दोनों राम राम इन दो अक्षरोंको स्मरण करते थे तिससे मेरे दण्ड के योग्य नहीं थे उनके नारायणही प्रभु हैं ७३ भो दूतो ! दृढ़ सुनो संसार में वह पाप नहीं है जो रामजी के स्मरण से शीघ्रही नाशको न प्राप्त हो ७४ हे वीरो ! जे मनुष्य प्रति दिन श्रेष्ठ देवताओं से पूजित भगवान् के पापसमूहों के नाश करनेवाले नाम को भक्ति से स्मरण करते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७५ जे पुरुष पृथ्वी में निरन्तर भक्ति से गोविन्द, केशव, हरे, जगदीश, विष्णो, नारायण, प्रणतवत्सल यह कहते हैं वे अत्यन्त पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७६ और जे पुरुष पृथ्वी में निरन्तर भक्तार्तिनाशन, सुरेश्वर, दीनबन्धो, लक्ष्मीपते, सकलपापविनाशकारिन् यह कहते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७७ दामोदर, ईश्वरमुख, अमरवृन्दसेव्य, श्रीवासुदेव, पुरुषोत्तम और माधव ये शब्द जे अपने मुखोंसे कहते हैं तिनको हम प्रति दिन नमस्कार करते हैं ७८ जिन मनुष्यों का नारायण, संसार के एक स्वामी, मुरारिजी की चर्चाओं में अत्यन्त स्नेहयुक्त चित्त होता है तिनके मैं निरन्तर अधीन हूं क्योंकि वे भगवान् के रूपको सेवन करते हैं ७९ जे विष्णुजी के पूजन में रत, भगवान् के भक्तों के भक्त, एकादशीव्रत में रत, कपट से हीन, विष्णुजी के चरणों के जलको शिर से धारण करते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ८० जे मधुसूदन भगवान् की सब पाप समूहों की नाश करनेवाली नैवेद्य शेषको भोजन करते हैं और जे कानों और शिर में तुलसीकी पत्ती को नित्यही धारण करते हैं तिनको मैं प्रणाम करता हूं ८१ जे कृष्णजी के चरणकमलों के पूजनमें तत्पर, ब्राह्मण के पूजनमें रत, गुरु के सेवन करनेवाले, दीन मनुष्यों के हृदय में अत्यन्त सुख देनेवाले हैं तिनके मैं निरन्तर अधीन हूं ८२ जे सत्य वाक्य के कहने में सदैव अनुरक्त, लोकोंको प्रिय, शरण में आये हुए मनुष्योंके पालनेवाले और जे पराई

द्रव्यको विषकी नाईं देखते हैं वे मनुष्य मेरे दण्ड देनेके योग्य नहीं हैं ८३ जे अन्नके दान में निरत, जलके देनेवाले, पृथ्वी के देनेहारे, सब मनुष्यों के हितकी इच्छा करनेवाले, जीविका हीन मनुष्यों के तृप्ति करनेवाले और अत्यन्त शांतहैं वे निश्चय कभी दण्ड देने योग्य नहीं हैं ८४ और जे जातिवालों के पालने में रत, प्रिय बोलनेवाले, दम्भ, क्रोध, मद और मत्सर से रहित चित्तवाले, पापदृष्टि से रहित, इन्द्रिय जीतनेवाले हैं तिनकी मैं कभी चर्चा नहीं करता हूं ८५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इस प्रकार यमराजजी ने अपने दूतों को समझाया और संसार के स्वामी हरिजी के अतुल प्रभाव को जनाया ८६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! विष्णुजी के नाम सब देवताओं से अधिक हैं तिनके मध्य में तत्त्वके जानने वाले रामनामको श्रेष्ठ कहते हैं ८७ राम ये दो अक्षर सब मंत्रों से अधिक हैं जिनके उच्चारणही मात्र से पापी श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता है ८८ रामजी के नाम का प्रभाव सब देवों का पूजन है इसको महादेवजीही जानते हैं और नहीं जानता है ८९ विष्णुजी के सहस्र नामों के पढ़नेसे जो फल मिलता है तिस फलको मनुष्य रामजी के नाम के स्मरणही से पाताहै ९० आश्चर्य की बात है कि मनुष्योंका यह चरित्र कहाता है कि दुष्ट आशयवाले वे मुक्तिके देनेवाले राम नामको नहीं स्मरण करते हैं ९१ कहने में थोड़ाभी परिश्रम नहीं है सुनने में अत्यन्त सुन्दर है तिसपरभी दुष्ट आशयवाले राम राम नहीं कहते हैं ९२ पृथ्वी में मनुष्यों को अत्यन्त दुःखसे मिलनेवाली मुक्ति है रामनामही से मिलती है इससे श्रेष्ठ कर्म नहीं है ९३ तब तक देहधारियों की देहों में पाप स्थित रहते हैं जब तक सुखदेनेवाले राम नामको नहीं स्मरण करते हैं ९४ श्राद्ध, तर्पण, बलिदान, उत्सव, यज्ञ, दान, व्रत, देवता के आराधन, ९५ तथा और भी वैदिक कार्यों में जो चतुर मनुष्य तिस फलकी इच्छा करनेवाला भक्ति से राम राम यह स्मरण करता है ९६ और जो ओंनमो रामाय यह षडक्षर मन्त्र जपता है वह हरिजीकी सायुज्य को प्राप्त होता है ९७ षडक्षर मन्त्रसे भगवान् की पूजा करनेवाला मनुष्य

भगवान्के प्रसाद से सब कामनाओं को प्राप्त होता है ९८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मृत्युसमय में राम राम यह स्मरण करता है वह अत्यन्त पापी भी मनुष्य परम मोक्षको प्राप्त होताहै ९९ जे बुद्धिमान् मनुष्य राम यह नाम यात्रा में स्मरण करते हैं तिनकी निस्सन्देह यात्रा में सब सिद्धि होती है १०० हे ब्राह्मण! वन, प्रान्तर, श्मशान भयानक में रामनाम यह स्मरण करता है तिसके आपदा नहीं विद्यमान होती है १०१ राजा के दरवाजे, किला, विदेश, चोरों के सम्मुख, दुःस्वप्न देखने, ग्रहोंकी पीड़ा १०२ उत्पात के डर और वातरोग के डर में राम नाम स्मरणकर मनुष्य कहीं अशुभ को नहीं पाताहै १०३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! रामका नाम सब अशुभका नाश करनेवाला, काम और मोक्षको देनेहारा है निरन्तर पंडितों को स्मरण करना चाहिये १०४ हे विप्रर्षे! रामका नाम जिस क्षण में नहीं स्मरण किया जाता है वह क्षण व्यर्थ होता है मैं सत्यही कहता हूं १०५ हरिके नामों के स्मरण करनेवाले मनुष्य क्लेश नहीं पाते हैं १०६ करोड़ जन्मों के पापों के नाश करने की इच्छा करनेवाला मनुष्य पृथ्वी में सम्पदा को प्राप्त होताहै जो भक्तिसे पृथ्वी में निरन्तर विष्णुजी के नाम मोक्ष देनेवाले और अत्यन्त मधुरको स्मरण करता है १०७॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे पंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय

भगवान् के माहात्म्य का वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण, जैमिनि! फिर महाविष्णु परात्माके सब दुःख नाश करनेवाले माहात्म्य को कहता हूं सुनिये १ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा और चाण्डालभी जे हरिजी की भक्ति में युक्त हैं वे निस्सन्देह कृतार्थ हैं २ ब्राह्मण जो हरिजी का भक्त न हो वह चाण्डालसे अधिकहै और चाण्डालभी जो हरिजी का भक्त हो वह ब्राह्मण से अधिक जानने योग्य है ३ वह कैसे ब्राह्मण है जो हरिजीकी भक्ति से रहित है और वह कैसे चाण्डाल है

जो भगवद्भक्ति में मन लगाये हुए हैं ४ विना बहाने के जो विष्णुजी चाण्डालसे पूजे जाते हैं तब वह चाण्डाल चारोंवेद के जाननेवाले ब्राह्मण से अधिक देखना चाहिये ५ पूर्वसमय में चक्रिक नाम शबर मनुष्यों के कर्ष करनेवाला, सुन्दर जाति और जीविका से हीन द्वापर युग में हुआ ६ यह विप्रवादी, क्रोध जीतनेवाला, पराई हिंसासे वर्जित, दयालु, दम्भहीन, पिता और माता में परायण था ७ इसने वैष्णवलापनहीं किया और मोक्षशास्त्र भी नहीं सुना था तिसपर भी उसके चित्त में चपलताहीन हरिजी की भक्ति उत्पन्न हुई ८ हरे, केशव, गोविन्द, वासुदेव, जनार्दन इत्यादिक भगवान् के नामोंको नित्यही स्मरण करता था ९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह शबरवंश में उत्पन्न वन के जो फल पाता था उनको पहले अपने मुख में देता १० और तिनकी मिठाई जानकर फिर मुखसे निकालकर भक्तिसे प्रसन्न होकर प्रतिदिन हरिजी को देता था ११ जूंठा वा नहीं जूंठा इन दोनों को वह नहीं जानता था क्योंकि अपनी जातिका स्वभाव निरन्तर मस्तक में वर्तमान रहता है १२ कदाचित् वह वन के भीतर घूमता हुआ प्रियालवृक्ष के एक फलको पाकर १३ बहुत प्रसन्न हुआ और उसको अपने मुख में देता भया १४ जो उसने तिस फलको मुख में दिया तो वह गले में प्रवेशकर गया तिसके फलको सुनिये १५ तबतक उसने बायें हाथ से गले के छिद्र को बांधा और बायेंही हाथ से सब फलको यत्नसे निकालने लगा १६ फिर हरिजीकी भक्तिमें परायण चक्रिक चिन्तना करनेलगा कि यह फल जो तिन मुरारिजी को मैं नहीं दूं १७ तो मेरे समान संसारमें कोई पापी नहीं है इस भांति बहुत हरिजी को चिन्तनकर निकालनेकी बुद्धि करताभया १८ तिसपर भी उसका फल गलेसे नहीं निकला तब यह हरिजी का एकान्त भक्त कुल्हाड़े से गलेको काटकर १९ तिस पके फलको लेकर देव विष्णुजी को देताभया और तिन्हीं को हृदयमें चिन्तनकर तिनके समीप जाताभया २० और रक्तसे सब अंग डूबकर पृथ्वी में गिरपड़ता भया तब विष्णु भगवान् तिसको प्राण रहित देखकर व्यथायुक्त होतेभये २१ कि इसके समान मेरा

कोई भक्त नहीं है जिससे कि अपना गला काटकर इसने मेरा संतोषण किया है २२ जैसे इस भक्तिमान् ने निश्चय सात्त्विककर्म कियाहै जिसको देकर मैं इससे ऋणहीन होता ऐसी वस्तु मेरे क्या है २३ यह निस्सन्देह धन्य धन्य और अत्यन्त धन्य है इसने प्राणोंको भी त्यागकर मेरा संतोषण किया है २४ ब्रह्मा, शिव वा कृष्णजीकी इसको पदवी दीजावे तब भी इसभक्तसे ऋणहीन नहीं होसक्ताहूं २५ ऐसा कहकर अत्यन्त सन्तुष्ट भगवान् गरुड़ध्वजजी अपने कमलरूपी हाथसे उसके मस्तकको छूतेभये २६ तब भगवान् के कमलरूपी हाथ के छूने से वह शबर, महासत्त्व, नारायणजी में परायण उठता भया २७ व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण, जैमिनि! तब तो भगवान् इस श्रेष्ठ भक्त की अपने कपड़े से देहकी धूलि इस प्रकार पोंछते भये जैसे पिता पुत्रकी पोंछता है २८ फिर मस्तक नवाकर हाथ जोड़कर चक्रिक मूर्तिमान् जनार्दनजी को देखकर मधुर वाणी से स्तुति करने लगा २९ कि हे गोविन्द, केशव, हरे, जगदीश, हे विष्णुजी! यद्यपि आपकी स्तुति के योग्य वाक्य को नहीं जानता हूं तिसपर भी मेरी जिह्वा आपके स्तुति करनेकी वाञ्छा करती है हे स्वामिन्! प्रसन्न हूजिये और इस बढ़े हुए दोषको हरिये ३० हे सबके ईश्वर! हे चक्र हाथ में धारण करनेवाले! जे इस पृथ्वी में आपको छोड़कर और को पूजन करते हैं वे मूर्ख हैं हे दुरितप्रकरैकधाम! हे देव! जिससे आपने मुझपर भी कृपा किया है ३१ हे देव! हे भवन के एकनाथ! यद्यपि मनुष्यों के संसारबन्धन के नाश करनेवाली भक्तिसे देवता आपको जानते हैं मैं एकान्त पाप शबरके वंश में जन्म पाकर कैसे जान सक्ताहूं तिसपरभी आप मुझपर अत्यन्त प्रसन्न हैं ३२ हे प्रभो! जिन विदित आपके सुन्दर हाथरूपी कमल के स्पर्शको ब्रह्मा इत्यादिक देवसमूहभी नहीं प्राप्त होते हैं वह इस समय में मुझको प्राप्त हुआहै इससे आपसे कोई दयासमेत अपने सेवकों में नहीं है ३३ जिन देव भगवान् आपने पूर्व समय में सब पाप करनेवाला निमिका पुत्र कंश राक्षस इन्द्रादिक देवसमूहों और मनुष्यों के कल्याण के लिये मारा है तिन

परम मंगल देनेवाले आपके नमस्कार हैं ३४ जिन अत्यन्त बलवान्, देवों में उत्तम, वसुदेवजी के पुत्र आपने यमलार्जुन को उखाड़ा और संग्राममें दुष्ट कालयवन और धेनुकासुरको नष्ट किया तिन नवीन मेघों के समान रंगवाले आपके नमस्कार हैं ३५ हे श्रीकृष्ण! हे दामोदर! हे अनन्त! हे देवताओं के स्वामी! जिन भगवान् परमेश्वर आपने पूर्वसमय में अचल विभूति किया है तिन यदुवंश में श्रेष्ठ आपके नमस्कार हैं ३६ जिन आपने कल्पवृक्ष हरा अखण्डल जीता और लीलापूर्वक महादेवजीको जीता तिन आपके नमस्कार हैं ३७ जिन आपने भीमसेन को हेतु कर जरासन्ध को गिराया बाणासुर के भुजा काटे ३८ और शिशुपाल को मारा तिन आपके नित्यही नमस्कार हैं जिन महात्मा आपने पृथ्वी का भार दूर करदिया ३९ और माया से क्षत्रियों को मारा तिनके नित्यही नमस्कार हैं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इसप्रकार तिस महात्मा चक्रिकसे स्तुति किये गये भगवान् परमप्रसन्न होकर बोले कि वर मांगो तब चक्रिक बोला कि हे परब्रह्म! हे परंधाम! हे परमात्मन्! हे कृपामय! ४०। ४१ आपको मैं साक्षात् देखता हूं और वरोंसे क्याहै आपकी मूर्तिका ध्यान और पूजन नहीं किया ४२ नैवेद्य, सुन्दर फूल, सुन्दर धूप और दीपदान नहीं किया और कभी आपके नाम मैंने स्मरण नहीं किये ४३ हे स्वामिन्! आपके चरणों के जलको मस्तक पर नहीं धारण किया आपकी नैवेद्य को नहीं भोजन किया आपके व्रतको मैंने नहीं किया ४४ तिसपर भी आपको मैं देखता हूँ और वरों से क्या करूंगा सब धर्मों से बाहर किया हुआ शबरके वंश में जन्म लियाहुआ हूं ४५ तिसपर भी देवताओं से दुर्लभ आपके चरणकमलों को इस समय में मैंने पाया है और वरोंसे मुझको क्याहै ४६ हे लक्ष्मी के पति! तिसपर भी जो आप वर देना चाहते हैं तो आपकी कृपा से मेरा चित्त आपही में स्थित हो डूबे नहीं ४७ तब श्रीभगवान् बोले कि हे महाशय! हे सेवक! तुम्हारे वचनरूप अमृतकी वर्षा से मैंने बड़ी तुष्टि प्राप्त की है ४८ हे वत्स! जो तूने मुझको यह उत्तम कमल दिया है इससे

अत्यन्त तुष्टहूं प्रसन्न होकर भक्ति ग्रहण करता हूं ४६ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! ऐसा कहकर भक्तिके ग्रहण करनेवाले, दयामय, भगवान् विष्णुजी तिस भक्त को लम्बी चारों भुजाओं से आलिंगन करतेभये ५० बोले कि हे सज्जनों में श्रेष्ठ! वत्स! चक्रिक! तुम्हारी भक्ति से मैं प्रसन्न हुआहूं जो मैं देता हूं वह निश्चय शीघ्रही होताहै ५१ फिर संसारकी आत्मा और संसारके पालन करनेवाले परमेश्वरजी तिस महाभक्त को आलिंगनकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये ५२ तब हरिजी की भक्ति में परायण अत्यन्त संतुष्ट चक्रिक पुत्र और स्त्री आदिकों को छोड़कर द्वारकापुरी को जाता भया ५३ वहां प्राप्त होकर आयुके अन्तमें भगवान् की कृपासे देवताओंके भी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होजाता भया ५४ तिससे भक्तके वश भगवान् हैं भक्तिमात्रही से प्रसन्न होते हैं स्तोत्र, द्रव्य, तपस्या और जप से नहीं प्रसन्न होते हैं ५५ यद्यपि तिसने जूंठे फल दिये तथापि विष्णुजी अचंचल भक्ति जानकर प्रसन्न होगये ५६ तिससे इस संसारमें मोक्षकी इच्छा करनेवालों के मोक्ष देनेवाले नारायण ही देव हैं ५७ जे मनुष्य इन्द्रादिक श्रेष्ठ देवताओं से पूज्य, वासुदेवजी के दोनों चरणकमलों को दृढ़ भक्ति से निश्चय पूजन करते हैं वे निश्चयही मोक्षको प्राप्त होजाते हैं ५८ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे षोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय

पुरुषोत्तम क्षेत्रमें भद्रतनुजी को वरका पाना वर्णन ॥

जैमिनिजी बोले कि हे गुरो! व्यासजी! फिर भगवान् के माहात्म्य कहिये क्योंकि हरिजी की कथारूप अमृत को पीकर किसको तृप्ति हुई है १ तब श्री व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तुम्हारे बराबर संसार में कोई सुकृती नहीं है जिससे केशवजी के माहात्म्य को भक्ति से सुनने की तुम इच्छा करते हो २ हे उत्तम ब्राह्मण! नारायणजी की सुन्दर कथा इस प्रकार तीनोंलोकों को पवित्र करती है सुननेवाले, पूंछनेहारे और कहनेवाले को पवित्र करती है ३

हे वत्स ! लक्ष्मीपतिजी के पाप नाशनेवाले और धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफल के देनेहारे माहात्म्य को संक्षेप से कहताहूं सुनिये ४ जो श्रेष्ठ भक्ति से एक दिन भी विष्णुजी को पूजन करता है तिसके हरिजी करोड़ जन्म के किये हुए पापोंको शीघ्रही नाश करते हैं ५ वह पुण्यात्मा मनुष्य कैसे है जिसने हरिजी को आराधन नहीं किया है और वह पापी कैसे है जिसकी भक्ति नारायण प्रभुजी में है ६ सब पुरों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम नाम पुर है जो कि सब गुणों से युक्त और सब देवसमूहों के आश्रय है ७ वह सब तीर्थों में श्रेष्ठ कहाता है जिस सुन्दर पुर में साक्षात् केशवजी बसते हैं ८ तहां पर पूर्वसमय में एक भद्रतनु नाम ब्राह्मण हुआ था यह ब्राह्मण सुन्दर, प्रियबोलनेवाला, पवित्रकुल में उत्पन्न, ९ युवावस्था में प्राप्त, काम से मोहित था यह परलोक का भय छोड़कर वेश्याओं में निरत होताभया १० वेद और सब पुराणोंको कभी नहीं पढ़ता था पाखण्डजनों के संगम से उत्तम संज्ञाको त्याग कर देता भया ११ विना यज्ञ करनेवालों के दान का ग्रहण करनेवाला, पराई द्रव्यका चुरानेहारा, धर्म की निन्दा करनेवाला और पाप में तत्पर होता भया १२ यह अधम ब्राह्मण ब्राह्मणों के आचार तथा सत्यभावन और गुरुओं और अतिथियों के पूजन को त्याग करता भया १३ हे जैमिनि ! जो जो अत्यन्त पापकर्म हैं तिनको करता भया कभी भी अत्यन्त पुण्यकर्म को इसने नहीं किया १४ एक समय में पाप करनेवाला, लोक की लज्जा और भय से युक्त होकर श्राद्ध की भक्ति से हीन होकर ब्राह्मण श्राद्ध करता भया १५ और रात्रि में वेश्या के घर जाकर उससे यह बोला कि हे सुन्दर जघनवाली ! मेरे पिता का श्राद्ध दिन है १६ तिसपर भी तेरे गुणों से बद्ध होकर तुम्हारे स्थान को आयाहूं हे कान्ते ! सब मनुष्यों के भय देनेवाली इस रात्रिको देखिये १७ आकाश में मेघों के समूह व्याप्त हैं और नवीन जलसे राह लुप्त होगई है ऐसी रात्रि में भी तुम्हारे गुणों से मन खिंचकर मैं तेरे घर में प्राप्त हुआ हूं मेघ और बिजली के प्रतीप के अर्थ के उपदेश करनेवाले काम से १८। १९ हे प्रिय !

रात्रि में मैं तुम्हारे गुणों के ध्यान के विश्वास में प्राप्त होकर आया हूं तुम को क्षणमात्र भी न देखकर मेरे प्रीति नहीं होती है २० हे पतले अंगवाली! हे कांते! निश्चय दुःख से तुम्हारे देखने के लिये मैं आयाहूं मुझको तीर्थ के जल के अभिषेक से क्या प्रयोजन है २१ तुम्हारे प्रेमरूपी तीर्थके जलसे सींचा जाकर मैं स्वर्ग को प्राप्त हुआ हूं परलोक के सुखदेनेवाली सेवाको आराधन कर मुझको क्या फल है २२ तुम्हारे प्रसाद से मैंने जीवते ही स्वर्ग पाया है हे कान्ते! अयश के भयसे मैंने घर में श्राद्धकर्म किया है २३ इस श्राद्ध में मुझको थोड़ी भी श्रद्धा नहीं है हे सुन्दरि! तुमहीं मेरा जप, तप और नीति हो २४ संसार में एक तुम्हारी ही सब भाव से सदैव मैं शरण में प्राप्त हूं आज्ञा दीजिये कि क्या करूं २५ तब सुमध्यमा बोली कि तुझपुत्र से तेरा पिता पुत्रहीनकी नाईं हुआ है कि पिताकी श्राद्ध के दिन में भी जो तुम मैथुन करने की इच्छा करते हो २६ हे दुर्बुद्धे! पिताकी श्राद्धके दिन जो मैथुन करताहै तो तिसके पितर वीर्य के भोजन करनेवाले होते हैं २७ और जो मूर्ख मोहसे पिताकी श्राद्धके दिन मैथुन करताहै तो वह श्राद्ध निस्सन्देह राक्षसों के ग्रहण के योग्य होती है २८ हमसे जिस तरह से स्नेह से कहता है तैसेही जो विष्णुजी में तेरा मन होता तो उस समय में क्या नहीं पाता २९ देहधारियों का जीवन यमराज के दण्डके भीतर स्थित है रे मूर्ख! तिसपर भी तू सदैव निर्भय होकर पाप करता है ३० मूर्ख जल के बुल्लेकी नाईं क्षण में नाश होनेवाले जीवन को किसलिये निरन्तर रहनेकी बुद्धिसे सदैव छुरित करता है ३१ जिसके माथे में मृत्यु ये दो अक्षर लिखे होते हैं वह कैसे सब क्लेशके देने वाले पाप को करताहै ३२ आश्चर्यकी बात है कि महाविष्णुजी की एकमाया पृथ्वी में बलवती है जिससे पाप करनेवाला भी निरन्तर प्रसन्न रहता है ३३ दुराश्रय अपनी देह में पापके लिये मुझे स्थान दीजिये बढ़े हुए अग्नि की नाईं जलता हुआ आश्रम को जलाता है ३४ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस सुन्दर वेश्याने दैवप्रेरित पाप से इसप्रकार कहा तब पाप करनेवाला ब्राह्मण मन

से चिन्तना करने लगा ३५ कि मुझ महापाप, मूढ़, पातकियों में श्रेष्ठको धिक्कारहै कि वेश्याके यह ज्ञानहै यह मुझ दुरात्मा के नहीं है ३६ मैं ब्राह्मण के शुद्धकुलमें जन्म पाकर नित्यही आत्माके घात करनेवाले बड़े पापोंको करता हूं ३७ जब उत्पन्न होताहै तब उस की निश्चय मृत्यु होती है और मरनेपर स्वामी यमराजजी होते हैं तिससे अज्ञानता से मैं कैसे पाप करता हूं ३८ जप, तप, होम, वेद का पढ़ना, ब्राह्मणों का आचार, अतिथि की पूजा, गुरुकी भक्ति, ब्राह्मणों का पूजन, ३९ पितृयज्ञ आदिक कर्म, भगवान्की पूजा मैंने क्यों नहीं की जिससे उत्तम गति होती ४० तब यह ब्राह्मण महात्मा, सब धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ मार्कण्डेयजी के पृथ्वी में दण्डवत् प्रणाम् कर वाणी से स्तुति करने लगा ४१ कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! हे बहुत जीवनेवाले! नारायणके स्वरूप, महात्मा, ४२ मृकण्डके पुत्र, सब मनुष्यों के हितकी इच्छा करनेवाले, ज्ञानके समुद्र और निर्विकार आपके नमस्कार है ४३ जब तिस ब्राह्मणसे महातपस्वी मार्कण्डेयजी इसप्रकार स्तुति किये गये तब परमप्रसन्न सब शास्त्रों के अर्थ के जाननेवाले मार्कण्डेयजी उससे बोले ४४ कि हे महाभाग! तुम्हारी भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं वर मांगो तुम्हारी अभिलाष को शीघ्रही सिद्ध करूंगा और कुछ न होगा ४५ तब ब्राह्मण बोला कि मैं पापियों में श्रेष्ठ, ब्राह्मणों के आचार से हीन, पराई हिंसासे युक्त, सदैव स्त्री में निरतहूं ४६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मुझ मूर्ख ने सदैव बड़े पाप किये हैं कभी भी आदर समेत पुण्य नहीं किया है ४७ घोर, दुःख देनेवाले, अत्यन्त भयङ्कर संसार समुद्र में मुझ महा पापीका कैसे निस्तार होगा ४८ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पाप करनेवाला भी तू निश्चय पुण्यात्माओं में श्रेष्ठहै जिससे संसार में दुर्लभ तुम में यह बुद्धि उत्पन्न हुई है ४९ पुण्यात्माओं की पुण्य में दृष्टि प्रतिदिन बढ़ती है और पापात्माओं की दिन दिन में पापकी दृष्टि बढ़तीहै ५० पापात्मा भी तुमने पापदृष्टि निवारण की है इससे तुम को जगन्नाथ प्रसन्न की नाईं दिखाई देंगे ५१ पाप करके भी जो मनुष्य पाप से फिर निवृत्त होजाता है

तिसको पूर्व जन्म में भगवान् का पूजनेवाला उत्तम मनुष्य कहते हैं ५२ महाविष्णु प्रभुजी अपने भक्तको पाप में रत देखकर अधिक बुद्धि देतेहैं जैसे सद्गतिको वह प्राप्तहोवे ५३ इससे हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुम प्रत्येक जन्म के भगवान् के पूजन करनेवाले हो थोड़ेही समय में तुम्हारा निस्संदेह कल्याणहोगा ५४ हे विप्र! जो जो तुम पूछतेहो तिसको हमसे नहीं सुन पावोगे जिससे कि इस समयमें मेरी नित्य की पूजा का समय वर्त्तमान है ५५ कोई दान्त नाम ब्राह्मण सब अर्थों के तत्त्व के जाननेवाले हैं तुम तिनके आश्रममें जावो वे तिस सबको कहेंगे ५६ तिन बुद्धिमान् मार्कण्डेयजी से उपदेश को पाकर वह ब्राह्मण शीघ्रही पवित्र, अत्यन्त सुन्दर दान्त ब्राह्मण के स्थान को जातेभये ५७ जो स्थान पीपल, चम्पा, बकुल, प्रियक तथा और भी सुन्दर फूलों से शोभित और अत्यन्त मनोहर, ५८ फूले हुए फूलों के आमोद से दिशाओं के अन्तर व्याप्त, भँवरों के समूहों से गुंजार युक्त, फलके शब्दों से अत्यन्त शब्दयुक्त, ५९ मन्द मन्द पवन चलनेवाला, ठण्ढेजल युक्त, सैकड़ों पक्षियों से तथा शिष्य और उपशिष्यों से युक्त है ६० तिस अत्यन्त मनोहर आश्रम में ब्राह्मण प्रवेश कर तत्त्वके जाननेवाले शिष्यगणों से युक्त दान्तजी को देखते भये ६१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! फिर नारायण-जी की आत्मावाले दान्तजी की उत्तम ब्राह्मण स्तुति कर शिरसे तिनके चरणों की वन्दना करते भये ६२ तब दान्तजी बोले कि हे भद्र! तुम कौनहो और यहां किस प्रयोजन के लिये आये हो और किस हेतु से इस समय में मेरी स्तुति करते हो यह मुझसे तत्त्वसे कहो ६३ तब भद्रतनु बोले कि हे महाभाग! मैं ब्राह्मणों के आचार से हीन ब्राह्मण भद्रतनु नाम से प्रसिद्ध सब पाप करनेवाला हूं ६४ हे ब्रह्मन्! मुझ पापी के संसार का विच्छेद कैसे होगा यह मुझ से कहिये जिससे तुम सब तत्त्व के जानने-वाले हो ६५ तब दान्त बोले कि हे ब्राह्मण! सुनो परम गुह्य को तुम्हारे स्नेहसे कहता हूं जिससे मनुष्यों के संसाररूपी पाशका छेद होताहै ६६ पाखण्डके संसर्ग को छोड़िये और सदैव सज्जनोंके

संगको भजिये काम, क्रोध, मोह, लोभ, दर्प, मत्सर, ६७ असत्य, और पराई हिंसाको यत्नसे त्याग कीजिये महाविष्णु महात्माजी के नामोंको निरन्तर स्मरण करिये ६८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! भगवान् के स्थान में बहारना, लीपना, मार्गकी शोभा और दीपदान कीजिये ६९ ब्राह्मण और जातिकी सेवा कीजिये अन्न और जलका दान और नित्यही पंच महायज्ञ करिये ७० हे सज्जनों में श्रेष्ठ! हरिजीकी कथा सुनिये द्वादशाक्षर मंत्रको जपिये इन सब कर्मों के करते हुए ७१ उत्तम ज्ञान होगा और ज्ञानसे मोक्षको प्राप्त होगे ७२ तब ब्राह्मण बोला कि हे ब्रह्मन्! जो शुभ देनेवाली तुमने कही हैं तिनका विवरण कहिये क्या मोह, दम्भ, मत्सर, ७३ असत्य, हिंसा, दया, शांति, दम है समदृष्टि क्या कहाती है लक्ष्मीपतिजी की पूजा क्या है ७४ दिनरात कौन कहाहै विष्णुजी का स्मरण क्या है पंच महायज्ञ कौन हैं और द्वादशाक्षर मंत्र कौनहै ७५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इन सब का विवरण कहिये तैसेही आपके प्रसाद से परमपद को प्राप्त हूं ७६ तब दान्त बोले कि जे वेदके संमत कार्यको छोड़कर और कर्म करते हैं और अपने आचार से जे हीन हैं ते पाखण्ड कहाते हैं ७७ जे अपने आचार के ग्रहण करनेवाले, वेद के संमत करते हैं और पापकी अभिलाष से रहित हैं ते सज्जन कहाते हैं ७८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो सदैव स्त्रियों और द्रव्यके इकट्ठाकरने आदि में अभिलाष वर्तमान होती है वह काम कहाता है ७९ अपनी निन्दा सुनकर जो हृदय में ताप उत्पन्न होती है वह सब धर्मोंका नाश करनेवाला क्रोध जानना चाहिये ८० पराई द्रव्य आदिक देखकर लेने के लिये हृदय में जो अभिलाष उत्पन्न होतीहै वह लोभ कहाता है ८१ मेरी माता मेरा पिता मेरी स्त्री और घर यह और भी जो ममत्व है वह मोह कहाता है ८२ मैं महात्मा धनवान् हूं मेरे समान कोई पृथ्वी में नहीं है यह जो चित्तमें उत्पन्न होताहै इसको जाननेवाले लोग मद कहते हैं ८३ मनुष्य सदैव मेरी निन्दा करते हैं मेरे जीवनको धिक्कार है यह आत्मा को जो कहता है वह धिक्कार, मत्सरहै ८४ जो सब मनुष्यों के सुख देनेवाला यथार्थ कहना है वह सत्य जानना चाहिये

इसका उलटा होना असत्य जानने योग्यहै ८५ इसके ऐश्वर्य और स्त्री पुत्रआदिक कब नाशको प्राप्त होंगे यह जो चित्त में उत्पन्न होती है वह हिंसा कहाती है ८६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! यत्नसे भी जो पराये क्लेश के हरनेकी इच्छारूपी पृथ्वी हृदय में उत्पन्न होती है वह दया कहातीहै ८७ जो चित्तमें तुष्टि उत्पन्न होतीहै वह शांति पण्डितों करके कही जाती है जो निन्दित कर्मसे अलग चित्तका निवारण होता है ८८ वह तत्त्वदर्शी बुद्धिमानों के संमत दम कहाता है हे विप्रेन्द्र! दुःख सुख तथा शत्रु और मित्र में जो तुष्टि सदैव वर्तमान होती है वह समदृष्टि कहाती है जो पुरुष श्रद्धासे नैवेद्य, चन्दन और फूल आदिकों से भगवान् का ८९।९० पूजन करता है वह पूजा कहाती है दोपहर और रात्रि में जो लंघन होताहै ९१ वह पहले और पीछे के दिनका भोजन अहोरात्र जानना चाहिये हे अत्यन्त श्रेष्ठ! जो अपना और भगवान् इन दोनों का ९२ एकीकरण होता है वह विष्णुजी का स्मरण कहाता है ब्रह्मयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, देवयज्ञ, ९३ पितृयज्ञ और भूतयज्ञ ये पांच यज्ञ कहाते हैं ओं नमो भगवते वासुदेवाय ९४ इसको तत्त्व के जाननेवाले द्वादशाक्षर महामंत्र कहते हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सब तुम्हारा पूंछा हुआ तुमसे कहा ९५ जिसको जानकर सब मनुष्य उत्तम ज्ञानको प्राप्त होते हैं तिस से हे विप्र! प्रतिदिन हरिजीके एकसौ आठ नामों को पढ़कर दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होगे तब भद्रतनु बोले कि लक्ष्मी के पति विष्णुजी के एकसौ आठ नामोंको कहिये ९६। ९७ तब दान्त बोले कि हे ब्राह्मण! विष्णु परात्माजी के सहस्रनामसे एकसौ आठ नाम सारांशरूप खींचकर कहता हूं सुनिये ९८ एकसौ आठ नाम महापापों के नाश करनेवाले हैं जैसा ध्यानहै वैसे ध्यानकर पढ़ने चाहिये अब मैं ध्यान कहता हूं सुनिये ९९ अलसीके फूलके आकार, फूले कमलके समान नेत्रवाले, गौवों के चरणोंकी धूलियों से सब शरीर भूषित, १०० गऊकी पूंछ के बालकी फँसरीसे शोभित, उत्तम मस्तकवाले, बांसुरीके शब्दसे परिन्यस्त सुन्दर ओष्ठपुटवाले, प्रभु, १०१ गौवोंकी शाला में बसनेवाले, स्नेहयुक्त, बालकों से युक्त, पीताम्बरधारे, काम-

देव के समान उत्तम कृष्णजी के मुखको ध्यानकर १०२ ओंनमो-ऽस्य श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनाम्नांवेदव्यासऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीकृष्णो देवता श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः १०३ इस मन्त्रको पढ़कर विनियोग छोड़े फिर कृष्ण, केशव, केशिशत्रु, सनातन, कंसारि, धेनुकारि, शिशुपालरिपु, प्रभुजी को नमस्कार करै १०४ देवकी-नन्दन, शौरि, पुण्डरीकनिभेक्षण, दामोदर, जगन्नाथ, जगत्कर्ता, जगन्मय, १०५ नारायण, बलिध्वंसी, वामन, अदितिनन्दन, विष्णु, यदुकुलश्रेष्ठ, वासुदेव, वसुप्रद, १०६ अनन्त, कैटभारि, मल्ल-जित्, नरकान्तक, अच्युत, श्रीधर, श्रीमान्, श्रीपति, पुरुषोत्तम, १०७ गोविन्द, वनमाली, हृषीकेश, अखिलार्तिहा, नृसिंह, दैत्य-शत्रु, मत्स्यदेव, जगन्मय, १०८ भूमिधारी, महाकूर्म, वराह, पृथि-वीपति, वैकुण्ठ, पीतवासाः, चक्रपाणि, गदाधर, १०९ शङ्खभृत्, पद्मपाणि, नन्दकी, गरुड़ध्वज, चतुर्भुज, महासत्व, महाबुद्धि, महा-भुज, ११० महोत्सव, महातेजा, महाबाहुप्रिय, प्रभु, विष्वक्सेन, शार्ङ्गि, पद्मनाभ, जनार्दन, १११ तुलसीवल्लभ, अपार, परेश, पर-मेश्वर, परमक्लेशहारी, परत्रसुखद, पर, ११२ हृदयस्थ, अंबरस्थ, मोहद, मोहनाशन, समस्तपातकध्वंसी, महाबलबलान्तक, ११३ रुक्मिणीरमण, रुक्मिप्रतिज्ञाखण्डन, महान्, दामबद्ध, क्लेशहारी, गोवर्द्धनधर, हरि, ११४ पूतनारि, मुष्टिकारि, यमलार्जुनभंजन, उपेन्द्र, विश्वमूर्ति, व्योमपाद, सनातन, ११५ परमात्मा, परब्रह्म, प्रणतार्तिविनाशन, त्रिविक्रम, महामाय, योगवित्, विष्टरश्रवाः ११६ श्रीनिधि, श्रीनिवास, यज्ञभोक्ता, सुखप्रद, यज्ञेश्वर, रावणारि, प्रलम्बघ्न, अक्षय, अव्यय, ११७ हज़ार नामों के ये एकसौ आठ नाम विष्णुजीकी प्रीति करनेवाले, सब पापों के नाश करनेहारे ११८ दुःस्वप्न, ग्रहपीड़ा और सब रोग नाश करनेवाले, परमऐश्वर्य देने हारे ११९ सब उपद्रव नाश करनेहारे और सब कर्म्मफल के देने वाले हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वैष्णवों की प्रीतिके हेतु मैंने कहाहै १२० जो भक्तिसे भगवान् के आगे एकसौआठ नामों को तीनों संध्याओं में नित्य पढ़ताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहते हैं १२१ जो

भक्तियुक्त वैष्णव मनुष्य इसको श्राद्ध में पढ़ता है तो उसके पितर संतुष्टहोकर परमपदको जातेहैं १२२ यज्ञसमय, देवताके आराधन, दानसमय और यात्रा में जो पढ़ता है तो वह भी तिसी फलको प्राप्त होता है १२३ इस स्तोत्र के पढ़नेसे पुत्रहीन पुत्रको, धनकी इच्छा करनेवाला धनको और विद्यार्थी विद्याको प्राप्त होताहै १२४ जे भगवान् के एकसौआठ नामोंको भक्तिसे पढ़तेहैं तिनका पृथ्वी में कभी अशुभ नहीं होताहै १२५ दान्तजी कहते हैं कि हे ब्राह्मण! जावो तुम्हारा कल्याण हो मेरी कही हुई विधि से भक्ति से हरिजीको आराधन कर परम कल्याण को प्राप्त होगे १२६ इस प्रकार तिन दान्त परमार्थी से बोधयुक्त होकर ब्राह्मण तिसी पुण्यकारी क्षेत्रों में श्रेष्ठ क्षेत्र में हरिजी की पूजा में तत्पर होते भये १२७ हे जैमिनि! यह ब्राह्मण नित्यही भक्ति से दान्तजी की कही हुई विधिसे पांच दिन भगवान्का पूजन करतेभये १२८ तिस ब्राह्मणकी अत्यन्त दृढ़भक्ति जानकर करुणामय हरिजी किरणों युक्त करोड़ सूर्य की नाईं सहसा से प्रकट होजाते भये १२९ तिन संसार के स्वामी, लक्ष्मी के प्रिय भगवान् को देखकर ब्राह्मण तिनके दोनों चरणकमलों में शिरसे वन्दना करताभया १३० तदनन्तर यह श्रेष्ठ ब्राह्मण आनन्द से निर्भरमन होकर हाथ जोड़कर लक्ष्मीपति जगन्नाथजीकी स्तुति करताभया १३१ हे हरे! मेरी पाप में प्राप्तदृष्टिथी परन्तु आपने कृपायुक्त शुभ देनेवाली अपनी भक्ति देकर अधिक पाप करनेवाले गांवके आदमी मुझको इस समय में पुरुषकी नाईं करदियाहै १३२ हे परमेश्वर! देवताओं से वन्दित दोनों चरणवाले आपके अप्रसन्न होने में निश्चय मनुष्य की दृष्टि पापको प्राप्त होती है और आपके प्रसन्न होने में सोई दृष्टि सुकृतको प्राप्त होती है इसको केवल मैंनेही जानाहै १३३ हे नाथ! आप से आपके स्मरणप्रभाव को कहता हूं जिससे सब इकट्ठा किये हुए पापवाला भी श्रेष्ठ स्थान को देवताओं के मिलनेवाले शुद्ध सुवर्ण जड़ेहुए विमान पर चढ़कर जाऊँगा १३४ आप के चरणकमल को सदैव गुणाढ्य, कनिक सब पाप करनेवाला बहेलिया जानताहै हे संसार के एक नाथ! आप के

मंदिर के बहारने के फल को देवताओं में वन्दित यज्ञध्वजराजा जानता है १३५ हे मुरदैत्य के वैरी! हे गरुड़ध्वज! संसार के रचने, पालने और प्रलय करने के कारण ईश्वर आपके मन्दिर के लीपने के फलको तिसका भाई सुमाली किये हुए पाप से भययुक्त होकर जानताहै १३६ हरि आपकी प्रदक्षिणा कर जो फल होता है तिसको धर्महीं जानता है और कोई तीनों लोक में नहीं जानता है १३७ हे नाथ! आपके चित्तकी दया कहने को पृथ्वी में कौन समर्थ है क्योंकि बाणों से आपको बेधकर भी व्याध परमपद को प्राप्त हुआ है १३८ हे संसार के नाथ! देवताओं के ईश्वर! आपकी निन्दाकर भी शिशुपाल मोक्षको प्राप्तहुआहै तो आपके भक्तकी क्या कथाहै १३९ हे महाविष्णुजी! जिन आपने ब्रह्मरूपसे इस संसारको रचाहै तिस आप में मेरा मन रमे १४० हे विष्णुजी! इस रुद्ररूप से आपने सब संसार नाश किया है तिस आपको मेरा नमस्कार है १४१ जिससे अत्यन्त छोटा नहीं है और जिससे अत्यन्त बड़ा भी नहीं है और जिन आपसे सब संसार व्याप्त है तिन आपको नमस्कार है १४२ जिन देव के नेत्रों से दिवाकर सूर्य्य और मुख से अग्नि उत्पन्न है तिन आपके नमस्कार है १४३ हे देवताओं में श्रेष्ठ! हे केशवजी! जिन के कानसे वायु प्राण उत्पन्न हुए हैं तिन आपको मेरा सदैव नमस्कारहै १४४ जिन श्याम अंगवाले आपके क्रोड़ में लक्ष्मीजी इसप्रकार रहती हैं जैसे मेघों में बिजली रहती है तिन आपके नमस्कारहै १४५ ब्रह्मादिक देवताभी जिनकी महिमा के पारको नहीं जा सकेहैं तिस आपके नमस्कार है १४६ धर्मों के स्थापन और पापियों के नाश करने के लिये युग युग में जो होता है तिस आपको मेरा नमस्कार है १४७ जिन महात्माने माया से यह संसार मोहित कियाहै और जो शम्भुजी माया से नाश करते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १४८ जो भक्तिमात्रही से प्रसन्न होते हैं धन, स्तोत्र, दान और तपस्या से नहीं प्रसन्न होते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १४९ जो गऊ, ब्राह्मण और साधुओं का कल्याण और दया करते हैं तिन आपको मेरा नमस्कारहै १५० जे

देव अनाथबन्धु, योगी और दुःखियों के दुःख को हरते हैं तिन आप को मेरा नमस्कार है १५१ जो मनुष्य देवता और सब हाथियों में समभाव से वर्तते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १५२ जिनके प्रसन्न होने में पर्वत भी शीघ्रही तृण के समान होजाता है और अप्रसन्न होने में तृण पर्वत के तुल्य होजाता है तिन आपको मेरा नमस्कार है १५३ पुण्य करनेवालों की पुण्य में, पिताकी जैसे अपने पुत्र में और पतिव्रता स्त्रियों की जैसे पति में प्रीति होती है तैसे आप में मेरी निश्चय होवे १५४ युवा पुरुषों का चित्त जैसे स्त्रियों में, लोभियों का जैसे धन में और भूंखवालों की जैसे अन्न में प्रीति होती है तैसे आप में निश्चय मेरी होवे १५५ घाम से पीड़ितों की जैसे चन्द्रमा में, शीतसे पीड़ितों की सूर्य में और प्यास से व्याकुलों की जैसे जलमें प्रीति होती है तैसे आप में मेरी निश्चय होवे १५६ जो बुद्धिहीन मैंने गुरुकी स्त्री में गमन किया है वह पाप आपके देखनेवाले मेरे नाशको प्राप्तहो १५७ माया से मोहयुक्त जो मैंने नहीं मारने के योग्यों को माराहै वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १५८ हे परमेश्वर! जो मैंने नहीं पीने के योग्य का पान किया है वह पाप मेरा आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १५९ जलों में, योनि में तथा तोय में जो वीर्य को छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशको प्राप्त हो १६० जो गर्भहत्या की है और पृथ्वी में वीर्य को छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशहो १६१ विनाजाने मायासे जो मैंने विश्वासघात किया है वह पाप मेरा आप के दर्शन करनेवालेका नाशहो १६२ जो मैंने क्षण क्षण में झूंठे वचन कहे हैं वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्त हो १६३ जो सज्जनों की निन्दा और सदैव पराई हिंसा मैंने की है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्त हो १६४ जो श्लेष्मा और कफ मुख में मैंने किया है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाश हो १६५ वनस्पति के सोम में प्राप्त होने में जो मैंने वृक्ष नाश करदिया है वह पाप मुझ आपके देखने वाले का नाशहो १६६ राह, देवता के स्थान और गोशाला में जो

मैंने मूलमंत्र किया है वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाश हो १६७ हे केशवजी ! जो पिता और माताकी मैंने नहीं भक्ति की है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १६८ स्नान और भोजनके लिये जातेहुएको जो मैंने निषेधकियाहै वह पाप मुझ आप के दर्शन करनेवाले का नाशहो १६९ हे देवताओं में श्रेष्ठ! एकादशी में जो मैंने भोजन कियाहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १७० हे प्रभो ! घरमें आयेहुए अतिथि को मैंने नहीं पूजाहै वह पाप मुझ आपके देखनेवालेका नष्टहो १७१ द्वादशी और दशमी में जो दोबार भोजन कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाश हो १७२ पानी पीनेके लिये दौड़तीहुई गौवों को जो मैंने निवारण किया है वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाश हो १७३ जो मैंने व्रत आरम्भ कर छोड़दियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करने वाले का नाशहो १७४ मित्रोंकी वात्सल्यता से जो मैंने झूठी गवाही दीहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७५ अपनी स्त्री में ऋतुकाल में जो गमन मैंने नहीं कियाहै वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाश हो १७६ विना संस्कार कियेहुए घर में जो मैंने भोजन कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाश हो १७७ हे नृसिंहजी! जो मैंने गांवमें मांगनेकी जीविका की है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाश हो १७८ हे प्रभुजी ! राजाके दण्ड देने में जो मैंने प्रभुता की है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १७९ पुराण बांचनेवाले की कथा में जो मैंने विघ्न कियाहै वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाश हो १८० आदर से जो मैंने पराये पापकी कथा सुनी है वह पाप मुझ आप के देखनेवालेका नाशहो १८१ पीपल और आंवलेके वृक्षको जो मैंने काटाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाश हो १८२ दही, दूध और घी को जो मैंने बेंचाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाश हो १८३ जो दूसरोंको आशा देकर मैंने निष्फल कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाश हो १८४ ब्राह्मणों और याचकों को मैंने कोपदृष्टिसे देखाहै वह पाप मुझ आपके

दर्शन करनेवालेका नाशहो १८५ जीवनके उपाय देनेवालोंको जो मैंने क्रोधसे निर्भर्त्सित किया है वह पाप मुझ आपके दर्शन करने वाले का नष्टहो १८६ यहांपर बहुत कहने से क्या है बहुत जन्म के इकट्ठे कियेहुए पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले के नष्ट हों १८७ हे संसारके पति ! मैं निस्सन्देह कृतार्थ हूं आपके नमस्कारहैं १८८ हे जैमिनि ! ऐसा कहकर पुलकावली से युक्त देह होकर ब्राह्मण विष्णुजी के पवित्र दोनों चरणकमलों में गिरता भया १८९ तब भगवान् बोले कि हे ब्राह्मण ! उठो उठो तुम्हारी भक्तिसे मैं प्रसन्न हूं आपको क्या अभिलाष है सो कहिये तिसको मैं निश्चय दूंगा १९० तब भद्रतनु बोले कि हे परमेश्वर ! हे गोविन्द ! हे दयालो ! हे परमाच्युत ! जो इस समय में मुझको प्राप्त है वह पृथ्वी में किसको मिलताहै १९१ हे मुरारे ! हे प्रभो ! तिसपरभी एक वर मैं आपके पास मांगता हूं कि जन्मजन्म में मेरी भक्ति आपमें अत्यन्त दृढ़होवे १९२ मेरे कियेहुए इस स्तोत्रको जो मनुष्य भक्तिसे पढ़ता है तिसकी सब अभिलाषित को प्रसन्नहोकर आप देवेंगे १९३ तब श्रीभगवान् बोले कि हे ब्राह्मण ! हे बुद्धिमान् ! यह वर तुमको मैंने दिया इसमें कोई सन्देह नहीं है किन्तु तेरे साथ मित्रता करनेकी मेरे इच्छाहै १९४ हे ब्राह्मण ! तुम मेरी सेवा करनेके योग्य नहींहो इससे इससमय में मैं तुमसे मित्रता करता हूं १९५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तब दयालु, भक्तवत्सल, नारायणदेव तिस पुण्यात्मा के साथ मित्रता करतेभये १९६ और आनन्द से हरिजी तिसको अपने कण्ठ की माला देतेभये तब ब्राह्मणभी हरिजीको तुलसीकी माला भक्ति से देताभया १९७ फिर हरिजी चारोंभुजाओं को फैलाकर तिसको आलिंगन करते भये तब वह ब्राह्मण भी आनन्द से विष्णुजी को आलिंगन करताभया १९८ इसप्रकार भक्तिके ग्रहण करनेवाले, दयालु हरिजी तिस श्रेष्ठ ब्राह्मण से मित्रताकर तहांही अन्तर्द्धान होगये १९९ तदनन्तर तहां पुरुषोत्तमक्षेत्र में भगवान् तिन श्रेष्ठ ब्राह्मण से प्रतिदिन गेंद खेलने को प्रारंभ करते भये २०० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! करुणामय हरिजी कदाचित् दुर्बल ब्राह्मणको देखकर

मित्रकी वात्सल्यतासे उससे बोले २०१ कि हे मित्र! कैसे तुम दुर्बल हो किसने तुम्हारा धन हरलियाहै हृदयमें क्या चिन्ता वर्तमान है यह सब कहनेको योग्यहो २०२ तब भद्रतनु बोले कि हे संसार के नाथ! हे प्रभुजी! तुम्हारी प्रीतिके लिये नित्यही मैं तपस्या करताहूं तिसीसे मेरी देह दुर्बलताको प्राप्त है २०३ तब श्रीभगवान् बोले कि हे मित्र! हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! जैसे तुममें मैं प्रसन्नहूं तैसा किसी में नहीं प्रसन्न हूं फिर किसलिये देहको क्लेश देते हो २०४ तुमको दुर्बल देखकर मेरे हृदय में व्यथा उत्पन्न होतीहै इससे सब देहके क्लेशको त्याग कीजिये २०५ फिर भगवान् अपने उत्तरीय कपड़े, गहने, सुन्दर सोनेकी कलियों और अपने हस्त के प्रकाशित कङ्कणों से ब्राह्मण को भूषित करते भये २०६ और अपने मस्तकसे मुकुट, पांव से पांव के अंगदके जोड़ों और अपने गलेसे सोने के हार को भी श्रेष्ठ ब्राह्मण को कृष्णजी देते भये २०७ तिन श्रीहरिजी के दिये हुए गहनों से विभूषित, सुकृती, गेंद के खेलका जाननेवाला ब्राह्मण सदैव नीलकमलके समान सुन्दर कृष्णजी से क्रीड़ा करता भया २०८ तिस गहनों से भूषित अंगवाले, पानके रागसे रुचिर दोनों ओष्ठवाले, सुन्दर कपड़े और पवित्र उत्तरीय वस्त्र धारेहुए, सुन्दर मुखवाले ब्राह्मणको एक समय में दान्तजी देखते भये २०९ और उससे बोले कि हे भद्र! हे भद्रतनु! इस समय में भी तू पाप दृष्टि को नहीं छोड़ता है सब जनों से निन्दित तुम्हारे कार्यको देख कर २१० जिससे मैंने तुमको शिष्य किया और सब भूषणही रूप कर दिया है पांच प्रकार के शिष्य बुरे होते हैं अहंकार युक्त, दुश्शील, निर्दयी, पाप में तत्पर २११ और गुरु के यश के नाश करनेवाले ये पांचों हुए और अभक्त, बहुत भाषण करनेवाला, चंचल मनवाला, २१२ परोक्ष में गुरुकी निन्दा करनेवाला ये शिष्य अधम हैं उत्तम चरित्र जानकर चतुर मनुष्यों करके शिष्य करना चाहिये २१३ जिससे दुर्जन में प्राप्त विद्या गुरुओं को भी दुःख देने वाली होती है और तिन तत्त्वदर्शियों से कही हुई विद्या यश देने वाली होती हैं २१४ और वेही दुर्जनमें प्राप्त होवें तो शीघ्रही गुरु-

जी के यशरूप वृक्षको नाश करदेती हैं पापों से कभी पुण्यकर्म नहीं शोभित होते हैं २१५ जैसे मक्खियों से सुगन्धि चन्दन नहीं शोभित होता जैसे गदहे मिष्टान्नपान से नहीं तृप्त होते हैं २१६ जैसे धर्मकी चिन्तासे दुर्जन नहीं तृप्त होते हैं और अयशके डरसे लक्ष्मी और सब कामना देनेवाला धर्म २१७ ये कभी दुष्टको नहीं सेवन करते हैं और जो सेवते हैं तो नाश होजाते हैं प्रत्येक जन्म में श्रेष्ठ विद्या भाग्य से मिलती है २१८ कभी मिली तो उस समय में विधि ठीक नहीं होती है २१९ तब भद्रतनु बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! आप सत्य कहते हैं मैं शास्त्र में निपुण नहीं हूं मुझ शिष्य से कहीं भी आपका अयश न होगा २२० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! आपके प्रसाद से मेरा सब अभिलाष सिद्ध होगया जिससे आप एक पृथ्वी में दुर्लभ हैं २२१ तब दान्तजी बोले कि हे ब्राह्मण ! क्या तुम्हारा अभिलाष सिद्धि को प्राप्त होगया है सो कहिये थोड़ेही काल में तपों का कैसे उद्यापन किया है २२२ तब भद्रतनु बोले कि हे गुरो ! थोड़ेही परिश्रमों से मैंने हरिजी के दर्शन पाये हैं जिनकी आज्ञा से मैंने नित्य क्रिया आदिक छोड़ दी है २२३ और अपना उत्तरीय कपड़ा, सोने के दो कलश, अपने हाथ का कंकण और अपने मस्तक का मुकुट २२४ अपने पांवकी तुला कोटि और अपना ही मोतियोंका माला भगवान् विष्णुजीने प्रसन्न होकर मुझे दियाहै २२५ और सेवकों के दुःख नाशनेवाले विष्णुजी मेरे संग मित्रता किये हैं मैं तिनके साथ निरन्तर गेंद खेलताहूं २२६ ये वचन मैंने आपकी प्रतीति से आपके समीप कहे हैं २२७ तब दान्त जी बोले कि सातहज़ार वर्ष मैंने श्रेष्ठभक्ति से विभु विष्णुजी को आराधन कियाहै परन्तु उन्होंने दर्शन नहीं दियाहै २२८ आश्चर्य की बातहै कि पांचदिन तुमने विष्णुजी को आराधन कर देवताओं के दुर्लभ दर्शन को पाया है २२९ इससे तुम धन्य और कृतार्थ हो साक्षात् देव तुम्हीं कहाते हो जिससे स्वामी जी ने प्रेम से तुम से मित्रता की है २३० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो मुझ में तुम्हारा स्नेह हो तो मुझसे कहिये कि दुर्लभ विष्णुजी के दर्शन मुझे कैसे

होंगे २३१ व्यासजी बोले कि इस प्रकार गुरुजी ने जब कहा तो बुद्धिमान्, भगवान्की भक्तिमें परायण ब्राह्मण वनमें अपने आश्रम को चलागया २३२ तदनन्तर दूसरे दिनमें इसने जाकर भगवान् के साथ गेंद खेला और नम्रतायुक्त होकर दयालु जगन्नाथजी से कहा २३३ कि हे देवों में श्रेष्ठ! हे दयालो! हे लक्ष्मी के पति! मेरे गुरुजी भी आपके दर्शनों की इच्छा करते हैं इसमें आपकी क्या आज्ञा है सो कहिये २३४ हे कमल के समान नेत्रवाले! हे देवताओं में श्रेष्ठ! वे ब्राह्मण आपके एकान्त भक्त हैं इससे आप तिन के दर्शन देने के योग्य हैं २३५ तब श्रीभगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! अनेक जन्म में तुमने श्रेष्ठ भक्तिसे मेरा पूजन कियाहै इससे मैंने इस समय में तुमको दर्शन दियाहै २३६ वह बुद्धिमान् ब्राह्मण कुछ दिनों के पीछे मेरी पूजा कर देवताओंसे भी नहीं देखने योग्य मुझको देखेगा २३७ हे ब्राह्मण! मेरा वह भी महाभक्त और मेरी पूजा में परायण है तिससे कभी मेरे दर्शन को प्राप्त होगा २३८ व्यासजी बोले कि ये भगवान् के वचन सुनकर ब्राह्मण क्लेश नाशनेवाले, लक्ष्मी के पति केशवजी से भक्तिसे फिर बोला २३९ कि हे देवों के स्वामी! हे भक्तवत्सल! हे संसार के स्वामी! जो मुझ में आपकी दया है तो मेरे सम्मुखही दर्शन दीजिये २४० हे देव! हे प्रभो! मेरे गुरुजी आपके दर्शनरूपी दक्षिणा को मांगते हैं इससे उनको दर्शन देकर मेरी रक्षा कीजिये २४१ तब श्रीभगवान् बोले कि निश्चय जो तुमने मेरे दर्शनरूप दक्षिणा उनको दी है तो अपने गुरुजी को लाकर मेरे दर्शन कराइये २४२ इस प्रकार भगवान् की आज्ञा पाकर भद्रतनु प्रीतिसे अपने गुरुजी के आश्रम में जाकर उनको लाते भये २४३ तिन देनेवालों में श्रेष्ठ दान्तजी के आनेपर भगवान् सब लक्षणसंयुक्त आत्मा को दिखलाते भये २४४ तब हरिजीकी भक्ति करनेवाला ब्राह्मण नेत्रों में आंशूयुक्त होकर भगवान् को देखकर हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करता भया २४५ कि हे दयालो! हे लक्ष्मी के पति! हे शरणागतके पालन करनेवाले! आपके नमस्कार हैं २४६ इस समय में जन्म, तपस्य

और सब मेरा सफलहै जोकि आपके दर्शन मैंने पाये हैं २४७ हे लक्ष्मीकेपति! हे प्रभो! पूर्व में जो जो वचन आलोचित हैं वे करोड़ समुद्रके समान गम्भीर आपके आगे प्रस्तुतहैं २४८ संसार में वह स्तोत्र नहीं है जिससे वाणी और संसार के स्वामी आपके चित्त में प्रीति उत्पन्न कराऊं २४९ हे प्रभो! हे संसार के पति! मेरी रक्षा कीजिये और प्रसन्न हूजिये अपने दासों के दासों के दासों के दास-भाव में मुझको स्वीकार कीजिये २५० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तब देवों के स्वामी, भक्तिग्रहण करनेवाले, दयालु भगवान् हँसकर तिसके मस्तक में कमलरूपी हाथ देकर उससे बोले २५१ कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुम मेरे भक्तहो मेरे दर्शन तुमने पाये हैं इससे मेरे प्रसादसे तुम्हारा सब कल्याण होगा २५२ व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण! तब दान्त और भद्रतनुको प्रेमसे परमेश्वरजी आलिंगन कर सहसा तहांही अन्तर्द्धान होगये २५३ फिर दान्तजी तिस पुण्यकारी, दुर्लभ, पुरुषोत्तम श्रेष्ठ क्षेत्र में क्रियायोगों से भगवान् को देखकर श्रेष्ठधामको प्राप्तहोतेभये २५४ और भगवान्की भक्ति में परायण भद्रतनु ब्राह्मण भी उमर के अन्त में देवताओं के भी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताभया २५५ जो मनुष्य भक्तिसे एकदिन भी परमेश्वरको पूजताहै उसके बहुत जन्मके पाप नाश होजाते हैं और भगवान् में प्रीति बढ़ती है २५६ हे जैमिनि! पृथ्वी में अब भी ब्रह्मादिक सब देवता भगवान् के भक्त के प्रभाव को नहीं जानते हैं २५७ हे ब्राह्मण! यह कर्मभूमि स्वर्गसे भी दुर्लभहै जहांपर मनुष्य विष्णुजी को पूजनकर देवताओं से वन्दना किये जाते हैं २५८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इन्द्रादिक सब देवता अच्छी पुण्य के नाशसे डरकर निरन्तर परस्पर यह कहते हैं २५९ कि हमलोग फिर कर्मभूमि में कब जावेंगे और कब वहां भगवान्की पूजा करेंगे २६० ये मनुष्य अत्यन्त धन्य और हमसे भी श्रेष्ठ हैं जे दुर्लभ भारतवर्षमें हरि प्रभु जी को पूजन करते हैं २६१ भारतवर्ष के गुण कहने में कौन समर्थ है जहांपर पूर्व समय में हमलोग भगवान् को आराधन कर देवता हुएहैं २६२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इस प्रकार इन्द्रादिक सब

देवता शुभ देनेवाली भारत की पृथ्वी के भाग की नित्यही प्रशंसा करते हैं २६३ तहांपर जन्म पाकर जिसने भगवान् का आराधन न किया तो उसके बराबर संसार में कोई देखा और सुना नहीं गया है २६४ मैं सत्यही सत्य कहता हूं जे मनुष्य अश्रान्त, विश्वात्मा भगवान् को कर्म्मभूमि में दृढ़भक्ति से एकबार भी पूजन करते हैं वे सुन्दर हाथों से किये हुए पापों से शीघ्र छूट कर मोक्षको प्राप्त होते हैं २६५। २६६॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे पुरुषोत्तमक्षेत्रे भद्रतनुवरप्रदानं नाम सप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय

पुरुषोत्तमतीर्थका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो! जो आपने तीर्थों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम तीर्थ को कहा तो यदि मेरे ऊपर आपकी दया हो तो उसके माहात्म्यको भी कहिये १ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि! पुरुषोत्तम तीर्थ के माहात्म्यको संक्षेपसे सुनिये इस संसार में अच्छे प्रकार कहने में विष्णुजी के विना और कोई समर्थ नहीं है २ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! लवण समुद्र के किनारे स्वर्ग से भी दुर्लभ पुरुषोत्तम नाम पुर है ३ जिससे तिस पुर में श्रीपुरुषोत्तम भगवान् आपही रहते हैं इससे जाननेवालों ने तिसके नामको पुरुषोत्तम कहा है ४ यह दुर्लभक्षेत्र चारोंओर चालीसकोसहै यहां के रहनेवाले देहधारी पुरुष देवताओं से चारभुजा के दिखलाई पड़ते हैं ५ तिस क्षेत्र में प्रवेशकर सब विष्णुजी की मूर्ति होजाते हैं तिससे चतुरों करके तहां पर कुछ विचारणा न करनी चाहिये ६ तहांपर चाण्डालका भी छुआ अन्न ब्राह्मणों के ग्रहण करने के योग्य होताहै जिससे वहांपर चाण्डाल भी साक्षात् विष्णुही हैं ७ तहांपर अन्नके पकानेवाली लक्ष्मीजी हैं और आपही भगवान् भोजन करनेवाले हैं तिससे हे ब्राह्मण! तहांका भात देवताओंको भी दुर्लभ है ८ जे भगवान् के भोजन से बचेहुए, पृथ्वी में दुर्लभ, पवित्र अन्नको भोजन करते हैं उनकी मुक्ति

दुर्लभनहीं है ९ ब्रह्मा आदिक सब देवता तिस अत्यन्त दुर्लभ अन्न को नित्यही आकर भोजन करते हैं मनुष्योंकी तो कथाही क्याहै १० जिसका अत्यन्त दुर्लभ अन्न में चित्त नहीं रमता है तिसको सब महर्षि विष्णुजी का वैरी कहते हैं ११ हे ब्राह्मण! जैसे पृथ्वी में सबजगह गङ्गाजल पवित्रहै तैसेही सबजगह पाप नाश करनेवाला अन्न पवित्रहै १२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वह अन्न कोमल और यद्यपि सुन्दरहै कृकच के उदरप्राय है तथापि पाप नाश करनेवाला है १३ जिसके पहले के इकट्ठे कियेहुए पाप नाशको प्राप्त होते हैं तिसकी दुर्लभ अन्नमें भक्ति वर्तमान होती है १४ और जिसका बहुत जन्म का इकट्ठा कियाहुआ पुण्य नाशको प्राप्त होताहै तिसकी तिस अन्न में भक्ति नहीं उत्पन्न होती है १५ इन्द्रद्युम्नतालाब, मार्कण्डेयकुण्ड, रोहिणी, समुद्र और श्वेत गङ्गाजलों में १६ जे मनुष्य भक्तिभाव से युक्त होकर स्नान करते हैं तिनका फिर इस पृथ्वी में जन्म नहीं होता है १७ हे ब्राह्मण! लवण समुद्र के जलों से तर्प्पण कियेहुए पितृ सब दुःखों से छूटकर भगवान् के मन्दिरको जाते हैं १८ तिस से तत्त्वदर्शियों ने इस समुद्र को तीर्थराज कहा है तिससे तहां कियाहुआ सब कर्म्म नाशरहित होता है १९ तिस मनोरमक्षेत्र में पितरों का पूजन, दान, भगवान् के चरणोंका पूजन, जप, यज्ञ तथा और भी २० जो कर्म मनुष्य विष्णुजी की प्रसन्नता के लिये करता है वह सब निस्सन्देह नाशरहित होता है २१ बलभद्र, सुभद्रा और कमलनयन कृष्णजीके जे मनुष्य दर्शन करते हैं तिनको कुछ दुर्लभ नहीं है २२ श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा और बलदेवजी के विना दर्शन किये मनुष्य सैकड़ों पुण्य करने से भी मोक्षको नहीं प्राप्त होता है २३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तहां बेंतकी चोट से जिसका शरीर लाल होताहै तिसकी इन्द्रआदिक सब देवता वन्दना करते हैं २४ हे ब्राह्मण! आकाश में इन्द्र आदिक सब देवसमूह स्थित होकर विमानपर चढ़कर प्रसन्न होकर परस्पर यह कहते हैं २५ कि भगवान् हम लोगों को कब मनुष्यदेह देवेंगे तब हम सब मनुष्य की नाईं हरि प्रभुजी के देखने को जावेंगे २६ कब बेंतकी चोट से

श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र में हमलोगों के शरीर लाल होंगे २७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! तिसवरके देनेवाले क्षेत्र में इन्द्रआदिक सब देवता सदैव बेंत की चोटोंकी वांछा करते हैं २८ तहांपर जे मनुष्य भक्तिसे अक्षयवट को देखते हैं ते करोड़जन्मों के इकट्ठे कियेहुए पापों से छूटकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होते हैं २९ सुभद्रा, बलभद्र और रोगरहित जगन्नाथजी, श्वेत देवों के स्वामी माधवजी, मार्कण्डेयकुण्ड, ३० ज्यामेश्वर, हनुमान् और अक्षयवट को जे मनुष्य भक्ति से देखते हैं तिनकी शाश्वती मुक्ति होती है ३१ और जे मनुष्य वहांपर फाल्गुन महीने में गोविन्दजी को भक्तिसे झूलतेहुए देखते हैं तिनकी पुण्यको सुनिये ३२ वे सब पापों से छूटकर अन्त में भगवान् के मन्दिर को जाते हैं और तहांपर ज्ञानको प्राप्त होकर अत्यन्त दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होते हैं ३३ हे जैमिनि ! जो चैत्रके महीने में वारुणीपर्व्वमें जगन्नाथजी के दर्शन करता है वह मरकर जगन्नाथजी की देह में प्रवेश करताहै ३४ और वैशाख के शुक्लपक्ष की तीजको जो जगन्नाथजी के दर्शन करता है वह मनुष्य मुक्त होजाताहै ३५ जो मनुष्य जगन्नाथजीके महास्नान में प्रवेश करताहै तिसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं ३६ भक्तिभावसे युक्त होकर ब्रह्माआदिक सब देवता जगन्नाथजी के महास्नान को देखते हैं ३७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! महाज्येष्ठी में रोगरहित जगन्नाथजी को देखकर मनुष्य विष्णुजी के परमपद को प्राप्त होताहै ३८ आषाढ़ में जगन्नाथजी और बलभद्रजीको जो गुण्डिकामण्डप में जातेहुए देखताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाताहै ३९ जो कमलनयन जगन्नाथजीको रथमें स्थित देखताहै तिसका सबदुःखदेनेवाले संसारमें फिर जन्म नहीं होताहै ४० जे मनुष्य भक्तिसे रथपरचढ़ीहुई सुभद्राजीको देखते हैं भगवान् तिसके दुःखदेनेवाले संसारबन्धनको काट देते हैं ४१ जो पुत्रहीन स्त्री सुभद्राजी को देखती है तो उसके बहुतपुत्र होते हैं और पुत्र मरनेवाले के पुत्र जीते हैं ४२ जो दुर्भगा सुभद्राजीको देखतीहै तो वह पतिको सुभगा होतीहै और काकवंध्या के सुभद्राजीके दर्शनकरनेसे निश्चय बहुत पुत्र होते हैं ४३ जो पुरुष कृष्ण, बलभद्र और सुभद्राजी को गुण्डिकामण्डप में स्थित देखता

है वह परमपद को प्राप्त होताहै ४४ हे जैमिनि! रोगी और दुःखी जो गुण्डिकामण्डप में हरिजी को देखता है तो वह सहसा रोग और दुःखसे छूट जाता है ४५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो पुत्रहीन मनुष्य गुण्डिकामण्डप में स्थित जगन्नाथजीको देखताहै वह वैष्णव पुत्रको प्राप्त होता है ४६ विद्यार्थी विद्याको, धनकी इच्छा करनेवाला धन को, स्त्री की इच्छा करनेवाला स्त्रियों को और मोक्ष की इच्छा करने वाला मोक्षको प्राप्त होताहै ४७ जो राज्य छूटनेवाला राजा भक्तिसे गुण्डिकामण्डप में हरिजी को देखता है वह अपनी राज्य को प्राप्त होताहै ४८ जो शत्रुओं से जीता हुआ गुण्डिकामण्डप में हरिजी को भक्तिसे देखताहै उसके वैरी नाश होजाते हैं ४९ जो राजा से पीड़ित होकर गुण्डिका के मण्डप में भगवान् को देखता है वह शीघ्रही राजाको अपने वश में प्राप्त करता है ५० सब यात्राओं में गुण्डिका श्रेष्ठ कहीगई है तिससे सैकड़ों कार्य छोड़कर यह यात्रा मनुष्यों को करनी चाहिये ५१ तिस मनोरम क्षेत्र में शयन और उठने में जो मनुष्य हरि जी को देखता है वह देवताओं से भी पूज्य होता है ५२ पुरुषोत्तमजी के माहात्म्य कहने में पृथ्वी में कौन मनुष्य समर्थ है जिसके प्रवेशही मात्र से मनुष्य नारायण होजाता है ५३ यहां पर बहुत कहने से क्या है संक्षेप से मैंने कहा है सब तीर्थों में पुरुषोत्तम तीर्थ श्रेष्ठ है ५४ जो अत्यन्त गहरे, इस संसार-रूपी समुद्र, क्लेश देनेवाले, विषम पाप समूहों के आश्रय को तरना चाहे तो सब सुख देनेवाले पुरुषोत्तमक्षेत्र में देवताओं में श्रेष्ठ पुरुषोत्तमजी के दर्शन करै ५५ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे पुरुषोत्तममाहात्म्यं नामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय

भगवान् के माहात्म्यका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! जे भक्तिसेयुक्त मनुष्य नारायणजी की शरण में प्राप्त होते हैं तिनका कभी अशुभ नहीं होताहै १ फिर भगवान् के माहात्म्यको कहताहूं जिसको सुन

कर सब मनुष्य परमपदको प्राप्त होते हैं २ वासुदेवजीका माहात्म्य सुनकर वैष्णव मनुष्य तृप्त होजाते हैं नरक में क्लेश सेवनेवाले पाखंडी नहीं तृप्त होते हैं ३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! पाखण्डियों के समीप उत्तम विष्णुजी का माहात्म्य नहीं कहना चाहिये वैष्णवों के आगे कहना चाहिये ४ पूर्व्वसमय त्रेतायुग में उर्वीशु नाम नित्यही पाप में रत, धर्मकी निन्दा में परायण, ५ ब्राह्मणकी निन्दा करनेवाला, पराई स्त्री के गमन में उद्यत, गऊ के मांसका खानेवाला, मदिरा पीनेहारा, वेश्याके विभ्रम में लोलुप, ६ शरणागत के मारनेवाला, सदैव पराई निन्दा करनेहारा, विश्वासघात करनेवाला, मित्र के मारनेवाला, जाति की पीड़ा करनेहारा, ७ असत्य बोलनेवाला, क्रूर, पाखण्डीजनों के संग सेवन करनेवाला, ब्राह्मणों की वृत्ति नाश करनेवाला तथा न्यास का चुरानेवाला हुआ ८ इस प्रकारके तिस दुष्ट, पाप में परायणको देखकर कोपयुक्त होकर उसके सब जाति वाले उसके घर में जातेभये ९ और उससे बोले कि रे मूढ़ ! निर्म्मल कुल में हम लोगों के पुरुषों ने प्रतिष्ठा बढ़ाई थी उसको तूने नाश कर दिया १० धर्ममार्ग छोड़कर सदैव पाप करताहै हमारे वंश के यश नाशनेवाला, जातिवालों को दुःख देनेहारा हुआहै ११ तुम में ब्रह्माकी सृष्टि अत्यन्त विस्मय देनेवाली हमलोग मानते हैं जिस समुद्र में चन्द्रमा हुआहै तिसी में क्ष्वेडोद्भव भी हुआ है १२ आश्चर्यकी बात है कि कुपुत्रोंकी शक्ति गिनती करने में भी हमलोग नहीं समर्थ हैं अनेक पुरुषों की इकट्ठा की हुई कीर्ति को तिसी क्षण में नाश करदेते हैं १३ उत्तम पुत्र के उत्पन्न होने में अधमभी वंश श्रेष्ठ हो जाता है और अधम पुत्र के उत्पन्न होने में श्रेष्ठ भी वंश हीनता को प्राप्त होजाता है १४ व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण ! ऐसा कहकर क्रोधयुक्त होकर वे सब जातिवाले तिस पापियों में श्रेष्ठ को अयश के डरसे सहसा छोड़ देते भये १५ जातिवालों से छोड़ा गया और सब मनुष्यों से धिक्कार को प्राप्त होकर सब सम्पदाओं से भ्रष्ट दुःखित होकर वह चोरी करने लगा १६ तिस चोरी के कर्म करनेवाले, निर्दयी, पराई हिंसा करनेवाले को पकड़ कर सब

मनुष्य राजा को देदेते भये १७ हे उत्तम ब्राह्मण! तब तिस राजाने पिता के स्नेह से इस दुराचारी को नहीं मारा अपने देश से बाहर कर दिया १८ तब बहुत उद्धत चोरों के साथ यह निर्दयी वन में राह चलनेवालों की द्रव्य हरने के लिये स्थित होता भया १९ कदाचित् वन के घूमने में थककर चोरों के साथ वह स्नान करने के लिये नदी के किनारे जाता भया २० तब यह दुष्टात्मा तिस नदी के किनारे भगवान् की सेवा में परायण बहुत से ब्राह्मणों को देखता भया २१ तदनन्तर वे सब ब्राह्मण भगवान् को आराधन कर अत्यन्त कौतुक से परस्पर यह कहते भये २२ कि इस समय में मैंने चम्पा के फूल छोड़े हैं कोई कहता भया कि मैंने मुरारिजी को पान दिया है २३ इससे जन्ममें कभी मुझे पान न खाना चाहिये मैंने इस समय में उत्तम केले के फल दिये हैं २४ इससे जन्म जन्म में मुझे केले का फल न खाना चाहिये कोई कहता भया कि मैंने हरिजी को अनार का फल दिया है २५ कोई कहता भया कि मैंने उत्तम आम का फल दिया है इस तरह परस्पर कहते हुए तिन लोगों के वचन सुनकर २६ उर्वीशु चिन्तना करता भया कि मैं क्या विष्णुजी को दूं संसार में जितनी वस्तु भोजन करने के योग्य हैं तिनको मैं २७ नहीं छोड़ सक्ता हूं क्या भगवान् को दूं—नित्यही वन के बीच में रहकर चोरी करता और राजा के डर से व्याकुल रहता हूं २८ गाड़ी के चढ़ने में मुझे अधिकार कभी नहीं है व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह वारंवार कहकर उस चोरने २९ धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले हरिजी को गाड़ा देदिया तदनन्तर सब वे ब्राह्मण जैसे आये थे वैसेही चलेगये ३० और चोरों के साथ यह चोरभी अपने स्थानको जाताभया एक समय में तिसी राह से गुडकंडोल ३१ लेकर कोई राह चलनेवाला उसी मण्डल में प्राप्त होगया तो इस निर्भय पराई हिंसा करनेवाले चोरने ३२ उसके गुडकंडोल को हर लिया तब सब चोर गुडकंडोल को बांटने लगे ३३ तो उर्वीशु के भाग में गुडनिर्मित गाड़ा पड़ता भया तब वह गुड़ के गाड़ा को प्राप्तहोकर ३४ मन से स्मरणपूर्वक इन वचनों को

चिन्तना करताभया कि मैंने पूर्वसमय में भगवान् को गाड़ा देदिया है ३५ तिससे इस जन्म में कभी भी गाड़ा न ग्रहण करना चाहिये यह गुड़ के रचे हुए गाड़े को मनसे देनेकी चिन्तना कर ३६ भगवान् की प्रीतिके हेतु किसी ब्राह्मणको दे देतेभये तब तिस महापापी की भक्तिको जानकर ३७ प्रसन्न होकर भगवान् शीघ्रही उसके सब पापों को हर लेतेभये और तिसी दिन क्रुद्ध होकर सब पुरवासियों ने महावन में प्रवेशकर उर्वीशु को मारडाला तब भगवान् उसके लेने के लिये सोने के बनेहुए विमान ३८।३९ और अनेक प्रकार के गहनों से भूषित दूतोंको भेजतेभये तदनन्तर वे भगवान् के दूत पाप रहित उर्वीशु को ४० विमान पर चढ़ाकर शीघ्रही भगवान् के पुरको जातेभये तब यह पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ भगवान् के समीप प्राप्त होकर ४१ सौ मन्वंतर उनके पास रहकर परमज्ञान पाकर भगवान् की देह में प्रवेश कर जाताभया ४२ व्यासजी बोले कि जिस किसी उपाय से भगवान् की भक्ति करनेवाला मनुष्य राजहंस की नाईं संसाररूपी समुद्र के पार जावे ४३ जिसके चित्तमें क्षणमात्र भी भगवान् की भक्ति वर्तमान होती है तो वह परम पद को प्राप्त होताहै जहां पर यह पापी भी प्राप्त हुआहै ४४ एकभी उत्तम वस्तु भगवान् को देकर पीछे से पापों की शान्तिके लिये आपभी भोजन करै ४५ जो वस्तु भगवान् को देवे तो वही ब्राह्मणको भी देवे बुद्धिमान् मनुष्य कुछ बचेहुएको आप अवश्य भोजन न करै ४६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जितनी मीठी वस्तु हैं तिनको विष्णुजी के दिये विना वैष्णवों को भोजन न करना चाहिये ४७ हे ब्राह्मण! सब पाप नाशने वाली विष्णुजीकी नैवेद्य के माहात्म्यको इतिहाससमेत फिर कहता हूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ४८ शुद्धवंश में उत्पन्न सर्वजनि नाम ब्राह्मण हुआ यह शांत, दान्त, दयायुक्त, गुरु और ब्राह्मणकी पूजा करनेवाला, ४९ हरिजीकी पूजा और स्मरण में तत्पर, शरणमें प्राप्त हुओंके क्लेशका नाश करनेवाला, सत्य बोलनेहारा, जितेन्द्रिय, ५० प्रातःकाल स्नान करनेहारा, अपने आचार का ग्रहण करनेवाला, हिंसासे हीन, एकादशी के व्रतमें रत, जातिकी पूजा में परायणथा ५१

कदाचित् इस श्रेष्ठ ब्राह्मणने स्वप्नमें केशवजी को देखा जोकि श्याम-वर्ण, निर्मल कमलके समान नेत्रवाले, सुन्दर मुखवाले, पीलेकपड़े धारे, ५२ सोनेका कुण्डल, मंजीर और मुकुटसे उज्ज्वल देहवाले, कौस्तुभमणि से प्रकाशित छातीवाले, वनमाला से विभूषित, ५३ चार भुजावाले, शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करनेहारे, प्रभु, सब लक्षणोंसे युक्त, सोने का जनेऊ पहने हुए थे ५४ इस प्रकार स्वप्न में भगवान् के दर्शन पाकर ब्राह्मण आनन्द से रोमांचयुक्त देह होकर हाथ जोड़कर तिनकी स्तुति करने लगा ५५ कि सब संसार के स्वामी, सज्जन मनुष्यों के शोक, डर और रोगों के नाशकरने-हारे, नारायण, लक्ष्मी के हृदय के प्रिय, धर्म, अर्थ, काम और परम मोक्ष के देनेवाले आपके नमस्कार है ५६ हे मुर दैत्य के वैरी! मुझ मतवाले, मोह के वश में प्राप्तहुए ने सदैव सब पाप किये हैं तिससे संसाररूपी गहरे समुद्र से डरता हूं इससे अपनी भक्तिरूपी नाव देकर मेरा उद्धार कीजिये ५७ हे हरे! हे कैटभराक्षसके वैरी! यद्यपि मैं मनुष्य होकर पाप को जानता हूं और शीघ्रही मोह को प्राप्त हुआहूं तथापि आनन्द से निरन्तर पापही करता हूं तिस से मूर्ख मनुष्य की नाईं हूं ५८ हे नृसिंह! हे नाथ! हे भगवन्! आप पुण्य के वृक्षरूप हैं और सहसाही से सुखफल को धारण करते हैं क्या पाप करनेवाला मैं नहीं जानता हूं परंतु फूलेहुए वृक्ष के अर्पण की विधि में मेरे द्रव्य नहीं है मैं क्या करूं ५९ हे देव! परम अमृतरूप आपके दोनों चरणकमलों के स्थान को छोड़कर मेरा चित्तरूप यह भौंरा मृत्यु के देनेवाले, निरन्तर कफसे युक्त स्त्री के मुख में कमल के भ्रमसे प्राप्त होताहै ६० हे हरे! मेरा हाथ दान से रहित, मुख झूठ बोलनेहारा और कान पाप सुनने के लिये सदैव निपुण हैं इससे मुझ सेवक के इन दोषों को नाश कीजिये जिससे हे नाथ! आप शरणागत के दोष नाश करनेवाले हैं ६१ हे नृसिंहजी! संसाररूपी घोर समुद्र में कदाचित् आपकी भक्तिरूप नाव अत्यन्त दृढ़ मैंने यहां पर पाई तब भी दैव के वश में प्राप्त मुझ दुरात्मा का निरन्तर दुःख का समय वर्तमान है ६२ हे विष्णो!

संसारके पारजाने के लिये क्या प्रकाशित मार्ग है जो कि सब दुःखों से रहित, दयासमेत और प्रसन्न है और मुझ मोहरूपी बड़े अन्धकार से अंधे कियेहुए की दृष्टि कभी भी आप में नहीं प्राप्त होती है ६३ हे मुरारे! हे सब देवताओं से वंदित चरण कमलवाले! हे केशी राक्षस के मारनेवाले! हे विभो! मुझ पापात्मा का यह चित्त नष्ट होगया है जो कि नष्टजनों के कष्ट नाश करनेवाले आपको मैं इस समय स्वप्न में देखता हूं ६४ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इस प्रकार तिस ब्राह्मण से संसाररूपी समुद्र के तारनेवाले देव, लक्ष्मी-पति, भगवान्, वाक्य के जाननेवाले स्तुति कियेगये तब तो उससे बोले ६५ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारी भक्ति से मैं नित्यही प्रसन्नहूं तिससे तुम्हारा थोड़े ही समय में सब कल्याण होगा ६६ हे ब्राह्मण! पूर्व समय में तुझ पापी का भी मैंने उद्धार किया है इस समय में तो मेरा भक्त है इस से तुझ को विपत्ति न होगी ६७ तब ब्राह्मण बोला कि हे विष्णो! पूर्वसमय में मैं कौन था क्या पाप मैंने किया था और मुझ पापी का पहले आपने कैसे उद्धार किया था ६८ हे विभो! इस संसार में आपने कैसे उत्पन्न किया है यह सब कहिये जिससे आप सदैव दयासमेत हैं ६९ तब श्रीभगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यद्यपि यह छिपाहुआ और प्रकाश करने के योग्य नहीं है तथापि तुम्हारी वात्सल्यता से कहता हूं सुनिये ७० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पूर्वसमय में तुम अपने कर्म के विपाक से पृथ्वी के भागों में पक्षियों के वंश में उत्पन्न हुए थे ७१ वहां पर भूंख और प्यास से निरन्तर व्याकुल होकर कीड़ों को खाते और झरनों के गर्म जल पीते हुए भ्रमतेभये ७२ पक्षी की योनि में उत्पन्नहुए सदैव अनेक प्रकार के दुःखों को भोग करतेहुए पृथ्वी में चार हजार वर्ष तुम स्थितरहे ७३ एक समय में सब तत्त्व के जाननेवाले कुलभद्र नाम ब्राह्मण नदी के किनारे भक्ति से नैवेद्य आदिकों से मुझ को पूजतेभये ७४ और वह श्रेष्ठ ब्राह्मण मेरी पूजाकर नैवेद्य के चावलों को वहीं छोड़कर फिर अपने घरको चलेगये ७५ तब वृक्ष से निकलकर भूंखे तुझ पक्षीने मेरी नैवेद्यके सब चावल खालिये ७६ और

भोजन करनेही से शीघ्र ही अत्यन्त घोर पापों से छूटगये और कदाचित् समय प्राप्त होने में मरगये ७७ तो तुम्हारे लेनेके लिये मैंने अपने दूतोंको भेजा तो पापरहित तुमको रथमें चढ़ाकर ७८ शीघ्रही सब दूतसमूह परंपदको लेआये तो हज़ार करोड़ युग हमारे समीप तुम स्थितरहे ७९ और देवताओं के भी दुर्लभ सब सुखोंको भोगते रहे तदनन्तर हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! शुद्ध ब्राह्मण के कुलमें तुम उत्पन्न हुए ८० तो फिर तहां भी मुझ में अत्यन्त दृढ़भक्ति तुम्हारी उत्पन्न हुई क्रियायोग से नित्यही मुझको आराधनकर ८१ अन्त समय मेरे प्रसादसे मेरेपदको प्राप्त होगे हे ब्राह्मण ! जब मैं प्रसन्न होता हूं तब पापी भी मुक्तिका सेवनकरनेवाला होजाताहै ८२ और कदाचित् जिस के ऊपर अप्रसन्न होता हूं तो पुण्यात्मा भी पाप का सेवन करनेवाला होजाता है तिससे हे सुन्दर व्रत करनेवाले ब्रह्मण ! तुम मेरे भक्त हो तुम्हारा कल्याण हो ८३ तुमको देवताओं के भी नहीं मिलनेवाले श्रेष्ठ स्थानको मैं दूंगा तब ब्राह्मण बोला कि हे नाथ ! आपके प्रसाद से मैंने अपने पूर्वजन्म के वृत्तान्त को सुना ८४ हे प्रभो ! हे देवताओंमें श्रेष्ठ ! इस समय में जो कुछ सुनना चाहता हूं तिसको कहिये किसके ऊपर आप प्रसन्न होते और किसपर अप्रसन्न होते हैं ८५ यह सब बड़ी कृपाकर आप मुझ से कहने के योग्य हैं तब श्रीभगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जिस कर्म से मेरे हृदय में प्रसन्नता होती है ८६ और जिससे क्रोध होता है तिस सबको संक्षेप से कहताहूं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो सदैव सब प्राणियों में दयावान् ८७ और अहंकाररहित होता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता हूं जो धर्म और भक्ति से युक्त होकर मेरेलिये कर्म करता है ८८ और मेरे ही लिये जो शान्त बोलता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता हूं और जो मनुष्य मीठी वस्तु को प्राप्त होकर मुझको देता है ८९ और मान अपमान में सदृश है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता हूं जो मनुष्य सब प्राणियों के शरीर में स्थित मुझ को जानता है ९० और जो पराई हिंसा से हीन है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता हूं जो वारंवार विचार कर कर्म करता है ९१ और

जो गऊ और ब्राह्मण के कल्याण की इच्छा करता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जो अपने कहेहुए वचन को यत्न से पालन करताहै ९२ और यत्नसे शरणागतको प्राप्तहोताहै तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता हूं हे श्रेष्ठब्राह्मण! अनुपकारियोंको जो दान देता है ९३ और जिसका मुझ में सदैव चित्तरहता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जिसकर्मसे मैं प्रसन्नहूं तिसको संक्षेप से मैंने कहा ९४ अब हे ब्राह्मण! जिस कर्म से रुष्ट होताहूं तिसको कहता हूं सुनिये जो पराई हिंसा में रत, सब प्राणियों में निर्दयी ९५ अभिमानयुक्त और सदैव क्रुद्ध रहता है वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करता है झूठ बोलनेवाला, क्रूर, पराईनिन्दा में परायण ९६ कवि-वर्तन विध्वंस करनेवाला जो है वह मुझको शत्रुता को प्राप्त करता है निर्दोष माता, पिता, स्त्री, भाई, बहन को ९७ जो मूर्ख मोहसे त्याग कर देताहै वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करता है और जो मूढ़-बुद्धि मनुष्य पितरोंको भर्त्सन करता है ९८ और गुरुजीका अप-मान करता है वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करता है जे बगीचे के काटनेवाले तालाब इत्यादिके नाशकरनेवाले ९९ और जे गांवके नाश करने हारे हैं वे मुझको शत्रुता को प्राप्त करते हैं पराई स्त्री को देखकर जे मनुष्य क्लेशको प्राप्त होते हैं १०० और पापकी चर्चाको सुनते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्न रहता हूं जे मूर्ख स्वामी से वैर करते हैं अनाथ की द्रव्य हरते हैं १०१ और जे विश्वासघात करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्न हूं जे गऊ के वीर्य के नाश करनेवाले, शूद्री के पति, १०२ और पीपल के काटनेवाले हैं तिन के ऊपर मैं सदैव अप्रसन्न हूं ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी के बीच में जे भेद करनेवाले हैं १०३ और पराई स्त्री में जे अतिरक्त हैं तिन के ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे पापबुद्धि मनुष्य एकादशी में लोभ से भोजन करते हैं १०४ और जे वेदकी निन्दा करनेवाले हैं तिन के ऊपर मैं सदैव अप्रसन्न हूं पाप बुद्धि में जे रत तथा मित्र के द्रोह में रत १०५ और आंवले के वृक्ष को जे काटते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे काम से मोहित मनुष्य दिन में मैथुन करते हैं

१०६ और रजस्वला स्त्रीसे भोग करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे स्त्रीको ऋतुयुक्त देखकर मोहसे भोग करते हैं १०७ और व्रत में स्थितसे सदैव भोग करते हैं ते मुझको शत्रुताको प्राप्त करते हैं जे अमावास्या तिथि में रात्रि में भोजन करते हैं १०८ और इतवारको दोबार भोजन करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे ब्राह्मण अमावास्या के दिन मांस, मैथुन और तेलको नहीं छोड़ते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं यहांपर बहुत कहने से क्याहै संक्षेपसे तुझ से कहताहूं १०९।११० जे वैष्णवोंकी निंदा करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्न हूं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! ऐसा कहकर भगवान् विष्णुजी सहसासे अन्तर्द्धान होगये १११ और वह ब्राह्मण निद्रा छोड़कर शय्यासे उठकर भगवान् के कहेहुए वाक्यसे भगवान् की भक्ति करनेलगा ११२ और सब कार्य छोड़कर क्रियायोग में रत होजाता भया नारायणजी की नैवेद्य भोजन करने का यह फलहै ११३ हरिजीकी पूजा करनेवालों का नहीं जानते क्या होताहै हे जैमिनि ! संक्षेप से कहताहूं तुम सुनो ११४ एक बार भी हरिजी की पूजा करने से परमपद प्राप्तहोताहै संसार में मनुष्यजन्म दुर्लभ है तहांपर भगवान्की पूजा ११५ और भक्ति दुर्लभ कहीगईहै ११६ संसाररूपी समुद्र सब दुःखोंसे पूर्णहै जिस पुरुष के चित्तमें उसके तरनेकी इच्छा हो तो वह श्रेष्ठ मनुष्य सब कर्मों में भक्तिसे नित्यही भगवान् की पूजा करै ११७ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे एकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय

सब दानोंका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ब्राह्मण ! विष्णुजी की पूजा का फल तो संक्षेप से मैंने कहा अब इस समय में दानों को कहता हूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये १ दान और तपस्या इन दोनों में एक दानही श्रेष्ठ कहा है तपस्या से पाप कहा है दानके कर्म में पाप नहीं है २ सतयुगमें तपस्या श्रेष्ठहै, त्रेतायुग में ध्यान, द्वापरयुग में पूजा

और कलियुग में दान श्रेष्ठ है ३ तिससे परमपद की इच्छा करने वाले बुद्धिमानों करके भगवान् की प्रीति के लिये कलियुग में दान करना चाहिये ४ कला कला से चन्द्रमा की कला जैसे बढ़ती है तैसेही बुद्धिमानों ने दान और तपस्या की गति कही है ५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य यत्नसे द्रव्यका संग्रह करै और इकट्ठे कियेहुए धनको दानके कर्म में लगावै ६ धनके स्थित होने में जो मनुष्य न भोजन करता और न देताहै वह दान और भोगसे वर्जित दरिद्र जानना चाहिये ७ द्रव्य किसके साथ आता और किसके साथ जाता है इस लोक में नाश होजाने में पूर्वसमय का दिया हुआही प्राप्त होताहै ८ जे मनुष्य दान दे दे कर सदैव दरिद्री हो-जाते हैं वे दरिद्री नहीं जानने चाहिये परलोक में महेश्वर होते हैं ९ हे जैमिनि! जे कृपणता से धनकी रक्षा करते हैं वे अत्यन्तदुःखित जानने चाहिये अन्त में तिस सबको छोड़कर निराश होकर जाते हैं १० परलोक में श्रेष्ठ ब्राह्मण साधु और अच्छेबल से रहित होकर निर्द्धन और बन्धुहीन होनेमें दियेहुएको पाताहै ११ हे श्रेष्ठब्राह्मण! वैष्णवों करके अपनी भक्तिसे नित्यही भक्ति श्रद्धायुक्त होकर थोड़ा २ दान देना योग्यहै १२ तत्त्वके जाननेवालोंने सब दानों में अन्न और जलका दान अत्यन्त श्रेष्ठ कहाहै १३ देहधारी पुरुषों के विना अन्नके देहों में प्राण नहीं स्थित होते हैं इससे अन्नका देनेवाला प्राणों का देनेवाला जानना चाहिये और प्राणों का देनेवाला सब देने हारा होताहै १४ हे जैमिनि! तिससे अन्नका देनेवाला सब दानों के फलको प्राप्त होताहै और अन्नदानही के बराबर जलदान भी है १५ विना जल के अन्न नहीं होताहै इससे जल भी देना चाहिये हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! भूख और प्यास दोनों बराबर कही गई हैं १६ तिससे बुद्धिमानों ने जल का देना श्रेष्ठ कहा है मनुष्यों का जलही जीवनहै जीना जी-वन नहीं है १७ इससे बुद्धिमान् मनुष्य जीवन की रक्षा के लिये जलको देवै हे विप्रेन्द्र! जिसने पृथ्वी में अन्न और जल दिये हैं १८ तिसने निस्सन्देह सब दान किये हैं अन्न और जलके दानके मा-हात्म्य को सुनिये १९ हस्तिनापुर में कुबेरकी नाईं द्रव्यवान् एक

मनुष्य हुआ है और तिसी पुरमें अप्सराओंके समान वेश्या हुई है २० जिसका रतिविदग्धा नाम था यह सब लक्षणों से संयुक्तथी तहांहीं श्रेष्ठवंश में उत्पन्न क्षेमकरी नाम ब्राह्मणी हुई २१ यह ब्राह्मणकी कन्या सब गुणों से युक्त होकर विधवा होगई तब व्यभिचारी पुरुषोंमें मन लगाती भई २२ और अज्ञानता को प्राप्तहोकर निषिद्ध कर्म करती भई और यह ब्राह्मणीभी वेश्या के स्थानमें चली गई २३ दोनों वेश्याकी जीविकाको प्राप्तहोकर स्नेहसे मित्रता करती भईं वेश्या और ब्राह्मणी दोनों एक जगह रहकर दिन दिन में २४ अगणित पापों को करती भईं तदनन्तर रतिविदग्धा वेश्या और अत्यन्तपापिनी दुःशीला ब्राह्मणी भी वृद्धावस्था को प्राप्त होगई तब किसी समयमें रतिविदग्धा वेश्या अपनी ब्राह्मणी सखी से २५। २६ विस्मय और नम्रतायुक्त होकर बोली कि हे सखि ! तुम्हारे साथ मैंने अत्यन्त घोर पाप किये हैं २७ और अबभी मेरी पापमें अत्यन्त दृष्टि वर्तमान है सुन्दरता और बल सब बुढ़ापेने हरलियाहै २८ इस प्रकार पाप करनेवाली मैंने वृद्धावस्था प्राप्तकीहै और असमर्थ होगई हूं तबभी आशा छोड़ने में नहीं समर्थ हूं २९ इससे मरण समीपही देखती हूं पापसे जो मैंने द्रव्य इकट्ठा किया है ३० तिसको मुझ पुत्ररहित के मरने के पीछे कौन रक्षा करेंगे तिससे सब अन्याय से इकट्ठे कियेहुए द्रव्यको ३१ हे सखि ! जो आपकी भी सलाह हो तो ब्राह्मणों के देनेकी इच्छा करतीहूं तब ब्राह्मणी बोली कि मैंने जितना द्रव्य इकट्ठा किया ३२ तिस सबको नित्यही असत्पात्रों में दे दिया तिससे मैं धनहीन हूं मैं क्या ब्राह्मणको दूंगी ३३ जो आपके पास द्रव्यहै तिसको शीघ्रही दान कीजिये ब्राह्मणी के ये वचन सुनकर वह वेश्या अत्यन्त प्रसन्न होकर ३४ सब द्रव्य से अन्नदान करती भई और श्रेष्ठ ब्राह्मण, धनवान् हरिशर्माजी अत्यन्त भक्ति से ३५ निरंतर जनार्दन भगवान्‌जीको पूजन करता भया और जितेन्द्रिय और क्रोधजीतकर हिंसा और दम्भसे वर्जित होकर ३६ भगवान् की प्रीति के लिये बड़ी तपस्या करता भया चन्दन, फूल, बलि, घी, धूप और

दीपों से ३७ नित्यही जनार्दन भगवान् को पूजन करता भया यह ब्राह्मण धनवान् भी द्रव्यके नाश की शङ्कायुक्त रहता भया ३८ चिउंटी और मुसरिया तथा और भी जन्तु इस कृपण के घर में नित्यही भूंखे रहते थे ३९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! यह दानके कर्म से हीन ब्राह्मण इकट्ठे कियेहुए सब धनको आपही भोग करता भया ४० मित्र, ब्राह्मण और बान्धवों से यह द्रव्य मांगने की शङ्का से कभी बात भी नहीं करता था ४१ हे उत्तम ब्राह्मण ! यह अपने स्थान में बहुत द्रव्यों को गिनकर आत्मा को श्रेष्ठ की नाईं मानकर प्रसन्न होता भया ४२ यह अत्यन्त द्रव्यवान् ब्राह्मण, वेश्या और वह ब्राह्मणी भी कदाचित् काल प्राप्त होकर एकही समय में तीनों मरते भये ४३ तदनन्तर देव धर्मराजजी के अत्यन्त भयंकर दूत फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर प्राप्त होते भये ४४ और वे चण्डादिक दूत तिन तीनों को लेकर शीघ्रही दुर्गम राह से धर्मराज के पुरको जाते भये ४५ तब चण्ड यमराजजी से बोला कि हे जीवितेश ! आपकी आज्ञासे हरिशर्मा, वेश्या और ब्राह्मणी को लेआया हूं इन आपके आगे खड़ेहुओं को देखिये ४६ तिन को देखकर यमराजजी हँसकर सब कार्यों में निपुण चित्रगुप्त से बोले ४७ कि हे बुद्धिमान् चित्रगुप्त ! इनके सब शुभ और अशुभ कर्मोंको मूलसे विचारिये ४८ तब यमराजजी की आज्ञा से निपुण चित्रगुप्त सब शुभ तथा अशुभ कर्मको विचार कर बोले ४९ कि हे देव ! यह वेश्या, ब्राह्मणी और हरिशर्माने जो पुण्य तथा पाप किये हैं तिनको कहता हूं सुनिये ५० यह दुराशया रतिविदग्धा नाम वेश्या जितने पाप करती थी तिनके कहने को मैं नहीं समर्थ हूं ५१ जब इसकी वृद्धावस्था हुई है तब इसने अन्याय से इकट्ठे किये हुए सब द्रव्यों से अन्नदान करदिया है ५२ अन्नदान के प्रभाव से यह नरकके वास देनेवाले, करोड़ जन्मों के इकट्ठे कियेहुए सब पापों से छूटगई है ५३ हे महाराज ! जे मनुष्य पृथ्वी में अन्नदान करते हैं वे पापी भी हों तब भी विष्णुजी के परमपदको जाते हैं ५४ मनुष्य पृथ्वी में जितने अन्न देते हैं तितनी तिनकी ब्रह्महत्या

निस्सन्देह नाश होजाती हैं ५५ अन्न देनेवालों के शरीरों को पाप छोड़कर लेनेवालों के शरीरों में शीघ्रही चलेजाते हैं ५६ तिससे चतुर मनुष्य पापियों के अन्नों को नहीं ग्रहण करते हैं और जे मूर्ख मोह से ग्रहण करते हैं ते पापके भागी होते हैं ५७ हे प्रभो! वेश्या के तो शुभ वा अशुभ कर्म मैंने कहे अब ब्राह्मणी के शुभ वा अशुभ कर्म्मों को सुनिये ५८ यह क्षेमकरी नाम ब्राह्मणी, शुद्धवंश में उत्पन्न, भद्रकीर्तिकी स्त्री है इसने सब पाप किये हैं ५९ अपने आश्रमके आचारको छोड़कर अपनेही यौवनसे अभिमानयुक्त होकर अत्यन्त पापिनी यह व्यभिचारी पुरुषों से भोग कराती रही है ६० कभी बाल्यावस्था में बालकों के साथ खेलतीहुई इसने राह में चारों कोण से युक्त एक गढ़ा खोदा था ६१ और उसी दिन मेघ जल बरस गये तब इसका खोदा हुआ गढ़ा भी जलसे भरगया था ६२ तो दोपहरके समयमें एक गौ प्यासी, सूर्यके घामसे तापयुक्त होकर तहांका पानी पीती भई ६३ तो तिसके जलदान के प्रभाव से सब बड़े भी पाप नष्ट होगये हैं ६४ सब पापों से छूटकर नारायणजी के स्थान को जाती है हे देवों के स्वामी! यह दुष्ट अन्तःकरणवाली और पाप करनेहारी भी ६५ जलदान के प्रभाव से सब पापों से छूट गई है और यह ब्राह्मण देवों के देव, चक्रधारी भगवान् का भक्त है ६६ इसके भगवान् ही स्वामी रहे हैं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! चित्रगुप्तके ये वचन सुनकर यमराजजी ६७ तिस वेश्या, ब्राह्मणी और ब्राह्मण की वन्दना करते भये और सुन्दर सोने के गहने और अनेक प्रकारके कपड़ों को ६८ तिन सबको देकर अत्यन्त प्रसन्न होकर हँसकर कोमल अक्षरवाले वचन बोले ६९ कि तुम सब महात्माओं के सब पाप नाश होगये हैं इससे सब सुख देनेवाले लक्ष्मीपति प्रभुजी के स्थानको जावो ७० तिस पीछे यमराजजी सोने के बनेहुये सुन्दर विमानपर तिनको बैठाकर राजहंसयुक्त भगवान् के स्थान को भेजते भये ७१ तब सुन्दर रथपर चढ़कर सब पापरहित होकर सब गहनों से भूषित होकर भगवान् के पुरको जाते भये ७२ वेश्या और ब्राह्मणी सब पापरहित होकर भगवान् के

समीप बहुत कालतक सुखसे स्थित होतीभई ७३ और जनार्दनजी हरिशर्मा को आते देखकर स्नेहसे सोने के बनेहुए श्रेष्ठ आसनको देतेभये ७४ फिर श्रेष्ठ आसनपर बैठे हुए श्रेष्ठ ब्राह्मण की आनन्द से भगवान् पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय से पूजाकर उससे पूंछते भये ७५ कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्तों में श्रेष्ठ हो इससे कुशल कहो और सब उपद्रवों से हीन मेरे मन्दिर में बहुत कालतक रहो ७६ तब ब्राह्मण बोले कि हे प्रभो! आपको स्मरण और दर्शनकर कुशल प्राप्त होती है और मैं तो आपके पासही प्राप्त हूं इससे अधिक क्या कुशल होगी ७७ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! भगवान् उसके नम्र वचन सुनकर प्रसन्न होकर तिस ब्राह्मण को अपनाही स्वरूप देते भये ७८ और लक्ष्मीपति प्रभुजी तिसको सब सुख देते भये परंतु तिसकी कृपणता को स्मरण कर भोजनमात्र नहीं देते भये ७९ तब दो दिनके पीछे ब्राह्मण विना भोजन के भूंख से व्याकुल होकर नम्रता से भगवान् के नमस्कारकर स्थित होकर देवों के स्वामी विष्णुजीसे बोले ८० कि हे प्रभो! अनेक तपस्याओंके फलों से आपके स्थान को तो मैंने पाया परंतु यहां भी भूंख से विकल कैसे हूं ८१ नवीन युवावस्थावाली, सुन्दर देवताओं की कन्याओं के समूह मेरे ऊपर मंचों में सफेद चामर डुलाती हैं ८२ सुगन्धित फूलों के बड़े मालाओं से अलंकृत और चन्दनों से सब अंग लिप्त होकर श्रेष्ठ राजाकी नाईं मैं हूं ८३ हे प्रभो! हे नारायण! आपकी आज्ञा से सुंदर अंगवाली स्त्रियां मेरे आगे गीत गातीं और नाचती हैं ८४ और इन्द्रादिक सब देवता मेरे चरणों की धूलिको मुकुट से शोभित अपने शिरों में नित्यही लगाते हैं ८५ हे देव! हे संसार के स्वामी! देवर्षि और मुनि नौकरोंकी नाईं नित्यही स्तोत्रों से मेरी स्तुति करते हैं ८६ चारभुजाओं से युक्त, श्यामवर्ण, शंख, चक्र, गदा और पद्म को धारे, फूलेहुए कमल के समान नेत्रवाला, पीले कपड़े धारे, सुन्दर कुण्डल धारे, ८७ सोने का यज्ञोपवीत, मुकुट और कुण्डल युक्त मैं देवताओं से दूसरे गरुड़ध्वजकी नाईं दिखाई देता हूं ८८ हे प्रभो! हे परमेश्वर! आपने ये दुर्लभ सुख तो दिये हैं परन्तु भोजन

मुझे क्यों नहीं दियाहै ८९ भूंखकी आग्नि से मेरा शरीर इस तरह जलता है जैसे कोटरमें स्थित आग्निसे वृक्ष जलताहै ९० हे हरे! हे केशवजी! ये सुख तो आपने मुझे दिये हैं परंतु जलती हुई पेटकी आग्निसे विह्वल अंगवाले मुझको नहीं शोभा देते हैं ९१ हे देव! कर्म, मन और वाणीसे आप जगदीश्वरकोही मैंने पूजाहै और देव को मैंने नहीं पूजाहै ९२ हे जगन्नाथ! हे प्रभो! स्वप्नमें भी और देवकी मैंने भक्ति नहीं की है फिर किस दोष से भोजन नहीं देतेहो ९३ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तदनन्तर कौतुकी भगवान् विष्णुजी तिस ब्राह्मण से बोले कि हे ब्राह्मण! तुम्हारा कल्याण हो तुम शीघ्रही ब्रह्माजी के पास जावो ९४ ये भगवान् के वचन सुनकर ब्राह्मण शीघ्रही ब्रह्माके पास गये तब ब्रह्मा तिससे तिसकी कृपणता दिखलाते हुए बोले ९५ कि दुःख से कर्म्म इकट्ठे तो तुमने किये हैं परंतु ब्राह्मण को अन्न नहीं दिया है इससे निस्सन्देह तुम को भोजन नहीं मिलता है ९६ हे ब्राह्मण! तुम्हारे दुःख का सब कारण मैंने कहा अब जहांसे तुम आये हो वहां को जावो तुम्हारा निस्सन्देह कल्याण हो ९७ तब ब्राह्मण बोले कि आपके प्रसाद से मैंने अपने कर्म का विपाक तो सुना अब दानों को कहिये कि कौन दान मनुष्यों को देने योग्यहैं ९८ तब ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण! बहुत दानहैं तिनको नहीं कहसक्ता हूं संक्षेपसे कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ९९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! सब दानों से उत्तम पृथ्वी का दानहै जिस पुण्यात्माने यह दान कियाहै उसको सब दानोंका करने वाला जानिये १०० जो गऊके चमड़ेमात्र पृथ्वीको देताहै वह सब पापों से छूटकर परमस्थानको जाता है १०१ अन्नसंयुक्त पृथ्वी को जो दरिद्री ब्राह्मण को देताहै तिसकी पुण्यको सुनिये १०२ वह सब पापों से छूटकर नारायणजी के पुरको जाताहै और जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक वहां सब सुख भोगकर १०३ फिर पृथ्वी में प्राप्त होकर सब पृथ्वी का राजा होता है बहुतकाल सब पृथ्वी भोगकर मनुष्य नारायण होजाता है १०४ जिससे पृथ्वी सैकड़ों दान छोड़कर ब्राह्मणों को लेनी चाहिये क्योंकि पृथ्वी का देने और

लेनेवाला दोनोंही स्वर्गको जाते हैं १०५ जो मन्दबुद्धि मनुष्य पृथ्वी के दान को छोड़ देताहै वह प्रत्येक जन्म में अत्यन्त दुःखित होता है १०६ औरसे भी ग्रहण कर जो पृथ्वी का दान करता है तिसके ऊपर अत्यन्त प्रसन्न होकर भगवान् परमपद देते हैं १०७ जो दरिद्री ब्राह्मणको गांव देता वा दिलवाताहै तिसकी पुण्यको सुनिये १०८ जितनी पृथ्वी में रेणु और जितनी वर्षा की बूंदें होती हैं तितने ही मन्वन्तर वह बुद्धिमान् विष्णुलोक में बसता है १०९ जो बछवा और दूधसमेत गऊको देताहै तिस महात्मा की पुण्यको मैं कहता हूं सुनिये ११० अन्नसमेत सातोंद्वीप की पृथ्वी को देकर जो फल मिलता है वह मनुष्य ब्राह्मण को गऊ देकर पाताहै १११ और जो कुटुम्बी ब्राह्मण को बैल देता है वह घोर पापों से छूटकर महादेव जी के लोकको जाताहै ११२ जितने तिस बैल के शरीर में रोम होते हैं तितने हज़ार कल्प महादेवजी के साथ वह आनन्द करताहै ११३ जोवेदके जाननेवाले को गऊ देताहै तिसका महादेव जीके लोक से फिर लौटना नहीं होताहै ११४ जो मनुष्य तिलयुक्त बैल को कृष्णजी को देताहै वह तिलों की गिनती से महादेवजी के स्थान में स्थित होताहै ११५ जो तिलभर भी सोना ब्राह्मणको देता है वह करोड़कुलसंयुक्त विष्णुजी के स्थान में जाता है ११६ जो दरिद्री ब्राह्मण को भक्तिसे चांदी देताहै वह चन्द्रमा के लोक में प्राप्त होकर अमृतपान करता है ११७ जो हीरा, मोती, मूंगा और मणि देता है वह इन्द्रलोक में जाता है ११८ जो महाशय घोड़ा दान करता है वह निस्सन्देह गन्धर्वों का राजा होताहै ११९ जो दोषहीन, जवान हाथी को देताहै वह इन्द्रकी नाईं देवताओंकी राज्य में विभाग पाताहै १२० जो दक्षिणासमेत नरदोलाको ब्राह्मणको देताहै वह इन्द्रपद को पाकर चार कल्प बसता है १२१ जो शाल-ग्रामकी मूर्तिका ब्राह्मण को दान देता है तिसकी पुण्यको संक्षेप से कहता हूं सुनिये १२२ पर्वत, वन और काननसमेत सातोंद्वीप की पृथ्वी देकर जो फल मिलताहै वह शालग्रामकी मूर्ति देनेवाले को मिलता है १२३ तुलापुरुष के दानसे जो फल मनुष्यों को मिलता

है तिससे करोड़गुणा शालग्राम की मूर्त्ति देने से मिलता है १२४ जिसने शालग्रामकी मूर्त्ति दी उसने निश्चय चौदहों भुवन देदिये १२५ जो तुलापुरुष का दान करताहै वह स्वर्ग में सुन्दर वस्त्र धारण करनेवाला राजा होताहै १२६ और माताके पेट में फिर जन्म नहीं होता है जो उत्तम मनुष्य गहनोंसमेत कन्याको देताहै १२७ वह विष्णुजी के मन्दिरको जाताहै और फिर नहीं लौटता है और जो मूर्ख मनुष्य मोहसे कन्याको बेंचताहै १२८ वह पुरीषह्रद नाम घोर नरकमें जाताहै और बेंची हुई कन्याके जो पुत्र होताहै १२९ वह सब धर्मों से बाहर किया हुआ चाण्डालकी नाईं जाननेयोग्यहै शास्त्रका जाननेवाला मनुष्य कन्या बेंचनेवाले पुरुषके मुख को न देखै १३० और जो अज्ञान से देखलेवे तो सूर्यनारायण के दर्शन करै जो कन्या बेंचनेवाले के आगे जो कुछ कर्म शुभ करे वे सब निष्फल होजाते हैं कन्या बेंचनेवाले की नरक से फिर निष्कृति नहीं होती है १३१ । १३२ और कन्यादान करनेवाले का स्वर्ग से फिर आगमन नहीं होता है यहांपर बहुत कहनेसे क्याहै संक्षेप से तुमसे कहताहूं १३३ हीरा, पृथ्वी और कन्याका फल सौ से अधिक होता है जो पृथ्वी में जूता और छतुरी देता है १३४ उसकी पुण्य को संक्षेपसे कहताहूं सुनिये इसलोक में सब सम्पदाओं से युक्त होकर वह सौवर्ष जीताहै १३५ और मरकर चारसौ कल्पतक इन्द्रके पुर में प्राप्त होताहै और जो नया कपड़ा देताहै वह परमगतिको प्राप्त होता है १३६ जो पुराने कपड़े, चांदी की गऊ और रजस्वला कन्याको देताहै वह सदैव नरकको जाताहै १३७ और फलदेनेवाला मनुष्य देवस्थान को जाता है वहां पर हज़ार कल्प अमृत के सदृश फलको भोजनकरताहै १३८ सागका देनेवाला भगवान् महादेवजी के पदको जाताहै और वहांपर दो कल्पपर्यन्त देवताओं से दुर्लभ खीरको भोजन करता है १३९ दूध, दही, घी और माठाका देनेवाला हरिभगवान् के आगे अमृत पीने को पाता है १४० फूल और चन्दन का देनेवाला मनुष्य फूल और चन्दन से विभूषित होकर हज़ार युगपर्यन्त देवस्थान में रहता है १४१ हे श्रेष्ठ और उत्तम

ब्राह्मण ! जो मनुष्य शय्यादान करता है वह ब्रह्मलोक में आकर बहुतकाल शय्यामें सोताहै १४२ दीप और पीठ का देनेवाला सब पापोंसे हीन होकर सुन्दर सिंहासनमें स्थित होकर जल और दीपावलीसेयुक्त होताहै १४३ हे राजन् ! पानका देनेवाला पृथ्वी में सब शुभको भोगकर स्वर्ग्ग में देवोंकी स्त्रियों के कोरे में सोकर निश्चय पानोंको खाताहै १४४ और जो विद्यादान करताहै वह विष्णुजी के समीप जाकर दोसौयुगतक स्थित होताहै १४५ फिर वहांहीं ज्ञान पाकर भगवान् के प्रसादसे दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै १४६ जो अत्यन्त दुःखित अनाथ ब्राह्मणको पढ़ाताहै वह विष्णुजी के मंदिर कोजाताहै और फिर वहांसे नहीं लौटताहै १४७ कुलीन भी ब्राह्मण विद्या के विना नहीं शोभित होता है तिससे ब्राह्मण के पढ़ानेवाले परमपदको जाते हैं १४८ पृथ्वी में प्रत्यक्ष देवता ब्राह्मण देवताओं के आश्रय और सब वर्णोंका गुरु है इससे विद्याहीन नहीं शोभित होताहै १४९ संसार में जितने सोना आदिक दानहैं तितने तिसने देदिये हैं जिसने ब्राह्मणको पढ़ायाहै १५० जो मनुष्य भक्तिसे युक्त होकर पुस्तकका दान करताहै तिसकी पुण्यको मैं संक्षेपसे तुमसे कहता हूं १५१ तिस पुस्तक में पत्रे पत्रे में जितने अक्षर होते हैं प्रत्यक्षरमें करोड़ कपिला गऊके दानके पुण्य को देनेवाला प्राप्त होता है १५२ और जितने दिन ब्राह्मण पुस्तक पढ़ते हैं तितनेही मन्वन्तर पुस्तकका देनेवाला वैकुण्ठमें स्थित होताहै १५३ इनसे आदि लेकर अनेकों दानहैं इस संसारमें अच्छीतरह कहनेको दोसौवर्ष में भी कोई नहीं समर्थ है १५४ मनुष्यों करके ब्रह्महत्या आदिक जितने पाप किये जाते हैं वे पाप नाश होजाते हैं तिससे दान करना चाहिये १५५ तीन मनुष्यों करके अपनी पुण्यसे जो दान दिया जाताहै तो जितना द्रव्य होता है तिस दान का फलभी उतनाही मिलता है १५६ मनुष्यों करके भगवान् की प्रीति के लिये जो दान दियाजाताहै तिसका निस्सन्देह करोड़गुणा फल मिलताहै १५७ तिससे भक्तिकर्म से युक्त बुद्धिमान् मनुष्य नारायणकी प्रीति के लिये दान देवे १५८ तत्त्वदर्शियों ने तपस्या से भी दानको श्रेष्ठ

कहाहै इससे बुद्धिमान् मनुष्य यत्नसे दानकर्म करै १५९ जो उत्तम मनुष्य निश्चय दान और तपस्या दोनों करताहै तिसके समान इस संसार में कोई नहीं है १६० ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे सर्वदानमाहात्म्यंनाम विंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय

अन्न और जलके दानका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! ब्रह्माजी के वचन सुनकर हरिशर्म्मा उत्तम ब्राह्मण फिर भक्तिसे ब्रह्माजीके नमस्कार कर बोले १ कि हे प्रभो! आपने जितने बहुत दान कहे हैं वे दान किसको देने चाहिये यह मुझ से आप कहने के योग्य हैं २ तब ब्रह्माजी बोले कि सब वर्णोंका ब्राह्मण परमगुरुहै तिससे भक्ति और श्रद्धासंयुक्तो करके ब्राह्मणही को दान देने चाहिये ३ क्योंकि सब देवताओं के आश्रय और पृथ्वी में प्रत्यक्षदेव ब्राह्मणहै यह दुस्तर संसारसागर में दाताको तार देता है ४ तब ब्राह्मण बोले हे देवताओं में उत्तम ब्रह्माजी! आपने सब वर्णोंका गुरु ब्राह्मणको कहाहै तो तिनके बीच में कौन श्रेष्ठहै किसको दान दियाजाताहै ५ तब ब्रह्माजी बोले कि सब ब्राह्मण श्रेष्ठ और सदैव पूजने योग्य हैं हे उत्तम ब्राह्मण! जे चोरी आदि दोषों से तप्त ब्राह्मण हैं ६ वे हमारे वैरी हैं दूसरोंके कभी नहीं हैं आचारहीन भी ब्राह्मण पूजने योग्य हैं परन्तु जितेन्द्रिय शूद्र नहीं पूजने योग्य हैं क्योंकि नहीं खाने के योग्यों के खानेवाली भी गौवें माता कहलाती हैं ७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारे स्नेहसे विशेष कर ब्राह्मणोंका माहात्म्य कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ८ क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंके ब्राह्मण गुरु हैं परस्पर पृथ्वी के देवता ब्राह्मण गुरु और पूजनेयोग्य हैं ९ हे उत्तम मनुष्य! जो विष्णुकी बुद्धिसे ब्राह्मणको पूजन करताहै तिसके उमर, पुत्र, यश और सम्पत्ति बढ़ती है १० जो मूर्खमनुष्य पृथ्वी में ब्राह्मणको मारता है तो भगवान् सुदर्शनचक्रसे तिसके मस्तकके काटनेकी इच्छा करते हैं ११ बुद्धिमान् मनुष्य फूल, दूध और देवताओंको हाथमें लियेहुए, तेल

देह में लगाये हुए, १२ जल और देवता के स्थान में स्थित, ध्यान में चित्त लगायेहुए, देवों की पूजा करतेहुए, १३ दिशा फिरतेहुए, भोजन करतेहुए और सामवेदको गातेहुए ब्राह्मणके नमस्कार न करै १४ और जहां पर बहुतसे ब्राह्मण स्थित हों तो बुद्धिमान् मनुष्य प्रत्येक के नमस्कार न करै १५ नमस्कार करतेहुए ब्राह्मण को जो भक्ति से नमस्कार नहीं करता है वह चाण्डाल के समान जानने योग्यहै और कभी नमस्कार के योग्य नहींहै १६ माता पिता प्रणाम करतेहुए पुत्रके नमस्कार नहीं करैं ब्राह्मणों से सब ब्राह्मण प्रणाम करनेवाले नमस्कार के योग्य हैं १७ चतुर मनुष्य दोष करने वाले ब्राह्मण और गौवों से वैर नहीं करैं जे मोह से वैर करते हैं तिनके ऊपर भगवान् सदैव अप्रसन्न रहते हैं १८ जो मांगतेहुए ब्राह्मणों को कोपदृष्टि से देखता है तिसके नेत्रों में यमराजजी सुई चुभो देते हैं १९ मूर्ख जिस मुख से ब्राह्मणों को डाटते हैं तिस मुख में यमराजजी तपेहुए लोहे के दण्ड को देते हैं २० जिस घर में ब्राह्मण भोजन करता है तिस में आपही भगवान् रहते हैं और सब देवता, पितर और सुरर्षि भी रहते हैं २१ जो बुद्धिमान् मनुष्य कणमात्र भी ब्राह्मण के चरणजलको धारण करताहै तिसकी देहके सब पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २२ करोड़ ब्रह्माण्ड के बीचमें जितने तीर्थ हैं ते सब ब्राह्मणके दहने चरणमें स्थित हैं २३ जिसका मस्तक नित्यही ब्राह्मण के चरणजल से सींचाजाता है वह सब तीर्थों में स्नान करचुका और सब यज्ञों में दीक्षित होगया २४ और ब्राह्मण के चरणजल के धारण करनेही से तिसके ब्रह्महत्या-दिक सब घोर पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २५ और परमक्लेश देनेवाली क्षय आदिक सब व्याधियां शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाती हैं २६ ब्राह्मण के चरणों के जे जल पितरों के लिये दिये जाते हैं तिनसे पितृ तृप्त होकर जबतक चन्द्रमा और नक्षत्र स्थित रहते हैं तबतक वे स्वर्ग में स्थित रहते हैं २७ जो बुद्धिमान् ब्राह्मण के चरणोंको धोकर दूबसे पूजन करता है उससे संसार के स्वामी. सब देवों में उत्तम विष्णुजी पूजे जाते हैं २८ जो मनुष्य ब्राह्मणों के

चरण धोयेहुए जलको शिर से धारण करता है तिसकी शाश्वती मुक्ति होती है यह मैं सत्यही सत्य कहता हूं २९ जो उत्तम मनुष्य ब्राह्मण की प्रदक्षिणा कर वन्दना करताहै उसने सातोंद्वीप के पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर ली है ३० जो ब्राह्मण के चरण धोकर फल और पान देताहै तो चरण धोने से रोगी रोगसे, पापी पाप से और बन्धन से बाँधा हुआ बंधन से छूट जाता है नहीं पुत्र होनेवाली स्त्रियों के बहुत पुत्र होते हैं और पुत्र मरजानेवाली स्त्रियों के पुत्र जीते हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! ब्राह्मण के चरणों के धोने के सब पाप नाशकरनेवाले माहात्म्य को संक्षेपसे तुमसे कहताहूं सुनिये पूर्वसमय में पवित्रकुल में उत्पन्न भद्रक्रिय नाम ३१।३४ ब्राह्मण हुआ है यह विष्णुजी की सेवा में परायण, वेदका जाननेवाला, दयासमेत, शांत, पिताकी भक्ति में परायण, ३५ अतिथि और जातिकी पूजा करनेवाला था एकसमयमें यह श्रेष्ठ ब्राह्मण देह में तेललगाकर ३६ कपड़ा लेकर तालाब में स्नान करने को गया तो वहांपर सब शास्त्र के जाननेवाले, सब मनुष्यों के कल्याण में रत इस श्रेष्ठ ब्राह्मणने स्नानकर तर्पणादिक किया फिर भगवान् के नामोंका कीर्तन करता हुआ ३७।३८ अपने घरमें आकर भगवान्‌की पूजा में परायण हुआ और अत्यन्त ठण्ढे जलों से अपने दोनों चरणों को और हाथों को धोकर सब स्नान की सामग्रियों को द्वारपर स्थापित कर दिया ३९।४० तब कोई कुत्ता अग्नि के समान गरमी के घामों से तापयुक्त होकर वहीं आकर ४१ तिसी अत्यन्त ठण्ढे ब्राह्मण के चरणजल में सोरहा ब्राह्मण के चरणजल के स्पर्श से अत्यन्त पापी कुत्ता ४२ करोड़ जन्म के कियेहुए सब पापों से छूटकर मन्दिर के द्वार में लेटा हुआ प्याससे व्याकुल होकर ४३ जल मांगने लगा तब ब्राह्मण के नौकरोंने उसको मारा तो शीघ्रही कुत्ता वहींपर मरगया ४४ ब्राह्मण के चरण धोये हुए जल से पापरहित होगया तब उस महात्मा को मूर्तिमान् ईश्वर की नाईं देखकर ४५ नम्रता से तपस्वी ब्राह्मण नम्र होकर उससे बोले कि हे महाभाग! तुम कौन हो किस कर्म से दुःखित हो और अनेक प्रकार के दुःखोंसे युक्त कुत्तेके कुलमें

उत्पन्न हुएहो ४६ ब्रह्माजी बोले कि तिस श्रेष्ठ ब्राह्मणके वचन सुनकर महा यशस्वी कुत्ता अपने सब वृत्तान्त को मूल से कहने लगा ४७ कि मैं महाबलवान् शंखनाम सब पृथ्वी का राजा था चार हज़ार वर्ष मैंने सब पृथ्वी की पालना की है ४८ और सब वैरियों को जीतकर अपने वश में करलिया सब दानों को मैंने दिये और अपनी जातिवालों को पालन किया ४९ हे महाभाग! एक समय में मैं कामके बाणों से युक्त होकर किसी मनुष्यकी सुन्दरी स्त्री को बलसे हर लेता भया ५० तो इसी पापके प्रभावसे मेरी लक्ष्मी सब नाश होगई तब मुझ महाबली को सब मनुष्योंने निकाल दिया ५१ तो राज्यभ्रष्ट होकर मैं वनके बीच में स्थित होकर भूंख और प्यास से व्याकुल होकर नाश को प्राप्त होगया ५२ हे विप्रेन्द्र! फिर मैंने यमराज के पुर में जाकर सुननेवालों के दुःख देनेवाले बहुत कालतक दुःख भोग किये तिनको सुनिये ५३ अत्यन्त तपीहुई लोहकी शय्यामें तपीहुई, जलतीहुई अग्निशिखाकी पंक्ति के समान भयानक ताम्रमयी पृथ्वी को रमण करते भये ५४ तदनन्तर यमराजकी आज्ञा से अत्यन्त भयंकर लोहे के खम्भ, जलती हुई अग्नि से तप्तको आलिंगनकर स्थित होताभया ५५ और शीतकाल में यमराज के दूतोंने छूरा के समान जलकी धाराओं से सींचा तथा और भी बड़े भारी दुःख यमराज के स्थान में भोगे ५६ तदनंतर वारंवार पापयोनियों में जन्म लेकर मैंने बहुत काल बड़े दुःखों को भोग किये ५७ अब आपके चरणों के जलके संसर्ग से पापरूपी रस्सी से छूटकर योगियों के भी दुर्लभ परमधाम को जाता हूं ५८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आपही मेरे गुरु हैं महात्मा आपके नमस्कार है आपके प्रसाद से पापोंसे छूटकर मैं हरिजी के पुरको जाता हूं ५९ तब भद्रक्रिय बोले कि हे पूर्वजन्म के राजन्! राजा को सदैव नीतिही करना चाहिये पुत्र भी दुष्टहो तो उसको भी त्याग करे ६० जो नीति का ग्रहण करनेवाला राजा होताहै उसको निश्चय विपत्ति नहीं होती है वह बहुत काल तक अकण्टक पृथ्वी को भोग करता है ६१ जिस दुरात्मा राजा को नीति नहीं अच्छी लगती है वह

थोड़ेही काल में निस्सन्देह लक्ष्मी से हीन होजाता है ६२ उमर, बल, यश, मित्र, विजय और सुखकी इच्छा करनेवाला पण्डित राजा सदैव अच्छे मंत्रियों को रक्खे ६३ बुद्धिमान् मनुष्य दुष्ट राजा का अनादरकर उसको छोड़ देते हैं इस पण्डितोंसे हीनसभा में नीति बलवान् नहीं होती है ६४ नीति के नाश होने में राजा के शीघ्रही खज़ाना, सेना और वाहनों समेत राजलक्ष्मी नाश हो-जाती है ६५ राजा ब्राह्मण, ज्योतिषी, वैद्य तथा बान्धवों से कभी वैर नहीं करें तबहीं उनके कल्याण होते हैं ६६ ज्योतिषी से वैर करनेवाले राजा की लक्ष्मी नाश होजाती है वैद्यका वैरी आयु से हीन हो जाता है जातिवालों से वैर करनेहारा कुलहीन हो-जाता है और ब्राह्मण का वैरी सब दुःख सेवन करता है ६७ राजालोग पिता कहाते हैं और देशवासी सब पुत्र कहाते हैं तिससे राजा औरसपुत्रों की नाईं प्रजाओं की पालना करते हैं ६८ राजा अपने पुत्र की नाईं पुरके मनुष्यों में स्नेह करैं जे अत्यन्त पापी राजा प्रजाओंको पीड़ा देते हैं ६९ उनके शिर में विपत्ति स्थित तत्त्व-दर्शियों करके जाननी चाहिये ज्ञानी राजा जैसे प्रजाओं को पालन करते हैं ७० तैसेही तिनको देवों के स्वामी हरिजी निरन्तर पालन करते हैं प्रजाओं का पालन और दण्ड ये दो काम राजाके शुभके देनेवाले हैं ७१ इन दोनों कामों से जे रहित राजा हैं ते अधम राजा जानने चाहिये दुष्टों को दण्ड और सज्जनों की रक्षा करनेवाले राजा बहुत कालतक पृथ्वी में आनन्द करते हैं राजा न्यायसे इकट्ठे कियेहुए द्रव्यकी यत्न से रक्षा करै ७२। ७३ दुर्वृत्त राजा विपत्तिमें विस्तार नहीं करै कल्याण की इच्छा करनेवाले राजा शुभ अशुभ अपनी राज्य को ७४ नित्यही वेगयुक्त होकर दूतों के नेत्रसे देखते हैं जबतक परचक्र का डर नहीं आवे तबतक डरकी चिन्तना करै ७५ डरके प्राप्त होने में राजा निर्भय रहे जाति, मित्र, पुत्र वा मंत्री में ७६ मुखसे गंभीरता करै मनसे केवल प्रेम रक्खे क्योंकि मंत्री, जातिवाले, पुत्र, प्रजा तथा भाई ७७ गंभीरताहीन राजाको राजा की नाईं नहीं मानते हैं पहले दूर नहीं स्थित होते हैं तथा आगे

भी नहीं होते हैं ७८ गंभीरताहीन राजाके मनुष्य आश्रयकी इच्छा नहीं करते हैं बहुत काल राज्यकी इच्छा करनेवाला राजा सब राज्य में वृद्धि के लिये एक मंत्री करै अधिक नहीं करै अत्यन्त बुद्धि वृत्तिवाले दासों की सम्पदा को हरै ७९। ८० तिससे राजा सभा में दूसरे दास को युक्त करै मूर्ख, स्त्री से जीतागया, गीत और बाजाओं में सदैव रत ८१ और घोड़ों से हीन राजा सहसा विपत्ति को प्राप्त होता है आचार का ग्रहण, सत्य, अपने वाक्य की पालना ८२ और गम्भीरता ये राजाओं के लक्षण हैं वह कैसे राजा है जो प्रतापसे हीनहै ८३ और जिसने दूसरे की पृथ्वी नहीं जीत ली है जीतीहुई दूसरे की पृथ्वी में जितने पैग राजा चलता है ८४ तो प्रत्येक पैग में नाशरहित अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै पराई पृथ्वी के जीतने की आकांक्षा करनेवाला राजा जो लड़ाई में राजाओं से मारागया ८५ तब भी सब पापों से छूटकर परस्थान को जाता है और संग्राम में जीतपानेवाला राजा परमपद को पाता है ८६ और संग्राम में मृत्यु प्राप्त होनेवाला स्वर्ग में इन्द्र की सम्पदा को प्राप्त होता है शस्त्र छोड़ेहुए, सत्त्वरहित, भागने में परायण ८७ योद्धा को जो राजा मारताहै तो वह नरक में जाता है हे उत्तम ब्राह्मण! भागनेवाला और भागनेवालेका मारनेवाला ८८ ये दोनों अत्यन्त दुःसह नरक में स्थित होते हैं और साहसयुक्त योद्धा जो युद्ध करता है और तिसके मारनेवाला ८९ ये दोनों जबतक चंद्रमा और सूर्य स्थित रहते हैं तबतक स्वर्ग में स्थित रहते हैं यहां पर बहुत कहने से क्याहै संक्षेप से मैंने कहाहै ९० प्रजाका पालन करनेवाला राजा कभी कष्ट नहीं पाता है ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण! पापरहित तिस राजा के इस प्रकार कहने में ९१ तिसके ऊपर आकाश से बड़ीभारी फूलों की वर्षा हुई तदनन्तर महात्मा केशवजी के दूत राजहंसयुक्त सुन्दर रथ लेकर आये और सोने के बनेहुए दिव्य रथपर तिसको चढ़ाकर ९२। ९३ विष्णुजी के मन्दिर को जातेभये ब्राह्मणके चरणों के जलका इस प्रकारका माहात्म्य तुमसे कहा कि जिससे राजा पापरहित होगया है ९४ तिसको भक्तिभाव

से सुनकर मनुष्य मोक्षको प्राप्त होता है यह तुम्हारे जो सुनने को वाञ्छित था वह सब मैंने कहा ६५ हे ब्राह्मण! भगवान् के स्थानको जावो तुम्हारा कल्याण हो तब हरिशर्मा बोले कि बड़ीभूखकी अग्नि से मेरा शरीर जला जाता है ६६ हे भगवन्! हे देवों के स्वामी! किस उपायसे मेरी भूंखकी शान्तिहोगी यह मुझसे कहिये क्योंकि मैं आपका भक्तहूं और आप भक्तवत्सल हैं ६७ मैं नित्यही दग्ध भूंख की अग्नियों से अत्यन्त दुःख को प्राप्त हूं तब ब्रह्माजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिस शरीर को तूने निरन्तर भोजनों से पुष्ट किया है तिसी शरीर के मांसों को भोजन कीजिये जे मनुष्य पराये भोजन से अपनी तृप्ति करते हैं ते परलोक में अपने शरीरों के मांसों को भोजन करते हैं ६८। ६६ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! श्रेष्ठ ब्राह्मण ब्रह्माजी के निष्ठुर वचन सुनकर फिर कोमल अक्षरवाले वचनों से तिन देवकी स्तुति करता भया १०० कि हे देव! हे देवों के स्वामी! हे शरणागतों के पालन करनेवाले! हे देवताओं में श्रेष्ठ! प्रसन्न हूजिये और सब दोषों को क्षमा कीजिये आपके नमस्कार हैं १०१ हे प्रभो! मलमूत्रसे युक्त देहों के धारण करनेवाले मनुष्यों के सब दोषही होते हैं कुछ गुण नहीं होते हैं १०२ मुझ मोहयुक्तने जो दूषण किया है तिस के क्षमा करनेके आप योग्य हैं क्योंकि सज्जन लोग शरण में आयेहुए मनुष्यों के दोष को नहीं देखते हैं १०३ हे ब्रह्मन्! अपनी देह के मांस भोजन करने में मैं नहीं समर्थ हूं देहधारियों के योग्यको कहिये जिससे संतुष्टि होजावे १०४ जब ब्राह्मण ने भक्ति से इसप्रकार के वचन कहे तब सब जाननेवाले, दयासमेत, ब्राह्मणों के प्यारे ब्रह्माजी बोले १०५ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शोक मत करो मेरे शुभ वचन को सुनो जिसप्रकार से इस समय में यहां पर अन्न को प्राप्त होगे १०६ आत्मा से पुत्र होता है जैसे आत्मा तैसेही पुत्र होता है तिससे पुत्रके कियेहुए कर्म को निश्चय पितर पाते हैं १०७ तुम बहुतकाल तक भगवान् के अत्यन्त सुन्दर स्थान में स्थित होगे जब ब्रह्माजीने इस प्रकार उससे कहा तब भूंख से व्याकुल ब्राह्मण १०८ स्वप्नमें पुत्रको दर्शन देकर उससे बोले कि हे श्रेष्ठपुत्र!

तुम दीक्षायुक्त हो तुम्हारा परमकल्याण होवे १०९ हे सौम्य! हे पुत्र! तुम्हारा मैं पिताहूं मेरे दुःख को सुनिये तपस्या के प्रभाव से मैंने परमधाम पायाहै ११० परन्तु भूखकी अग्निसे सदैव क्लेश पाताहूं हे पुत्र! जो मुझ में तुम्हारा पिताका स्नेह इस समय में हो १११ तो हे ब्राह्मण! अन्न और जल मेरे लिये दीजिये जो कुछ पुत्र पृथ्वी में पिताके लिये देते हैं ११२ तिसको पितृलोग पाते हैं जिससे कि पुत्र पिता की देह से उत्पन्न हैं पूर्वसमय में श्रेष्ठ भक्ति से मैंने भगवान् को पूजा है ११३ गीत, बाजा, नाच, सुन्दर स्तोत्रों के पाठ, चन्दन, धूप, नैवेद्य, घी से पूर्ण दीप, ११४ पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, ध्यान और आवाहन आदिकों से हरिजी की पूजा तो किया है परन्तु मुझ कृपणने संसार के स्वामी, पाप हरनेवाले को नैवेद्य में भी कभी अन्न नहीं दिया है और अतिथि की भी जल और अन्न से कभी पूजा नहीं की है ११५।११६ जातिवाले और मांगनेवालों की संतुष्टि मैंने नहीं की हे पुत्र! तिसी कर्म से नारायण के घरमें भी ११७ भूंखरूपी अग्निसे तप्त होकर प्रतिदिन क्लेश पाताहूं इससे अन्न और जलको गरीब ब्राह्मण को दान ११८ देकर शीघ्रही प्राणों की रक्षा कीजिये अथवा निष्ठुरता जो तुम नहीं करोगे ११९ तो भगवान् के मन्दिर में निश्चय अपने मांसोंको भोजन करूंगा तदनन्तर सूखे कण्ठ, ओष्ठ और तालुयुक्त वह ब्राह्मण १२० दीक्षित पुत्र से यह कहकर सहसा से अन्तर्द्धान होगया तब निर्मल प्रातःकाल सूर्य के उदयहुए में १२१ स्वप्न में जो पिताने कहा था तिसको दीक्षित चिन्तना करनेलगा कि अपने कर्म के दोष से परलोकमें मेरा पिता १२२ भूंखसे सब अंग दग्धहोकर प्रतिदिन क्लेश पाता है मुझ मन्दबुद्धि श्रेष्ठ कृपण मनुष्य को धिक्कार है १२३ हे उत्तम ब्राह्मण! मैंने पिताको पुण्य से कुछ नहीं दिया है इसप्रकार दीक्षित बहुत प्रकार से चिन्तनाकर १२४ श्रद्धा और भक्तिसे युक्त होकर ब्राह्मणों को दान देताभया तिसी पुण्य के प्रभाव से प्यास और भूंखसे रहित होकर उसका पिता १२५ भगवान् के स्थान में जितने काल स्थित रहा तिसको सुनिये चारों युग जब

हज़ारबार बीतते हैं तब ब्रह्मा का एक दिन होता है १२६ तिसी दिन में चौदह मनु होते हैं और चौदहही इन्द्र होते हैं १२७ ये अपने अपने शुभ विषयों को एकही दिन में अलग अलग भोग करते हैं १२८ तिस पीछे चौदहों इन्द्र और मनु नाश होजाते हैं तहां अत्यन्त प्रकाशित, सुन्दर, सब सुखदेनेवाले विष्णुलोक में हरिशर्माजी के स्थित होतेहुए ब्रह्माजी का दिन बीतगया इतने कालतक यह ब्राह्मण मनोरम भोगों को भोगकर १२९। १३० परमज्ञान पाकर भगवान् की देह में प्रवेश कर जाते भये व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! अन्न और जल के समान दान संसार में नहीं है १३१ इनके देनेसे सब दानोंका फल मिलताहै इस में पात्रकी परीक्षा और काल का नियम कुछ नहीं तत्त्वदर्शियोंने कहा है इससे अन्न और जलके दान सदैव करने चाहिये १३२। १३३ जे मनुष्य परम आदर से अन्न जल तथा ब्राह्मणों के माहात्म्य को पढ़ते हैं ते अन्न और जलके दान के फलको पाकर अन्त समय में सुखदायी नारायणजी के स्थान को जाते हैं १३४॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे अन्नजलदानमाहात्म्यं नाम एकविंशतितमोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय

एकादशी का माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो! गंगाजीका शुभमाहात्म्य, विष्णुजीकी पूजा का फल, अन्न और जलका उत्तम माहात्म्य १ और ब्राह्मणके चरणजलका पाप नाशनेवाला माहात्म्य इतिहास समेत आपके प्रसाद से सब मैंने सुना २ अब हे मुनिशार्दूल! सब पापों के नाश करनेवाले एकादशी के सब फलको आदर समेत सुनना चाहता हूं ३ किससे एकादशी श्रेष्ठहै तिसकी क्या विधि है कब करे क्या फल होताहै यह सब मुझसे कहिये ४ हे अच्छेगुणों के समुद्ररूप! तहां पर कौन देवता अत्यन्त पूज्यहैं और नहीं करनेसे क्या दोष होताहै यह मुझसे आप कहने के योग्य हैं ५ व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ

ब्राह्मण ! एकादशी के सब फलको नारायण को छोड़कर और कोई समर्थ नहीं है तिससे संक्षेप से कहताहूं ६ पहले भगवान् स्थावर जंगम संसार को रचकर सबके दमन के लिये पापपुरुष को रचते भये ७ ब्राह्मणों की हत्या मस्तक, मदिरा का पीना नेत्र, सोने का चुराना मुख, गुरुकी शय्या में जाना कान, ८ स्त्रीकी हत्या नाक, गऊ की हत्या का दोष भुजा, न्यासका चुराना गर्दन, गर्भहत्या गल, ९ पराई स्त्री से भोग बुक्काका अग्र, मित्र मनुष्योंका मारना पेट, शरणागतकी हत्या आदिक नाभि के छिद्रकी अवधि, करिहांव १० गुरु की निन्दा सक्थि भाग, कन्याका बेचना शोफस, विश्वास वाक्य का कहना गुदा इन्द्रिय, प्रीति का मारना चरण, ११ उपपातक रोयें जिसकेथे इसप्रकार बड़ी देहवाले, भयंकर, कालेवर्ण, पीलेनेत्र युक्त, अपने आश्रयों के अत्यन्त दुःख देनेवाले १२ अत्यन्त उग्र, पुरुषों में उत्तम पापपुरुषको देखकर दयासमेत प्रजाओं के नाशकरनेवाले प्रभुजी चिंतना करतेभये १३ कि यह दुर्जन, क्रूर, अपने आश्रयों के क्लेश देनेवालेको प्रजाओं के दमन के लिये तो मैंनेरचा अब इसके कारणको रचताहूं १४ तदनन्तर भगवान् विष्णुजी आपही यमराज होगये और पापियों के दुःखदेनेवाले रौरव आदिक नरकोंको रचते भये १५ जो मूर्ख पापको सेवन करताहै वह परमपदको नहीं जाता है तहां यमराज की आज्ञा से रौरव आदिक नरक में जाता है १६ एक समय में प्रजाओं के दुःख नाश करनेवाले भगवान् विष्णुजी गरुड़ पर चढ़कर यमराजजी के मन्दिर को जाते भये १७ तब यमराज संसारके स्वामी रोगरहित नारायणजी को देखकर प्रसन्न मन होकर धूपआदिकों से उनकी पूजा करतेभये १८ तो यमराजसे पूजितहुए सब लोकों केनायक विष्णुजी सोनेके बनेहुए पीठपर बैठते भये १९ हे प्रभो! तहांपर दैत्यों के नाशकरनेवाले भगवान् यमराज जी के साथ बैठकर दक्षिणदिशा में रोने के शब्द को सुनतेभये २० तदनन्तर लक्ष्मीकेपति विस्मययुक्तमन होकर भगवान् यमराजजी से बोले कि यह रोने का शब्द कहां होता है २१ तब यमराजजी बोले कि हे देव ! पापीमनुष्य अत्यन्तदुःख देनेवाले नरकमें अपने

हाथ से इकट्ठे कियेहुए दोषसे कष्टपाते हैं २२ हे विष्णुजी! पापरूपी वृक्षका फल भोगकरना अत्यन्त दुःख देताहै तिसीसे पापी रोरहे हैं तिन्हीं का यह बड़ा शब्दहै २३ जब यमराजने यह कहा तब कमल-नयन कृष्णजी सहसा वहां जातेभये जहांपर पापीलोग रोरहेथे २४ तिन रौरव आदिकनरकों में स्थित पापी मनुष्यों को देखकर हृदय में दया उत्पन्न होकर प्रभु भगवान् चिन्तना करतेभये २५ कि मैंने सब प्रजाओंको रचाहै और मेरे स्थित होनेमें अपने कर्मों के दोषसे वे एकान्त दुःख देनेवाले नरक में क्लेश पाते हैं २६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह तथा और भी करुणानिधान भगवान् चिन्तनाकर सहसा तहांहीं आपही एकादशी तिथि होजाते भये २७ तदनंतर तिन सब पापियों को सुनाते भये तब वे सब पापरहित होकर परमधाम को जातेभये २८ तिससे एकादशी को परात्मा विष्णुजी की मूर्ति जानिये यह सब दुष्कृतियों में श्रेष्ठ व्रतों में उत्तम व्रत है २९ तीनोंलोकों के पवित्र करनेवाली एकादशी तिथिको कर शंकायुक्त पापपुरुष होकर विष्णुजी की स्तुति करने को प्राप्त होताभया ३० तदनन्तर पापपुरुष भक्तिसे हाथ जोड़कर लक्ष्मी के पति जनार्दन भगवान्जीकी स्तुति करताभया ३१ तिसकी स्तुति को सुनकर पर-मेश्वरजी प्रसन्न होकर उससे बोले कि मैं तुमसेप्रसन्नहूं क्या तुम्हारा अभिमतहै तिसको कहिये ३२ तब पापपुरुष बोला कि हे विष्णुजी! भगवान् ने मुझे रचा है अपनी अनुग्रह में दुःख देनेवाला मैं हूं सो एकादशी के प्रभावसे इस समय में नाशको प्राप्तहोताहूं ३३ इस संसारमें मेरे मरने में सब देहधारी संसारके बन्धनों से छूटजावेंगे ३४ हे प्रभो! सब देहधारियों में श्रेष्ठों के मुक्त होजाने में आप संसार-रूपी कौतुक के मन्दिर में किनके साथ क्रीड़ा करेंगे ३५ हे केशव जी! यदि संसाररूपी कौतुक के मन्दिर में क्रीड़ा करने को आपकी वाञ्छा हो तो एकादशी तिथिके डरसे मेरी रक्षा कीजिये ३६ और हज़ारों पुण्य मेरे मारनेमें नहीं समर्थ हैं परंतु पुण्यकारी एकादशी मेरे मारने में समर्थ है इससे वर देनेवाले हूजिये ३७ मनुष्य, पशु, कीड़े तथा और जंतुओं में, पर्वत, वृक्ष और जल के स्थानों में, ३८

नदी, समुद्र और वनके प्रान्तरों में, स्वर्ग, मनुष्यलोक, पाताललोक, देवता, गंधर्व और पक्षियों में ३९ एकादशीतिथि के डरसे भागता फिरताहूं उससे कहीं भी निर्भय स्थान को नहीं पाताहूं ४० हे देवदेव! हे सनातन! करोड़ ब्रह्माण्ड के बीच में एकादशी तिथि में स्थित होने को मैं स्थान नहीं पाता हूं ४१ हे प्रभो! मैं एकादशी में कहां निर्भय होकर बसूं हे देवेशजी! तुमसे अहेतुक मैं रचागया हूं यह सब मुझसे कहिये ४२ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! पापपुरुष क्लेश नाशनेवाले भगवान् से यह कहकर भूमि में गिरकर नेत्रों से आँसू छोड़कर रोनेलगा ४३ तब मधुकैटभ राक्षस के मारनेवाले भगवान् हँसकर एकादशी के डर से डरेहुए पापपुरुष से बोले ४४ कि हे पापपुरुष! उठो शोक को छोड़कर आनन्द करो एकादशी तिथि में तुम्हारे स्थान को कहताहूं ४५ तीनोंलोकों की पवित्र करनेवाली एकादशी के आने में अन्न में स्थित होना ४६ अन्न में आश्रित होकर स्थितहुए तुम को मेरी मूर्ति यह एकादशी तिथि नहीं मारेगी ४७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तब तो भगवान् तहाँही अन्तर्द्धान होगये और पापपुरुष कृतार्थ होकर जैसे आयाथा वैसेही चला गया ४८ तिससे एकादशी के प्राप्त होने में अपने कल्याण की इच्छा करनेवाले सज्जन लोगोंको कभी अन्न न भोजन करना चाहिये ४९ संसार में जितने पाप हैं वे एकादशी के दिन श्रीनारायणजी की आज्ञा से अन्न में आश्रित होकर स्थित होते हैं ५० सब पाप करनेवालों की नरकसे निष्कृति होती है परन्तु जे एकादशी में अन्न भोजन करते हैं वे पापियों में श्रेष्ठ जानने चाहिये ५१ हे मनुष्यो! वारंवार मैं दृढ़ कहताहूं सुनिये कभी एकादशी में न भोजन करना चाहिये ५२ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा और सब को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फलकी देनेवाली एकादशी रहनी चाहिये ५३ बुद्धिमानों ने अठारहपलकी एककाष्ठा कही है और सब अर्थ के देखनेवालों ने तीसकाष्ठाओं की कला कही है ५४ तीसकलाओं का क्षण बारहक्षणों का मुहूर्त और तीसमुहूर्तोंका दिनरात कहाहै ५५ पन्द्रह दिनरातोंका पक्ष जानना चाहिये शुक्ल और कृष्ण दो पक्षों से

महीना होताहै ५६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तिस महीने में शुक्ल और कृष्ण-पक्षों में महापापों से युक्तभी जो एकादशी का व्रत करताहै ५७ वह सब पापों से छूटकर विष्णुलोक को प्राप्त होताहै माता माता नहीं कहाती है एकादशी तिथिही माता है ५८ माता तो इसी लोक में रक्षा करती है और एकादशी तिथि सब से रक्षा करती है एकादशी का व्रत छोड़कर जो और व्रत करता है ५९ वह मूढ़ बुद्धिवाला अपने हाथ में स्थित मणिको छोड़कर लोष्ठ को ग्रहण करता है भक्तिसंयुक्त होकर जिन्होंने एकादशी का व्रत किया है ६० तिन्होंने सब यज्ञ और व्रत किये हैं जे पापी मनुष्य मोह से एकादशी में भोजन करते हैं ६१ चाहे शुक्लपक्षकी हो या कृष्णपक्षकी हो तिनके ऊपर भगवान् सदैव अप्रसन्न रहते हैं और जिसने एकादशी का व्रत किया उसने सब धर्म किया ६२ जैसे सब देवताओं में विष्णुजी श्रेष्ठ कहाते हैं तैसेही सब व्रतोंमें एकादशीका व्रत श्रेष्ठहै ६३ आदित्योंमें जैसे सूर्य और नक्षत्रों में जैसे चन्द्रमा श्रेष्ठ है तैसेही सब व्रतों में एकादशी का व्रत श्रेष्ठ है ६४ वृक्षों में जैसे पीपल और वेदों में जैसे साम वेद श्रेष्ठ है तैसेही सब व्रतों में एकादशी का व्रत श्रेष्ठ है ६५ कवियों में शुक्रजी और वर्णों में जैसे ब्राह्मण श्रेष्ठ होताहै तैसेही सब व्रतों में एकादशीका व्रत श्रेष्ठ कहाहै ६६ जैसे मुनियों में व्यासजी और देवर्षियों में नारदजी श्रेष्ठ हैं तैसेही सब व्रतों में एकादशी का व्रत श्रेष्ठ कहाहै ६७ जैसे सब दानों में अन्नदान श्रेष्ठहै तैसेही सब व्रतों में एकादशीका व्रत श्रेष्ठ कहाहै ६८ जैसे पुण्यके बराबर मित्र और शास्त्रके समान गुरु नहीं है तैसेही तीनों लोकों में एकादशी के समान व्रत नहीं है ६९ बुद्धिमानों ने जैसे इन्द्रियों में मन श्रेष्ठ, महीनों में कार्त्तिक श्रेष्ठ और पाण्डवों में अर्जुन श्रेष्ठ कहा है ७० जैसे सब शास्त्रों में वेद श्रेष्ठ कहे हैं तैसेही सब व्रतों में श्रेष्ठ एकादशी का व्रत कहाहै ७१ हे ब्राह्मण! वेद, आगम, शास्त्र, पुराण तथा औरों में भी कहीं भी बुद्धिमानों ने एकादशी के व्रतके बराबर व्रत नहीं कहाहै ७२ सब मनुष्य पृथ्वी में एकादशी का व्रत कर निर्भय रहते हैं कि यमराजजी क्या करेंगे ७३ अच्छे प्रकार एकभी एकादशी व्रत करनेवालों के यमराज नौकर होजाते हैं तिससे

शुभदेनेवाला एकादशी का व्रत करना चाहिये ७४ हे सज्जनों में अत्यन्त श्रेष्ठ जैमिनि! एकादशी के व्रतकी विधि मैं संक्षेपसे कहताहूं एकाग्र मन होकर सुनिये ७५ दशमी में प्रातःकाल उठकर दतूनि करना चाहिये फिर अन्नके छोड़नेवालों करके तैलके विना स्नान करना चाहिये ७६ तदनन्तर पाद्य आदिकों से संसार के ईश्वर विष्णुजी को पूजनकर भगवान् के ध्यान में परायण होकर एकबार भोजन करे ७७ मांस, नमक, मसूर, बड़े उर्द, साग, ७८ दूसरी बार का भोजन, पराया अन्न, मधु, मैथुन, कांस्य के बर्तन में भोजन ७९ नींबकी पत्ती, बैंगन, जलाहुआ नींबू, घीसे हीन, गव्य, ८० अत्यन्त भोजन, और पान का खाना दशमी में छोड़ देवै ८१ हे उत्तम ब्राह्मण! दशमी में जितनी वस्तु निषिद्ध कही हैं वे सब द्वादशी में भी निस्संदेह निषिद्ध हैं ८२ हे विप्रशार्दूल! अच्छे प्रकार व्रतके फलकी इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य दशमी और द्वादशी में रात को भोजन नहीं करै ८३ इससे व्रत करनेवाला शीघ्रही दशमी में हविष्यकर अपराह्ण में फिर विधिपूर्वक दतूनि करै ८४ सायंकाल देवता के स्थान में जाकर फूलों की अंजली ग्रहण कर मन से केशवजी को ध्यान कर इस मन्त्र को पढ़ै ८५ कि हे गोविन्द! मैंने इस पृथ्वी में आपके आगे व्रत ग्रहण कियाहै इससे आपके चरणोंकी कृपासे निर्विघ्न सिद्धिको प्राप्त होवै ८६ अत्यन्त चंचलचित्त लोभ और मोहयुक्त मनुष्य मैं हूं आपकी कृपा के विना मैं इस व्रत को नहीं करसक्ताहूं ८७ इन दोनों मंत्रोंको पढ़ तिसी फूलों की अंजली को नारायणजी को देकर पृथ्वी में दण्डवत् नमस्कार करै ८८ फिर भगवान् के स्मरण में तत्पर मनुष्य तिसी विष्णुजी के मन्दिर में कुश से शय्या बनाकर पृथ्वी में सोवे ८९ तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य निर्मल प्रातःकालहुए दतूनि न करै बारहकुल्लोंसे मुखकी शुद्धि करै ९० नित्यकी क्रिया और भगवान् की पूजा आदिक क्रिया करै हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तदनन्तर रात्रि में सब व्रत के करनेवाले मनुष्य ९१ भगवान् के आगे एक जगह जागरण करें माता, स्त्री, भाई, पिता ९२ पुत्र और मित्र समेत

होकर हरिजी का जागरण करै और व्रत करनेवाला बहुत समयतक विष्णुजी के मन्दिर में स्थित होवे ६३ जो मनुष्य विष्णुजी के मन्दिर में शंख और चक्रआदिक चित्र लिखता है तिसके बहुत जन्मों के कियेहुए पापों को भगवान् नाश करते हैं ६४ और जो चावल के आटे के पंक वा और वनकी उत्पन्न वस्तुओं से चित्र लिखता है तिसके फलको सुनिये ६५ पुत्र, पौत्र और प्रपौत्रोंसमेत सब शुभको वह भोगकर अन्तसमय में विष्णुजी के पुर में जाकर वहां पर मोक्ष को प्राप्त होता है ६६ एकादशी के दिन ध्वजारोपण करनेवाला मनुष्य करोड़ पुरुषों को उद्धार कर नारायणजी के पुरको जाताहै ६७ जो मनुष्य भगवान् के मन्दिर को पताकावलियोंसे युक्त भूषित करता है वह प्रत्येक जन्म में राजा होताहै ६८ जब तक पवन से पताका फहराती है तब तक उसके सब पाप नाश होजाते हैं ६९ एकादशी के दिन श्रेष्ठ स्थान के इच्छा करनेवाले बुद्धिमानों करके भगवान् के मन्दिर में अनेक वर्ण के पताकाओं की पंक्तियां स्थापित करनी चाहिये १०० जो मनुष्य विष्णुजीके शिर में अत्यन्त पवित्र छत्र धरताहै वह प्रत्येक जन्म में पृथ्वी में क्षत्री होताहै १०१ एकादशी के दिन फूलोंसे मण्डप करनेवाला मनुष्य प्रत्येक फूल में सौ अश्वमेधयज्ञ के फल को प्राप्त होताहै १०२ एकादशी के दिन बुद्धिमान् मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफल की प्राप्ति के लिये यत्न से सुगन्धित फूलों से मण्डन करै १०३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो एकादशी के दिन कपड़े का घर बनाताहै वह देवस्थान में महल में बसता है १०४ जो मनुष्य सफ़ेद वा लाल वा काला कपड़े का घर बनाकर भगवान् के मन्दिर में बांधताहै वह भगवान्‌को प्रिय होता है १०५ व्रत करनेवाला मनुष्य तहांही शालिग्राम वा भगवान् की मूर्तिको भक्ति से पंचामृत से स्नानकराकर स्थापित करै १०६ बुद्धिमान् मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके फल की प्राप्ति के लिये यत्नसे पहले स्वस्त्ययन और फिर संकल्प करै १०७ और शास्त्रके भाषितों से अपनी भूतशुद्धि विधानकर फिर एक मनहोकर उत्तम फूलको ग्रहणकर १०८ हृदयरूपी कमलके बसनेवाले, सोनेके पीठमें

बैठेहुए तथा मणिमय आसन में बैठेहुए नारायण देवको ध्यान करै १०९ सोनेकेपीठमें बैठेहुए, मणिमय प्रकाशित गहनों से शोभित, क्रीड़ा के वेषधारे, लेखा को भी धारे, उज्ज्वल मेघोंके समान दीप्ति वाले, सुन्दरदेहयुक्त, नित्यही लम्बी चारभुजाओं से प्रकाशित, सब करलय और हथियारों समेत, कमलके समान नेत्रों से लक्ष्मीजी के मुखको देखतेहुए, श्रमके दूरकरनेवाले भगवान् को निरन्तर कटाक्ष-दृष्टि से मैं भजताहूं ११० हे भगवन्! हे देव! हे लक्ष्मी के प्रिय! आइये इसव्रत में भक्तिसे मुझको आपकी पूजा करनी चाहिये १११ हे सब लक्षणयुक्त! हे संसारके गुरु! लक्ष्मी समेत आप जबतक मैं आपकी पूजा करूं तबतक इस श्रेष्ठ आसन में स्थित हूजिये ११२ हे सब संसार में प्रसिद्ध यशवाले! हे नारायण! हे प्रभो! हे देवताओं से पूजित! आपकी कुशल तो है यह सब मुझसे कहिये ११३ हे देवों के स्वामी! हे नारायण! सुवासित, दोनों चरणोंकी धूलिके हरनेवाले, पवित्र और अत्यन्त शीतलपाद्यको ग्रहण कीजिये ११४ हे कमलके समान नेत्रोंवाले! हे विष्णुजी! दूर्वा और पत्तों से युक्त और अखण्ड चावलों सेभी युक्त अर्घ्य को आपको देताहूं ११५ हे परमानन्द! इस अत्यन्तपवित्र, परमानन्दके बढ़ानेवाली आचम-नीयको आपको देताहूं इसको ग्रहण कीजिये ११६ हे जरासन्धके नाशकरानेवाले! हे लक्ष्मी के पति! मेरे दियेहुए सुगंधित चन्दनसे आपकी देह भूषितहोवे ११७ हे देव! हे देवों के ईश्वर! संसारके आदि करनेवाले इस आचमन को पवित्रताकेलिये मैं देताहूं तिसको ग्रहण कीजिये ११८ हे देवताओंमें श्रेष्ठ! इसको पूर्वसमय में ब्रह्मा-जीने देवताओं की प्रसन्नता बढ़ाने के लिये रचाहै इसी से आपको यह धूप मैं देताहूं ११९ हे जनार्दन! हे देव! अन्धकार समूहोंका नाश करनेवाला, घीसेपूर्ण यह दीप आपकी प्रीतिकेलियेहोवे १२० हे देवोंकेईश! हे संसार के गुरो! वस्ति और करिहांव में शोभादेने वाले जनेऊ समेत इस उत्तरीय वस्त्र को आपको देता हूं १२१ हे परमेश्वर! स्वादुयुक्त! छःरसों सेभी युक्त चारप्रकार के अन्न को मैं भक्तिसे आपको निवेदन करता हूं इसको ग्रहण कीजिये १२२

हे मोक्षके देनेवाले! हे महाबुद्धियुक्त! हे विष्णुजी! मुखकी दुर्गन्धके हरनेवाले कपूर और खैरसे युक्त पानको ग्रहण कीजिये १२३ इस विधि से अत्युत्तम भेंटोंसे भक्ति से युक्त होकर चारोंपहरों में भगवान् को पूजन करै १२४ एकादशी के दिन अनेक प्रकार की भेंटें हरिजीको देवे कर्मों के फलकी इच्छा करनेवाला वित्तशाठ्य न करै १२५ तदनन्तर नारायण में परायण सब व्रतवालोंको रात्रि में नाच, गाना और स्तोत्र आदिकों से जागरण करना चाहिये १२६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! फिर व्रत में रत मनुष्य प्रदक्षिणा कर सब पाप नाश करनेवाले भगवान् के नामोंको स्मरण करें १२७ जे मनुष्य प्रत्येक के मुखों से हरिजी के नाम की ध्वनि को सुनते हैं वे बड़े भारी पापसमूहों से छूटजाते हैं १२८ एकादशी के दिन पाखण्डी मनुष्य से बातचीत न करे क्योंकि उससे वार्तालाप करने से सब धर्म नाश होजाता है १२९ प्रत्येकके कण्ठसे निकलेहुए नारायणजी के यशके गीतको सुनकर मूर्खलोग इसप्रकार तृप्त नहीं होतेहैं जैसे वीणाके शब्द को सुनकर कुत्ता तृप्त नहीं होताहै १३० और संतजन सब पाप नाश करनेवाले भगवान् के गीतको सुनकर हर्ष को इस प्रकार प्राप्त होते हैं जैसे हरिण वीणा के शब्दको सुनकर प्रसन्न होता है १३१ लक्ष्मीपति भगवान् के गीतोंको देखकर व्रत करनेवाले उत्तम नाच नाचते हैं और प्रसन्न होते हैं १३२ हे ब्राह्मण! जे व्रत करनेवाले भगवान् के मन्दिर में तृप्त नहीं होते हैं उनकी प्रत्येक जन्म में निरन्तर पशुता होती है १३३ जे व्रत करनेवाले एकादशी में गीतों को नहीं गाते हैं वे प्रत्येक जन्म में गूंगे होकर भ्रमते हैं १३४ भगवान् के आगे मृदंग आदिक बाजे बजाने चाहिये जिन से मधुसूदन भगवान् प्रसन्न होते हैं १३५ वैष्णव मनुष्य विष्णुजी के जागरणको करें उत्तम वेद वा पुराण को पढ़ैं १३६ एकादशी में रामायण, भागवत, व्यासजी के कहेहुए महाभारत तथा और भी पुराणों को पढ़ना चाहिये १३७ जे एकादशी में विष्णुजीके आगे पढ़ते और जे सुनते हैं वे प्रत्येक अक्षर में कपिलादान के फलको प्राप्त होते हैं १३८ वैष्णव मनुष्य आनन्दसमेत निद्रा जीत कर

रात्रि में जागरणकरै और मन से भगवान् को ध्यानकरै १३९ और एकादशी में वारंवार प्रदक्षिणा कर पृथ्वी में दण्ड की नाईं गिर कर भगवान् के नमस्कारकरै १४० तदनन्तर भक्तियुक्त व्रत करने वाला निर्मल प्रातःकाल हुए पंचमहायज्ञ कर दूधसे भगवान् को स्नानकराकर पूजनकरै १४१ फिर अपनीशक्ति से व्रतकरनेवाला मनुष्य ब्राह्मण को दक्षिणादेवे फिर द्वादशी में पारणकरै १४२ जो द्वादशी तिथिको लांघकर पारण करताहै तिसकी करोड़जन्मकी पुण्य इकट्ठी कीहुई नाश होजाती है १४३ व्रत के फलकी इच्छा करनेवाले बुद्धिमानोंको द्वादशीतिथि में पारण करना चाहिये त्रयो-दशीमें कभी न करना चाहिये १४४ हे ब्राह्मण! व्रतके दिनमें व्रत के फलकी इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य यत्न से रात्रि में नहीं सोवे १४५ निश्चय विना जागरण के व्रत निरर्थक होताहै इससे दोनों पक्षों में जागरण करना चाहिये १४६ जे एकादशी के व्रतको इस विधिसे करतेहैं वे सब सत्यही सत्य मोक्षको प्राप्त होते हैं १४७ हे जैमिनि! जन्म और मृत्यु के नाशकरनेका एक आदि कारण, भग-वान् के दिनके व्रतका साररूप एकादशीका व्रत इन्द्रादिक देवसमूहों कोभी करना चाहिये इससे निरन्तर यत्नसे तुमभी करो १४८॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे एकादशीमाहात्म्ये द्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय

एकादशी का माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! पूर्व्वसमय में कोचरश नाम राजा पृथ्वी में हुआ है यह शांत, परमधर्म का जाननेवाला, राजनीति के जाननेवालों में श्रेष्ठ १ सत्य बोलनेवाला, क्रोध जीतनेहारा, वैरियों का जीतनेवाला, नारायणजी के पूजन में परायण, हरिजीकी सेवा में रत और तत्पर था २ तिसकी सुप्राज्ञा नाम स्त्री हुई यह प्रिय बोलनेवाली, सब लक्षणों से युक्त, पतिकी सेवामें परायण, ३ एकादशी के व्रत में रत, सब प्राणियों के हितकी इच्छा करनेवाली, जातिस्मरा, महाभाग्ययुक्त, सुशीला और श्रेष्ठ वर्णवाली थी ४

परमार्थ का जाननेवाला यह राजा स्त्रीसमेत दशमी को कर निशीथिनी एकादशी में जागरण करने को उद्यत था ५ कि उसी अवसर में एक शौरि नाम ब्राह्मण महातेजस्वी तिस राजा के जागरण के मण्डप में आता भया ६ तिन आये हुए ब्राह्मण की नारायण में परायण, स्त्रीसमेत अत्यन्त प्रसन्नहोकर राजा पाद्य आदिकों से पूजा करताभया ७ यह सब तत्त्वों का जाननेवाला ब्राह्मण तिनके मध्य में बैठकर विष्णुजी की पूजा में परायण बहुत से व्रत करने वालों को देखता भया ८ कोई अनेकप्रकार के मनोरम फूल, चन्दन, धूप, दीप और अत्युत्तम भेंटों से हरिजीको पूजन करते थे ९ कोई आनन्द से गङ्गाजी की मिट्टीसे भूषित और तुलसीजी के पत्रों के माला से अलंकृत होकर हरिजी के आगे नाचतेथे १० कोई भगवान् के प्यारे व्रत करनेवाले करताल को लेकर भगवान् के ललित गीतों को गाते थे ११ कोई अत्युत्तम, सुन्दर अर्थ और कोमल अक्षरवाले स्तोत्रों से रोगरहित, संसार के स्वामी नारायणजी की स्तुति करते थे १२ कोई श्वेत चामर ठण्ढी पवन के लिये संसार के स्वामी हरिजी के ऊपर डुलाते थे और बड़ी प्रीतिको करते थे १३ कोई महात्मा सुन्दर, पवित्र, मंगलकारी वीणा आदिक बाजाओंको बजातेथे और कोई भगवान्‌को गाते थे १४ और राजा और रानी भी दोनों अत्यन्त प्रसन्न होकर सुन्दर गीत गाते और उत्तमनाच नाचते थे १५ तब ब्राह्मणों में उत्तम शौरिजी महात्मा, नाच और गीत आदि के करनेवाले राजा और रानी से मधुरवाणी से बोले १६ कि हे राजन्! तुम धन्यहो और तुम्हारी रानीभी धन्यहैं तुम दोनोंके ये मङ्गलकारी चरित्र पृथ्वी में दुर्लभ हैं १७ जिससे मैंने कोई उत्तम वैष्णव नहीं देखाहै इससे तुमसे कहताहूं तुझ राजासे यह पृथ्वी निस्संदेह धन्य हुईहै १८ हे राजन्! इस पवित्र, भगवान् के प्यारे, एकादशीकेव्रतको स्त्रीसमेत तुम करतेहो तिससे वैष्णवों में श्रेष्ठ हो १९ हे राजाओं में उत्तम! स्त्रीसमेत तुम सातों द्वीपों के एकही स्वामी हो जिससे प्रीति से नारायणजी के आगे नाचते और गाते हो २० ये तुम दोनों के चरित्र अद्भुत मैंने देखे तुम लोगों की यह अत्यन्त

निर्मल बुद्धि कैसे उत्पन्न हुई है २१ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस शौरि नाम ब्राह्मण के ये वचन सुनकर कुछ मुसकाकर सुप्राज्ञारानी ब्राह्मण से बोली २२ कि हे उत्तम ब्राह्मण! पूर्वकाल में हम दोनों अत्यन्त पापी एकादशीही के प्रभाव से महात्मा यमराज जी से छूटे हैं २३ हे विप्रेन्द्र! जातिस्मृति के प्रभाव से इस समय में भी परमधामकी कांक्षासे सुन्दर एकादशी के व्रतको करते हैं २४ तब शौरिजी बोले कि हे श्रेष्ठ करिहांव वाली रानी! यदि निश्चय अपनी पहलेकी जातिको जानती हो तो मुझसे कहो मेरे हृदय में सुनने का कौतुकहै २५ पहले तुम कौन थीं और तुम्हारे पति कौन थे और तुम दोनों पापियों को कैसे यमराजजीने छोड़दियाथा २६ तब सुप्राज्ञा रानी बोली कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यद्यपि यह वचन प्रकाश करनेके योग्य नहींहै तिसपरभी प्रकाशित करती हूं मैं रतिके शास्त्र में चतुर वेश्याथी २७ और तिस जन्म में मैंने नरक के क्लेश देनेवाले बहुत घोर पाप किये थे २८ और यह नित्योदय नाम शूद्र अपने आचार से वर्जित, पराई स्त्रीका हरनेवाला, क्रूर, पराई द्रव्य का हरनेवाला, २६ मदिरा पीनेवाला, मित्र का नाश करनेहारा, गर्भहत्या करनेवाला, पराई हिंसा करनेहारा, अत्यन्त अहंकारयुक्त, सदैव धर्मकी निन्दा करनेहारा ३० एक समय में अच्छे व्रत करने वाले जातिवालों से त्याग किया हुआ वेश्या के विभ्रम में लोलुप होकर नित्योदय मेरे स्थान को आताभया ३१ हे श्रेष्ठब्राह्मण! तब मैंने इस जवान को सुन्दर देखकर प्रीतिको प्राप्तहोकर भोगों से सन्तुष्ट किया ३२ हे तपोधन! फिर मेरे साथ भोगकर यह प्रेम से नम्रता से युक्त होकर यह बोला ३३ कि मैं सुरतशास्त्र का जाननेवाला और बान्धवों से त्याग कियागया हूं यदि आप यह योग्य समझें तो आपके साथ मैं भी यहीं रहूं ३४ हे ब्राह्मण! उसके ये नम्र वचम सुनकर स्त्रीभाव को प्राप्त होकर उसी के साथ मैं भी स्थित रही ३५ हे ब्राह्मणों में शार्दूल! कदाचित् हरिजी की एकादशी तिथि में देह देहके टूटनेवाली बड़ी पीड़ासे मैं युक्त हुई ३६ और ज्वरसे जर्जरदेह होकर मैंने डरसे अन्न और जल नहीं

पिया ३७ और मेरे स्नेहसे युक्तहोकर उसने भी अन्न और जलको न पीकर जन्मसे विषएणकी नाईं होगया ३८ तदनंतर रात्रिमें घीसे दीप जलाकर ज्वरसे अपहतचित्त होकर मैंने जागरण किया ३९ और हे नारायण! हे हरे! हे कृष्ण! मेरी रक्षा कीजिये यह कहकर वारंवार मैंने और उसने भी रात्रि में जागरण किया ४० हे ब्राह्मण! व्रतके प्रभाव और भगवान् के नामके उच्चारणसे हम दोनों के पाप नाश होगये ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तब निर्मल प्रातःकाल भगवान् सूर्यनारायण के उदय हुए में मैं ज्वर से पीड़ित होने के कारण नाशको प्राप्त होगई ४२ मुझको मरीहुई देखकर सबजनों से निन्दित और पवित्र इसने भी आत्महत्या कर प्राण खोदिये ४३ तब प्रकाशित अग्नि के समान नेत्रोंवाले यमराज के दूतोंने दृढ़फँसरी से बांधकर हम दोनोंको दुर्गम राहसे यमराज के यहां प्राप्त कर दिया ४४ तो यमराज की आज्ञा से चतुर चित्रगुप्तने हमलोगों के सब शुभ वा अशुभकर्म को मूलसे विचार किया ४५ और यमराज जी से बोले कि हे महाबाहो! यद्यपि ये दोनों महापापियोंमें श्रेष्ठ हैं तथापि एकादशी के व्रतसे पापों से छूट गये हैं ४६ जो विना इच्छा के पुण्यकारी एकादशी के व्रतको करताहै वह भी सब पापों से छूट कर परमधाम को जाता है ४७ जब चित्रगुप्तने इस प्रकार कहा तो महायशस्वी धर्मराजजी आसनसे उठकर शीघ्रही हम दोनों की वन्दना करते भये ४८ और पापसे हीन हम दोनों को सुगन्धित चन्दन, सुन्दर धूप, फूल, दीप और सोने के गहनों से भूषित करते भये ४९ और अमृत के समान मीठे अनेक प्रकार के फलोंसे प्रीतिसे हमलोगों को भोजन कराते भये ५० तदनंतर प्रभु यमराजजी सुन्दर स्तोत्रोंसे स्तुतिकर सुन्दर रथपर हम दोनों को चढ़ाकर हाथ जोड़कर यह बोले ५१ कि तुम दोनों पुण्यवानों में श्रेष्ठ और सब पापों से हीनहो इस समय में जहां पर भगवान् विष्णुजी हैं तहां को जाइये ५२ जब नम्रतायुक्त धर्मराजजी ने यह कहा तो वे दोनों यमराजजी के चरणकमलों में नमस्कार कर यह कहते भये ५३ कि हे देव! इसतरह से विष्णुजी के परमपद

को नहीं जाने योग्यहूं किन्तु हम दोनों के नरक देखनेकी आपके स्थान में वाञ्छाहै ५४ हे ब्राह्मण ! तब यमराजजीने हम दोनों को आज्ञा देदी तो सुन्दर रथपर चढ़कर विस्तारयुक्त, दुःखसे देखने योग्य नरकों को हम लोगोंने देखा ५५ तब ब्राह्मण बोले कि हे पतिव्रते ! तहां पर पापियों की जो जो व्यवस्था तूने देखी वे सब विस्तारसे हमसे कहने के योग्य हो ५६ हे सुन्दर करिहांववाली ! पुण्यात्मा और पापात्मा जिस जिस राहसे यमराजजी के स्थान को जाते हैं वह मुझसे विस्तारसे कहिये ५७ पुण्यात्मा प्रभु यमराजजी को किसप्रकार के देखते हैं और पुण्यात्माओं की सुख देनेवाली और पापियोंकी दुःख देनेवाली कैसी राहहै ५८ तब सुप्राज्ञा बोली कि ब्राह्मणों में शार्दूलरूप ! पहले मैं सुननेवालों के प्रीति बढाने-वाली पुण्यात्माओं की राहको कहतीहूं सुनिये ५९ भारी पत्थरों से बँधीहुई सुन्दर कपड़ों से आच्छादित, सब उपद्रवों से हीन पुण्यवानों की राह शोभित है ६० कहीं गन्धर्वों की कन्या अद्भुत गान गाती हैं कहीं कोमल शरीरवाली अप्सरा नाचती हैं ६१ कहीं पर मनोरम वीणाके शब्दको करती हैं कहींपर फूलोंकी वर्षा होतीहै कहीं ठंढी पवन चलती है ६२ कहीं ठंढे जलवाला पौसरा चलरहाहै कहीं पर भोजन की शालिका बनीहुई हैं कहीं देवता और गन्धर्व उत्तम स्तोत्र को पढ़ते हैं ६३ कहीं कहीं सुन्दर फूले कमलवाली बावली हैं कहीं पर सुन्दर छायावाले फूले अशोक आदिक वृक्ष हैं ६४ तहां उसी राह से पुण्यात्मा मनुष्य सुख से मृत्यु पाकर सुखपूर्वक चलेजाते हैं ६५ कोई अनेक प्रकार के गहनोंसे भूषित होकर घोड़ेपर चढ़कर उद्दण्ड सफेद छत्रों से मस्तकको आच्छादितकर जाते हैं ६६ कोई मनुष्य हाथीपर चढ़े कोई रथपर चढ़े और कोई विमानपर चढ़कर सुख से यमराजजी के स्थान को जाते हैं ६७ किसी मनुष्योंके ऊपर अप्सरा चामरोंकी हवा करती हैं और सुरर्षिलोग स्तुति करते हैं इसप्रकार से वे जाते हैं ६८ कोई पुण्यात्मा मनुष्य सुन्दर हथियार धारणकर माला और चन्दन से विभूषित होकर पानखातेहुए यम-राज के स्थानको जाते हैं ६९ कोई जलग्रहनिवासी अपने शरीर की

दीप्ति से दशों दिशाओं को प्रकाशित करतेहुए यमराज के स्थान को जाते हैं ७० कोई सुन्दर खीर को भोजन करते हुए तथा और भी सुन्दर भोजन करतेहुए राह में सुख से जाते हैं ७१ कोई दूध, कोई ईख के रस और कोई माठा पीतेहुए यमराज के स्थान को जाते हैं ७२ कोई दही, कोई अनेक प्रकार के फल और कोई पुण्यवान् शहद पीते हुए जाते हैं ७३ तदनन्तर तिन बहुतों को आये हुए देखकर प्रीति को प्राप्त होकर यमराजजी आपही नारायण होजाते हैं ७४ चारभुजा युक्त, श्यामवर्ण, फूले कमल के समान नेत्रवाले, शंख, चक्र, गदा और पद्म के धारण करनेवाले, गरुड़वाहनयुक्त ७५ सोने का जनेऊ धारे, कामदेव के समान पवित्र महान् मुखवाले, मुकुट, कुण्डल और वनमाला से विभूषित ७६ महाबुद्धिमान् चित्रगुप्तजी होजाते हैं और चण्ड आदिक सब यमराज के दूत भी नारायणजी के आकार मीठे वचन बोलनेवाले होजाते हैं ७७ तब आपही धर्मराजजी परम प्रीति को प्राप्त होकर तिन सब उत्तम मनुष्यों की मित्र की नाईं पूजा करते हैं ७८ और तिन पुण्यवान् मनुष्यों को सुन्दर रत्न फलोंसे भोजन कराकर तिन से यमराजजी बोलते हैं ७९ कि तुम सब नरकके क्लेशसे डरे हुए महात्मालोग अपनेही कर्म के प्रभावसे परमपदको जावो ८० जो मनुष्य संसार में जन्म पाकर पुण्य करता है वही मेरा पिता, भाई, बंधु, सम और मित्रहै ८१ हे श्रेष्ठब्राह्मण ! धर्मराज के इसप्रकार के कहने से वे सबलोग सुन्दर रथपर चढ़कर नारायणजी के पुरको चले जाते हैं ८२ हे उत्तम ब्राह्मण! पुण्यात्माओंकी गति तो मैंने संक्षेपसे कही अब पापात्माओं की गतिको विस्तारसे कहती हूं सुनिये ८३ दुष्टात्माओंकी राहका सब दुःखोंसे युक्त छियासी हज़ार योजनों का विस्तार कहा है ८४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! कहीं पर अग्निकी वर्षा होरही है कहीं पत्थरों की कहीं पर तपी हुई बालूकी ८५ कहीं कहीं तीक्ष्ण पत्थरोंकी कहीं तप्त पत्थरोंकी कहीं कहीं शस्त्रों की वर्षा कहीं अंगारों की वर्षा ८६ कहीं अग्निकी नाईं अत्यन्त तपीहुई पवन चलरही हैं जोकि गम्भीर, अंधकारनेवाली और तृणावर्तमुख हैं ८७ कहीं

कांटोंकी वर्षा बाणमय कांटोंसे होरहीहै, कहीं पर दुःखसे चढ़नेवाली, सांपोंसमेत पत्थर की सीढ़ियां हैं ८८ तहां पर सूखे कण्ठ, ओष्ठ और तालुवाले पापीलोग जाते हैं इस प्रकार बहुत भांति के क्लेश देनेवाले, छाया और जलसे हीन ८९ राहमें दुःखित पापी लोग जाते हैं नामहीसे बाल्लखोले, प्रेतों के आकार, भयंकर, ९० रक्तके समूह से डूबेहुए और कोई कीचड़ से भूषित और कोई कोई श्याम अंगवाले पापी राहमें जाते हैं ९१ कोई कष्टसे रोतेहुए, बहतेहुए आंशुओं से आकुल नेत्रवाले और अपने कर्मोंको कोई सोचते हुए पापी जाते हैं ९२ कोई पापियों के गले में चमड़ेकी फँसरी का बन्धन है कोई कंकाल में बांधे और कोई दोनों पांवों में बांधे हुए हैं ९३ कोई पापियों के सुइयों से चुभे हुए गले में क्रोध से यमराज के दूत दृढ़फँसरी देकर खींचते हैं ९४ कोई कानों के छेदों से भारी पत्थर जोकि राहमें पड़ेहुए हैं तिनको लिये जाते हैं और कोई पापी राह में लोहे के भारों को मस्तक में धरेहुए जाते हैं ९५ किसी के भुजाओं में यमदूत फँसरियां बांधकर लिये जाते हैं किसी पापियों के गर्दनों में दृढ़ हाथोंकी चोट देते हैं ९६ और घसीटते हुए यमराज के दूत लेजाते हैं कोई नीचे को शिर किये और कोई ऊपर को पांव किये जाते हैं ९७ कोई भुजाओं से और कोई एकही पांवसे जाते हैं इस प्रकार बुरे आकारवाले दुःखित शब्द से रोते हुए ९८ और यमराज के दूतों से ताड़ित होकर पापी तिस राहमें जाते हैं तिन सब पापियों के आने में क्रोधसे यमराजजी ९९ सुन्दर मूर्तिको छोड़कर अत्यन्त भयानक होजाते हैं और तीस योजनके बड़े अंगवाले, बावली के समान नेत्रवाले, १०० धूम्रवर्ण, महातेजस्वी, अत्यन्त लम्बे, घर्घर शब्दवाले, अत्यन्त बड़े दाँतोंवाले, सूपके समान नहोंकी पंक्तिवाले, १०१ प्रचण्ड भैंसेपर चढ़े, दांतों से ओष्ठों को चबाते हुए, दण्ड हाथ में लिये, चमड़ेकी फाँसवाले, टेढ़ी भौंहयुक्त मुखवाले, १०२ महामायायुक्त, क्रोध से लालनेत्र किये, समवर्त्ती, अट्टाट्टहास करतेहुए चित्रगुप्तजी प्रकाशित होते हैं १०३ और चण्डआदिक सब दूत फँसरी और मुद्गर

हाथों में लियेहुए, क्रोधयुक्त मेघोंकी नाईं गर्जतेहुए भयंकर होजाते हैं १०४ और यमराजके दूत जल्द छोड़ो छोड़ो पापियोंको काटो छेदो बेधो इस प्रकार चारों ओर दौड़तेहुए बकते हैं १०५ तिन सब पापियों, गिरेपड़ेहुओं को कालदण्ड से तर्जन कर हुंकार के शब्दों को छोड़कर धर्मराज प्रभुजी उनसे बोलते हैं १०६ कि रे रे पापी दुराचारियो ! तुम सब अज्ञानियों ने आत्मा के पीड़ा करने वाले पाप किये हैं १०७ मस्तक के ऊपर स्थित, जीवों के स्वामी समवर्त्ती मुझको जानकर भी तुमलोगोंने पाप किये हैं १०८ मैं पुण्यात्माओं का बन्धु और पापात्माओं का वैरी हूं यह कहीं पर तुम लोगोंने अपने कानों से नहीं सुना है १०९ नरक अनेक प्रकारके दुःखसंयुक्त दुःसह हैं तिनको पापीलोग भोग करते हैं यह तुम लोगोंने नहीं सुनाहै ११० तुमलोगोंने मेरी दुराशय चर्चा को झूठही मानकर पाप कियेथे इससमयमें सोई अपनी आंखों से देखिये १११ तुम सब सदैव द्रव्य से अन्ध होकर पापसमूहों को निरन्तर करते रहेहो ११२ रे दुष्टो ! पापके फलोंको भोग कीजिये रोनेसे क्या होगा सुप्राज्ञाबोली कि इसप्रकार यमराजदेव चित्रगुप्तसे बोले ११३ कि हे महाभाग ! इनके पापकर्मों को विचारिये तब धर्मराजके वचन सुनकर चित्रगुप्तजी तिस समय में ११४ तिनके जितने पापथे तितने कहते भये तब सब पापी रोनेलगे ११५ और चमड़े की फँसरी से बँधेहुए डरकर वे लोग यमराजजीसे यह कहते भये कि हे सूर्यके पुत्र ! हमलोगोंने जितने पाप किये हैं ११६ वा पूर्व समय में अशुभ वा शुभ कियाहै उसके कौन गवाही स्थित हैं ११७ तथा किसने देखा है वह हमारे आगे कहे तब हँसकर भगवान् यमराजजी बड़े कोपसे ११८ सब गवाहोंको बुलाकर यह बोलते भये कि आकाश, पृथिवी, जल, तिथि, दिन, रात्रि, दोनों संध्या और धर्म तुम सब इनपापियों के समीपके गवाही हो ११९।१२० तिनपापियों के सब शुभ वा अशुभ कर्मोंको जिस जिसकी वेलामें इन्होंने किये हैं वे सब कहो १२१ तब वह वह गवाही तिस तिसका यमराज के समीप कहने लगा तिसको सुनकर पापों से खींचे हुए मनवाले सब पापी

१२२ मेघों को देखकर हरिणों की नाईं कँपकँपीयुक्त हृदय होकर स्थित होते हैं और फिर दांतों की पंक्तियों से कड़कड़ शब्द करते हैं १२३ तब धर्मराजजी कालदण्ड से तिनको अलग अलग मारते हैं तो वे सब पापकर्म करनेवाले धर्मराज से ताड़ित होकर १२४ रोते और अपराध प्राप्त होकर अपने कर्मों को शोच करते हैं तदनंतर तिन सब पापियों को चण्ड आदिक दूत क्रोध से १२५ यमराजजी की आज्ञा से रौरव आदिक नरकों में छोड़ देते हैं किसी पापी को तपन नरक में किसी को अवीचि में १२६ किसी को संघात, कालसूत्र- महारौरव, तपीहुई बालू के कुण्ड में और किसी किसी को कुम्भीपाक में १२७ तथा कोई कोई पापियों को निरुच्छ्वास, महाभयानक, प्रमर्दन में किसी को घोर असिपत्रवन में तथा अनेक प्रकारके भक्षों में १२८ कोई कोई को वैतरणी में किसी किसी को तुष, अंगार, हाड़, और कांटोंसे पूर्ण, नित्यही तपेहुए भयानक विष्ठाके कुण्डमें कोई कोई को विष्ठाके लेपन तथा विष्ठा के भोजन १२९। १३० और कुत्ता के मांस के भोजन में छोड़ते हैं कोई कफ और कोई वीर्यको भोजन करते १३१ कोई पापी मूत्र और कोई लोहू पीते हैं किसी किसीके मुखों में सांपों के समान जोंकें १३२ और सांपही भयंकर यमके दूत पूरित करते और अत्यन्त सन्तप्तों से जीभों को निकाललेते हैं १३३ निर्दयी यमराज के दूत किसी किसी पापी के कानों में तप्त तेलों को छोड़ते हैं १३४ कोई कोई दुरात्माओं के भुजा, चरण, कान आदिक और नाकों को तलवार की धाराओं से काटलेते हैं १३५ कोई जलतेहुए अंगार के समूह में और कोई बाण के समान कांटों में सोते हैं १३६ यमराज के दूत किसी किसी पापियों के बालों को खींचकर उनको तपीहुई कीचों में छोड़देते हैं १३७ किसी किसीको वमनों में छोड़ते हैं और किसी किसी पापियों की संधियों में तपीहुई हज़ारों सुइयां वारंवार छोड़ते हैं १३८ किसी को तपीहुई लोह के शूल के अग्र में आरोपित करते हैं तीक्ष्ण कांटों से किसी किसी को मारते हैं किसी किसी के मस्तकों को पकड़कर १३९ हाथ और पांवों में शाल्मली वृक्ष के कांटों से क्रोधसे घसीटते हैं तब वे दीन शब्द

कर रोते हैं १४० यमराज के दूत काहू के गलों में पत्थरों को बांधकर रक्त और जल के गड़हों में वारंवार गिराते हैं १४१ और पापी मनुष्यों के शिरों को तोड़कर वारंवार क्रोध से पत्थरों से चूर्ण करते हैं १४२ किसी पापियों के रोतेहुए उनकी छाती के बीचों में लोहे की कीलोंकेसमूहों को गाड़ते हैं १४३ किसी पापियों के नेत्रोंको कटिये से निकाल लेते हैं और काहूकी नाकोंको बीछियोंसे भरदेते हैं १४४ यमराजके दूत किसी किसी के पांवोंको फँसरियोंसे वृक्षकी डालियों में बांध कर नीचे धुयें समेत अग्नि को जलाते हैं १४५ तब पाप करनेवाले नीचे का मुख और ऊपर को पांवोंको कर जबतक चन्द्रमा और नक्षत्र रहते हैं तबतक धुयें को पीते हैं १४६ यमराज के दूत मुशल और मुद्गरों से किसी को वारंवार ताड़ित करते हैं तब वे व्यथा से व्याकुल होकर रक्त को गिराते हैं १४७ कोई पापी पीबकी दुर्गन्ध युक्त अन्धकार समेत घर में डाँस और मसों से क्लेश पाते हैं १४८ कोई भस्म कोई कीड़े कोई दुर्गन्धित मांसों और कोई पूति मिट्टी को भोजन करते हैं १४९ कोई कुत्ते, व्याघ्र, सियार, वज्र के समान दांत और नहँवालों और रीछोंसे भक्षितहोकर रक्तसे बूड़कर रोते हैं १५० और कोई निरन्तर घोर विषवाले सांपों से भक्ष्यमाण होते हैं कोई की भैंसे के सींगों से छाती फटजाती हैं १५१ तब वे पृथ्वीको रक्तों से सींचते हुए मूर्च्छितहोकर गिरपड़ते हैं फिर यमराज के दूतोंके धनुषों से छोड़ेहुए सर्पों के समान घोर बाणों से १५२ सब देहजर्जर होकर कोई पृथ्वी में लोटते हैं फिर तपीहुई लोहके पिंडके तथा तपेहुए पत्थर के स्थान में रहते हैं १५३ और दंशशस्त्रों से किसी के वदनों को काट लेते हैं और यमदूत किसी किसी के मुखों और नाक के छेदों को १५४ श्वास की हवा रोकने के लिये भरदेते हैं और किसी के उद्धत, तीक्ष्ण धारावाली यमकी शक्तियों से १५५ महाबली यमदूत अंगके चमड़ों को उखाड़ लेते हैं और किसी किसी के बालों को पकड़कर पृथ्वी में गिराकर १५६ कीलों से सदैव चरण आदिकोंको पीड़ा देते हैं कोई पापी खारी जलकी धाराओंसे तपते हैं १५७ और बहुतप्रकार रोकर क्षारजल को पीते हैं कोई पापी पित्तको पीते हैं १५८ कोई श्रेष्ठ पापी

स्नुही के दूधोंको पीते हैं यमराज के दूत पृथ्वी में सोतेहुए किसी किसी की छातियों में १५९ पर्वतके समान, तपेहुए भारी पत्थरोंको धरदेते हैं और किसी किसी के गर्दन और गलों में दो काष्ठके टुकड़ों को देकर उदग्र मुखकर दृढ़ फँसरियों से बांध देते हैं और किसी को वृक्षकी डालोंमें चढ़ाकर पृथ्वी में गिरादेते हैं १६०।१६१ और उठाकर फिर पृथ्वी में छोड़ते हैं इसप्रकार वे सब पापी भूंखे प्यासे होकर १६२ रक्षाकरो रक्षाकरो यह कहतेहुए यातनाके घर में रोते हैं फिर युगके कल्प के अन्तपर्यंत नरकके दुःखों को भोगकर १६३ पापयोनियों में उत्पन्न होते हैं और वहांपर व्याधियों से पीड़ित होते हैं १६४ हीन अंग, अधिक अंगवाले, दुःखयुक्त, पापके सेवनकरनेवाले, पुत्रहीन, अत्यंतमूर्ख, पराई हिंसा में परायण १६५ थोड़ी उमर और थोड़ीबुद्धि वाले बुरीस्त्री के स्वामी होते हैं और कर्म, मन और वाणीसे नित्यही पापोंको करते हैं १६६ तो फिर पाप के प्रभावसे पहलेकीनाईं नरक को जाते हैं तिससे सज्जनों को कभी पाप न करना चाहिये १६७ क्योंकि पाप करनेवाले मनुष्यों की नरक से निष्कृति नहीं होती है हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! संक्षेपसे मैंने पापियोंके दुःखको कहाहै १६८ अच्छे प्रकार कहनेमें सैकड़ों अयुतों में कोई समर्थ नहींहै तब पापकरनेवाले मनुष्योंकी दुर्गतियों को देखकर १६९ हमलोग विमानपर चढ़कर नारायणजी के पुरको जातेभये हज़ारकरोड़ कल्प भगवान् के घरमें भोगोंको भोगकर १७० इस शुद्धराजवंश में हम दोनों उत्पन्नहुए हैं यहांपर सब सम्पत्तियुक्त सम्पूर्ण भोगों को भोगकर १७१ सुख से मृत्युपाकर परमपदजानेकी इच्छा करते हैं एकादशी के व्रतके बराबर तीनोंलोक में और व्रत नहीं है १७२ कि विना इच्छाके जिसको करके हमदोनोंकी इस प्रकारकी गति हुई है और जे भक्तिभावसे एकादशी के व्रतको करते हैं १७३ उनका भगवान् की कृपासे मैं नहीं जानती हूं कि क्या होता है हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सब तुम से पूंछेहुएको मैंने कहा १७४ और एकादशी के माहात्म्यको क्या सुननेकी इच्छाकरते हो व्यासजी बोले कि परमार्थ का जाननेवाला ब्राह्मण रानी के ये वचन सुनकर १७५ एकादशीके व्रत में अपने दृढचित्तको करताभया

और राजा और उनकी रानी बहुतकाल पृथ्वी को भोगकर १७६ अन्तकाल में विष्णुजी के पुरको जाकर परमपदको प्राप्त होते भये जे इस व्रतों में राजा एकादशी के व्रत के माहात्म्य को सुनते वा पढ़ते हैं १७७ वे पापसमूहों से छूटकर भगवान् के समीप में प्राप्त होते हैं १७८ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेएकादशीमाहात्म्येत्रयोविंशातितमोऽध्यायः२३॥

चौबीसवां अध्याय

तुलसीजी का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक! एकादशी के फलको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होकर जैमिनि हाथ जोड़कर प्रभु, कृष्ण, व्यासजी से बोले १ कि आपके प्रसाद से विष्णुदेवजी के माहात्म्य को मैंने सुना अब सुननेवालों के पापों के नाश करनेवाले तुलसीजीके माहात्म्य को कहिये २ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि! यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के फलकी देनेवाली, भगवती, तुलसी इन्द्रादिक सब देवताओं से सेवने योग्य है ३ स्वर्ग, मनुष्यलोक और पाताल में तुलसी सज्जनों को दुर्लभ है धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके फलकी प्राप्ति करनेवाला तिसमें निश्चय भक्तिको करै ४ जहांपर एक तुलसीका वृक्ष स्थित होताहै तहांपर ब्रह्मा, विष्णु और महादेव आदिक सब देवता स्थित होते हैं ५ तुलसीपत्ते के बीच में केशव भगवान् पत्रके आगे ब्रह्माजी और पत्रके मूलमें शिवजी सदैव स्थित रहतेहैं ६ लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री, चरिडका तथा और सब देवोंकी स्त्रियां तुलसीके पत्रोंमें बसतीहैं ७ इन्द्र, अग्नि, यमराज, नैर्ऋति, वरुण, पवन और कुबेर तिसकी डालमें बसते हैं ८ सूर्य आदिक सब ग्रह, विश्वेदेवा, वसु, मुनि सब देवर्षि ९ और पृथ्वी में करोड़ ब्रह्माण्डों के बीच में जितने तीर्थ हैं वे सब तुलसी के दलमें आश्रित होकर सदैव बसते हैं १० जो भक्तिभाव से युक्त होकर तुलसीको सेवताहै उसने तीर्थ और ब्रह्मादिक सब देवताओंको सेवन कियाहै ११ जे मनुष्य तुलसीकी जड़ में उत्पन्न तृण के समूहों को

काटडालते हैं तो उनके शरीर में स्थित ब्रह्महत्या को भी भगवान् तिसी क्षण में नाश करदेते हैं १२ हे श्रेष्ठब्राह्मण ! गरमी में सुगन्धित शीतलजलों से तुलसीजी को सींचकर मनुष्य मोक्ष को प्राप्त होता है १३ गरमियों में चँदोवा वा क्षत्र जो तुलसीजी को देताहै वह विशेषकर सब पापों से छूटजाता है १४ जो मनुष्य वैशाख में अक्षत धारायुक्त जलों से तुलसीजी को सींचता है वह नित्यही अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्त होता है १५ जो अंजलिभर जलसे तुलसीजी को सींचताहै वह सब पापों से रहित होकर स्वर्ग को प्राप्त होता है १६ हे विप्रर्षे ! जो उत्तम मनुष्य कदाचित् दूधों से तुलसीजी को सींचता है तो उसके घरमें निश्चल लक्ष्मीजी होती है १७ जो मनुष्य गऊ के गोबरों से तुलसीकी जड़ को लीपते और बहारते हैं तो उसके पुण्य फल को सुनिये १८ तहां पर जितनी धूलि दूर होजाती है तितनेही हज़ार कल्प वह विष्णुजीके साथ आनन्द करताहै १९ जो तुलसीजीके नीचे संध्या में दीप जलाता है वह करोड़कुल संयुक्त विष्णुजी के मन्दिर को जाता है २० जो गऊ, कुत्ते, गदहे, मनुष्य और बालकों से तुलसी जी की रक्षा करता है उसकी भगवान् सदैव रक्षा करते हैं २१ जो मनुष्य भक्तिसे तुलसीजीको लगाताहै तो वह मरकर निस्संदेह परम मोक्ष को प्राप्त होता है २२ जो भक्तियुक्त उत्तम मनुष्य प्रातःकाल तुलसीजीको देखता है वह विष्णुजी के नाशरहित दर्शन के फलको प्राप्त होता है २३ जो भक्तियुक्त मनुष्य तुलसीजी के प्रणाम करता है उसकी उमर, बल, यश, द्रव्य और संतति बढ़ती है २४ तुलसीजी के स्मरणसे सब पाप नाश होजाते हैं और छूनेसे मनुष्योंकी व्याधियां नाश होजाती हैं २५ जो शुभ, सबपापों के नाश करनेवाले तुलसीके पत्रको खाताहै तो उसके शरीर के भीतर के स्थित पाप तिसी क्षण से नाश होजातेहैं २६ जो मनुष्य तुलसी के काष्ठके मालाको धारण करताहै तो उसके देह में पाप नहीं रहते हैं यह मैं सत्यही कहताहूं २७ जो तुलसी के पत्र से गिरेहुए जलको शिर में धारण करताहै वह गंगाजी के स्नान के पुण्यको निस्सन्देह प्राप्त होताहै २८ जो मनुष्य दूब, अक्षत, फूल और नैवेद्योंसे शुभा तुलसीजी को आराधनकर

विष्णुजी की पूजा के फलको प्राप्त होताहै २९ जिसने कभी भगवती तुलसीको नैवेद्य, फूल, श्रेष्ठधूप और घीके दीपों से पूजन कियाहै उस को धर्म, अर्थ, काम और परम मोक्ष के देनेवाले विष्णुजी के चरणों के पूजन के प्रयोगों से क्या है कुछभी आवश्यकता नहीं है ३० हे ब्राह्मण! दोषरहित स्थानोंमें जे देवसमूहों से सेवने योग्य, भगवान् की प्रसन्नता करनेवाली तुलसी को लगाते हैं उनको तीनों लोकों के स्वामी, मुरारि भगवान् प्रसन्नहोकर शीघ्रही परमपद देते हैं ३१ मनुष्य यज्ञ, व्रत, पितृ पूजन, भगवान्की पूजा, दान तथा और भी शुभकर्म जो दोषरहित तुलसी के नीचे करते हैं वे सब निश्चय नाश रहित होते हैं ३२ हे श्रेष्ठब्राह्मण! मनुष्य पृथ्वी में नारायणजी की अत्यन्तप्यारी तुलसीजी के विना जो धर्म कर्म करता है तो वह सब निष्फल होता है और कमलनयन देवों के देव भगवान् भी प्रसन्न नहीं होते हैं ३३ जो भक्तिभाव समेत मनुष्य शुभकारिणी, पवित्र तुलसीजी को यात्राओं में देखता है तिसका भगवान् के प्रसाद से निश्चय शीघ्रही सब यात्रा का फल सिद्ध होता है ये मेरे वचन अत्यन्त दृढ़ हैं ३४ संसार के एक स्वामी अनन्त भगवान् कल्पवृक्ष, कुन्द और कमल आदिक सुगन्धित फूलों को छोड़कर सद्गुण युक्त, पाप समूहों के नाश करनेवाली सूखी भी तुलसी को आनन्द से ग्रहण करते हैं ३५ जे पापी पृथ्वी में अमृत लता की दीप्ति युक्त आदि कारण तुलसीजी को अज्ञान से उखाड़कर फेंकदेते हैं तो तुलसीजी के प्रिय भगवान् निरन्तर तिनकी लक्ष्मी को सत्यही हर लेते हैं ३६ जे मनुष्य तुलसीजी के नीचे मूत्र और विष्ठा करते हैं और निरन्तर मैला रखते हैं तिन देव के आश्रय इकट्ठे कियेहुए पाप वालों के धनों को भगवान् शीघ्रही नाश करते हैं ३७ हे शुभे! हे महाभागे! तुलसीजी! नारायणजी की पूजा के लिये तुमको तोड़ते हैं तुम्हारे नमस्कार है केशव भगवान् सुगन्धित कल्पवृक्ष आदिक फूलोंसे भी तुम्हारे विना प्रसन्न नहीं होते हैं इससे तुमको तोड़ते हैं क्योंकि तुम्हारे विना सब कर्म निष्फल होता है ३८। ३९ इससे हे तुलसीदेवि! तुमको तोड़ता हूँ वर देनेवाली होवो हे देवि! तो-

ड़नेसे उत्पन्न दुःख जो तुम्हारे हृदयमें हुआहो ४० तो हे संसार की स्वामिनी तुलसी जी! उसको क्षमा कीजियेगा तुम्हारे मैं नमस्कार करता हूं हाथ जोड़कर वैष्णव मनुष्य इन मंत्रों को पढ़कर ४१ दो करताल देकर इसतरह से तुलसीदल को तोड़े कि तुलसी जी की डाल न कँपनेपावे ४२ जो तुलसीदल के तोड़ने में डालटूटजाती है तो तुलसीजी के स्वामी विष्णुजी के हृदयमें कष्ट उत्पन्न होता है ४३ और जो डाल के अग्रसे पुराने पत्र पृथ्वी में गिरपड़ते हैं तो उनसे भी मधु और कैटभ दैत्य के नाश करनेवाले गोविन्दजी पूजने चाहिये ४४ कोमल तुलसीदलों से जो अच्युत प्रभुजी को पूजन करताहै तो वह चित्त से जो जो इच्छा करताहै तिस सबको शीघ्रही प्राप्त होता है ४५ जैमिनि बोले कि हे सत्यवती के पुत्र! ब्राह्मणों में श्रेष्ठ व्यासजी! तुलसी के वृक्ष के समान कौन वृक्ष है तिसको मैं जानने की इच्छा करता हूं कहिये ४६ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण! जैमिनि! जैसे विष्णुजी के निरन्तर तुलसी जी प्यारी हैं तैसेही सब पाप नाश करनेवाला आंवलाभी है ४७ तुलसी के वृक्ष को प्राप्त होकर जौन जौन देवता स्थित होते हैं वे सब आंवलाके नीचे भी बसते हैं ४८ जहां पर पवित्र, विष्णुजीकी प्यारी धात्री (आंवला) स्थितहोती है तहांही गंगा आदिक तीर्थ स्थितहोते हैं ४९ इसके नीचे मनुष्य अशुभ वा शुभ जो कर्म करता है वह सब सत्यही नाशरहित होता है ५० पवित्र और नवीन आंवला के पत्रोंसे जो भगवान् को पूजता है वह पाप के जालसे छूटकर भग-वान् के सायुज्य को प्राप्त होता है ५१ आंवला और तुलसी जिस स्थान में नहीं स्थित होते हैं तो वह स्थान अपवित्र होताहै और क्रियाका फल वहां नहीं मिलताहै ५२ जिस स्थानमें शुभतुलसी और आंवला नहीं स्थित होता है तो तिसका कियाहुआ निश्चय सबकर्म्म निष्फल होजाता है ५३ हे ब्राह्मण! आंवला और तुलसी से हीन जिसका स्थान है वहांपर लक्ष्मी जी नहीं रहती हैं सबपाप उसने किये हैं और तिसने कलियुग को प्रसन्न किया है ५४ हे श्रेष्ठब्राह्मण! जिसस्थानमें आंवला और तुलसी नहीं हैं

वह स्थान तत्त्वदर्शियों को श्मशान के समान जानना चाहिये ५५ आंवला और तुलसी जहां स्थित होते हैं तहांपर सब देवता स्थितहोते हैं और जहां आंवला और तुलसी का पत्र नहीं होता है तहांही सबपाप रहतेहैं ५६ जो पण्डित पाप हरनेवाली धात्री (आंवला) फलके मालाको धारण करता है तिसकी देह में लक्ष्मी जी समेत विष्णुजी आश्रितहोकर स्थितहोते हैं ५७ जो बुद्धिमान् मनुष्य आंवले के काष्ठकी मालाको धारण करता है तो तिसकी देह में आश्रितहोकर सब देवता स्थित होते हैं ५८ आंवले के फलके माला को ग्रहणकर जो शुभ वा अशुभ कर्म मनुष्य करता है वह सब नाशरहित कहाताहै ५९ जो सबतत्त्वोंका जाननेवाला मनुष्य आंवले के फलको भोजनकरताहै तो उसकी देहके भीतर के सबपाप नाश होजातेहैं ६० हे श्रेष्ठब्राह्मण ! जो आंवलेके फलोंकी मालाको धारण करताहै तो उसके सबपाप नाशकरनेवाले श्रेष्ठ माहात्म्यको कहता हूं सुनिये ६१ जो दैवयोगसे श्मशान में भी तिसकी मृत्यु हो तोभी वह गङ्गाजीके मरण से उत्पन्न पुण्यको निस्संदेह प्राप्तहोताहै ६२ और तिसको देखकर सबपापी सैकड़ों करोड़ जन्मों के कियेहुए घोरपापसमूहोंसे शीघ्रही छूटजाते हैं ६३ हे विप्रेन्द्र ! जो आंवलेके फलके कीचड़को नित्यही ग्रहणकरताहै वह निस्सन्देह दिन दिन में पुण्यको प्राप्तहोता है ६४ जो सब देवसमूहों के आश्रय आंवले के वृक्षको काटताहै वहनिस्संदेह भगवान् के अंगकोकाटताहै ६५ धात्री सब देवमयी और विशेषकर भगवान्‌की प्यारीहै तिसके अच्छे प्रकार गुणकहनेमें ब्रह्माजीभी नहींसमर्थहैं ६६ जो सबतत्त्वोंका जाननेवाला आंवला और तुलसीकी भक्तिकोकरताहै वह सबभोगोंको भोगकर अन्तसमयमें भगवान् के प्रसादसे मुक्तिकोप्राप्त होताहै ६७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेतुलसीमाहात्म्यंनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पचीसवां अध्याय

इतिहास समेत तुलसी और अतिथि के माहात्म्य का वर्णन ॥

जैमिनिजी बोले कि हे महाभाग ! व्यासजी ! फिर पाप नाश करने

वाले तुलसी और अतिथि के पूजन के माहात्म्य को विस्तारसे कहिये १ सूतजी बोले हे श्रेष्ठ ब्राह्मण शौनक! तब महातेजस्वी व्यासजी सुननेवालों के पाप नाश करनेवाले माहात्म्यके कहने का प्रारम्भ करतेभये २ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह साक्षात् महालक्ष्मी, भगवान्‌की प्यारी तुलसीहै तिससे इसको वृक्षके ज्ञान से नहीं देखते हैं ३ जैसे मनुष्य पृथ्वी में सदैव तुलसीजी को सेवन करता है तैसे ही इन्द्रादिक देवता उसको देवस्थान में सेवन करते हैं ४ यह परब्रह्म की स्वरूपवाली तुलसी जहां स्थित होती है तहांही सब कुशल होतीहै यह मैंने सत्यही कहा है ५ जो पापी भी मृत्युसमय में तुलसीके पत्रयुक्त जलको प्राप्त होता है तो वह भी भगवान् के समीप जाताहै ६ जो मृत्युसमय में तुलसीकी मिट्टी के पुण्ड् को धारण करताहै तो वह सब पापों से छूटकर भगवान् के पुर को जाता है ७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मृत्युसमय में जिसके मुख, शिर और कानों में तुलसीपत्र होता है तिसके स्वामी यमराजजी नहीं होते हैं ८ एक परमार्थ का जाननेवाला बुद्धिमान् पवित्र नाम ब्राह्मण हुआ है तिसकी ब्राह्मणी बहुला नाम हुई है ९ यह अच्छे वंश में उत्पन्न, पतिव्रता, पतिकी सेवा में परायण थी और तहांही अनपत्यपति नाम उत्तम ब्राह्मण था १० तिस ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले ब्राह्मण से यह पवित्र ब्राह्मण मित्रता करता भया तब अनपत्यपति के साथ कथा के लोभ से ११ यह पवित्र ब्राह्मण स्नेह से एक श्रेष्ठ आसन में बैठता भया तिसी अवसर में महातेजस्वी लोमश नाम ब्राह्मण १२ आकर चित्र विचित्र कथा कहतेहुए तिन दोनों ब्राह्मणों को देखते भये तब दोनों ब्राह्मण आसन से उठकर लोमश ब्राह्मणकी १३ पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय आदि कों से पूजा करते भये तब नारायण में परायण लोमशजी तिन दोनों के ऊपर प्रसन्न होकर १४ भगवान्‌को कीर्तन करते हुए आसन में बैठते भये आसन में स्थित महात्मा लोमशजीसे पवित्र और अनपत्यपति दोनों मुनि भक्तिसे हाथ जोड़ कर बोले कि हे भगवन्! हे सब धर्म के जाननेवाले! आपके दोनों

चरण सज्जन मनुष्यों से ग्रहण करनेयोग्य हैं तिनसे हम लोगों का यह स्थान निश्चय पवित्र हुआहै हमलोगोंने मोहसे जितने पापकिये हैं १५।१७ वे सब आपके दोनों चरणों के दर्शन से नष्ट होगये आप साक्षात् नारायण और देवताओं से भी पूजने योग्य हैं १८ क्या आप का अच्छे प्रकार पूजन करने में हम दोनों मनुष्य समर्थ हैं अर्थात् नहीं हैं जो अपनी शक्तिसे हम लोगोंने अतिथि आपकी पूजा की है १९ उसीसे आप प्रसन्न होकर हम दोनों के दोषों को क्षमा कीजिये ऐसा कहकर दोनों महात्मा समान उमरवाले गृहस्थ अतिथि लोमशजी के दोनों चरणों में गिरते भये २० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तब विद्वानों में श्रेष्ठ! लोमशजी भक्तिसे संतुष्ट होकर बोले कि तुम दोनों श्रेष्ठ ब्राह्मण नम्रतायुक्तों में श्रेष्ठ और धर्म में तत्परहो २१ तुम्हारी नम्रता की उक्तियों से मैं प्रसन्न हुआ हूं क्योंकि पण्डितोंने अतिथि को साक्षात् ब्रह्मा, शिव और विष्णु कहा है २२ तिस अतिथि में तुम लोगों की इतनी भक्ति है इससे तुम्हारा मंगल होवे बड़े भोजनों से मुझ अतिथिकी तुम लोगोंने अच्छे प्रकार आराधना की है २३ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तब उठ कर दोनों ब्राह्मण लोमश मुनिके दोनों चरणों में फिर नमस्कार कर बोले २४ कि हे ब्रह्मन्! अतिथि की पूजा के माहात्म्य कहनेके आप योग्यहैं जिसको करके मनुष्यों से दुःख से प्राप्त होने योग्यभी मुक्ति प्राप्त होती है २५ संसार में कौन अतिथि कहाता है और तिसकी पूजा कैसी होतीहै अतिथि और अतिथिकी पूजाकरने वाला ये दोनों किस गतिको प्राप्त होते हैं २६ तब लोमशजी बोले कि वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी और संन्यासी के पूजनसे चारों आश्रमों में घर श्रेष्ठ कहाताहै २७ चारों आश्रमोंके मध्यमें गृहस्थ लोग प्रधान कहाते हैं तिन भक्तियुक्त गृहस्थों को अतिथियों की पूजा करनी चाहिये २८ अतिथियों का पूजन यही गृहस्थों का परमधर्म कहाहै आश्रम के आचार से भ्रष्ट नहीं हुए वेही गृहस्थ कहाते हैं २९ यदि गृहस्थ अतिथियों की पूजा में निपुणता करते हैं तो उनको और पुण्यकर्मों से कुछ प्रयोजन नहीं है ३० जिसका नाम, गोत्र और

रहने का स्थान नहीं सुना है और अकस्मात् घरको आवे तो उसी को पण्डित लोगों ने अतिथि कहा है ३१ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्रही जो घर में आवें तो तत्त्वदर्शी लोग उनकी विष्णुजी की नाईं पूजन करें ३२ चाण्डाल इत्यादिक और भी जो हीनवर्ण में उत्पन्न हुएहों वेभी पाद्य, अर्घ्य और बहुत भोजनों से विष्णुजी की नाईं पूजन करने योग्य हैं ३३ अतिथियों के आने में गृहस्थ ब्राह्मण शीघ्रही जाकर पाद्य और अर्घ्य आदिक देवे ३४ कोमल अक्षर वाले वचनों से कुशल पूंछै आनन्द से सुन्दर भोजनों से भोजन करावे ३५ और पण्डित मनुष्य सुख देनेवाले मन्दिरमें सुलावे और प्रातःकाल जाने की इच्छा देखकर जानेदेवे ३६ यदि कर्मके विपाक से गृहस्थ द्रव्यवान् हो तो जिस आतिथ्यसे अतिथि पूजना चाहिये तिसको मैं कहता हूँ ३७ अतिथियों के आने में गृहस्थ भक्ति से तृण आदिकों को देवे और तृण के अभाव में भक्ति से यह कहे कि पृथ्वी में स्थित हूजिये ३८ पांव धोने के लिये उत्तम जल देवे और मीठी वाणी से कुशल आदिक पूंछै ३९ तदनन्तर भक्ति से भोजन के हेतु फल आदिक देवै और जो अभाव हो तो आनन्द से बुद्धि-मान् मनुष्य प्रकाशित करदेवै ४० और कहै कि हे अतिथे ! मैं महापापी और दरिद्रियों में श्रेष्ठ हूं आपकी भक्ति करनेकी इच्छा करताहूं परन्तु दैवतंत्रविरोधक है ४१ इस विधि से दीन मनुष्य अतिथिके पूजनको छोड़कर अपने आचार से पतित नहीं होता है यथोक्त फल को प्राप्त होता है ४२ जिस गृहस्थ के घर से विना पूजे अतिथि चला जाता है तो उसके करोड़ जन्म की इकट्ठा की हुई पुण्य नाश होजाती है ४३ जिसने भक्तिभाव से एक भी अतिथि को पूजा है तो हरिजी उसके करोड़ जन्म के पापों को शीघ्रही नाश कर देते हैं ४४ यह मैं यत्न से सत्य, हित और दृढ़ कहताहूँ गृहस्थकी विना अतिथि की पूजाओं के गति नहीं है ४५ यह सत्यही सत्य है कि अतिथि की पूजा के विना गृहस्थोंकी गति नहीं है ४६ द्वापरयुग में ज्ञातिधर्म नाम से प्रसिद्ध गोप सब धर्मों का जाननेवाला था तिस की श्रीवल्लभा स्त्री थी ४७ तिस जाति की सेवा करनेवाले ने सब

कर्म किये और तिस स्त्री समेत सौराष्ट्रदेश में स्थान किया ४८ तहांपर दुष्ट ग्रह के संचार से इन्द्र बारहवर्ष जल न बरसते भये तो इससे बड़ाभारी दुर्भिक्ष होताभया ४९ तिस भारी दुर्भिक्ष होने में तिस के देश के वासी मनुष्य सब दुःखित होकर मर्यादा को भी छोड़ देते भये ५० और महायोगी ज्ञानभद्र द्वापर युग में दुर्भिक्ष से संपत्ति नाश होकर अत्यन्त दुःखित होता भया ५१ और भूंख से व्याकुल पुत्र और स्त्रियों को देखकर फल और मूलों को भोजन के लिये लेने को पहाड़ के नीचे जाते भये ५२ वहांपर बहुत उमरवाले इस भूंख से व्याकुल ने एक कुम्हड़े के फल को पाया ५३ और महायशस्वी यह उस फल को लेकर प्रसन्नता युक्त होकर शीघ्रता से अपने स्थान को आता भया ५४ इसी अवसर में मेघों से आकाश आच्छादित होकर वर्षा होती भई ५५ तब इस मुनि की वर्षा से सब देह भीगगई फिर वन से एक वन का रहनेवाला शीत से व्याकुल होकर इनके घरको आताभया ५६ तब इन्होंने शीत से पीड़ित अतिथि को देखकर शिर से वन्दना किया और भक्ति से तृण का आसन और पाद्य आदिक तिसको दिया ५७ फिरि मीठी वाणी से तिसी अतिथि के साथ स्वस्थ मन होकर बुद्धिमानी से बातचीत करतेहुए स्थित होते भये ५८ फिर स्वामी की सेवा में निपुण स्त्री समेत गोपने नवीन कुम्हड़ेको यत्नसे पकाया ५९ तब गोप की स्त्री ने इस कुम्हड़े के पाने से प्रसन्न होकर भाग बनाकर पतिको कुम्हड़ा देती भई तदनन्तर बीस दिन के व्रत से दुर्बल अतिथि के संस्कार करनेवाले गोपने आनन्द से अपना भाग अतिथि को देदिया तिस पीछे स्वामी की भक्ति में परायण उसकी पतिव्रता स्त्रीने भी ६०।६१ आनन्द से तिस अतिथि को अपना भी भाग देदिया तब अतिथि उन महात्मा स्त्री पुरुषों के ६२ दोनों भागों को भोजन कर अत्यन्त प्रसन्न होता भया क्योंकि उन्हों ने दृढ़ भक्ति से विष्णुजी की नाईं अतिथि को पूजा ६३ तब अतिथि रात्रि में वहीं विश्रामकर प्रातःकाल जाता भया इस प्रकार व्रत से इक्कीस दिन उन दोनों महात्मा स्त्री पुरुषों को बीत गये तब तो दोनों नाश

को प्राप्त होगये और तिसी पुण्य के प्रभाव से महाशय स्त्री पुरुष ६४। ६५ योगियों के भी दुर्लभ विष्णुसायुज्य को प्राप्त होते भये तिन दोनों की अतिथिपूजा के पुण्यके प्रभावसे ६६ तिस राज्य में दुर्भिक्ष नष्ट होजाता भया तब मनुष्य अत्यंत सुखी, शोक और व्याधि से वर्जित ६७ धन धान्यादि से युक्त और धर्म में तत्पर होतेभये चोर नाश होगये राजा मनुष्यों का पालक होता भया ६८ मनुष्य अपने आचार में रतहुए मेघ आवश्यकतापर बरसते भये और उस स्त्री समेत गोप के पहले और पीछे के करोड़ पुरुष ६९ तिसी कर्म से पापरहित, निर्दोष, धनयुक्त और सब मनुष्यों से पूजित होकर मुक्ति को प्राप्त होगये ७० और शोक और व्याधिसे रहित तिनकी संतति बढ़ती भई लोमशजी बोले कि प्रशन्न तुम दोनों ब्राह्मणों से इतिहास समेत अतिथिकी पूजा का माहात्म्य मैंने कहा अब क्या सुनने की इच्छा है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस तपस्वी लोमशजी के इसप्रकार कहने से ७१। ७२ कालसे ग्रसाहुआ काला मूसा अपने बिल से निकलताभया तिसको निकलते देखकर क्रोध से विह्वल ७३ पवित्र ब्राह्मण वारंवार यह कहता हुआ उठा कि यह पापी दुष्ट मूसा रात्रि में स्थानको ७४ और घरकी द्रव्यको तीक्ष्ण दांतों के समूहों से गिराता है सब वर्णों को कृपा श्रेष्ठ कहीगई है ७५ वह सब में करनी चाहिये परन्तु दुष्ट प्राणियों में न चहिये ऐसा कहकर पवित्र ब्राह्मण पापी मूसेको ७६ अत्यन्त तीक्ष्ण बाणसे मारतेभये तब वह कालको प्राप्त हुआ मूसा बहतेहुए रक्तकी धाराओं से सब अंग डूबकर ७७ व्यथा से हतचेतन होकर पृथ्वी में गिर पड़ता भया तिस मूसे के गिरने में दयालु श्रेष्ठ ब्राह्मण, ७८ हाहा-कार कर शीघ्रही उठकर अपने कान से उत्तम तुलसीपत्र को लेकर ७९ मूसे के मुख, मस्तक और कानों में देकर बोले कि हे मातः! हे गोविन्दजी को आनन्द करनेवाली! हे तुलसी देवि! ८० आप इस पाप करनेवाले मूसे को उत्तम गति कीजिये ऐसा कहकर सब मनुष्यों के उपकार करनेवाले ब्राह्मण ८१ हरे, नारायण, अनन्त यह ऊंचे स्वर से शब्द करतेभये तब तो तुलसीपत्रके स्पर्श से मूसा

पापरहित होगया ८२ और भगवान् के नाम सुनने से संसार के बन्धन से छूटगया तब महाविष्णुजी के सब लक्षणसंयुक्त दूत ८३ तिस पापरहित मूसे के लेने के लिये शीघ्रही सुन्दर रथोंको लेकर आये तो विष्णुजी के दूतगणों से युक्त होकर मूसा सुन्दर रथपर चढ़कर ८४ परमधाम को जाताभया और वहां नारायणजी के स्थान में हज़ार करोड़ युग स्थित होकर ८५ तहांही ज्ञानको प्राप्त होकर मोक्ष को प्राप्त होगया व्यासजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण जैमिनि! हे महाभाग! तुलसी देवी का माहात्म्य तो तुम से कहा अब इस समय में क्या सुनने की इच्छा है ८६। ८७॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारे पंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय

युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी! हे महाभाग! अत्यन्त भयानक कलियुगके प्राप्त होने में सब मनुष्य किस प्रकार के होते हैं यह मुझसे कहिये १ तब व्यासजी बोले कि पहले सतयुग में ब्राह्मण आदिक मनुष्य भगवान् की पूजन में परायण, शोक और व्याधि से वर्जित, २ सत्य बोलनेवाले, सब दया समेत, बहुत समयतक जीनेवाले, धन और धान्यादि से युक्त, हिंसा और दम्भ से वर्जित, ३ पराये उपकार करनेवाले, सब शास्त्रों के जाननेवाले इस प्रकार के सब मनुष्य सतयुग में थे ४ और राजधर्म के ग्रहण करनेवाले, मनुष्यों के पालन करनेहारे राजा थे सतयुगके गुण और यश कहने में कोई समर्थ नहीं है ५ जहां पर कोई मनुष्य अधर्म का उच्चारण नहीं करते थे फिर त्रेतायुग में प्राप्त होने में धर्म एकपांवहीन होगया ६ मनुष्य थोड़े शोकसे युक्त, कुछ पापके आश्रय, विष्णुजी के ध्यान में रत, यज्ञ और दान में परायण ७ वर्ण और आश्रम के आचारमें रत, सुखी, स्वस्थचित्तहुए शूद्रलोग खेती करनेवाले और सब ब्राह्मण की सेवाकरनेवाले हुए ८ ब्राह्मण महात्मा, वेद और वेदाङ्ग के पारगामी, दान नहीं लेनेवाले, सत्यप्रतिज्ञावाले, जिते-

न्द्रिय, ९ तपस्या और व्रत में रत, नित्यही दान देनेवाले, विष्णुजी की सेवा करनेहारे थे और त्रेतायुग के अंत में द्वापर युग के प्राप्त होने में १० धर्म दोपांवहीन होगया मनुष्य सुख और दुःखसे युक्त होगये कोई कोई पाप में रत और कोई कोई धर्मात्माहुए ११ कोई कोई गुणों से हीन और कोई कोई महागुणी हुए कोई अत्यन्त दुःख युक्त और कोई सुखी हुए १२ कभी ब्राह्मण दान लेने में वाञ्छा करता था और कभी धन के लोभ से प्रजाओं को राजा पीड़ा देते थे १३ ब्राह्मण विष्णुजी की पूजा में परायण और शूद्र ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले हुए हे ब्राह्मण! जब युग युग में धर्म एक पांव हीनता को प्राप्त होता गया १४ तब विष्णुरूपी व्यासजी वेद के भाग कर देते भये हे श्रेष्ठरूपी ब्राह्मण! सब पापों के एक स्थान कलियुग में १५ धर्म एकपांव होगया सब मनुष्य पाप में रत हो गये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पाप में परायण, १६ अत्यन्त कामी और क्रूर कलियुग में होंगे वेद की निन्दा करने वाले, जुवां और चोरी करनेहारे, १७ विधवा स्त्रियों के भोग करने में मग्न होंगे कोई ब्राह्मण जीविका के लिये महाकपट धर्म करने वाले १८ और सब स्त्री के वश, मादक द्रव्य के सेवन करने-हारे, सदैव स्त्रियों की योनि में निरत, पराई द्रव्यों को हरेंगे १९ नित्यही पराये अन्न में लोलुप, तपस्या और व्रत से पराङ्मुख, पाखण्डियों के सङ्ग में बँधे हुए कलियुग में होंगे २० ब्राह्मण लाल कपड़े पहननेवाले और शूद्रोंका सा धर्म करनेहारे, निर्वृत्त और उत्तम नीचता को २१ और नीच धनसम्पन्न और ऊँचे पद को प्राप्त होंगे सब मनुष्य उपकारी को दान देंगे २२ शूद्र यत्न से ब्राह्मणों के वर्त्तनको प्राप्त होंगे कलियुगमें मनुष्य मित्रोंके स्नेह से झूठी गवाही देंगे २३ अधर्मबुद्धि के कहनेवाले, धर्मबुद्धि के वि-लाप करनेहारे, परोक्ष में निन्दा करनेवाले, क्रूर और सम्मुखमें प्रिय बोलनेवाले होंगे २४ व्यभिचारिणी स्त्रियां पतिव्रताओं के वाद को पति से कहेंगी ब्राह्मण पराई स्त्रियों के मारनेवाले, गोत्र के बेंचनेहारे २५ और कलियुग में कन्या बेंचनेवाले होंगे सब मनुष्य स्त्रीजित

होंगे और स्त्रियां अत्यन्त चञ्चल होंगी २६ और कलियुग में मनुष्य दुष्ट आशयवाले होंगे पृथ्वी में अन्न थोड़ा पैदा होगा मेघ थोड़ा जल बरसेंगे २७ और अकाल में बरसेंगे हे जैमिनि! इस युग में गौवें विष्ठा भोजन करनेवाली और थोड़ा दूध देनेवाली होंगी २८ और वह दूध घी से हीन निस्सन्देह होगा मनुष्य अपनी प्रशंसा और पराई निन्दा में परायण २९ छोटे अङ्गवाले होंगे बालक बहुत अन्न भोजन करनेहारे होंगे ब्राह्मण कलियुग में दम्भ के लिये पितृयज्ञ करेंगे ३० जबतक कार्य सिद्ध न होगा तबतक सब स्नेह के वचन बोलेंगे धर्म में परायण मनुष्यों को देखकर सब हँसेंगे ३१ अधर्म से मनुष्य बढ़ेंगे तिससे पाप में रत मनुष्य दश बारह वर्ष में जड़ समेत नाश होजावेंगे ३२ जैसे वर्षा में जलकी वृद्धि होती है तैसेही कलियुग में मनुष्य गलितयुवावस्थावाले होंगे ३३ पांच वा छः वर्ष में स्त्री गर्भ के धारण करनेवाली होंगी पुरुषों के बहुत लड़के और अत्यन्त दुःख युक्त होंगे ३४ सब लेनेकी कामना करेंगे देनेकी कामना कोई न करेंगे कलियुग में पाप में तत्पर म्लेच्छ राजा होंगे ३५ विषय के लिये कलियुग में मनुष्य एकवर्ण होंगे कलियुग की प्रथम संध्या में मनुष्य हरिजी की निन्दा करेंगे ३६ कलियुग में मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भगवान् के नामों को नहीं देखेंगे ३७ चारोंवर्ण एकवर्ण होंगे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जब जब सज्जनों की हानि ३८ और पापियोंकी वृद्धि होगी तब तब कलियुग में वृद्धि जाननी चाहिये हे उत्तम ब्राह्मण! यद्यपि मैंने इसको घोर कलियुग कहाहै ३९ हे गुणवानों में श्रेष्ठ! तथापि इसका बड़ागुण है कि सतयुग में बारहवर्षों में पुण्यका साधन होताहै ४० त्रेतायुग में छःवर्ष में द्वापर में महीने में और कलियुग में एकही दिन रात में होता है ४१ तिससे कलियुग में मनुष्यों की मृत्युलोक से उत्तम गति होती है और युग में बारहवर्षों में भगवान् को पूजन कर जो फल होता है ४२ वह फल कलियुग में मनुष्य हरिका नाम उच्चारणकर पाता है जो मनुष्य कलियुग में हरिजी का एकभी नाम कहताहै ४३ उसको सत्य सत्य निस्सन्देह कलियुग नहीं बाधा करता है जैमिनिजी

बोले कि हे व्यासजी! मनकी शुद्धि के विहीन होने से सब कर्म निष्फल होताहै ४४ यह आपने मेरे मनका विस्मय देनेवाला पहले कहाहै कि कलियुग में सब मनुष्य मनकी शुद्धि से रहित होंगे ४५ हे गुरो! तिनका जैसे सब कर्म होता है तिसको कहिये तब व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! मनुष्य कलियुग में जो धर्म कर्म करे ४६ तिसको भक्तिभावसंयुक्त होकर महाविष्णुजी में अर्पण कर देवे क्योंकि विष्णुजी में अर्पण किया हुआ सब कर्म नाशरहित होता है ४७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सब वृत्तान्त तुमसे कहा जिस को भक्तिभाव से सुनकर मनुष्य मोक्षको प्राप्त होताहै ४८ सूतजी बोले कि हे शौनक! इस प्रकार परमात्मा व्यासजी ने जैमिनि को समझाया तब जैमिनि क्रियायोग में रत होकर परमपद को प्राप्त होतेभये ४९ इस क्रियायोगसारखण्डको महात्मा व्यासजीने कहा है जे मोक्षकी इच्छा करनेवाले मनुष्य भक्तिसे पढ़ते सुनते हैं ५० वे सब बहुत जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए घोर पापोंसे छूटकर निस्सन्देह परममुक्ति को प्राप्त होते हैं ५१ मोक्षकी इच्छा करनेवाले जे इसको पढ़ते और सुनते हैं उनके भगवान् के प्रसाद से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं ५२ मनुष्य एक श्लोक आधा वा चौथाई श्लोक पढ़ और सुनकर वाञ्छितफल को प्राप्त होता है ५३ जो मनुष्य लिखकर वा लिखाकर इस शास्त्र को पूजन करता है वह विष्णुजी के पूजन के फलको प्राप्त होता है ५४ यह अत्यन्त गुप्त, व्यासजी के मुख से निकला हुआ, वैष्णवों को प्रीति देनेवाला अत्यन्त रुचिर पुराण बहुतकाल इन्द्रादिक देवताओं से वन्दित चरणवाले, सब लोकों के स्वामी, चक्रधारी भगवान् की प्रीतिके लिये होवे ५५ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारखण्डे व्यासजैमिनिसंवादे उन्नावप्रदेशांतर्गत-तारगांवनिवासि पण्डितरामविहारीसुकुलकृतभाषानुवादे युगधर्मनिरूपण-पूर्वकपुराणमाहात्म्यवर्णनंनाम षड्विंशतितमोऽध्यायः २६ ॥

इति क्रियायोगसारखण्डः समाप्तः ॥
